॥ होमियोपैथिक ॥

आदर्श

मेटेरिया मेडिका

चतुर्थ संस्करण

संशोधित और परिवर्धित

डा० एन० राय

मूल्य २) रु०

All Rights Reserved

HAHNEMANN PUBLISHING CO. PRIVATE LTD.
CALCUTTA-12

669

HAHNEMANN PUBLISHING CO. PRIVATE LTD.
CALCUTTA-12

होमियोपैथिक

आदर्श मेटिरिया मेडिका

चतुर्थ संस्करण ।

Homeopathic

MODEL MATERIA MEDICA.

By

Dr. L. Roy. M. B.

लेखक

डा० एल० राय एम० बी० होमियोपैथ

प्रणेता :— (हिन्दी) चिकित्सासार, सरल शरीर तत्व, होमियोपैथिक फार्माकोपिया, इनजेकशन चिकित्सा, (उर्दू) प्रैकटिस औफ मेडिसिन, मेटेरिया मेडिका, एनाटोमि वो फिजियालौजि और भूत पूर्व प्रिन्सिपल, नेशनल होमियोपैथिक कौलेज मुरादपुर पटना ।

प्रकाशिका :—तस्य कान्या श्रीमती सविता राय ।

२०००, १९३२] [मूल्य ३) रु० ।

डा० एल० राय

नेशनल होमियोपैथिक कौलेज, मुरादपुर,

बांकीपुर, पटना ।

यह कहना अत्युक्ति न होगी कि सम्पूर्ण विहार में इसके बराबर और कोई दूसरा कालेज नहीं है जहां पर इतना किफायत खर्च तथा एक ही वर्ष में होमियोपैथिक सम्पूर्ण ज्ञान लाभ करा कर आप को डाक्टर बना दिया जावे। यदि आप तथा अपने सम्बन्धियों को बेकार समय विताने या मामुली नौकरी के लिये इधर उधर भटकने और लाखों दिक्कत झेलने से बचाने चाहते हों तो देर न करके इस कालेज में भर्ती हो जाइये । सिर्फ एक ही वर्ष में आप डाक्टर बन बैठेंगे और सिर्फ अपनी ही जिन्दगी आराम से विता सकें, इतना ही नहीं बल्के अपने देश तथा ग्राम को भी बहुत फायदा पहूंचा सकेंगें। दुनिये में डाक्टरी (वैद्य) की पेशा कैसी उत्तम है और इस से मनुष्यों को कितना फायदा है यह कहने की जरुरत नहीं।

इस कालेज की विशेषता यह है कि इसके पहले होमियो-पैथीक की किताबें बिलकुल अङ्गरेजी ही में थी और पढ़ाई

भी एकदम अङ्गरेजी में होती थी जिससे सर्व साधारण इस विद्या को पढ़ नहीं सकते थे। इस बाधा को दूर करने के लिये इस कालेज में हिन्दी और उर्दू में भी पढ़ाई होती है और इस कालेज के प्रिन्सिपल द्वारा होमियोपैथिक की कुल जरूरी किताबें हिन्दी वो उर्दू जवान में लिख दी गई है। यही कारण है कि इस कालेज के पढ़ने वाले बहुत जल्द चिकित्सा ज्ञान को प्राप्त कर डाक्टर बन जाते हैं।

भर्ती होने का समय—इस कालेज में भर्ती होने का समय साल में दो बार है। (१) पहली दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक। इस समय में भर्ती होने वालों की पढ़ाई पहली जनवरी से शुरू होती है और शेष परीक्षा फिर दिसम्बर ही में होती है। (२) पहली जून से ३० जून तक। इस समय में भर्ती होने वाले की पढ़ाई पहली जूलाई से शुरू होती है और शेष परीक्षा फिर मई महीना में होती है। भर्ती जहां तक हो जल्द होना चाहिये क्योंकि सिर्फ ३० लड़के प्रति सेसन में लिये जाते हैं।

क्लास—इस कालेज में दो क्लास रखा गया है।

(१) स्कूल क्लास—अच्छा हिन्दी व उर्दू जानने वालों को इस क्लास में भर्ती किया जाता है। इस क्लास में भर्ती

हाने का फीस २) मासिक वेतन दो रुपैया और परीक्षा का फीस १५) हैं । इन लोगों को H. L. M. S. का सनद मिलता है।

(२) **कौलेज क्लास**—मेट्रिकुलेसन पास वा फेल किया हुआ विद्यार्थी को इस क्लास में भर्ती किया जाता है। इस में भर्ती का फीस ३) मासिक वेतन ३) और परीक्षा का फीस २०) है इन लोगों को H. M. B. का सनद मिलता है।

मासीक फीस हर महिना के १० तारीख के अन्दर देना पड़ता है। न देने से जुर्माना लगता है और महिना के आखिर तक वेतन न देने से नाम काट दिया जाता है फिर से भर्ती का फीस लेकर तब नाम चढ़ाया जाता है।

कोर्स—इस कौलेज में निम्न लिखित विषयों की पढ़ाई होती है।

विषय	किताब
(१) मेटिरिया मेडिका	आदर्श मेटिरिया मेडिका... ३)
(२) प्रैकटिस आफ मेडिसीन (३) मिडवाइफरी	चिकित्सासार... ४॥)
(४) एनाटौमी (५) फिजिऔलौजी	सरल शरीर तत्व... १।)

(६) औरगैनन ... ... १॥।=)

(७) फार्म्माकोपिया। १॥)

अलावे इन विषयों का मलहम पट्टी तथा और २ विषयों में नोट दिया जाता है।

उर्दू वालों के लिये (१) अकसिर उल आमराज (२) ख्वास-उल आदवीया (३) सलीस इल्म हायात व (४) औरगैनन इन चार किताबों से उन विषयों की पढ़ाई होती है।

नोट—यदि कोई काबिल होमियोपैथिक प्रैकटिशनर सालाना परीक्षा में शामिल होना चाहें तो उनको परीक्षा से पन्द्रह रोज पहले ३५) रु० स्कूल परीक्षा के लिये और ४५) कालेज पीक्षा के लिये Examination फीस देना होगा और तब वे परीक्षा में शामिल हो सकते हैं।

डा० एल० राय, नैशनल

होमियोपैथिक फार्मेसि बांकीपुर, पटना।

यहां से हर किस्म की ताजी और असली होमियोपैथिक दवाई सस्ते दर से मिलती है। सुगर औफ मिल्क, ग्लोबिउल्स, फेमिली बक्स, कलेरा बक्स, थर्मामिटर, ष्टेथीस्कोप इत्यादि हमेशा मौजूद रहते हैं।

३६ शिशी का फेमिली बक्स या कालेरा बक्स	८॥)
६० ,, ,, ,, ,,	१३)
थर्मामेटर (बहुत बढ़िया आधा मिन्ट का)	१) से २)
ष्टेथीस्कोप (बहुत बढ़िया, दो नली)	३॥ से ८)

दवाई का दर

	एक ड्राम	२ ड्राम
साधारण मादर टींचर	॥)	॥।)
१ X शक्ति	।)	।≡)
१ से १२ शक्ति	≡)	।–)
३० शक्ति	।)	।=)
२०० शक्ति	।=)	॥=)
१००० ,,	१॥) आधा ड्राम	॥।)
सि. एम. ,,	२)	१)

इकट्ठा १०) दश रुपये की दवाई लेने से सैकड़ा १०) रुपैया कमिशन दिया जाता है। नया ग्राहक से बगैर पेशगी मिलने के कोई चीज न भेजी जाती है।

पिल्ही को अचूक दवा ।

इस दवा के व्यवहार से बहुत दिन का पुराना पिल्हो भी बहुत जल्द आराम होता है। इसका ८ बुन्द एक तोला पानी में डालकर पीना होता है। दिन में तीन दफे पीना पड़ता है। बच्चों के लिए खुराक आधा है। यह दवाई खाली पेट में नहीं पीना चाहिये। खाना खाने के बाद या कुछ जलखई खाने के बाद पीना चाहिये। १५ रोज की दवा का मूल्य सिर्फ ॥) ।

डाएरो कालेरीन।

यह हैजा, दस्त, शूल दर्द वगैरह, के लिए अमोघ दवा है। सिर्फ ४। ५ ही खुराक के व्यवहार से तकलिफ दूर हो जाती है। इसका ४। ५ बुन्द १ तोला पानी में डालकर हर दस्त या कै के बाद दिया जाता है। पेट के दर्द के लिये आधा घन्टा अन्तर २ दिया जाता है। इस दवा में और भी गुण है कि इस को किसी दर्द जैसा सिर दर्द, बीरनी काटना, बिच्छा काटना वगैरह की जगह में रगड़ देने से दर्द आराम हो जाता है। मूल्य १ शीशी ॥) तीन शीशी १।) ।

दीनाय का दवा ।

इस के इस्तेमाल से कैसा ही पुराना दीनाय क्यों न हो बगैर तकलीफ के २४ घन्टे में आराम होता है। दाम फी डिब्बा ।) इकट्ठा ३ डिब्बा ॥=), ६ डिब्बा १=) १२ डिब्बा २) रुपया। डाक महसूल अलग।

क्युटिक्युरिन ।

वा सर्व्व प्रकार के चर्म्म रोग की महौषध ।

इस दवा के इस्तेमाल से अकौता, खुजली, कलकल, गर्म्मी का जखम, वगैरह हर किस्म का चर्म्म रोग निहायत जल्द आराम होता है। दाम फी डिब्बा ।=), इकट्ठा तिन डिब्बा का १), डिब्बा १॥), १२ डिब्बा ३)। डाक मसूल अलग।

नेत्र बिन्दु ।

इस दवा का सिर्फ २-३ बून्द दिन में २-३ मर्तबे आंख में डालने से आंख आना, आंख की लाली, धुन्ध, ज्वाला, फोला वगैरह करीब २ हर प्रकार की तकलीफ निहायत जल्द आराम होगी। कीमत फी शीशी ।=) इकट्ठा तीन शीशी १), डाक मसूल ।=)।

डा० एल० राय साहेब कि बनाई हुई अन्यान्य होमियोपैथिक किताबें।

(१) हिन्दी होमियोपैथि चिकित्सा-सार

चतुर्थ संस्करण। १००० पृष्ट में सम्पूर्ण, मूल्य सजील्द ४॥)

इस संस्करण में किताब के तमाम कठिन व संस्कृत शब्द निकाल दिया गया और एकदम सर्वसाधारण के समझने के लायक भाषा व्यवहार किया गया। इस में पुराना विषयों को बहुत बढ़ाया गया और बहुत नया २ विषय भी संयोग किया गया है। कागज भी बहुत बढ़िया दिया गया है। हर हालत में यह पुराना संस्करण से दुगुणा हो गया है।

इस किताब में हर बिमारी के कारण, लक्षण, पहचान निदान चिकित्सा, पथ्यादि, छाती परीक्षा व औषध बनाने के व प्रयोग के नियमादि, अति विस्तार से लिखा गया है। होमियोपैथिक का यह सर्वांग सुन्दर वा सर्वोत्तम पुस्तक है। इस को पढ़ कर आप घर बैठे ही डाक्टर बन सकेंगे।

(२) **सरल शरीर-तत्व**—(द्वितीय संस्करण) यह ऐनाटौमी और फिजिऔलौजी के बारे में एक अपूर्व पुस्तक है! इस में मनुष्य शरीर का तमाम विषय साफ २ चित्र के साथ निहायत सरल हिन्दी भाषा में लिखा गया है। डाक्टर, वैद्य, हकीम सभी के लिये यह जरूरी है। मूल्य सजिल्द १।)

(३) **इनजेक्सन चिकित्स**—इस किताब में हर किस्म की इनजेक्सन चिकित्सा अति सुन्दर भाव से सरल हिन्दी भाषा में लिखी गई है। वगैर किसी औस्ताद के आप इस को

पढ़ कर इनजेक्शन के जरिए रोगी को आराम कर सकेंगे। मूल्य २) ।

(४) **होमियोपेथिक फार्माकोपिया**—इस किताब में होमियोपैथिक की कुल दवा बनाने का तरिका लिख दिया गया है। हरेक होमियोपैथिक डाक्टर लोग के वास्ते यह किताब बहुत जरूरी है। मूल्य १॥)

उर्दु होमियोपैथिक किताबें।

(१) आकसिरउल आमराज वा प्रैकटिस आफ मेडिसिन ४॥)
(२) खास-उल आद्विया वा मेटिरिया मेडिका ३)
(३) सलीख-इलम हयात वा ऐनाटौमी व फिजियोलजि १)
(४) वाइयोकेमिक रहस्य १)

नोट—वगैर पेशगी के किसी को किताब नहीं भेजी जाती है पैकार वा एजेंट को सैकरा २५) कमिशन दिया जाता है। लेकिन उन लोगों को एकही किताब कम से कम एक साथ १० जिल्द लेना पड़ेगा।

पत्ता—डा० एल० राय।

नेशनल होमियोपैथिक कौलेज एण्ड फारमेसी
बांकीपुर पटना जंकशान।

युनिवर सिटी प्रेस, पटना।

छप गयो !　　छप गयो !!　　छप गयो !!!

वही डा० जे० एम० कार का 'ग्लिसन शीप ऑफ रिमेडीज" नामक पुस्तक जिस के इन्तेजार में आप वर्षों से थे आ न ईश्वर की असीम दया से छप कर प्रकाशित हो गई। यह उन चिकित्सकों और छात्रों के निमित्त अतिशय फल प्रद प्रमाणित होगी जिन्हे नित्य व्यावहारिक औषधियों की पारस्परिक सम्बंधावली का ज्ञान न रहने अथवा अल्पज्ञ रहने के हेतु नित्य उन्हें कर्म क्षेत्र में अनेकों कठिनाइयां झेलनी पड़ती थी। प्रत्येक चिकित्सक और शिक्षार्थी को इस विषय का पूर्ण ज्ञान रखना नितान्त आवश्यक है चिकित्सा-प्राकाष्ठाके सर्व सोपान पर अरुढ हो कर ख्याति कदापि नहीं पा सकते। आइये! उक्त पुस्तक की परीक्षा स्वयं हमारे कार्य्यालय में आकर कीजिये तथा इसकी एक प्रति अपनाकर अपने पथको ~ण्टक रहित कीजिये। इस पुस्तक में नित्य व्यावहारिक औषधियों का सहायक विपरीत अनुसरणीय तथा प्रतिषेधक दवाओं का परस्पर सम्बंध सरल-सुन्दर हिन्दी उर्दू और अंग्रेजी लिपि में उत्तम रीति से उल्लेख किया गया है जिसे पढ़ कर आप अवश्य संतुष्ट एवं कार्य्य-परायणता में हस्त लाघव होंगे। पुस्तक की छपाई और सफाई देखने ही योग्य है और इतने पर भी मूल्य बहुत कम रक्खा गया है। पृष्ठ २०० मूल्य १)

पृष्ठ २००　　मूल्य १)

मिलने का पता

डा० एल० राय

नेसनल होमियो पैथिक कालेज और फार्मेसी

बांकीपूर, पटना

The University Press, Patna.

چھپ گئی !　　　چھپ گئی !!　　　چھپ گئی !!!

کیا ؟

وهی ــــ " ڈاکٹر جے - ایم - کار کی ریلیشن شپ آف رمیڈیز " نام کی کتاب جسکے لئے آپ برسون سے منتظر تھے - آج خداوند تعالی کی مہربانی سے چھپ کر شائع ہوگئی - یہہ کتاب کیا ہے - ہومیوپیتھک کالج و طلبا کیلئے ایک تحفہ ہے - بغیر ریلیشن شپ آف رمیڈیز یعنی رشتہ ادویہ کو جانے ہوئے ہومیوپیتھک علاج کرنا کیا ہے گویا اپنے اور ہومیوپیتھک سائنس کو بدنام کرنا ہے - ہرایک دوا کے چار چار رشتہ (۱) مددگار دوا (۲) پیرو دوا جنکا بعد کا استعمال اچھا ہوتا ہے (۳) تریاق جو استعمال شدہ دوا کے برے اثر کو دور کرتا ہے (۴) مضر دوا جنکا استعمال کسی خاص دوا کے قبل و بعد برا ہے - انگریزی - اردو - ہندی تینون زبانون مین تحریر کیا گیا ہے اس کتاب سے ہملوگون کی غرض روپیہ پیدا کرنا نہین ہے جیسا کہ اسکی قیمت سے آپ لوگ معلوم کرسکتے ہیں بلکہ اس پاک سائنس کی سچائی کو ظاہر کرنا اور اسکو بدنامی سے محفوظ رکھتے ہوئے ہومیو پیتھک علاج کا راستہ آسان کرنا اور پبلک کو فائدہ پہونچانا ہے - آئیے ایک مرتبہ اس کتاب کا مطالعہ فرمائیے - اس کتاب کا کاغذ اور چھپائی بھی ایک نمونہ ہے - لیجئے - لیجئے -

۲۰۰ صفحہ کا کتاب صرف ایک روپیہ -

ملنے کا پتہ

ڈاکٹر ایل رائے

نیشنل ہومیو پیتھک کالج اور فارمیسی

بانکی پور پٹنہ

भूमिका

"समः समं शमयति" यह महावाक्य होमियोपैथिक चिकित्सा का मूल मंत्र है। इस का तात्पर्य्य यह है— किसी रोगी के लक्षण के साथ जिस दवा के लक्षणों का मेल होगा उसको वही दवा आरोग्य करेगी। इस कारण होमियोपैथिक चिकित्सकों को दवाइयों के लक्षणों को कण्ठस्थ करना जरूरी है। हम, जिस में शिक्षार्थियों को दवाइयों के लक्षण समुह आसानी से समझ में आवे और कण्ठस्थ हो जाय तत्प्रति विशेष ध्यान रख कर इस पुस्तक को लिखा है। विशेष सुविधा के लिये हर दवाई के जरूरी लक्षणों के नीचे निशान दे दिया है। हमारी चेष्टा कितनी सफल हुई पाठक लोग विचार करेंगे।

ग्रन्थकार।

सूचीपत्र ।

विषय	पृष्ट	विषय	पृष्ट
आर्जेन्टम मेट	५५	एकालाइफा	३
,, नाइट	५७	एकोनाइट नैप	५
आर्सेनिक-एल्ब	६१	एस्कूलस हिप	११
आर्स-आइयोड	६६	एगारिकस	१५
आर्टिमिशिया	७२	एइलान्थस	१९
अर्निका मन्ट	४९	एलियम-सिपा	२२
आइरिस	२७५	एलो	२२
आइयोडियम	२६५	एलुमिना	२४
आर्टिका युरेन्स	४९१	एलुमेन	७१
आथ्रिलैगो	४९२	एम्ब्राग्रिशिया	२८
इकुइसिटम	२१२	एमोनियम कार्ब	३१
इउपेटोरियम-पार्फ	२१३	वनजोटा	२८
,, पारपु	२१४	एमोनियेकम	७१
इलैप्स-कोर	२१५	एनाकार्डियम	३३
इरिजिरण	२१६	एन्प्रासाइनम	३६
इउफ्रेशिया	२१७	एन्टिम-क्रूड	३७
इग्नेशिया	२६०	एन्टिम-टार्ट	४२
इपिकाक	२६८	एसेटिक-एसिड	३९
इथुजा	१३	एपिस	४५
इउरेनियम	४९१	एपोसाइनम	५४
इउमा असांई	४९३	एरम-ट्राइ	६८
एबिज नाइग्रा	१	एंगास्टुरा	७०
एब्रोटेनम	२	एसारम	७३

सूचीपत्र ।

विषय	पृष्ठ
एसक्लिपियस	७४
एसपेरागस	७६
एस्वटिरियस	७७
एसेटिक एसिड	३
एसाफिटिडा	७८
एक्टिया-रेस	८
,, स्पाइकेटा	११
ऐगनस-कैस	१७
ऐलेट्रिस-फैरि	२०
ओलिएन्डर	३६६
ओपियम	३६६
औरम-मेट	८०
औक जेलिक एसिड	३६९
कलोसिन्थ	१८६
कलचिकम	१८३
कलाफाइलम	१५१
कष्टिकम	१५३
ककिउलस	१७४
कक्कस	१८०
ककिया	१८१
कार्वो-एनिमेलिस	१४०
कार्वो-भेज	१४२
कारवोलिक एसिड	१४६
काडूयस	१५०

विषय	पृष्ठ
क्लिमेटिस	१७२
क्रिडवेत्र	१९९
कुप्रम-मेट	२००
कोलचाइकम	२७७
केलिकार्व	२८१
,, हाइड्रो	२८५
,, न्युर	२८७
,, फस	२८८
क्रियोजोट	२९२
कैलमिया	२८९
कैक्टस	११४
कैलाडियम	११६
कैल्केरिया-आर्स	११७
,, फ्लुओर	११८
,, कार्व	११९
,, फस	१२४
,, आइयोड	१२७
,, हाइपोफस	१२७
कैल्केरिया सल्फ	१२८
कलेन्डुला	१२८
कैम्फर	१२९
कैनाविस इन्डिका	१३०
कैनाविस-सैट	१३२
कैन्थारिस	१३५

सूचीपत्र

विषय	पृष्ट
कैप्सिकम	१३८
कैमोमिला	१५८
कोलिनसोनिया	१७४
कोनायम	१८९
कोरल हैड्रास	५१२
कोरालियम	१८३
कोकस	१९४
कोटन	१९८
कोटैलस	१९६
कोपेइमा	१९५
गैलिक एसिड	२२७
ग्लोनइन	२३५
गैम्बोज	२२८
ग्रैटिओला	२२८
ग्रैफाइटिस	२३७
चिनीफिला एम्ब	५११
चायना	१६७
चिलिनम-सल्फ	१७८
चेलिडोनियम	१६४
जिकम-मेट	५०२
जेलसिमियम	२२९
जैलापा	२७६
जेट्रौफा	२७६
जैन्थक्साइलम	५०२
टिउवरकुलाइनम	४८८
ट्रिलियम	४८७
टिउक्रियम	४७७
टिलिया	३९३
टैवेकम	४७५
टैरेन्टूला	४७६
टेलुरियम	४७९
टेरिबिन्थ	४७९
डालकामेरा	२१०
डायोस्कोरिया	२०८
डिजिटैलिस	२०५
ड्रोसेरा	२०९
थेरिडियन	४७७
थ्लप्स-बर्सा	४८१
थुजा	४८२
नेट्रम कार्ब	३४६
नेट्रम-म्युर	३४७
नेट्रम सल्फ	३५४
नाइट्रिक एसिड	३५५
नक्स-मस्क	३५९
नक्स-भोमिका	३६१
नैजा	३४५
पलसेटिला	४०३
पाईरोजेन	४०८

सूचीपत्र

विषय	पृष्ठ
पेट्रोलियम	३७१
पोडोफाइलम	३९६
प्लम्बम	३९४
प्लैटिना	३९०
फसफोरस	३७४
फसफोरिक एसिड	३८२
फाइटोलेका	३८६
फेरम-मेट	२१९
फेरम फस	२२३
फ्लुओरिक-एसिड	२२५
वार्वेरिस भ०	१००
विसमथ	१०२
विउफो	११३
वेलाडोना	९२
वेडीयाना	८४
वलसम औफ पेरु	५०७
वेप्टिशिया	८६
वराइटा कार्व	८९
वेराइटा-म्युर	९१
वेनजोइक-एसिड	९८
वोराक्स	१०३
वोभिष्टा	१०५
व्रोमाइड एमोनिया	५०८
व्रायोनिया	१०९

विषय	पृष्ठ
व्रोमाइड औफ कमफर	५१०
व्रोमियम	१०६
व्लटा	११४
भिका माइनर	४९७
भायोला आडोरेटा	४९७
भायोला ट्राइकलर	४९७
भाइपेरा	४९८
भिस्कम	४९८
भेरेट्रम एल्वाम	४९८
भेरेट्रम भिर	५०१
भैलेरियाना	४९३
भैरीओलाइनम	४९४
भेकिसनाइनम	४९५
भारवेस्कम	४९५
भेसपा	४९६
भाइवर्नम ओपुलस	४९६
भाइवर्नम-प्रान	४९६
मस्कम	३४३
मार्किउरिअस	३२९
मार्क-कर	३३४
मार्क-सायेनाइड	३३५
मार्क-प्रटाआइओड	३३६
मार्क-विनआयोड	३३७
मिलिफोलियम	३२८

सूचीपत्र

विषय	पृष्ठ
मिउरेक्स	३४०
मिउर-एसिड	३४१
मेडोरिनम	३२६
मेलिलोटस	३२७
मेज़िरियम	३३८
मगनेशिया-कार्ब	३२१
मैग-फस	३२४
मैग-म्युर	३२३
रस्टक्स	४१५
रिसिनस	४१९
रिउम	४१३
रिउमेक्स	४२०
रुटा	४२२
रैटानिया	४१०
रैनकुलस	४११
रोडोडेन्ड्रन	४१३
रोबिनिया	४२०
लाइकोपोडियम	३१५
लिडम	३०७
लिथियम	३१३
लिलियम	३१०
लेप्टीन्ड्रा	२९८
लैकेसिस	२९९
लैककैन	२९४

विषय	पृष्ठ
लैक्टिक-एसिड	२९७
लाबेलिया	३१३
सल्फर	४६३
सलफ्युरिक एसिड	४६८
सिकिउटा	४७०
सिड्रन	४५८
सिना	४७१
सियानोथस	४५७
साइक्लेमेन	२०३
साइलिशिया	४४२
सिफिलाइनम	४७२
सिकेली	४३०
सिम्फाइटम	४७०
सल्फ कैडमियम	४७१
सिपिया	४३६
सिमिसिफ्यूगा वा ऐक्टिया-रेस	८
सेलिनियम	४३३
सेलिसायलिक एसिड	४२५
सैबाइना	४२३
सैम्बुकस	४२६
सैगुइनैरिया	४२७
सोरिनम	५००
स्पाइजिलिया	४४७

सूचीपत्र

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
स्पंजिया	४४९	हाइओसायेम	२५४
ष्टैनम	४५२	हाइपरिकम	२५८
ष्टैफिसेग्रिया	३५४	हिपार-सल्फ	२४८
सिष्टिकटा	४५४	हेलिबोरस	२४४
स्ट्रैमोनियं	५६०	हेलोनियस	२४६
हाइड्रोष्टिस	२५२	हेमामोलस	२४२

——:o:——

हमलोग होमियोपैथिक और बायो-कैमिक औषधियां सीधे युरोप से मंगाते हैं और डाक्टरी के कुल सामान स्टाक में रखते हैं। मुफस्सिल का आर्डर खूब देख भाल कर ठीक भेजा जाता है।

HAHNEMANN PUBLISHING CO. PRIVATE LTD.
CALCUTTA-12

होमियोपथिक।

आदर्श मेटेरिया मेडिका।

एबिज नाइगरा।

Abies Nigra

यह औषध विशेष कर पाकस्थली के म्युकस झिली के ऊपर क्रिया करता है। निम्न लिखित लक्षण पर यह दवा अजीर्ण रोग में महोषध है।

रात में रोगी जागा रहता है और उसको बहुत भूख लगता है। सुवह को भूख बिलकुल नहीं लगता है। किन्तु दोपहर और रात को भोजन की बहुत इच्छा होती है। पेट भर के खाने से बहुत दर्द होता है, मालुम होता है कि पेट में उबाला हुआ अन्डे के सदृश कोई कठिन वस्तु अटका हुआ है; कब्ज रहता है। चाय या तम्बाकु पीने से अजीर्ण दोष हो तो यह औषध विशेष उपकार करता है।

ऐब्रोटेनम । Abrotanum.

यह बच्चों के सुखौड़ी वा शरीर शीर्णता (Marasmus) के लिये अति उत्तम औषध है। खाद्य की क्रिया शरीर में यथायदे से न होने (Malnutrition) के हेतु शरीर के क्षय में यह औषध प्रयोग होता है। बच्चों को बहुत भूख मालूम होता है और वह बहुत खाता पीता हैं तथापि सूखता जाता है, कर पैर अधिक सूखता है।

पेट फूला रहता है और पेट में जगह २ पर शख्त ढेला सा मालूम पड़ता है। यह औषध प्रदाहयुक्त वात रोग में सूज होने के पहले प्रयोग करने से विशेष फलदायक होता हैं। कब्ज और दस्त रूक जाने से वातरोग होना इसका विशेष लक्षण है।

अंतरी के ऊपर भी इस दवाई की विशेष क्रिया होती है। खाना वे पचे हुए निकल जाता है। कबज रहता है। कब्ज और दस्त अदल बदल कर होना इसका स्वाभाविक लक्षण है।

बच्चों के पोते में पानी उतरने (Hydrocele) के निमित्त यह औषध उत्तम है, विशेष कर, यदि स्कारलेट (लाल) ज्वर के बाद यह रोग हो।

बच्चों का गर्दन बहुत कमजोर होता है, मुशकिल से सिर को खड़ा रख सकता है, खोपड़ी में जखम की तरह दर्द; खुजली; सिर में दर्द मालूम होता है।

शक्ति ६—३०।

एकालाइफा इंडिका।

Acalypha Indica.

स्वांस यन्त्र के ऊपर इस औषध की विशेष क्रिया देखी गई है। सूखी खांसी के साथ खुन निकलना ही इसका स्वाभाविक लक्षण है। डा० हेल साहब कहते हैं जब प्रातःकाल में खांसी के साथ विशुद्ध खुन निकले और संध्या समय जमा हुआ ढेला २ काला रक्त निकले तब यह औषध निर्दिष्ट होता है।

शक्ति १x—१—३।

एसेटिक एसिड

Acetic Acid.

बहु मुत्रः— (Diabetes) मुह का चेहरा पीला, रूखा, कातर अवस्था, भयानक शरीर मे ज्वाला क्रमरा शरीर का रुखरा कभी २ पसीना का होना, अत्यन्त प्यास, पानी पीने

के बाद, बार २ बहुत पेशाब का होना, इस औषध का यह खास लक्षण है।

सोथ या उदरी Dropsy) मुख, पाव और हाथ का चमड़ा मोम के समान, ज्यादे पेशाव का होना, अत्यन्त प्यास, उदरामय (पतला पखाना होना) और मतली इस दवा का लक्षण है (एपिस मेल) एपिस का लक्षण, शरीर का चर्म मोम के समान स्वच्छ (Transparent) बहुत थोड़ा पेशाव का होना, मुत्र मे एल्बुमेन मिश्रीत या गदला रंग पेशाव के साथ गाद (Sediment) जमा होना।

शोथ वा उदरी के साथ पतला दस्त और कै यह लक्षण केवल एसिटिक एसिडहीमे देखा जाता है बहुत परिमान से पेशाव के साथ कमर में दर्द का होना पेट के भर सोने से कमर का दर्द मे कमी–यह भी इस दवा का खास लक्षण है

रक्त स्राव :— (Haemorrhage) रक्त स्राव के बन्द होने के लिये एसेटिक एसिड उत्तम है। पेशाव के बाद रक्त स्राव एवं उसके साथ अत्यन्त प्यास, चर्म शुषक शीघ्र २ पेशाव का होना इन सब लक्षण मे यह औषध विशेष उपयोगी है (सिर्कोंमे कपड़े का टुकड़ा भिगा कर उस पर दवा कर रखने से रक्त स्राव बन्द हो जाता है)

शक्ति ३०—२००

एकोनाइट नैपेलस।

ACONITE NAPELAS

दिल और रक्तसंचालन क्रिया के ऊपर इसकी विशेष क्रिया प्रकाश पाती है। यह अचानक प्रदाह उत्तपन्न करता है। शरीर के किसी यन्त्र, विशेष कर पाकस्थली, यकृत, फेफड़ा इत्यादि स्थान में प्रदाह। स्नायवीय उत्तेजना (शारीरिक और मानसिक अस्थिरता) द्वारा इसको विशेषरुप से पहचाना जाता है। अचानक अतिशय तेज ज्वर, खुष्क ठंढी हवा लगने से पीड़ा। सर्व प्रकार प्रदायुक्त ज्वर की प्रथमावस्था में इस औषध द्वारा विशेष फल होता है। ＊किसी स्थान का दर्द के साथ सून्यता और झिनझिनी होना।

अत्यन्त अस्थिरता, बहुत जोर प्यास व डर एकोनाइट का ये तीन लक्षण प्रधान है। पीड़ा कोई हो औषध का लक्षणों के साथ पीड़ा के लक्षणों के मिल होने ही से औषध प्रयोग करना कर्तव्य हैं, कारण लक्षण ही पीड़ा है। अतएव जहां ऊपर लिखित लक्षण वर्तमान रहेगा पीड़ा का नाम जो कुछ ही हो एकोनाइट को अवश्य प्रयोग करना चाहिये।

अत्यन्त अस्थिरता:—होमियोपैथिक मेटिरिया मेडिका

में बहुत से औषध में अस्थिरता है किन्तु उन सबों में आर्सेनिक, रस-टक्स और एकोनाइट सर्व्व प्रधान हैं। रस-टक्स सर्व्वदा बेचैन रहता है व वारवार करवट लेता हैं और उससे रोगी आराम मालूम करता है। आर्सेनिक का रोगी अस्थिरता के कारण सर्व्वदा करवट लेने की चेष्टा करता है किन्तु अतिशय दुर्व्वलता के कारण उसकी आशा पूर्ण नहीं होती हैं। एकोनाइट के रोगी में दुर्व्वलता अधिक नहीं होती है और रोगी सर्व्वदा इधर उधर करता रहता है किन्तु उससे उसको कुछ भी आराम नहीं मिलता है।

अत्यन्त प्यास :— वार २ अधिक प्रमाण जल पीने से भी प्यास नहीं बुझता हैं। आर्सेनिक में भी अत्यन्त प्यास देखा जाता है किन्तु भेद यह है कि आर्सेनिक का रोगी का प्यास अधिक रहने पर भी रोगी वारवार थोड़ा २ जल पीता है, कभी २ पानी पीने के साथ ही निकल जाता है।

अतिशय भय :— सर्व्वदा ही भय मालूम होता है, भुत का भय, कोई कारण नहीं है तथापि भय होता है। भय पाकर कोइ पीड़ा होने से एकोनाइट उत्तम है। गर्भावस्था में भय पाकर "भुत का आक्रमण से सदृश भाव होने से अथवा गर्भश्राव होने का डर होने से एकोनाइट अमृत है। रोगी को इतना

डर होता है कि उसको मालुम होता है वह अब जरुर मर जायगा और वह कहता है "मर जाउंगा।"

अत्यन्त ज्वर; अत्यन्त उत्ताप :— गात्र चर्म्म शुष्क और खड़खड़ा, चमड़े के ऊपर खड़ी मिट्टी मल दिया गया ऐसा देखाती है; नाडी पूर्ण और जल्द होती है; बहुत बेचैनी, प्यास और डर होता है।

चित होकर लेटी हुई हालत से उठ कर बैठने से लाल चेहरा फीका हो जाता है। आंख में धुंध आ जाता है।

दस्त के लिए भी एकोनाइट उत्तम है। कलेरा की प्रथम अवस्था में एकोनाइट अच्छा फायदा करता है। कलेरा में घूला हुआ तरबूज के पानी के ऐसा लाल मल होने से एकोनाइट के प्रयोग से अवश्य फल मिलेगा।

<u>असहनीय दर्द</u> भी एकोनाइट का सिद्धिदायक लक्षण है; शूलदर्द, वातजनित दर्द स्नायविक दर्द इत्यादि यदि नितान्त असहनीय हो और उस के साथ बहुत बेचैनी, प्यास और भय रहे तब ऐकोनाइट उत्तम फल देता है।

सूखी ठंढी हवा लगने से पीड़ा होना, भय पाने से पीड़ा होना, ठंढी हवा से अचानक पसीना बन्द होने से पीड़ा होना इत्यादि भी एकोनाइट का स्वाभाविक लक्षन है।

एकोनाइट की विमारी अचानक होकर बहुत जल्द तरक्की करने वाली व बहुत जल्द ही खतम होने वाली होती है। इसकी विमारी कभी ज्यादा दिन ठहरने व रूक २ कर बारबार होनेवाली नहीं होती है। इसलिये यह दवा कभी टाइफाइड की तरह ज्यादा दिन ठहरने वाली वा सविराम ज्वर के ऐसा रूक २ कर होने वाली विमारी में व्यवहार नहीं होता है। और इसी वजह से यह दवा अचानक होने वा तरक्की करने वाले रोगों (क्रुप, न्युमोनिया ब्रोंकाइटिस, कोंदवा वगैरह) की पहली हालत में व्यवहार होती है।

मोटी ताजी लड़कियां, जो सर्वदा वैठी २ दिन काटती हैं: जिस का वेशी दृढ़: आंख की पुतली और केस बहुत काला, जो ऋतु बदलने के समय अकसमात विमार होती हैं उनके शरीर में एकोनाइट उत्तम क्रिया करती है।

शक्ति ६—३०।

———:o:———

एकटिया रेसमोसा वा सिमिसिफ्युगा।

ACTEA RECEMOSA OR CIMICIFUGA.

सेरिब्रम, (दिमाग) मेरुमज्जा, मांशपेशी, जरायू, और

डिम्बकोष में इसकी क्रिया विशेष रूप से प्रकाश पाती है। शरीर के किसी स्थान में दर्द और एठने वाला दर्द स्नायु की गड़बड़ी के कारण होने से इस औषध से विशेष फल पाया जाता है।

स्त्रीओं के शरीर में इसकी विशेष क्रिया देखी जाती है। स्नायु-विधान के ऊपर इसकी क्रिया प्रकाश पाकर बहुत लक्षण उत्पन्न करता है। उन सभों में कई लक्षण हिस्टीरिया के रोगी के लक्षण के ऐसा होता है; इस लिए ऐकटिया हिस्टिरिया के एक महौषध है। इसमें मांस पेशी के स्पन्दन (फड़कन) आक्षेप, फीट और नाना प्रकार के मानसिक लक्षण देखा जाता है। रोगिणी थर थर कर के कांपती है किन्तु शीत नहीं होता है, अज्ञान होकर पड़ी रहती है; सर्बदा बकती है और बारबार कहने के विषय को बदलती है। रोगिणी अत्यन्त दुःखित और क्रोधित; लम्बी २ स्वांस त्याग करती है अथवा लेटी रहती है परन्तु निद्रा नहीं होती है। रोगिणी को ख्याल होता है कि वह पागल हुई जा रही है।

सिर—पीड़ा :— सिर के भीतर से चारों तरफ ठेलने के ऐसा दर्द; मालुम होता है कि चाँदी फुट जायगा; कभी कभी दर्द कानके भीतर प्रवेश कर के अत्यन्त कष्ट दायक होता है

अथावा दर्द शिर के पीछे ठहर कर गर्दन में तीर भोकने की तरह तकलिफ देता है।

जरायु के एक तरफ से सुई भोकने की तरह दर्द दूसरा तरफ जाता है। ऋतुश्राव अनियमित वा ज्यादे होता है। फिर कभी २ बहुत थोड़ा भी होता है। ऋतु की इस प्रकार की गड़बड़ी के साथ यदी बहुत सा मानसिक और स्नायविक लक्षण देखा जाय तो एकटिया का प्रयोग किया जाता है। ठीक परिमाण से ऋतुश्राव न होकर यदि कमर से निचे जांघ तक भारी व पेडू में निचे के तरफ घसकने के सदृश दर्द हो तो एकटिया प्रयोग करने से कष्ट दूर हो जाता है। * ऋतु की गड़बड़ी के साथ बायां तरफ के स्तन के निम्न भाग में दर्द होना एकटिया के विषये स्वभाविक लक्षण है। जरायु की पीड़ा के कारण कमर में दर्द और मेरुमज्जा की उत्तेजित अवस्था। जरायु की गढ़बड़ी के साथ शरिर के भिन्न २ स्थान में स्नाबविय दर्द अथवा मांसपेशी में कतरने के सदृश दर्द होने से ऐकटिया उपकारी है। वात रोग में प्रायः पेशीयों के मध्यभाग में दर्द होता है।

शक्ति साधारणत ३० और २०० शक्ति व्यवहार होता है।

———:*:———

एक्टिया स्पाइकेटा

ACTEA SPICATA.

वात रोग विशेष कर शरीर के छोटे २ जोड़ों के वातरोग में यह निहायत मुफ़िद है।

मुखमन्डल में वात रोग के दर्द के सदृश दर्द होता है। सामान्य परिश्रम से ही जोड़ों का फुल जाना। हाथो में लकवा की कमजोरी के सदृश दर्द होता है। छोटे २ जोड़ों में, यथा कलाई का जोड़ या अंगुलियों के जोड़ोंमें बहुत सख्त दर्द होता है और रात को कष्ट ज्यादा होता है।

शक्ति १—३X—३०।

——(*)——

एस्क्युलस हिपोकैस्टेनम।

ÆSCULUS HIPPOCASTANUM.

कब्ज के साथ यकृत और यकृत के सहकारी अन्यान्य यंत्रों में खुन की ज्यादती। मैला रक्त बहनेवाला शिरासमूह में इसकी क्रिया प्रधान है। कमर दर्द व शरीर के नाना अंग में पूर्णता मालुम होना।

कमर में दर्दः—डांड़ की हड्डी (sacrum) में से जांघ तक मन्द २ दर्द होता है वह दर्द चलने फिरने से अथवा सामने के तरफ झुकने से अत्यन्त वृद्धि होता है। यह एस्क्युलस के अति प्रिय लक्षण है। एस्क्युलस के और एक स्वभाविक लक्षण यह है कि रोगी के मलद्वार में मालुम होता है कि बहुत सा कांटी या कांच के टुकड़े भरे हुए हैं और वे चुभते हैं। अर्शरोग (बवासीर) में इस तरह के चुभना मालुम होने से एस्क्यूलस से फायदा होता है। मलद्वार खुष्क और पूर्ण मालुम होता है। ऊपरोक्त लक्षण समूह जरायु का टल जाना (prolapsus uteri)अथवा प्रदाह वा प्रदर—स्राव इत्यादि रोग में देखा जाय तो भी एस्क्यूलस दिया जाता है। बहुत कठिन प्रदरस्राव (लिउकोरिया) में उक्त लक्षण देखकर एसकुलस का प्रयोग से आराम किया गया है। सर्दी और गलनली के जखम में भी एस्क्यूलस बहुत उपकारी है। एक्युलस के सर्दी आर्सेनीक के सदृश पतला पानी की तरह व ज्वाला के साथ होता है किन्तु एस्क्यूलस के विशेष गुण यह है कि रोगी ठंढी हवा के श्वांस ले नही सकता है। उससे उसकी तकलीफ बढ़ती है।

गले के पुराना जख्म में भी उक्त प्रकार के लक्षण वर्तमान रहने से एस्कयुलस फलदायक होता है।

उदरामयः—एस्क्युलस पुराना उदरामय में उत्तम है। अर्श रोगी के उदरामय में एस्क्युलस का स्वाभाविक कमर-दर्द वर्तमान रहने से अवश्य इसको प्रयोग करना चाहिये। चलने फिरने से अथवा सामने के तरफ झुकने से कमर-दर्द इतना बढ़ता है कि रोगी ख्याल करता है कमर टुट जायगा।

शक्ति—३०—२००।

इथुजा। ÆTHUSA.

शिशुओं की पीड़ा में यदि मानसिक व्याकुलता, रोना इत्यादि लक्षण के साथ उदरामय, (दस्त) दूध न पचना इत्यादि लक्षण देखा जाय तब इस औषधि द्वारा उपकार होता है। ग्रीष्मकाल की पीड़ा और दांत निकलने के समय की पीड़ा में इथुजा विशेष उपकारी है।

शिशुओं के वमनरोग में यह एक उत्तम औषध है।

दूध पीते ही जोर से बमन होता है, बमन के बाद शिशु सुस्त होकर सो जाता है। कभी २ दूध पीने के कुछ देर के बाद दूध दही की तरह थक्का २ होकर बमन हो जाता है। कभी २ वह थक्का इतना बड़ा होता है कि देखने से विश्वास नहीं होता है कि वह शिशु के पेट से निकला है। अगर इस समय में रोगी को अच्छा चिकित्सा से आराम न किया जाय तो क्रमशः बिमारी शिशु कालेरा बनजाता है और उसके साथ हरा पानी कि तरह लसलस्सा मल निकलता है ऐसी कि रोगी का आक्षेप (convulsion) भी हुआ करता है। इथुजा के आक्षेप का कुछ विशेष रूप है। फिट के समय रोगी की पुतली ऊपर के तरफ या बगल के तर्फ न जाकर नीचे के तरफ उतर आती है। इस लक्षण के ऊपर विशेष नजर रखने से आसानी से इथुजा को चुना जाता है। इस अवस्था से रोगी आरोग्य लाभ न करे तो क्रमशः चेहरा और आंख धस जाती है, इस समय में और एक लक्षण देखा जाता है—रोगी के ऊपरवाला ओष्ट मोती के सदृश सफेद हो जाता है और उसके ऊपर धनुष की तरह एक दाग पड़ता है। इस लक्षण को इथुजा के अत्यनत स्वभाविक लक्षण जानो। व्याकुलता और निस्तेजता दोनों ही इसमें बराबर देखा जाता है किन्तु आर्सेनिक के सदृश प्यास इसमें नहीं है।

केलकेरीया कार्ब में भी थक्का २ दूध का वमन देखा जाता है किन्तु कैलकेरीया के रोगी के मल में बहुत खट्टी बू और सिर में बहुत ठंढ़ा पसीना होता है।

साधारणतः ३० और २०० शक्ति व्यवहार होती है।

——:o:——

एगारोकस मसकेरियस।

AGARICUS MUCARIUS.

यह औषध प्रधानतःतमेरुमज्जा की उत्तेजना और रक्त-हीनता के हेतु कोरिया (chorea) वा तान्डव रोग, स्नायु शूल, और मृगी के सदृश एठन को चिकित्सा में विशेष फल दायक होता है। यह औषध मांसपेशी के सामान्य नाचना, झटकना से कोरीया (chorea) या तान्डव रोग तक आराम करता है। मांसपेशो के झटकना और कांपना, हाथ पैर का कांपना, कभी २ कंपना इतना अधिक होता है कि हाथ में किसी चीज लेने से फौरन झटके के साथ गिर जाती है: कोई चिज पकड़ने के समय अगुलियों में ऐठन हो जाता है और वह चीज पकड़ा नहीं जाता है।

समस्त शरीर में ऐठन मालुम होना, चमड़ा और

मास में ऐसा मालुम होता है कि चिंटी चल रहा है; चमड़े में खुजलाहट होता है और वह खुजलाहट, खुजलाने से एक स्थान से दूसरे स्थान में चला जाता है; शरीर के भिन्न २ स्थान में ठंढा या सुई भोंकने के ऐसा मालुम पड़ता है। गात्रचर्म, कान, मुखमण्डल, नाक, हाथ पैर के अंगुली

इत्यादि स्थान में खुजलाहट, ज्वाला और रक्तवर्णता।

नाना प्रकार के चर्म्म रोग में यह लक्षण मिलने से एगारीकस प्रयोग किया जाता है। "बेवाय वा चिलब्लेन (Chiblains) में इस लक्षण के ऊपर एगारिकस का प्रयोग से अवश्य फायदा होता है।

दिमाग के ऊपर भी इस दवाई की विशेष क्रिया होती है। अधिक मानसिक परिश्रम के हेतु रोगी चिरचिराहा और उदास हो जाता है। बच्चों का दिमाग बड़ा सुस्त होता है। जल्दी बात करना या चलना नहीं सिखता है, बच्चा बेवकुफ के सदृश और ढीला होता है और कभी २ विकारवाले के सदृश हो जाता है।

सिर-दर्द में भी यह औषध उत्तम है, विशेषतः यदि इस में भी झटकना और कंपनी वर्तमान रहे। सिर में नोकदार वर्फ वा ठंढी सुई भोकने के ऐसा दर्द मालुम पड़ता है। और

कर्षा २ सुवह के वक्त काला रक्तश्राव होता है और वह इतना गाढ़ा होता है कि गिरता नहीं। सिर में खुजलाहट होता है, शिर में कोई (Erruption) इरपशन नहीं देखा जाता है किन्तु फिर भी सर्वदा खुजलाहट होता है और खुजलाने से सिर में वर्फ की तरह ठंढ मालुम पड़ता है। खोपड़ी का खुरन्टदार एकजिमा (Eczema) या अकौता रोग भी इससे आराम होता है।

पुरुषांग के ऊपर भी इसकी उत्तम क्रिया है। रतिक्रिया के समय मूत्रनली में ज्वाला; संगम की प्रवल इच्छा होती है, संगम के पहले और संगम के समय लिङ्ग वहुत कठिन होता है किन्तु शुक्रपात के समय पुरुषांग बिलकुल ढीला पढ़ जाता है। पुरुषांग ठंढा और सिकुड़ा हुआ। रतिक्रिया के बाद झटकना, कंपना। फलतः झटकना, और कपना ही एगारिकस का सब से अधिक जरुरी लक्षण है।

साधारणतः ३० और २०० शक्ति इस्तेमाल होती है।

ऐगनस कैष्टस।

AGUNUS CASTUS

जननेन्द्री के ऊपर इसकी विशेष क्रिया है। रतिक्रिया

की इच्छा कम हो जाती है, ऐसाकी बिलकुल नाश हो जाती है। पुरुषांग इतना ढीला हो जाता है कि स्त्री का आलिङ्गन करने पर भी लिङ्ग खड़ा नही होता है, पोता ठंढा फुला, शख्त और दर्द के साथ; लिङ्ग बहुत छोटा और सिकुड़ा हुआ। ढीला लिङ्ग से धार की तरह से शुक्रपात होता है। पुराना गनोरिया में जब पांव पिला होता है और ध्वजभङ्ग रहता है, तब एगनस के प्रयोगय से विशेष उपकार होता है।

रोगी की याद्दास्त अत्यन्त कम हो जाती है, कुछ भी याद नहीं रहता है।

स्त्रीओं के श्वेतप्रदर में भी यह औषध फलप्रद है। श्राव स्वच्छ होता है, स्त्रीअंग शिथिल होता है, रति-क्रिया की बिलकुल इच्छा नहीं होता है। स्थन में दूध बहुत थोड़ा होता है या बिलकुल पैदा ही नही होता है।

साधारणतः ३० और २०० इस्तमाल होता है।

एइलेन्थस ।

AILANTHUS.

यह औषध प्रधानतः दूषित और निस्तेजकारी विमारीयों जैसा टाइफायड ज्वर, दुष्ट स्कारलेट (लाल) ज्वर, डिफथिरिया इत्यादी में व्यवहार होता है।

दिमाग के ऊपर इसकी विशेष क्रिया होती है। रोगी अर्द्ध चेतन अवस्था में पड़ा रहता हैं; कोई बात कहने से समझ नहीं सकता है। सर्वदा अज्ञान की तरह बर बराता रहता है। जगाने से उसके आंख देखने से मालुम पड़ता है कि वह डर गया; पुतली फैली हुई होती है।

चेहरा गरम और लाल और उसके ऊपर छोटे २ दानें होते है। चेहरा का रंग वैगनी होता है।

नाक से बहुत परिमाण से पतला, जख्म पैदा करनेवाला और खून मिला हुआ श्राव निकलता है। दांत में सर्डिस वा सुखा मैल जम जाता है; जीभ सूखा, खरखरा और फटा फटा, घोंट लेने के समय गले में जख्म सा दर्द होता है। गलनली फूल जाता है और वह वैगनी रंग

का होता है। टन्सिल बहुत बढ़ जाता है और उसमें बहुत सा खराब जखम होता है, उस जखम से थोड़ा २ बदबूदार श्राव निकलता है। यह लक्षण डिफथिरिया और दूषित लाल ज्वर इत्ययादि बिमारी में पाया जाता है। फलतः बिमारी के नाम जो कुछ ही हो यदि ऊपर के लिखित लक्षण समूह मिले तो एइलन्थस के प्रयोग से अवश्य उपकार होगा।

कोद्‌बा, लाल ज्वर इत्यादि के इरपशन बैगनी रंग के धब्बे के सदृश होता है और चेहरा और ललाट में ज्यादा होता है।

साधारणतः ६ और ३० शक्ति इस्तेमाल होती है।

——:o:——

एलेट्रिस फेरिनोसा।

ALETRIS FARINOSA.

स्त्री जननेन्द्री के ऊपर इसकी उत्तम क्रिया है। विशेषतः स्त्री-अंग की शिथिलता व जरायु के टल जाना (Prolapsus-

uteri) श्वेतप्रदर, सर्वदा गर्भपात का स्वभाव और बांझपन में यह औषध्र वहुत उपकारी है। इसका प्रधान लक्षण नीचे लिखा जाता है।

शिर में वहुत थकावट, घबराहट और भारीपन मालूम होता है; दिमाग को स्थिर रख नहीं सकता है। दिमाग बहुत सुस्त हो जाता है।

ऋतु ठीक समय से पहले, बहुत परिणाम से होता है और उसके साथ प्रसव के सदृश दर्द होता है। जनुपयुक्त पोषण और बहुत दिन तक विमारी में भोगने से स्त्रीओं की दुर्ब्बलता के निमित्त यह औषध्र विशेष फलदायक है।

किसी कारण से, जैसे—बहुत सा बच्चे पैदा होने से; जरायु शिथिल हो जाय और टल जाय तो इस औषध्र से अवश्य आराम होता है। जरायु, की शिथिलता के कारण गर्भपात के आदत में यह महोपकारी है।

साधारणतः Q, १x और ३x॰शक्ति व्यवहार होती है।

——(*)——

एलियमसिपा।

ALLIUM CEPA.

यह दवा प्याज से बनती है।

यह औषध प्रधानतः नया सर्दी में फलदायक है। नाक और आंख से बहुत सा पतला पानी निकलता है। नाक के पानी ज्वाला पैदा करने वाला और जखम पैदा करने वाला होता है; बहुत छींक आता है। उसके साथ शिर के सन्मुख भाग में बहुत दर्द होता है। यदि ऊपरोक्त लक्षण मिले तो यह औषध कोदबा और निउरलजिया (स्नायूशुल) में भी फलप्रद होता है।

सन्ध्या काल में और गृह में रोग की वृद्धि और खूली हवा में कमी होना इसका प्रिय लक्षण है।

साधारणतः १x और ३x व्यवहार होता है।

एलो सकोट्रीना।

ALŒ SOCOTRINA.

यहदवा मुसब्बर से बनती है।

दस्त की बिमारी के लिए यह एक आला दवा है। पीला रंग

के छड़छड़ा अथवा चमकीला आंवयुक्त पानी की तरह मल का बहुत प्रमाण से होना इसका स्वभाविक लक्षण है। रोगी के मलद्वार की शक्ति नष्ट होने के कारण से मलवेग को रोक नहीं सक्ता है, दौड़ कर पैखाना में जाता है। रोगी पेशाब करने के समय अथवा वायूत्याग करने के समय मलत्याग कर डालता है। मलत्याग करने के पहले पेट में बहुत गड़बड़ाहट होता है, रोगी का ख्याल होता है कि मलद्वार में बहुत सा तरल वस्तु भरा हुआ है और वह अभी निकल आवेगा। मलत्याग के बाद रोगी अत्यन्त कमजोर हो जाता है। यह दवा खूनी पेचीश में भी अति उत्तम है। मलत्याग करने के समय कुंथता है; सर्व्वाङ्ग में चटचटा पसीना होता है। प्रातःकाल में दस्त का बढ़ना इसका अतिशय प्रिय लक्षण है। दिन भर मल के वेग होता रहता है। रात में जागता है और सुबह ६ बजे उठ कर ही पैखाना जाने के लिये दौड़ता है (पडोफाइलम, सलफर, नेट्रम-सल्फ)

कब्ज में भी मलद्वार की सून्य अवस्था (नताकती)

देखी जाती है; कठिन मल निकलने के समय भी रोगी को कुछ भी मालुम नहीं होता है ।

बवासीर वा अर्श रोग में भी यह एक प्रधान दवा है। रोगी का मलद्वार आंगुर के थोका की तरह होकर निकल आता है; उसमें बहुत दर्द होता है किन्तु ठंढा जल के प्रयोग से आराम होता है। अर्श के मस्से में खुजली होता है। जरायु के टल जाना भी एलो के विशेष लक्षण है; जरायु में भारीपन मालुम होना और प्रसव की तरह दर्द होता है और वह दर्द खड़ा होने से ज्यादा होता है। मासिक ठीक समय से पहले और अधिक परिमाण से होती है। इसके साथ मलद्वार में भी पूर्णता, भारीपन और गर्मी मालुम होता है।

साधारणतः ३० और २०० शक्ति व्यवहार होती है।

——:※:——

एलुमिना । ALUMINA.

एलुमिनिअम नाम के धातु से यह दवा बनती है। मलद्वार के ऊपर इस दवा की शख्त क्रिया होती है।

मलद्वार सुन्य हो जाता है। थोड़ा सा कठिन मल निकलने के वाद मलद्वार में दवाने और जख्म के सदृश दर्द होता है। मलद्वार क्रिया हीन हो जाता है, ऐसा की नरम मल निकालने में भी वहुत कुथने पड़ता है। जव तक मलद्वार में वहुत सा मल जमा न हो तव तक मलत्याग करने की कुछ भी इच्छा नहीं होता है और मलत्याग भी नहीं कर सकता है। ओपियम की तरह इसका मल भी कभी २ भेलाड़ी के सदृश काला और गुठली गुठली होता है और मलत्याग काल में मलद्वार में कतरने की तरह दर्द होता है कभी २ मलत्याग के वाद रक्त स्राव होता है।

रक्तालपतता के लिए भी यह एक महौषध है। रोगीका चेहरा विलकुल फिका होता है। रोगी अत्यन्त दुर्व्वल और सर्व्वदा थका हुआ रहता है। स्त्रीओं के ऋतुश्राव अल्प और रक्त का रंग मैला होता है; श्वेतप्रदर के निमित्त यह दवा उत्तम है। श्राव स्वच्छ ज्वाला के साथ और जखम करने वाला होता है और केवल दिन को होता है। श्राव के परिमाण इतना अधिक होता है कि पांव पर से वहकर निचे गिरता है। इस प्रकार की रोगिणी में एक वड़ा अज़व लक्षण देखा

जाता है रोगिनी तौर बेतौर का अखाद्य वस्तु यथा-कोयला, राख, चूना, मट्टी, खपड़ा इत्यादि खाना चाहती है और खाती भी है। एलूमीना का रोगी आलू नहीं खा-सकता है।

गले के पुराना जखम में भी एलूमीना व्यवहार होता है। गला लाल और प्रदाहयुक्त। गला इतना रूखा होता है कि रोगी गला साफ करने के लिए बार बार चेष्टा करता है, सुवह और साम को गले में वहुत लस्सादार वलगम अटका हुआ रहता है। मालुम होता है कि गले में कांटी अटका हुआ है। गले में जखम और सिकुड़ने की तरह दर्द होता है।

पुराना सर्दी :—नाक में चोइयां जम जाता है। वहुत दर्द होता है नाक से जल और पीला वलगम निकलता है। (ग्राफाईटिस, हाईड्रासटिस, केलि-बाई, पलसेटिला, मारक्यु-रियस); नाक के छेदों को पृथक करने वाला दिवार (सेपटम) फूला, लाल और दर्द वाला; नाक के नोक फटा हुआ।

लगातार शख्त सूर्खी, खांसी के साथ कै होता है और

दम रुक जाता है। गला सूखा हुआ होता है और उसमें सुरसुराहट होता है।

निम्न शाखा अत्यन्त भारी होता है; मुशकिल से पैर को संचालित कर सकता है चलने के समय मतवाला के ऐसा टलता रहता है। मज़बुरन बैठने पड़ता है। उस हालत में भी पैर में बहुत थकावट मालूम होता है। रोगी आंख मुंद कर चल नहीं सकता है। यह लक्षण लोकोमोटर ऐटाक्सी नामक बिमारी में होता है। चलने के समय एड़ी में झिनझिनी पैदा होता है और पैर के तलवे में फोड़े की तरह दर्द होता है।

रोगी हमेशा थका हुआ रहता है और लेटा रहना चाहता है।

टेढ़ी नज़र; आंख से बहुत पानी गिरना; आंख में ज्वाला; धुन्धली नज़र; आंखों का पपुटे मोटा, सूखा और उस में जलन इत्यादि एलुमिना का प्रिय लक्षण है।

मलत्याग के समय जोर लगाने से पेशाब निकलता है; अथवा बहुत जोर न लगाने से पेशाब नहीं निकलता है; ब्लाडर और जननेन्द्री में बहुत कमजोरी मालूम पड़ती।

साधारणतः ३० और २०० शक्ति व्यवहार होती है।

एमोनिया बेन्जुयट

Amonia Benzoate

घोड़ा के पेशाब के समान बदबूदार पेशाब, पेशाब का रंग लाल, रक्तयुक्त एवं गाढ़ा लाल रंग का सेडिमेन्ट (Sediment गाद) पेशाब में पड़ना—वात के साथ रक्त मिश्रित और रक्तवर्ण पेशाब होने से यह दवा देना अवश्य है।

गेठिया (गिरहवात) अर्थात् छोटे २ जोड़ोंपर प्रदाह और दर्द युक्त और रक्त वर्ण धारन करता है।

हाथ के अंगूठे में यदि रस जमा होकर अत्यन्त दर्द हो तब यह दवा का प्रयोग करना अति उपयोगी है।

शक्ती न० ३, ६ और न० ३०

एम्ब्रा-ग्रिसिया

Ambra-Gresia

यह औषध स्नायुयन्त्र के ऊपर विशेष भाव से क्रिया करता है। उससे हिस्टिरिया के सदृश लक्षण प्रकाश पाता है। हिस्टिरिया के रोगी के लिये यह एक उत्तम औषध है। स्मरणशक्ति के नष्ट हो जाना और हर एक कार्य्य शीघ्र २ करना इसका विशेष लक्षण है। रोगी मालूम करता है कि समय बहुत धीरे २ जा रहा है।

यह औषध शिशु विशेषतः नाजुक मिजाज की और दुर्बल अविवाहित युवती के लिये और सहज से सर्दी लगने के स्वभाववाला पतला दुबला लोग के लिये अति उपकारी है।

स्त्री-यन्त्रादि के ऊपर इसकी अति उत्तम क्रिया है। बाहरी स्त्री अंग (भलभा) में बहुत खुजलाहट होता है। हाथ से उसपर रगड़ना पड़ता है। ऋतुश्राव के प्रकृत समयों के मध्यवर्ती समय में रक्तश्राव होता है। सामान्य कारण से ऐसी की जरासा हिलने, डोलने, से या मलत्याग करने के समय जोर लगाने से ही रक्तश्राव होता है। श्वेतप्रदर गाढ़ा, नीला अथवा सफेद होता है। विशेषतः सिर्फ रात में प्रदरश्राव होता है (कष्टिक, मार्क-कर, नाइट्रिक-एसिड)।

खांसी:—आक्षेप के साथ अति भयानक खांसी और उसके साथ ढेकार आना और गला बैठ जाने के सदृश शब्द होता है। बात करने के समय खांसी बढ़ता है। प्रातःकाल में बलगम निकलता है किन्तु सन्ध्या के समय सूखी खांसी होती है।

इस दवाई में भी नक्स-भोमिका की तरह बार बार मल-त्याग करने की निष्फल चेष्टा होती है किन्तु इसका विशेष

लक्षण यह है कि रोगिणी मलत्याग के समय उसके पास किसी का रहना बर्दास्त नहीं कर सकती है। मलवेग से रोगिणी अस्थिर होती है। * पेट में ठंढ मालुम होना इस दवाई का प्रिय लक्षण है।

पेशाब करने के समय पेशाब गदला होता है किन्तु कुछ देर तक रहने से उसके नीचे भूरा रंग का गाद जमता है और उसके ऊपर का पेशाब साफ और पीला होता है।

अनिद्रा—यदि नाना प्रकार विषय-चिन्ता से दिमाग की दुर्व्वलता-हेतु नींद न हो तो इस औषध के प्रयोग से अवश्य फल होगा। अनिन्द्रा के साथ मांस पेशी का आक्षेप होता है।

नासिका से रक्त श्राव—विशेषत प्रातः काल में उसकी ज्यादती: सूखा खून नाक में जमा हुआ रहता है। स्वांस-प्रस्वांस दुर्गन्धी होता है।

साधारणतः ६ और ३० शक्ति व्यवहार होती है।

एमोनियम कार्बोनिकम

Ammonium Carbonicum.

यह दवा नौशादर से बनती है।

ढीली, मोटी स्त्री लोग, जो हमेशा थकी हुई रहती हैं, सर्वदा बैठी बैठी दिन काटती हैं, जिसको ठंढ जल्दी लगता है, और जिसको ऋतु के पहले कालेरा की तरह लक्षण होता है उसमें यह औषध विशेष उपयोगी है।

पुराना अथवा नया उभय प्रकार के सर्दी में ही यह औषध व्यवहार होता है। इसका विशेष लक्षण यह है— रात में रोगी का नाक बन्द हो जाता है। इस कारण मुंह से स्वांस लेना पड़ता है। यह लक्षण सैम्बुकस, लाइकोपोडियम, नक्स-भोमिका और स्टकटा में भी है इसलिये इस दवाई को उन सबों के साथ मुकाबिला करना चाहिये। इस दवाई के और एक आश्चर्य्य लक्षण है। प्रातःकाल में और मुंह धोने के समय नाक से रक्तश्राव होता है।

यह औषध दुष्ट प्रकृति के स्कारलेट (लाल) ज्वर में जब बहुत नींद आती है, गले में गाढ़ा लाल या सड़ा जखम होता है। कर्णमूल फूल जाता है, स्वांस-प्रस्वांस खरांटे के साथ

होता है और दिमाग का पक्षाघात होने का डर होता है तब इससे विशेष उपकार होता है।

इउरिमिया वा मूत्रबन्द होने के सबब से खून विषैला होने पर विशेष कर जब नींद बहुत होती है और चेहरा बैंगनी रंग का हो जाता है, तब यह दवा इस्तमाल होती है।

अकसर इरिसिपेलस (जहरवाद) में विशेषतः वृद्ध मनुष्य में, जब रक्त दूषित होकर जखम गंग्रिन की अवस्था प्राप्त होता है अर्थात सड़ जाता है, तब यह औषध दिया जाता है।

खतरनाक ब्रोंकाइटिस अथवा न्युमोनिया इत्यादि में रक्त की विषैली अवस्था जनित डिलीरियम, बेहोशी, स्टूपर वा मतवाला की तरह अज्ञान अवस्था होती है तोभी यह औषध बहुत उपकार करता है। दम्मा की बिमारी में यदि इसका स्वाभाविक लक्षण मिले तो यह फायदा करता है।

ऋतुश्राव ठीक समय के बहुत पहले और बहुत परिमाण से होता है। श्राव के पहले शूल के सदृश दर्द होता है। श्राव से जांघ में जखम हो जाता है। रात में और लेटे रहने से श्राव ज्यादा होता। ऋतु के समय दांत में दर्द होता है। श्वेतप्रदर पतला पानी की तरह और जख्म पैदा करनेवाला होता है।

खांसी।—सूखा खांसी गले में सुरसुराहट होता है; रात ३ या ४ बजे ज्यादा होता है। न्युमोनिया में बैगनी या काला रंग का बलगम निकलता है और छाती में घड़घड़ाहट आवाज़ होती है।

साधारणतः ६ और ३० शक्ति व्यवहार होती है।

एनाकार्डियम

ANACARDIUM.

यह दवा भेलावा से बनती है।

दिमाग के ऊपर इस औषध की आश्चर्य्य क्रिया देखी जाती है। यह स्मृतिशक्ति का एक महौषध है। हरएक विषय ही रोगी को स्वप्न की तरह मालुम पड़ता है। स्मरणशक्ति बहुत दुर्ब्बल हो जाती है। अचानक भूल हो जाने के कारण रोगी की अवस्था अत्यन्त कष्टदायक होती है। वृद्ध लोगों में एनाकार्डियम द्वारा विशेष फल होता है।

रोगी को हमेशा कसम खाने की और श्राप (बद दुआ) देने की बहुत इच्छा होती है। रोगी को ख्याल होता है कि उसकी दो इच्छा है, एक इच्छा कोई कार्य्य करने के

लिए उत्साहित करती है। दूसरी इच्छा उसमें बाधा देती है।

रोगी अपने ऊपर या और किसी के ऊपर विश्वास कर नहीं सकता है, सब ही पर सन्देह करता है।

चलने के समय रोगी को ख्याल होता है कि कोई उसके पीछे पीछे आ रहा है। और उससे वह बहुत डरता है।

एनाकार्डियम के और एक आश्चर्य्य स्वभाव है,—रोगी परिहास-योग्य विषय में निहायत गम्भीर हो जाता है और नितान्त गुरुतर विषय में परिहास करता है।

रोगी को मालूम होता है कि उसके शरीर के कोई स्थान खूब कसकर बांधा हुआ है (केक्टस, कार्बालिक एसिड) और मालुम पड़ता है कि शरीर के किसी जगह में भोथा अस्त्र भरा हुआ है। यह मानसिक लक्षण जहां मिले वहीं एनाकार्डिम का स्मरण करना चाहिये।

पाचकयन्त्रों के ऊपर भी इस दवाई का बहुत क्रिया होता है। बवासीर; कब्ज के साथ रोगी को सर्वदा अपनी बिमारी का ध्यान रहता है और उससे वह सर्वदा दुःखी रहता है। मलत्याग करने की बहुत इच्छा होती है, किन्तु बहुत चेष्टा करने से भी मल नही निकलता है, मालुम होता

है की मलद्वार में काग अटका हुआ है। डिसपेपसिया (बदहजमी) रोग में यह महौषध है। पान अथवा आहार के समय खाना गले में रुक जाता है। मेदा खाली रहने से उसमें दर्द होता है, आहार करने से दर्द की कमी होती है; यह लक्षण एनाकाडियम का अति प्रिय है। (लक्स-भोमिका में मेदे का कष्ट, भोजन के दो तीन घंटे के बाद होता है)। जो लोग बैठे २ दिन काटते हैं और जिसको मेदा की गड़बड़ी रहता है, उसके सिर दर्द में यह औषध उत्तम है। लेटी हुई हालत में निद्रा आने के कवल में और भोजन के समय शिरपीड़ा की कमी होती है।

चर्म के उपर भी एनाकाडियम की क्रिया देखी जाती है। इरिसिपेलस के सदृश इरपशन होना इसका एक प्रधान लक्षण है; इरपशन पीबदार और फूला; उस में खुजलाहट और ज्वाला होता है। उससे पीला रंग का चटचटा रस निकलता है।

शक्ति—३०—२०० ।

एन्थ्रासाइनम

ANTHRACINUM.

प्लेग, पाईमिया, सेप्टिसिमिया, दुष्टमातः कारबंकल, दुष्ट प्रकृति के प्राणनाशक जखम इत्यादि में आर्सेनिक की तरह अत्यन्त ज्वाला युक्त दर्द और निहायत निस्तेज अवस्था में इस औषध के प्रयोग से महाउपकार होता है। किसी प्रकार की फोड़ा फून्सी अथवा जखम हो अगर उसका रंग काला या नीला हो और वह सड़ने लगे और उसमें बहुत ज्वाला हो तो एन्थरासाइनम दिया जाता है। आर्सेनिक भी इसी लक्षण पर दिया जाता है। यदि आर्सेनिक से फायदा न हो तो एन्थरासाइनम द्वारा विशेष फल पाया जायगा।

रक्तश्राव—शरीर के नाना स्थान से रक्तश्राव होता है रक्त काला, गाढ़ा और अलकतरा के सदृशः शीघ्र ही सड़ जाता है। (क्रोटेलस)। यह औषध आर्सेनिक, लैकेसिस सिकेलि, क्रोटेलस, पाईरोजेन इत्यादि औषधियों के सम-तुल्य है।

शक्ति ३०—२००।

एन्टिमोनियम क्रुडम

ANTIMONIUM CRUDUM.

इस औषध का जीभ के लक्षण ही सर्व प्रधान हैं। किसी प्रकार की बिमारी हो यदि यह जीभ का लक्षण मिले तो एन्टीम क्रूड देने में सङ्कोच नहीं करना चाहिये। जीभ के ऊपर सफेद, मलाई की तरह मोटा मैल पड़ना। इस लक्षण को सर्वदा स्मरण रखना। अन्याय और अतिरिक्त भोजन करने के हेतु मेदा की पीड़ा हो और जीभ का लक्षण मिले तो अवश्य इस औषध को प्रयोग करो। आहर के बाद जी मिचलाना, बार २ ढेकार आना और ढेकार के बाद भोजन की बू और स्वाद मालुम होना और ऐसा मालुम होना कि खाया हुआ वस्तु कै न हो जाने से आराम न होगा इत्यादि लक्षण पर एन्टिमक्रूड अति उत्तम क्रिया करता है। गर्मी के दिनों के दस्त में ब्राइयोनिया के सदृश एन्टिम-क्रूड भी उत्तम है। मल के कुछ अंश कठिन और कुछ अंश पतला होता है; अजीर्ण दस्त होता है। वृद्ध लोगों का अदल बदल कर दस्त और कब्ज होने में यह औषध विशेष उपकारी है।

बवासीर रोग में भी एन्टिम क्रूड व्यवहार होता है; उसके

मस्से से हमेशा रस निकलता रहता है (सिपिया पियोनिया)।

इस दवाई के मानसिक लक्षण कैमोमिला और सिना के मानसिक लक्षण की तरह ही प्रधान है। शिशु बहुत चिड़चिड़ाहा, ऐसा की उसके तरफ ताकने से अथवा उसको स्पर्श करने से ही अत्यन्त क्रोध होता है और रोता है। एन्टिम-क्रूड के शिशु कैमोमिला के शिशु के सदृश गोद्दी में चढ़ कर टहलते फिरने से शान्त नहीं होता है।

गेस्ट्रिक ज्वर (पेट की खराबी से ज्वर) और सविराम ज्वर में भी एन्टि-क्रूड के व्यवहार होता है; ज्यादा प्यास के साथ रात को ज्वर की वृद्धि होती है। इस औषध के स्वाभाविक जीभ और मानसिक लक्षण मिलने से इससे अति उत्तम फल होगा।

नाखून फटा फटा होकर निकलता है, और उस पर सफेद सफेद विन्दु बिन्दु दाग देखा जाता है; पैर के तलवे में ढेला (corns) ; चलने के समय उसमें बहुत दर्द होता है; नाक के सुराख के चारो तरफ के चमड़ा और ओष्ठों के मध्य भाग फटा फटा होता है, यह एन्टिम-क्रूड के अति स्वाभाविक लक्षण है।

चांदनी रात में नाना प्रकार के मानसिक कष्ट, विशेषतः मोहब्बत के विषय में ध्यान होता है मोहब्बत से वंचित होने का कुफल में यह अति उत्तम है।

एन्टिम-क्रूड के रोगी ठंढा पानी में कभी नहाना नहीं चाहता है, ऐसा कि ठंढा पानी में नहाने से ही उसके रोग की वृद्धि होती है। यदि दरिया में नहाने से कोई पीड़ा हो तो एन्टिम-क्रूड को स्मरण करो।

एन्टिम-क्रूड के रोग सूर्य्य के ताप से वृद्धि पाता है। गर्मी के दिनों में नितान्त निस्तेज अवस्था होती है। अत्यन्त गर्मी के हेतु स्वरभङ्ग।

खोखले दांत में दर्द, दर्द रात को बढ़ता है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

एसेटिक एसिड

ACETIC ACID.

यह ग्लेशियल सिरका से बनती है।

यह औषध ऐनिमिया वा रक्तालपता, बहुमूत्र, उदरामय,

थाइसिस, पाथस्थली के कैन्सर हाइड्राफाविया, क्रूप इत्यादि वहुत रोग में अत्यन्त उपकारी है।

कम खून के पतला दुवला लोगों के मांसपेशी शिथिल, चेहरा मोम की तरह सफेद। यह एसेटिक-एसिड के सव प्रधान लक्षण है।

नाना प्रकार के रक्तश्राव के निमित एसेटिक एसिड एक उत्तम औषध है, नाक फेफड़ा, गला, मेदा, जरायु, अंतरी इत्यादी किसी जगह से रक्तश्राव हो। प्रतिनिधि (vicarious) रक्तश्राव अर्थात एक स्थान के रक्तश्राव बन्द हो कर अन्य स्थान से रक्तश्राव होना। आघात लग कर नाक से रक्तश्राव। मेट्रोरेजिया वा जरायु से ज्यादा रक्तश्राव।

शिशुओं का शरीरशीर्णता वा सुखाड़ी और क्षयरोग में यह औषध विशेष उपकारी है (एब्रोटेनम, आइयोड, सेनिक्युला, टिउवरकुलिन)।

आघात इत्यादि के वाद अत्यन्त दुर्वलता: नस्तर देने से शरीर में चमक लगना: क्लोरोफोर्म इत्यादि के प्रयोग के कुफल दूर करने के निमित्त यह औषध प्रयोग होता है।

इस औषध में एक विशेष प्रकार का प्यास देखा जाता है।

शोथ, बहुमुत्र, पुराना दस्त इत्यादि रोग में ज्वाला के साथ प्यास इतना ज्यादा होता है कि बहुत परिमाण से पानी पीने से भी प्यास नहीं जाता है किन्तु ज्वर में प्यास बिलकुल नहीं होता है।

खट्टा ढेकार आना, गर्भावस्था में कै होना और छाती में ज्वाला के साथ मुंह में बहुत पानी आना और दिन रात हर समय मुंह से बहुत लार आना इत्यादि एसेटिक-एसिड का स्वाभाविक लक्षण है।

उदरामय—मल, प्यास और दुर्बलता बहुत होता है। यह औषध शोथ, टाइफायड ज्वर, यक्ष्मा रोग इत्यादि के दस्त में अति उत्तम है; दस्त के साथ रात में बहुत पसीना होता है।

क्रूप खांसी ; श्वासप्रश्वास में सांय सांय शब्द होता है ; गर्म भाफ से श्वास लेने से खांसी होता है; अन्तिमावस्था।

ऐसेटिक-एसिड का रोगी चित होकर लेट नहीं सकता है, उस को मालूम होता है कि उसका पेट भीतर के तरफ डुबा जा रहा है और श्वासकष्ट होता है। पेट को दबा कर लेटने से आराम मालुम होता है।

हेकटिक ज्वर, (तपेदिक) : चमड़ा सूखा और गरम; बायां गाल लाल वर्ण; रात में पसीना से शरीर भींग जाता है।

शक्ति १—३—३० वा उच्च शक्ति।

एन्टिम टार्ट।

ANTIMONIUM—TART.

यह टार्टार एमेटिक से बनती है।

फेफड़े के ऊपर इसकी क्रिया विशेष भाव से देखी जाती है मालूम होता है कि छाती बलगम से भरा हुआ है— छाती में घड़घड़ आवाज होती है किन्तु खांसी के साथ बलगम नहीं निकलता है। अत्यन्त निद्रा के भाव, दुर्बलता और पसीना इसका स्वभाविक लक्षण है। मतवाल और गाउट (गठिया) के रोगी के अजीर्ण रोग में भी यह औषध उपकारी होता है। रक्त-वहनकारी शिरा समूह में ठंढ मालुम होना।

इपिकाक के सदृश एन्टिमोनियम में भी वमन की इच्छा देखी जाती है किन्तु यह इपिकाक के सदृश लगातार नहीं है। वमन (कै) के बाद उसकी कमी होती है और रोगी अत्यन्त

दुर्बल होकर सो जाता है; सिवाय दहिना करवट के और किसी करवट लेटने से कै होता है। यह औषध कालेरा में भी विशेष उपकारी है, जहां वमन, ठंढा पसीना, निस्तेजता और अत्यन्त निद्रा के भाव वा अज्ञानता देखी जाती है और प्रतिवार वमन के बाद रोगी को कुछ देर के लिये आराम और निद्रा के भाव मालुम होता है, वहां एन्टिमोनियम के प्रयोग से बहुत फल मिलता है।

फेफड़े के ऊपर इस औषध के विशेष लक्षण देखा जाता है ब्रांकाइटिस, निउमोनिया, क्रूप, दम्मा इत्यादि में यदि फेफड़े में बहुत ढीला बलगम रहे और छाती में घड़घड़ाहट हो किन्तु खांसी के साथ बलगम कुछ भी न निकले तो एन्टिम टार्ट के प्रयोग से अवश्य लाभ होगा।

तन्द्रावस्था वा उंघाय वो अत्यन्त निद्रा—भाव भी इसका विशेष स्वाभाविक लक्षण है। निउमोनिया रोग में अज्ञानवस्था में ओपियम और एन्टिम;टार्ट दोनों व्यवहार होते हैं,—और स्वांस में खरराटे आवाज होती है, किन्तु एन्टिम टार्ट के रोगी का चेहरा मलिन और नीलापन होता है।

स्वांस बन्द— (Suffocation) पानी में डुबने के हेतु स्वांस बन्द और मुर्दे की तरह अवस्था फेफड़े का पक्षाघात (Paralysis) लेरींगस अथवा ट्रेकिया के अन्दर कोई

वस्तु अटक जाने के हेतु स्वांस बन्द तन्द्रा और अचेतन अवस्था के साथ श्वांस वन्द।

यह माता (Small Pox) में भी उत्कृष्ट औषध है ऐसा कि यदि माता के प्रादुर्भाव के समय किसी को कालेरा हो तो उस में भी एन्टिम-टार्ट आश्चर्य्य काम करता है।

ज्वर इत्यादि कोई विमारी हो यदि स्वांस के लक्षण के साथ बहुत निद्रा और अचेतन अवस्था मिले तो एन्टिम-टार्ट से अवश्य लाभ होगा।

भेकसिनेशन (टीका) के हेतु कोई कुफल होने से यदि थूजा से कोई उपकार न हो और साइलिसिया का भी कोई लक्षण न मिले तो एन्टिम-टार्ट देने से लाभ होगा।

जीभ सफेद लेई की तरह मोटा मैल वाला होता है और उसके बीच बीच में लाल रङ्ग के दानें देखा जाता है: उसका दोनों बगल भी लाल होता है अथवा जीभ के मध्यभाग में लाल रंग के लकीर अथवा मध्यभाग सूखा और लाल रंग होता है।

शिशु बहुत चिरचिराहा स्वभाव का होता है।

शक्ति ६—३०—२००।

एपिस मेलिफिका

APIS MELIFICA.

यह मधुमक्षी से बनती है।

ज्वाला के समय डंक मारने वाला दर्द के साथ आंख, आंख के पपुटे, कान, मुख मण्डल, ओष्ठ, जीभ, गला, मलद्वार अण्डकोष इत्यादि किसी स्थान में शोथयुक्त, लाल रंग का फूलन और स्पर्शासहिष्णुता। निद्रा में अचानक जोर से चित्कार मारना प्यास न होना, उत्ताप, बर्दास्त न कर सकना, साम ३ बजे से ९ बजे के अन्दर रोग की वृद्धि इत्यादि एपिस का सर्व प्रधान लक्षण है। बिमारी का नाम जो कुछ हो हो यदि ये लक्षण मिले तो एपिस के प्रयोग द्वारा अवश्य लाभ होगा।

प्लेग, कारबंकल, दस्त, शोथ, इरिसिपेलस (जहरबाद) चक्षुरोग, हाइड्रोथोरैक्स, ब्राइट पीड़ा, मेनिन्जाइटिस, ओभारी के दर्द, टिउमर, वात रोग, किसी प्रकार इरपशन के दब जाना, गलनली में जखम, माता, इन्टारमिटेन्ट फिबर इत्यादि नाना प्रकार की बिमारी में यह औषध व्यवहार होता है।

ज्वालायुक्त डंक मारने के सदृश दर्द एपिस का अतिस्वाभाविक लक्षण है और एपिस का प्रायः सर्व प्रकार

बिमारी में यह लक्षण मिलता है। मेनिन्जाईटिस इत्यादि रोग में दिमाग में जल संचय होने से इस प्रकार के कष्ट के हेतु जब रोगी रह रह कर अचानक कड़ी आवाज से चित्कार मारता है, तब एपिस महौषध है। इस प्रकार के कष्ट गला, मलद्वार, अर्श (बवासीर) डिम्बकोष इत्यादि स्थान में होने से एपिस को अति उत्तम औषध जानो। अंगुलबेड़ा (whitlow) ऐसा की केन्सर रोग में भी ज्वाला युक डंक मारनेवाला दर्द होने से उसी समय एपिस का स्मरण करो। एपिस के इस प्रकार का कष्ट गरम प्रयोग से अधिक होता है और शीतल प्रयोग से कम होता है।

शोथरोग में एपिस अति उत्कृष्ट औषध है। प्रायः प्रदाह का प्रथम अवस्था से ही शोथ आरम्भ होता है और वह शोथ ऐसा कि पुरानी अवस्था भी प्राप्त होता है: आंख के नीचले पपुटे में शोथ मानुरा पानी भरा हुआ थैली की तरह दिखाई पड़ता है; दोनों पैर और दोनों हाथ में शोथ; शोथ रोग में प्यास नहीं होता है (प्यास रहने से एसेटिक-एसिड, एपोसाइनम व्यवहार होता है); रोगी सामान्य स्पर्श भी सह नहीं सकता है।

शोथ होना भी एपिस का अति प्रधान लक्षण है। शोथ

किसी जगह पर हो यदि उसमें ज्वालायुक्त, डंक मारने वाला दर्द, शीतल प्रयोग से आराम बोध, छुना न सहना और प्यास न होना रहे तो एपिस अवश्य फलप्रद होता है।

जलोदरी में उपरोक्त लक्षण मिले तो अवश्य एपिस देना चाहिये। ओभारी के शोथ रोग में उपरोक्त लक्षण मिलने से एपिस के प्रयोग से लाभ होता है। स्वांस में अतिशय कष्ट होना एपिस का शोथरोग में एक प्रधान लक्षण है। शरीर के दहिना अंग में पीड़ा होने से एपिस का स्मरण करना चाहिये; दहिना ओभारी के ड्रप्सि (शोथ), दहिना अण्डकोष की वृद्धि।

डिफथिरियों रोग में जब गलनली के चारो तरफ़ शोथ युक्त हो जाता है, घन्टी (uvula) जल पूर्ण थैली की तरह दिखाई पड़े, स्वांस में अत्यन्त कष्ट हो और उसमें ज्वाला-युक्त डङ्क मारने वाला दर्द हो तो एपिस प्रयोग करने से अवश्य आराम होगा। गलनली की पीड़ा में यदि तकलीफ न रहे तो बैपटिसिया प्रयोग किया जाता है।

कोढ़वा माता इत्यादि के दानें अच्छी तरह से न निकलने के कारण या निकल कर दब जाने के हेतु किसी प्रकारकी पीड़ा हो तो एपिस प्रयोग होता है। किसी प्रकार का चर्मरोग दब

जाने के हेतु दिमाग आक्रान्त होने से एपिस द्वारा फल पाया जायगा। चर्मरोग दब जाने के हेतु मैनिन्जाइटिस, दस्त वगैरह होना।

उदरामय—मल पीला और पतला, या सबज; सामान्य हिलने डोलने से ही अपने आप मल निकल जाता है; मलद्वार खुला रहता है, प्यास नहीं रहता है; उदर में छूना न सहना, और सामान्य स्पर्श से ही रोगी चौंक उठता है, अज्ञानावस्था और कभी २ तेज आवाज से चितकार मारना।

शिशुओं का उदरामय और कै कालेरा रोग में एपिस महौषध है। शिशुओं का उदरामय के बाद सिर में जल संचय होकर उदर (पेट) में स्पर्श हिंगुता, प्यास न होना समय समय चित्कार मारना इत्यादि लक्षण वर्तमान रहने से एपिस उत्तम है।

रिसिपेलस रोग में यदि गात्रचर्म शोथयुक्त हो जाय और उसके साथ ज्वालायुक्त डङ्क मारनेवाला दर्द रहे तो एपिस उत्तम क्रिया करता है।

जिस ज्वर में एकबार पसीना होता है और उसके बाद

हाँ शरीर नर्म होकर पसीना सूख जाय उसमें ऐपिस उत्कृष्ट है। दिन ३ बजे के समय शीत होकर सविराम ज्वर और उसके साथ अत्यन्त प्यास।

पेशाव को रोक न सकना, पेशाव करने के वाद भयानक ज्वाला; पेशाव वहुत थोड़ा व खून मिला हुआ; वार वार पेशाव होता है। पेशाव के नली में डंक मारने की तरह दर्द।

शक्ति ६—३०—२०० ।

आर्निका मन्टेना ।

ARNICA MONTANA.

यह औषध एपोप्लेकसि, (सन्यास) फोड़ा, वर्रे (acne) दुर्गन्धी मुंह, दुर्गन्धी कै आघातादि, ऐंठन, वहुमूत्र, रक्त-पेशाव के वाद कष्ट, लम्वेगो, मेनिन्जाइटिस, स्वरभङ्ग, हुपिङ्ग कफ इत्यादि रोग मे फलप्रद होता है।

वदन मे चोट लगने के ऐसा दर्द होना आर्निका के स्वाभाविक लक्षण है, इस कारण शरीर के किसी स्थान मे आघातादि

लग कर दर्द या और कोई कष्ट होने से आर्निका उत्कृष्ट औषध है। ऐसा कि बहुत दिन पहले आघात लगा था और उसी समय से कोई पीड़ा होकर रोगी किसी तौर से भी आराम न हो रहा; ऐसी हालत में उच्च शक्ति का आर्निका अतिशय लाभ दायक है। आघात किम्बा चोट लगने से अज्ञानावस्था, बेखबरी से मूत्रत्याग चोट की जगह का पक जाना और सेप्टिक अवस्था, हड्डी टूटना इत्यादि में आर्निका मन्त्र की तरह क्रिया करता है।

सर्व शरीर में आघात लगने के सदृश दर्द और रोगी जिस करवट पर लेटता है वही दुःखता है और बिछावन कठिन मालुम होता है, इस कारण रोगी सर्वदा करवट बदलता है। यह लक्षण इसका अतिशय प्रिय है। कोई रोग हो यदि उसमें इस प्रकार के दर्द हो तो अन्यान्य लक्षण के साथ मिला कर आर्निका प्रयोग करना चाहिये।

वैपटिसिया के रोगी भी बिछावन को लकड़ी की तरह कठिन बोध करता है और शरीर में दर्द मालुम करता है। फाइटोलेका के रोगी के सिर से पैर तक सम्पूर्ण शरीर में जखम की तरह दर्द होता है और वह स्थान अकड़ा हुआ रहता है, और रोगी अत्यन्त कष्ट के साथ गुंगुआते

करवट बदलता है। रसटक्स के रोगी के मांसपेशी में दर्द होता है किन्तु रोगी सर्वदा करवट लेने से आराम मालुम करता है। रूटा के रोगी जिस पार्श्व पर लेटता है उसी पार्श्व में अत्यन्त दर्द मालूम करता है।

टाईफायड के रोगी अज्ञान रहता है और बेखबरी से मलमूत्र त्याग करता है। निकट में किसी को आते देखने से ही डरता है कि पीछे शरीर में चोट लग जाय मुंह से बदबू निकलती है। हवा और ढेकार में सड़े अंडे की तरह बदबू आती है। ढेकार के साथ मुंह में पानी आता है: भोजन के कुछ समय के बाद से दुर्गंधी का होना आर्निका के प्रिय लक्षण है।

जरायु में चोट लगने की तरह दर्द; रोगी सीधा होकर चल नहीं सकता है। प्रसव के बाद योनि इत्यादि के दर्द में यह महौषध है। प्रसव के बाद कई एक खुराक आर्निका देने से रोगिनी के शरीर का दर्द आरोग्य हो जाता है और किसी खतरे का खौफ नहीं रहता है।

आघात लगने के हेतु रक्तश्राव में, आघात किम्वा खांसी के हेतु आंख में रक्तश्राव होने से आर्निका अति उत्तम फल देता है।

चोट के कारण एपाप्लेक्सिस वा दिमाग की सूक्ष्म की नली का फट जाना, उससे बेहोशी, बेखबरी से मूत्रत्याग होना; ऐपाप्लेक्सि की नयी अवस्था में यह औषध प्रयोग करने से रक्तश्राव बन्द हो जाता है।

फोड़ा—छोटे छोटे दर्द नाक फोड़े दल के दल (in crops) निकलते रहते हैं, खास कर सिर और चेहरे पर। दर्द के साथ वर्ते के लिए आर्निका एक खास दवा है।

वात अथवा गठिया में अत्यन्त दर्द; कोई उसके निकट आने से रोगी डरता है कि पीछे वह उसको छुये या चोट देवें।

टाइफायड इत्यादि खतरे नाक बिमारी में बैपटिसिया के साथ आर्निका के बहुत सादृश्य है; दोनों औषध में ही सर्व शरीर में अत्यन्त दर्द व बिछावन कठिन बोध और अग्यानता और पुकारने से बात करते करते फिर सो जाना जीभ में काला व लम्बा २ दाग पड़ना, चेहरा का लाल होना, इत्यादि लक्षण देखा जाता है। इन दोनों का फर्क यह है— बपटिसिया का रोगी सर्वदा पार्श्व बदलता है और उसका कारण पुछने से कहता है कि उसके शरीर के फैले हुए टुकड़ों को इकट्ठा कर रहा है और बैपटिसिया के मल मूत्र, पसीना इत्यादि में बहुत बदबू होती है। किन्तु आर्निका के रोगी अचेतन अवस्था में

मलत्याग करता है और रोगी के शरीर के चमड़े की जगह जगह पर चोट लगने से जैसे काला २ धब्बा पड़ता है वैसाही दाग देखा जाता है।

शरीर के ऊपर वाला हिस्सा गर्म किन्तु नीचे का हिस्सा शीतल। कोई बात पुछने से जवाब देता है किन्तु उसके बाद ही फिर डिलिरियम (विकार) और अचेतनावस्था उपस्थित होता है। यह दोनो आर्निका के विशेष लक्षण है।

अचेतन अवस्थादि विकार के लक्षण के साथ इरिसिपेलस वा जहरबाद रोग में भी आर्निका अति उत्कृष्ट औषध है। बिमारी बार २ जगह बदलती रहती है, मलद्वार में मल भरा रहता है किन्तु निकलता नहीं, मल मोटा फिता के तरह होता है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

एपोसाइनम।

APOCYNUM.

जलोदरी, शोथ, हृद्रोग, मूत्ररोग इत्यादि में यह औषध फलप्रद है।

हाइड्रोकेफेलस वा दिमाग में जल संचय और जलोदरी (पेट में जलसंचय रोग) पीला वा भुरा रंग के दस्त, मल का बहुत जोरसे निकलना, छाती और मेदा में कष्टबोध इत्यादि में यह दवाई उपकारी है। रोगी जिस करवट लेटता है उसी तरफ में पानी जम जाता है और फूल जाता है।

शोथ रोग—नया प्रदाहयुक्त शोथ में अत्यन्त प्यास होता है; पानी पीने से कै हो जाता है; पेशाब और पसीना कम हो जाता है। टाईफायड, स्कारलेटोना, कोद्‌वा, यकृत की पीड़ा और कुनाइन के अपव्यवहार-हेतु शोथरोग में एपोसाइनम विशेष ऊपकारी है। एपोसाइनम का रोगी गरम प्रयोग से आराम बोध करता है। (एपिस का रोगी शीतल प्रयोग से आराम बोध करता है)।

नया हाइड्रोकेफेलस रोग में मस्तक की हड्डियों का जोड़ खुलजाता है; एक आंख की दृष्टि नष्ट हो जाती है;

सर्वदा विना इच्छा से ही एक तरफ का हाथ और टांग हिलता रहता है। ललाट सामने वढ़ा हुआ होता है।

पूर्ण युवती का ऋतुश्राव वन्द हो कर उसके हाथ पैर और पेट में शोथ हो तो यह फायदेमंद है।

अत्यन्त ऋतुश्राव सर्वदा या कभी कभी रक्तश्राव होता है; रक्त तरल या थक्का २ होता है और उसके साथ जी मिचलाना, कै होना, दिल धड़कना और निहायत कमजोरी होती है।

गर्भावस्था में क्षुद्र और खुश्क अथवा गम्भीर और तरल खाँसी होने से इस दवे से उपकार होता है।

शक्ति—३०—२००

——:o:——

आर्जेन्टम मेटालिकम

ARGENTUM METALLICUM

यह विशुद्ध चांदी से वनती है।

एपिलेपसी, मुर्च्छा रोग, दिमाग का रोग, वहुमुत्र, हिपज्वायेन्ट (कुल्हा के जोड़ का) रोग इत्यादि विमारियों में यह दवा उपकारी है।

लम्बा, पतला, चिरचिड़ाहा मिजाज के मनुष्य, पारा का अपव्यवहार जनित पीडा समूह हस्तमैथुन जनित कुफलादि इत्यादि में यह औषध विशेष लाभदायक होता है।

हस्तमैथुन के कुफल से स्वप्नदोष ऐसा की प्रायः हर रात में शुक्रपात होता है। लिङ्ग कठिन नहीं होता है और छोटा और सिकुड़ा हुआ होता है। अण्डकोष में बहुत दर्द होता है।

जरायु, के प्रलेपसस वा उतर जाना: उसके साथ बांया ओभारी में और पीठ में दर्द होकर, वह दर्द सम्मुख और नीचे के तरफ फैल जाता है।

नाक से पतला, दुर्बलकारी सर्दी निकलता है, इसके साथ छींक आता है। पाठक, कथाक, गायक, और वक्तृता करनेवाले मनुष्यों का स्वरभङ्ग (एलूमिना, एरम-ट्राफ)। गायकों का सम्पूर्ण स्वरवन्द में आर्जेन्टम-मेट अतिशय फलदायक है। निगलने के और खांसी के समय लेरिङ्गस और गले में दर्द होता है। हंसने के समय खांसी होता है। बहुत बलगम निकलता है और वह देखने में उबाले हुए साबुदाने के ऐसा होता है।

शक्ति ३०—२००।

आर्जेन्टम नाइट्रिकम।

ARGENTUM NITRICUM.

एसिडिटी वा अम्ल—पीड़ा, एनिमिया, (रक्ताल्पता) चक्षुरोग, मेदा के जखम, लोकोमोटर एटाक्सिस, प्रस्टेटग्लैंड की वृद्धि, पक्षाघात इत्यादि रोगों में यह औषध प्रयोग होता है।

इस औषध के रोगी को देखना मात्र ही पहचाना जाता है। रोगी, विशेषतः शिशुरोगी शीर्ण और दुर्बल हो जाता है। शिशुके शक्ल वुढ़ोंके तरह हो जाता है। रोगी दिन पर दिन सूखता जाता है। आर्जेन्टम के रोगी की शीर्णता विशेषकर निम्न शाखों में देखा जाता है (एमन-म्यूर)।

मानसिक अवस्था के ऊपर इस दवाई की विशेष क्रिया देखी जाती है। रोगी हमेशा अपनी बिमारी के फिक्र में रहता है। उंचा गृहादि के तरफ नजर करने से उसका शिर घुमता है और वह मतवाल की तरह चलता है; उसको मालुम होता है कि रास्ता के दोनों तरफ का गृहादि उसके शिर पर आ पड़ेगा। रास्ता चलने के समय उसको ख्याल होता है कि सामने के मकान के साथ उसको टक्कर

लगेगा। मानसिक चञ्चलता, हरएक कार्य्य बहुत जल्दी जल्दी हड़बड़ी कर करता है; उसको ख्याल होता है कि समय बहुत धीरे धीरे बीत रहा है। वह एक मिनट को एक घंटा समझता है (लिलियम)।

स्नायवीय उदरामयः—(Nervous Diarrhoea) के निमित्त यह औषध जेलसिमियम के सदृश फलदायक है। कोई सभा में, गिर्जा वा देवालय में जाने के समय उसको दस्त शुरु होता है।

अर्द्ध-शिरःशूलः— वा आध कपाड़ी के निमित्त आर्जेन्टम नाइट्रिकम उत्कृष्ट औषध है। मालुम होता है कि सिर बहुत बड़ा हो गया (पलसेटिला, एपिस) और सिर को खूब कस कर बांधने से आराम मालुम होता है (कार्बोलिक एसिड)। रोगी मालूम करता है कि उसके समस्त शरीर या उसके कोई अंश की वृद्धि हुई है।

सिर घुमना, कान में भन भन शब्द सुनाई देना, दुर्बलता और कम्पन इस औषध का स्वभाविक लक्षण है रोगी आंख मूंद कर चल नहीं सकता है (जेलसिमियम)।

यह चक्षुरोगः— का एक अमूल्य औषध है। आंख

के अन्दर लाल रंग के फफोला की तरह फूलन; आंख से बहुत पीव गिरना; ऐसा की कर्निया के अस्वच्छता वा माड़ा (Opacity) और जखम में भी आर्जेन्टम-नाइट्रिकम अति उपकारी है। इस प्रकार के पुरुलेण्ट अफथेलमिया वा पीपदार आंख के प्रदाह में किसी प्रकार कष्ट मालूम न होना आर्जेन्टम का सिद्धिदायक लक्षण है।

अांख में पीप जम कर पपुटे का फूल जाना; ग्रेनुलर अफथेलमिया वा रोहे की बिमारी; आंख देखने में लाल मांस के टुकड़े के सदृश दिखाई पड़ना; अफथेलमिया निओनेटोरम वा बच्चों का पीवदार आंख का प्रदाह, कर्निया जखम अथवा अस्वच्छता (opacity माड़ा) इत्यादि के निमित्त आर्जेन्टम उत्कृष्ट औषध है।

मिठा खाने की अत्यन्त इच्छा होना:—इस औषध का एक खाश लक्षण है किन्तु मिठा खाने से ही दस्त होता है।

पाचक यन्त्रों के ऊपर इसकी विशेष क्रिया है। मेदे की गड़बड़ी के साथ ढकार आना; पेट फूलना; प्रति दिन आहार के बाद ही ढेकार आना ढेकार एकदम से नहीं निकलता है लेकिन थोड़ा देर तक रुक २ कर आखिरकार बहुत जोर से निकलता है।

उदरामय, मल सब्जवर्ण व म्युकस (लस्सादार) होता है, गाढ़ा सब्ज रंग के सिवार अथवा काई के सदृश देखा जाता है। मिठा खाने से दस्त ; मलत्याग के साथ वहुत हवा छुटता है (एलोज, कैलकेरिया फस); कोई चीज पीने से उसी वख्त पतला दस्त होता है।

दिन रात, हरवक्त बेखबरी से पेशाव होता है (कष्टिकम)।

ध्वजभङ्ग वा नामर्दी रोगमें भी इस औषध का विशेष अधिकार है, संगम करने के प्रारम्भ में ही लिङ्ग ढिला हो जाता है। संगम के समय लिङ्ग में दर्द बोध करता है। सङ्गम के बाद योनिद्वार से रक्तश्राव होता है। विधवा युवती और बांझस्त्रीओं का भयानक रक्तश्राव में यह उपकारी है।

आर्जेन्टम के रोगी खुली हवा में आराम और गर्मी में कष्ट मालूम करता है।

गले के भीतर लकड़ी के टुकड़े की तरह कोई चीज अटकी हुई है ऐसा मालूम पड़ना (डलिक, नाइट्रि-एसिड, हिपर, साइलिसिया); गले में दाने का पैदा होना ; वदन का कपड़ा खोल देने से शीत वोध और वदन को कपड़े से

ढाकने से दम फूल जाना इत्यादि भी आर्जेन्टम का विशेष लक्षण है।

शक्ति ३०—२०० या और उच्च शक्ति

आर्सेनिकम एलवम्।

ARSENICUM ALBUM.

यह असली संखिया से बनता है।

ज्वर, कालरा, रक्तालपता, मुंह का जखम, दम्मा, खांसी, कैन्सर, कारवङ्कल, गैंग्रिन, क्रुप, टाइफाण्ड ज्वर, मेलेरिया ज्वर, किडनी के रोग, निउरलजिया, कृमी, शोथ इत्यादि नाना प्रकार के बिमारी में यह फलदायक होता है। फलतः दुनियां में ऐसी कोई बिमारी नहीं है, जिस में आर्सेनिक इस्तेमाल नहीं हो सकती है यदि इसका स्वभाविक लक्षण मिले तो।

अस्थिरता—आर्सेनिक में जितना अधिक अस्थिरता (रेचैनी) है उतना और किसी औषध में नहीं है। इस में मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार की अस्थिरता अतिशय प्रवल किन्तु भयानक शारीरिक दुर्बलता के हेतु मानसिक अस्थि-

रता हो अधिक प्रबल मालूम होती है और रोगी एकोनाइट की तरह इतना इधर उधर नहीं कर सकता है किन्तु फिर भी सर्वदा छटपटाता रहता है। आर्सेनिक के मृत्युभय एकोनाइट के मृत्युभय से स्वतन्त्र रूप का है: आर्सेनिक के रोगी ख्याल करता है कि उसकी बिमारी आराम नहीं होगी, जरुर उसका मृत्यु होगा। उक्त प्रकार की अस्थिरता प्रायः मेलेरिया ज्वर, कालेरा, टाइफायड इत्यादि प्राणनाशक बिमारी में देखा जाता है। और इस प्रकार की अस्थिरता के साथ अत्यन्त दुर्बलता होना आर्सेनिक का अति विशेष लक्षण है।

ज्वाला—जिन औषधों में ज्वाला है, आर्सेनिक उन में सब से प्रधान है। यह लक्षण सिर्फ नई बिमारी में ही मिलता है ऐसा नहीं; पुराना रोग, विशेष कर दुष्ट प्रकृति के और खराब हालत के रोग में आर्सेनिक अति उत्तम है। (अक्सर प्राचीन पीड़ा में ज्वाला रहने से सलफर द्वारा अधिक फल पाया जाता है)। शरीर के किसी स्थान में अथवा यन्त्र में ज्वाला हो आर्सेनिक उसी में फलदायक होता है। किन्तु आर्सेनिक का ज्वाला का एक विशेष भाव यह है कि रोगी गरम गृह में और उत्ताप प्रयोग से अथवा गरम कपड़ा

ओढ़ने से आराम बोध करता है। ज्वर से सर्वांग में बहुत ज्वाला होता है तौभी रोगी कपड़ा ओढ़ कर रहना चाहता है।

सर्दी—सिपा, मार्कूरियस, आर्सेनिक ये तीन औषध में बहुत परिमाण से पतला सर्दी निकलता है। लेकिन आर्सेनिक के विशेष गुण यह है—सर्दी जखम पैदा करने-वाला और ज्वाला पैदा करने वाला होता है: गले में ज्वाला होता है और वह ज्वाला गरम प्रयोग से अथवा गरम चीज खाने पीने से कम होता है। सिपा और मार्कूरियस में गरम प्रयोग से आराम मालुम नहीं होता है।

रात दो पहर और दिन दो पहर (१२ बजे से २ बजे तक) बिमारी की वृद्धि या आरम्भ होना आर्सेनिक के विशेष चरित्र है। विमारी किसी किस्म का हो, यह लक्षण मिलने से जरुर इस दवे को व्यवहार करो।

ज्वर—इस रोग में आर्सेनिक एक महौषध है। कोई कोई चिकित्सक इसका इतना पक्षपाती है कि किसी प्रकार के दुषित ज्वर होने ही से आर्सेनिक प्रयोग करने को उपदेश देते हैं किन्तु इस प्रकार से चिकित्सा करना अन्याय है। आर्सेनिक का लक्षण न मिलने से कभी आर्सेनिक प्रयोग करना नहीं चाहिये।

दिन १२ बजे से २ बजे के अन्दर ज्वर का वृद्धि होना आर्सेनिक का स्वभाविक लक्षण है। इसके साथ ज्वाला, बेचैनी, कमजोरी वगैरह लक्षण में आर्सेनिक देना चाहिये।

इन्टरमिटे ज्वर की शीत अवस्था में पतला मल, पेट में दर्द, जी-मीचलाना, अत्यन्त प्यास होना, किन्तु थोड़ा २ पानी पीना, और पानी पीने से शीत अधिक मालुम होना, नाखून और ओष्ठ का नीला होना, शरीर के चर्म खुष्क होना और ज्वाला इत्यादि लक्षण पर आर्सेनिक के प्रयोग से अवश्य आरोग्य होता है। कभी पसीना होता है कभी नहीं भी होता है। शित और गरमी अदल बदल कर होना भी आर्सेनिक का विशेष लक्षण है।

मुंह से मलद्वार तक तमाम अन्तरनाली में इस औषध की विशेष क्रिया है। ओष्ठ खुष्क और फटा फटा। जीभ खुष्क व लाल २ दाने दानेदार; अथवा जीभ लाल, उसके दोनों पार्श्व दांत के चांप से दबा हुआ; अथवा जीभ सफेद, खड़ी मिट्टी की तरह अथवा सीसा की तरह रंग के, अथवा भूरा या काला रंग के होता है। काला जीभ विशेष कर टाइफायड ज्वर में देखा जाता है। मुंह सूखा अथवा जखम वाला; प्यास अत्यन्त

अधिक, बहुत जल्दी २ किन्तु थोड़ा २ जल पान करता है। मेदा इतना उत्तेजित होता है कि अति अल्प मात्र खाद्य अथवा पानीय प्रवेश करने ही से पेट में दर्द मालुम होता है अथवा उसी समय कै या दस्त होता है। किसी प्रकार के शीतल पानीय पेट में बरदास्त नहीं होता है। गरम चीज पीने से आराम बोध होता है।

फेफड़े के रोग में भी आर्सेनिक विशेष उपकारी है। किसी प्रकार के चर्म्मरोग अर्थात् एकजिमा, कोढ़ना इत्यादि दब जाकर दम्मा होने से आर्सेनिक व्यवहार होता है। रोगी लेट नहीं सकता है, स्वांस लेने के लिए उसको उठ-कर बैठना पड़ता है; सामान्य हिलने डोलने से दम फूल जाता है; खांसी के साथ फेन की तरह थूक निकलता है।

दहिना फेफड़ा के ऊपर के भाग में तेज व स्थाई दर्द अथवा नस्तर भोकने की तरह दर्द देखकर आर्सेनिक के प्रयोग से बहुत रोगी को आराम किया गया। निउमोनिया की शेष अवस्था में सड़ा बलगम निकलता है।

उदरामय में आर्सेनिक महौषध है। कालेरा के अधिकांश रोगी ही एकमात्र आर्सेनिक से आराम होता है।

आर्सैनिक में नाना प्रकार के मल देखा जाता है। पानी की तरह पतला, काला और अत्यन्त दुर्गन्धी मल आर्सैनिक का स्वभाविक लक्षण है।

अत्यन्त अस्थिरता: सख्त प्यास; किन्तु अल्प २ जल पान करना, भयानक दुर्बलता, किसी प्रकार के खाद्य भोजन अथवा पान करने बाद ही वमन होना और ज्वाला ये आर्सैनिक के विशेष चरित्र हैं। जहा ये लक्षण मिलेंगे वहीं आर्सैनिक फायदा करेगा।

शोथरोग—चेहरा फीका, सफेद अथवा मिट्टी की तरह रंग का होना।

शक्ति ६—३०—२०० ।

अर्सेनिकम आइयोडेटम।

ARSENICUM IODATUM.

बार बार छींक आना; नाक के पुराना सर्दी टौन्सिल का प्रदाह और वृद्धि; प्लीहा की अति वृद्धि, पुराना

इन्टर-मिटेन्ड ज्वर और वहुत दिन तक कुनाइन सेवन के कुफल, दम्मा, और यक्ष्मा रोग इत्यादि में यह दवा व्यवहार होता है।

सर्वदा बहुत भूख लगा रहता है; आमाशय (पेचीस) के साथ अतिसार: कालेरा के सदृश उदरामय शिशु-कालेरा; सेकेन्डरी सिफिलिस।

स्तन की घुन्डी का दब जाना, स्तन के भीतर ढेला २ मालुम होना।

रात में दम्मा की बिमारी; रोगी लेट नहीं सकता है, उसको बैठा रहना पड़ता है। यक्ष्मा रोग में वार वार खांसी साथ सड़ा बलगम या पीव निकलना।

खांसी; बहुत दिन का पुराना खांसी, खांसते खांसते वमन होना।

यह औषध सोरिक पक्षाघातिक अथवा कण्ठमाला धातु के व्यक्तियों में विशेष फलदायक होता है। शाखासमूह ठंढा रहता है।

शक्ति—३०—२००।

एरम ट्राइफाइलम ।

ARUM TRIPHILUM.

एफोनिया (स्वरवन्ध) डिफथिरिया, फेरिञ्जाइटिस (गलप्रदाह) मसूढ़ा का प्रदाह, गायक, कथक प्रभृति के गले का जखम, नासिका के सर्दी, मुंह का जखम, इउरिमिया इत्यादि रोग में यह दवा व्यवहार होती है ।

जीभ, ओष्ठ और मुंह के भीतर अत्यन्त लाल रंग होना इसका विशेष लक्षण है । रोगी लगातार ओष्ट और नाक को अंगुली से खोटता रहता है ऐसा की खोटते खोटते जखम और रक्तश्राव हो जाता है । इस प्रकार का खोंटना और किसी औषध में इतना अधिक नहीं है । सिर्फ इसी लक्षण के ऊपर ज्वरविकार और ज्वरातिसार के रोगी के डिलिरियम की अवस्था में एरम के प्रयोग से आश्चर्य्यं फल मिला है । (सिना के रोगी भी नाक खोंटता है किन्तु सिना का यह लक्षण कृमीरोग में पाया जाता है) । फलतः यह लक्षण जहां मिले वहीं एरम के प्रयोग हो सकता है ।

गायक, कथक वक्तृताकारी लोगों के स्वरभङ्ग

में यह औषध बहुत उपकारी है। गला बैठ जाता है। अथवा स्वर का अपने शासन के अधीन रख नहीं सकता है; एक किस्म का स्वर निकालना चाहे तो और किसिम का स्वर निकल जाता है।

नाक से अत्यन्त झांसीला नेटा निकलता है।

नाक के भीतर जखम सा दर्द होता है; नाक से नेटा निकलते रहने पर भी नाक बन्द मालूम होता है (एमोनियम-कार्ब, सेम्बुकस, सिनापिस); रात में अधिक छींक आता है; नाकके पूरे और ओष्ट के ऊपर नेटा से जखम हो जाता है; हाथ से ओष्ट खोंटते २ रक्त निकाल डालता है।

गला के भीतर और मुंह में जखम होने के हेतु शिशु पान और भोजन नहीं करना चाहता है। बहुत परिमाण से झांसीला लार निकल कर म्युकस झिल्ली में जखम पैदा करता है। एफोनिया अर्थात् बोली बन्द होना।

इउरिमिया के पूर्व लक्षण में यह औषध आश्चर्य फल देता है। इस हालत में शिशु रह रह कर चित्कार मारते रहने से इससे अधिक फल मिलेगा।

डिफथिरिया और दुष्टप्रकृति के स्कारलेटिना (लाल

ज्वर) में यदि इसका स्वभाविक लक्षण मिले तो अवश्य परम फलदायक होगा।

शक्ति ६—३०

एंगास्टुरा।

ANGUSTURA

यह औषध शोर्ट साइटेडनेस (short sightedness) अर्थात् क्षुद्रदृष्टि में उपकारी है। दूर का वस्तु नजर नहीं आता है। निकट का वस्तु अच्छी तरह से नजर पड़ता है।

अस्थि के क्षय रोग में भी यह औषध फलदायक है, खास कर जांघ के अस्थि के सदृश लम्बा अस्थि के जखम मे यह उपकारी है।

शक्ति ३—६—३०।

एमोनियेकम ।

AMMONIACUM.

यह औषध अंगुलबेढ़ा और हाइड्रोसिल रोग में उपकारी है।

शक्ति ३—६—१२ ।

एलूमेन । ALUMEN

यह फिटकिरी है। मल में ढेला ढेला रक्तश्राव: मलत्याग के बाद अत्यन्त कष्ट: रेकटम (मलद्वार) का केनसर वा जखम और उससे पतला और दुर्गन्धी रक्तश्राव इत्यादि में यह लाभदायक होता है। कोई स्थान आग या गरम तेल से जल जाने पर उस स्थान में फिटकिरी के चूर्ण प्रयोग करने से विशेष उपकार होता है।

आंख की नाना प्रकार की बिमारी में यह औषध फायदा देता है।

चिराग के रोशनी में एक वस्तु दो नजर आता है।

फुली, मोतियाबिन्द, शिशुओं का पुरुलेन्ट (पीवदार) आंख

के प्रदाह: कान से पीव गिरना, नाक में ज़खम, मुंह का ज़खम वगैरह में भी एलुमेन उपकारी है।

दांत निकाल देने से या जोंक लगाने से यदि रक्त बन्द न हो तो एलुमेन द्वारा उपकार होगा।

शक्ति ३०—२०० ।

आर्टिमिसिया भलगेरिस

ARTEMESIA VULGARIS.

पेट में आक्षेप के साथ दर्द, कोरिया पीड़ा वा ताण्डव रोग: दांत निकलने के समय में शिशु का कनभलशन: मृगी रोग इत्यादि में यह औषध विशेष फलदायक है।

हाइड्रोकेफेलस रोग (दिमाग में पानी उतरना) में शिर पीछे या पार्श्व के तरफ टेढ़ा हो जाता है। बहुत जल्दी २ मृगी रोग के आक्रमण में विशेषत: यदि किसी प्रकार आघात

लगने से रोग हो तो यह औषध लाभदायक है। दहिना पार्श्व का कनभलशन और एक तरफ के हाथ और दूसरे तरफ से पैर के लकवा में यह औषध विशेष फलप्रद है।

शक्ति ३—१२—३०।

एसारम इउरोपिअम।

ASARUM-EUROPEAM.

यह नितान्त नाजुक मिजाज के लोगों में ही प्रयोग होता है, ऐसा कि कपड़ा या कागज खसोटने की आवाज ही से रोगी बेहोश की तरह हो जाता है। रोगी ख्याल करता है कि प्रेतात्मा की तरह हवा में फिर रहा है; हाथ पैर सब हलका मालूम करता है; किसी प्रकार की मानसिक चंचलता होने ही से शीत और कम्प बोध होता है। इस प्रकार के स्नायवीय लक्षण जहां मिले वहीं एसारम व्यवहार होता है, खास कर गर्भ की अवस्था, रक्ताल्पता, स्नायवीय खांसी, पेट की गड़बड़ी में।

चक्षुरोग पाठ करने के समय रोगी ख्याल करता

है कि आंख अन्दर घुसा जा रहा है या बाहर निकला जा रहा हैं । ठंढा पानी से धोने से या ठंढी हवा लगने से आराम मालुम होता है । सूर्य का किरण या दीया का रोशनी वर्दास्त नहीं कर सकता है ।

लगातर अथवा समय समय जी मिचलाता है, खास कर भोजन के वाद जीभ साफ करने के समय; गर्भावस्था में रोगीनी को मद्यपान करने की बहुत इच्छा होती है ।

शक्ति ६—३०—२००

——:o:——

ऐसक्लिपिअस टिउबारोसा ।

ASCLEPIAS TUBEROSA.

यह औषध प्लुरिसी, ब्रोंकाइटिस, निमोनिया इत्यादि नाना प्रकार की फेफड़े की बिमारी, नाना प्रकार की दिल की बिमारी, इनफ्लुयेंजा वात रोग इत्यादि में उपकारी है ।

खांसी—अत्यन्त सूखा व कष्ट कर खांसी; खांसी के साथ गलनली का सिकुड़ना और पेट में और ललाट में

दर्द; स्तन की घुन्डी (Nipple) से तेज दर्द नीचे के तरफ अचानक फैल जाता है और उसके साथ गर्दन के बायां तरफ शख्त हो जाता है। स्टारनम अस्थि के पीछे तेज कतरने की तरह दर्द, लम्बा स्वांस लेने से या हाथ हिलाने से वृद्धि होता है। इन्टरार-कस्टेल-स्थान (Inter-costal spaces) अर्थात् पसली की हड्डियों के मध्यवर्ती स्थानों में दबाने से बहुत दर्द होता है। छाती का दर्द सामने के तरह दोहरा होने से कम हो जाता है; दहिना तरफ के प्लूरा में दर्द के साथ सूखा, कष्ट दायक खांसी और बहुत थोड़ा २ बलगम निकलना।

फ्लेटुलेन्ट कलिक वा वायुशूल; पेट में गड़गड़ाहट और हवा छुटना, पेट में गड़गड़ाहट होकर ११ बजे दिन को गर्म पैखाना होता है।

दिल में अकड़ने की तरह और छुरी भोकने की तरह दर्द।

जोड़ों में बात के दर्द; दहिना कन्धे में गोली मारने की तरह दर्द; लम्बेगो, डांड़ और चुतर में तेज दर्द।

ज्यादा छींक के साथ पतला नेटा निकलना: बायां नाक से रक्तश्राव: नाक में खुजलाहट होना।

शक्ति ६—३०।

ऐसपेरागस।

ASPARAGUS.

यह दांत के दर्द के लिए एक महौषध है।

हाइड्रोफोबिया रोग में निगलने में कष्ट हो तो इस से फायदा मिलता है।

मूत्र के साथ छोटे पत्थरी वा ग्रैभेल (Gravel) निकलना भी इसका स्वभाविक लक्षण है।

यह दिल की दुर्बलता के लिये विशेष उपकारी है। दिल बहुत धड़कता है: छाती में दर्द होता है और चलने फिरने से उसकी वृद्धि होती है। हाइड्रोथोराक्स वा छाती में जल संचय, उससे स्वांस कष्ट होना।

शक्ति ३—६—३०।

——:*:——

ऐसटिरियस रुबेन्स।

ASTERIUS RUBENS.

स्तन का कैन्सर, चर्म के जखम, एपोप्लेकसी, मृगी इत्यादि रोगों में यह व्यवहार होता है।

एपोलेकसी (Apoplexy)—शिर गरम; मालूम होता है कि उसके चारो तरफ गरम वायु से घेरा हुआ है। सिर में बहुत ज्यादा रक्त संचार (Congestion) होता है; चेहरा रक्तवर्ण; नाड़ी कठिन और जल्द।

स्तन का कैन्सर—तेज छुरी भोकने की तरह दर्द। ऋतुश्राव के पहले स्तन भारी होता और फूल जाता है। स्तन के किसी स्थान में चमकीला लाल दाग देखा जाता है, बाद वह दाग फूट कर गल जाता है और उस से बदबूदार पीव निकलता है। जखम के चारो किनारा शख्त और दानेदार होता है और उसका भीतरभाग फीका होता है।

एपिलेप्सी वा मृगी रोग के आरम्भ होने के चार पांच दिन पहले से समस्त शरीर ममोड़ता रहता है।

शक्ति ३—६—३०

एसाफोटिडा । ASAFŒTIDA

यह हींग है। यह औषध नाजुक मिजाज के और हिष्टिरिया के स्वभाव वालों में ज्यादा उपयोगी है।

हिष्टिरिया—मालूम होता है कि गोला सा कोई वस्तु पेट में से गले में चढ़ रहा है और उससे बारबार घोंट लेना पड़ता है, उससे प्रायः स्वांसकष्ट होता है। ग्लोबश हिष्टिरिकस (Globus Hystericus) वा अन्न नली में ऐसा मालूम होता है कि पेट से सब चीज ऊपर आ जायगा। विशेषतः किसी प्रकार स्वभाविक श्राव बन्द होकर यह रोग होने से यह औषध व्यवहार होता है।

पाचकयन्त्र के ऊपर भी इस औषध की विशेष क्रिया देखी जाती हैं। पेट फूल जाता है, नीचे के तरफ से हवा नहीं निकलता है किन्तु लगातार ढेकार आता है; ढेकार में लहसुन की बू आती। मल पानी की तरह पतला होता है पेट में दर्द होता है।

पेशाब गरम, और उसमें नौशादर की तरह तेज गन्ध है।

चक्षुरोग में भी यह दवाई बहुत उपकारी है: आंख कोया खाने का स्नायुशूल (Orbital Neuralgia)। रात में आंख के चारों तरफ से तेज दर्द होता है: कर्निया में विस्तृत और हल्का जखम: उस में ज्वाला, सुई भोकने की तरह और दबाने की तरह दर्द, दबाने से आराम मालुम होता है।

यह औषध पारा और कन्ठमाला दोष के कारण अस्थियों का जखम (केरिज् Caries)। और चर्म के जखम में अतिशय उपकारी है। उपदंश में पारा के अपव्यवहार होने से यह औषध प्रयोग होता है।

नाक से बदबुदार पीब निकलता है: नाक की हड्डी के प्रदाहयुक्त होती और फूल जाती है: नाक की हड्डी के केरिज (क्षय)।

चर्म के जखम के चारों किनारा ऊंचा होता है, उससे सहज से ही बहुत खून निकलता है: जखम में छुना बर्दास्त न होना।

श्वासयन्त्र के ऊपर भी इसका विशेष अधिकार है। छाती में आक्षेप के साथ कसा हुआ भाव मालुम होता है: मालुम होता है कि छाती अच्छी तरह से फूल नहीं सकता है।

छाती में दबाने की तरह दर्द। दम्मा में लगातार गले में सुरसुराहट के साथ खांसी हो तो यह उपकार करता है।

दिल में लगातार स्नायविक धड़कन (nervous palpitation), नाड़ी, क्षुद्र, द्रुत और बेकायदे होने से भी यह मुफीद होता है।

शक्ति ६—३०—१०० ।

——(*)——

औरम मेटालिकम।

AURUM METALICUM.

यह दवा विशुद्ध सोना से बनती है।

यह औषध खून, गिल्टियां (Glands) और अस्थि को आकर्षण करता है; पारा और उपदंश के सदृश लक्षण समूह का उत्पादन करता है। इसमें अत्यन्त मानसिक अवसाद (दबाव; उदासी) देखा जाता है आत्महत्या करने की इच्छा होना इसका विशेष स्वाभाविक लक्षण है। प्राचीन उपदंशादि—ऐसा कि अस्थि का दर्द और अस्थि के क्षयरोग में भी यह औषध व्यवहार होता है जरायु का टिउमर, भगन्दर, स्वरभङ्ग, पुराना वातरोग, जरायु का कैन्सर इत्यादि में भी यह उपकारी है।

की तरह दिखाता है। रोगी की चेतनाशक्ति इतनी कम होती है कि उसको पुकार कर कोई बात पूछने से उसका जवाब देते २ ही फिर सो जाता है। जीभ के मध्यभाग में अथवा अग्रभाग में सफेद दाग पड़ता है और क्रमशः वह दाग भूरा रंग प्राप्त होता है। पीड़ा इस से भी कठिन होने से रोगी बरबराता रहता है, छटपटाता है और बिछावन के चारो तरफ इधर उधर करता रहता है और इस प्रकार भाव दिखाता है कि वह कोई चीज चून कर एकट्ठा कर रहा है और पूछने से कहता है कि उसका शरीर टुकड़े टुकड़े हो कर चारो तरफ फैल गया है, और वह उन टुकड़ों को इकट्ठा कर रहा है। इस समय में उदर में गड़ गड़, गल गल शब्द होता है और दहिना कक्षे के ऊपरी भाग व तलपेट के पार्श्व में दर्द मालुम होता है और वहां दबाने से हाथ के नीचे "गुजगुजाहट मालुम होता है। इस अवस्था के बाद ही दस्त शुरु होता है। मल मूत्र, पसीना इत्यादि वैपटिसिया का सर्व प्रकार स्राव ही नितान्त बदबूदार होना वैपटिसिया का सिद्धिदायक लक्षण है।

म्यूकसझिल्ली के जखम; अत्यन्त शय्याशायी

के साथ शरीर के रक्तादि का सड़ जाना। श्वांस, मल, मूत्र, पसीना इत्योदि सब ही अत्यन्त दुर्गन्धयुक्त (सोरिनम पाइरोजेन) इत्यादि बैपटिसिया के खास लक्षण है।

दर्द रहित गले के जखम (sore throat) और डिफ-थिरिया में यह औषध विशेष फलप्रद है; उस से सड़ा बदबू-दार स्राव होता है। टौन्सिल; नर्म तालु, पैरोटिड (कनपट्टी की) गिल्टी बैंगनी रङ्ग की और फूली हुई होती है।

बुढ़ों का पेचिस और शिशुओं का दस्त, में यदि मल अत्यन्त दुर्गन्धयुक्त हो तो बैपटिसिया के प्रयोग होता है।

बैपटिसिया के और एक आश्चर्य मानसिक लक्षण देखा जाता है—रोगी ख्याल करता है कि वह तीन आदमी है और वह उन सबों को ढांक कर रखना चाहता है।

जीभ सफेद; जीभ के बीच बीच में लाल दानें; पहले जीभ का मध्यभाग खुश्क, भूरा रङ्ग का और पीछे खुश्क फटा और क्षतयुक्त होता है।

आर्निका की तरह बैपटिसिया के रोगी के सर्व्व शरीर में कुचलने की तरह दर्द होता है। रोगी जिस कर में

HAHNEMANN PUBLISHING CO PRIVATE LTD. CALCUTTA-12

चटचटा म्युकस वा बलगम बहुत जोर से निकलता है। गले में सुरसुराहट होता है।

दहिना आंख के गोला के पश्चात भाग में सख्त इन्टर-मिन्टेन्ट (सविराम) निउरेलजिक दर्द होना इसका स्वाभाविक लक्षण है।

गर्मी रोग के कारण बाघी में यह विशेष फलप्रद है; बाघी कठिन होता है, और उसमें बहुत दर्द होता है: इस औषध का मदर टींचर ऊपर लगाने से बाघी पक जाता है और प्रति दिन १x शक्ति का दो खुराक खिलाने से बाघी आराम हो जाता है।

सर्दी में भी यह औषध व्यवहार होता है। सर्दी ज्यादे तर बायां नाक से बहुत परिमाण से निकलता है; सुबह और साम को बिमारी की वृद्धि होता है; छिंक आता है।

शिशुओं का उपदेश वा गर्मी पीड़ा: गले के भीतर का सर्दी। रोगी ठंढा पानी या ठंढी हवा सह नहीं सकता है, आंधी-पानी के दिन में पीड़ा कीवृद्धि होती है।

अर्शरोग, प्राचीन वातरोग इत्यादि में भी यह

औषध लाभदायक है। टौन्सिल का प्रदाह। टौन्सिल लाल और उसमें दर्द होना।

गिल्टियों के ऊपर इसकी विशेष क्रिया है; इसलिए यह विडवोनिक प्लेग की एक उत्तम दवा है। इसका भीतर व बाहरी दोनों प्रकार का व्यवहार उपकारी है।

शक्ति ३—६—३०।

बैपटिसिया टिंक्टोरिया।

BAPTISIA TINCTORIA.

यह औषध विशेष कर **टाइफायड ज्वर** में अथवा और किसी विमारी के साथ टाइफायड लक्षण प्रकाश पाने से व्यवहार होता है। कोई २ चिकित्सक जेलसिमियम के बाद बैपटिसिया व्यवहार करते हैं। टाइफायड की प्रथमावस्था में बैपटिसिया प्रयोग करने से इस ज्वर के पूरा समय भोग न होकर अनायास से ही विमारी आराम के तरफ जाता है। इस ज्वर की प्रथमावस्था में शीतबोध, सर्वाङ्ग में विशेषतः मस्तक, कमर और हाथ पैर में पक्का फोड़े के सदृश दर्द होता है। रोगी क्रमशः दुर्बल होता जाता है और तन्द्रायुक्त रहता है। चेहरा धुमैला, या बैगनी और बेवकूफ

फूल जाना (वाघी) । इन लक्षणों के साथ मानसिक लक्षण वर्तमान रहने से निश्चय औरम प्रयोग करना चाहिये ।

जीभ—कोई स्वाद मालुम नहीं होता है; जीभ चमड़े के सदृश कठिन । जीभ के कैनसर ।

दांत ढीला । दांत में फिस्चुला (सैन) ।

टौन्सिल में पीबदार जखम ।

शोथ के साथ यकृत की कठिनता । प्लीहा की वृद्धि वमन में सबज पानी निकलना; आर्शरोग में रक्तस्राव; गुह्यद्वार में कनडाइलोमेटा अर्थात् गेंदा फूल की तरह छोटे छोटे मस्से । यह औषध भगन्दर रोग में भी अति उत्कृष्ट है ।

अण्डकोष वा पोता के विशेषत : दहिना कोष में प्रदाह । यह बहुत फूल जाता है, सख्त हो जाता है और उसमें दर्द होता है । स्वजदोष, कैन्सर इत्यादि में भी यह औषध फलदायक है ।

मत्र—मूत्र के परिमाण अल्प होना; बार बार गदला और दुर्गन्धयुक्त पेशाब होना; कमर में दर्द ।

औरम् मेटालिकम बहुत प्रकार रोग में फलप्रद है । फलतः

उपदंश और पाराघटित सर्व प्रकार बिमारी में यह औषध अमृत है इसके मानसिक लक्षण ही सबसे जरुरी है। इस लिए इस पर हमेशा ध्यान रखना चाहिये।

इस औषध का २ x शक्ति द्वारा बहुत रोगी में आश्चर्य फल मिला है। ६—३०—२०० शक्ति के प्रयोग से भी अति उत्कृष्ट फल मिला है।

बैडियागा। BADIAGA

यह औषध कन्ठमाला रोग में विशेष उपकारी है। चेहरे के बायां तरफ की और गर्दन की गिल्टियां फुल जाती है। चन्द गिल्टी पक जाती है और चन्द सख्त रहती है। दहिना कन्धे की हड्डी के निचे छुरी भोकने के सदृश दर्द होता है और वह दर्द कन्धे को पीछे के तरफ झुकाने से बढ़ जाता है। गिल्टियां मुर्गी के अन्ड़े की तरह बड़ी २ होती है।

यह औषध खांसी में भी लाभदायक है। कभी कभी आक्षेप के साथ सख्त खांसी होता है। खासी के साथ

रोगी सर्वदा अपनी बिमारी के फिक्र में और उदास रहता है; सर्वदा रोता रहता है और ख्याल करता है कि उसकी जिन्दगी कोई काम की नहीं है, जीना से उसका मरना ही अच्छा है; इस कारण वह सर्वदा आत्महत्या करने की इच्छा करता है और सुविधा मिले तो आत्महत्या कर भी बैठता है। इस प्रकार मानसिक अवस्था के रोगी में प्रायः, पुरुष हो तो यकृत के दोष और स्त्री हो तो जरायु के दोष देखा जाता है। यकृत अथवा जरायु बड़ा और फूला होना है; जरायु उतर जाता है। इस लक्षण के साथ उक्त प्रकार के मानसिक लक्षण समूह मिलने से अवश्य औरम को प्रयोग करना चाहिये। नैजा नक्सभोमिका इत्यादि औषध में भी आत्महत्या की इच्छा होती है किन्तु ऐसा करने से डरता है, कर नहीं सकता है। औरम के रोगी को सर्वदा विमारी की चिन्ता करते २ यदि दिल धड़कना रोग हो तो औरम प्रयोग किया जाता है। यह औषध एनजाइना पेक्टोरिस (Angina Pectoris) वा दिल के शूल दर्द का एक उत्कृष्ट औषध है।

गर्मी इत्यादि पीड़ा में पारा के अपव्यवहार करने के बाद नाक, ताल्, चहु इत्यादि की हड्डियों में जखम

होने से और उसके साथ इस के स्वभाविक मानसिक लक्षण वर्तमान रहने से औरम अवश्य फलदायक होगा ।

नाक के भीतर दर्द; नाक से रक्तश्राव । नाक से दुर्गन्धी पतला श्राव होता है और उससे ऊपर के ओष्ठ में छाले पड़ जाते हैं । नाक से अत्यन्त दुर्गन्धयुक्त पीब निकलता है; नाक के पूरा फट जाता है और उसकी हड्डी में ज़ख़म हो जाता है ।

चक्षुरोग में भी इस औषध का विशेष क्रिया देखी जाती है; एकाएक अन्धा हो जाता है अथवा नजर धुंधली हो जाती है; अर्द्ध दृष्टि अर्थात् रोगी प्रत्येक वस्तु का सिर्फ आधा हिस्सा देखता है । लाइकोपोडियम और लिथियम-कार्ब के रोगी प्रत्येक वस्तु का दहिना आधा देखता है किन्तु औरम के रोगी सिर्फ नीचे का आधा देखता है । कनियाके अस्वच्छता (Opacity) वा माड़ा ।

स्त्री-रोग में भी इसका विशेष अधिकार है । बांझपन; जरायुके मुंह कठिन; जरायु के प्रदाह । ऋतुस्राव जल्दी २ और बहुत परिमाण से होता है, ऋतुस्राव के पहले प्रदर स्राव; जरायु के कठिन हो जाना और उतर जाना । स्त्रीलोगों के गनोरिया पीड़ा के साथ कक्ष के गिल्टी का

फिर तकिआ पर रखता है। निद्रावस्था में डर कर जागता है और किसी को पहचान नहीं सकता है। सर्वदा जननेन्द्री पर हाथ डालता रहता है।

स्थानीय प्रदाह की प्रथमावस्था में बेलाडोना उत्तम क्रिया करता है। यह प्रदाह किसी स्थान में हो यदि अकस्मात उत्पन्न हो कर शीघ्र २ बढ़ कर बहुत लाल वो गर्म हो, उसमें दपदप कर दर्द हो और प्रदाह युक्त स्थान में छुना बर्दास्त न हो तो बेलाडोना उत्तम फल देगा; ऐसा कि फोड़ा होने से भी बेलाडोना के अन्दरुनी प्रयोग से ही आराम होता है। कारबंकल में भी इस लक्षण पर बेलाडोना के प्रयोग से लाभ होता है।

शिशुरोग में बेलाडोना कैमोमिला के प्रतियोगी हैं। अकस्मात रोग की उत्पत्ति होना और जल्दी २ बढ़ना इसका प्रधान धर्म्म है। शिशु का शरीर गर्म, चेहरा रक्तवर्ण, अर्द्धचेतन अवस्था बार बार चौंक उठना, ऐसा मालूम होना कि फड़का शुरु होगा। इस अवस्था में बेलाडोना प्रयोग करने से आग में पानी पड़ने की तरह बिमारी दूर हो जाती है।

किसी स्थान में किसी प्रकार का दर्द हो यदि यह दर्द अचानक बिजली की तरह चमक कर फौरन चला जाय तो

अवश्य बेलाडोना को व्यवहार करो। स्टेनम के दर्द धीरे २ चढ़ कर धीरे २ कम हो जाता है। सलफ्युरिक एसिड का दर्द धीरे २ वृद्धि पाता है, किन्तु अचानक कम हो जाता है। और पलसेटिला का दर्द अचानक शुरु होता है किन्तु धीरे धीरे कम होता है।

गले के भीतर भी बेलाडोना की उत्तम क्रिया है, गले में ज्वाला और खुश्की; मालुम होता है कि गला सिकुड़ गया है। तालू और टौन्सिल फूला और लाल होता है। गले में बहुत दर्द होता है। आवाज बैठ जाती है।

स्त्री-रोग में भी बेलाडोना की उत्तम क्रिया है।—तलपेट में स्पर्शासहिष्णुता अर्थात् किसी प्रकार सामान्य झटका लगने से अथवा स्पर्श करने से बहुत दुखता है। चलने के समय, प्रतिवार पांव फेकने के समय अथवा बिछावन पर लेटने या बैठने के समय जरा सा झटका लगने से रोगिणी अस्थिर होती है। तलपेट में बोझ सा मालुम होता है। पेडु में ढेले की तरह मालुम होता है। रोगिणी ख्याल करती है कि पेडु का समस्त वस्तु योनिद्वार से निकल पड़ेगा। यह सिपिया और लिलियम का भी स्वाभाविक लक्षण है। रोग प्रातःकाल में वृद्धि पाता है, कमर में अत्यन्त दर्द होता है; बहुत ऊंघता है किन्तु रोगी सो नहीं सकता है। नींद से चौंक उठता है। निद्रावस्थ में गुंगुआता है। प्रसव के

और हाथ पांव ठंढा हो जाता है; चेहरा और आंख रक्तवर्ण और चमकीला होता है। पुटपुटी के रग धकधकाता है सिर में भयानक दपदपाने के साथ दर्द होता है। बेलाडोना के सिर दर्द ललाट में और दोनों तरफ के रग में अत्यन्त अधिक होता है। सिर नीचा करने से या जरा सा झटका लगने से दर्द अतिशय वृद्धि पाता है, ऐसा कि बिछावन में भी जरासा धक्का लगने से अत्यन्त कष्ट होता है। शिर पूर्ण मालुम होता है। रोगी आंख मुंद कर बेवकूफ के ऐसा पड़ा रहता है, जरा सा भी हिलना डोलना नहीं चाहता है।

बिकार मे बेलाडोना, हाइयोसायमस और स्ट्रामोनियम ये तीन प्रथम स्थान अधिकार करता है। इन तीनों का फर्क निर्णय कर के औषध प्रयोग करना अवश्य कर्तव्य है संक्षेपतः—बेलाडोना में दिमाग में खून का दौड़ा सब से अधिक होता है; स्ट्रामोनियम के दिमाग में खून का दौड़ा उससे कम है किन्तु दिमागी हलचल अधिक होता है। हाइयोसायमस में दिमाग में खून का दोड़ा बिलकुल नहीं है लेकिन दिमागी हलचल सब से ज्यादा है।

बेलाडोना के रोगी डिलिरियम वा विकार में पागल की तरह हो जाता है। भागना चाहता है; काटता है, मारता है; नाना प्रकार के भयानक चेहरा जैसे भूत, जन्तु इत्यादि देख कर डरता है और चौंक उठता है; कभी हंसता है, कभी चिल्लाता है। बहुत ऊंघता है किन्तु सो नही सकता है। डिलिरियाम में आंख और चेहरा रक्त-वर्ण और केरोटीड धमनी (पुरपुरी के रग) का धकधकाना प्रधान लक्षण है। फलतः बेलाडोना के विकार अत्यन्त उग्र होता है।

हाइयोसायमस में विकार उग्र नहीं होता है। इसमें बरबराना, ऊंघना, बिछावन खोटना, बेखबरी से मलमूत्र त्याग ठुड्डी का लटक जाना प्रधान लक्षण है। हाइयोसोयमस के रोगी बड़ा बेशर्म होता है, नंगा होना चाहता है। आंख और चेहरे की रक्तवर्णता इसमें नहीं रहता है।

स्ट्रामोनियम में रोगी देखता है कि घर का प्रत्येक कोण से सब वस्तु उठ कर उसके तर्फ आ रहा है। सर्वदा रोशनी और साथी के साथ रहना चाहता है। सर्वदा बकवास करता रहता है, हंसता है गाता है; शपथ करता है, प्रार्थना करता है; भागना चाहता है; अचानक झटके के साथ शिर को तकिआ से उठा कर कुछ देर के बाद

से उत्तम फल होता है। वृद्धि प्राप्त टौन्सिल के साथ खांसी रहने से उसमें भी बैराइटा उपकार करता है।

वृद्ध लोगों के नाना प्रकार पीड़ा यथा—प्रोस्टेट और अण्डकोष की वृद्धि, मानसिक और शारीरिक दुर्बलता, तरल वस्तु के सिवाय और कोई चीज निगल नहीं सकता हैं इत्यादि में यह औषध विशेष लाभ दायक है।

प्रत्येकवार पेशाब करने के समय अर्श (बवासीर) के मस्सा निकल पड़ता है (एसिड-म्युर)

शक्ति ६—३०—२००।

बेराइटा-म्युरियेटिका

BARYTA MURIATICA.

यह औषध इउभ्युला वा घंटी की वृद्धि में व्यवहार होता है। वार वार टौन्सिल का प्रदाह और वृद्धि के साथ उसमें पीव पैदा होने की आदत होने से, विशेषतः ठंढ लगने ही से ऐसा होने से यह औषध विशेष उपकारी होता है। कंठमाला—धातु के शिशु में भी वैराइटा-म्युर

लाभ दायक होता है, कंठ की गिल्टियां बढ़ जाती है। टौन्सिल बढ़ने के साथ कान में पीब होने से बैराइटा-म्युर उत्तम है।

टिनिया केपिटिस वा सिर के एकजिमा रोग, विशेषतः सिर के पार्श्व और पश्चात् भाग में यह रोग हो तो यह औषध फलप्रद होता है।

कन्ठमाला धातु के शिशु का प्राचीन खांसी में भी यह औषध लाभ दायक है। दिन रात रोगी स्वांस कष्ट से बेचैन रहता है।

बैराइटा-कार्ब की तरह बैराइटा-म्युर के शिशु भी बेवकूफ होता है।

शक्ति ६—१२—३०।

बेलाडोना

BELLADONA.

बेलाडोना का दिमाग का लक्षण ही प्रधान है। ज्वर इत्यादि जो कोई बिमारी हो उसमें दिमाग में खून चढ़ जाना बेलाडोना का खास धर्म्म है। उससे रोगी का सिर गरम

लेटता है, उसी तर्फ का बिछावन कड़ा मालूम पड़ता है (पाइरोजेन)।

शक्ति ३०—२००।

बैराइटी कार्बोनिका।

BARYTA CARBONICA.

यह औषध कण्ठमाला धातु के लोगों में विशेष उपयोगी है सोरा वा खाजखुजली के और ट्युवार्कुलर वा यक्ष्मा धातु के रोगों में भी यह उपकारी है। मन और शरीर के स्वाभाविक उन्नति का अभाव, पेट, मोटा, सहज से ही ठंढ लगना अकसर टौन्सिल फूल आता है, गले में जखम होता है।

शिशु शीघ्र बढ़ता नहीं। सर्व्वदा उसके शरीर के नाना स्थान की गिल्टी की वृद्धि देखी जाती है। मन और शरीर उभय की ही उन्नति नहीं होती है। उसको देखने से ही बिलकुल बेवकुफ व लद्धर की तरह मालुम पड़ता है। वामन-

आकृत के बेवकूफ लोगों के टौन्सिल का प्रदाह, कन्ठमाला रोग; थाइसिस प्रभृति, रोग में यह अमृत है।

शिशुओं का सुखमास रोग (Marusmas) में यह औषध एब्रोटेनम, नेट्रमस्युर, साइलिसिया प्रभृति के सदृश उपकारी है। रोगी को राक्षस की तरह भूख लगता है, खूब खाता है किन्तु फिर भी सुखता जाता है। साइलिसिया और वैराइटा दोनों औषध में पैर के तलवे में दुर्गन्धी पसीना होता है; शरीर से सिर बड़ा होता है; बसात के दिनों में और ऋतु परिवर्तन के साथ रोग की वृद्धि होती है; रोगी सिर में ठंढी हवा सह नहीं सकता है। किन्तु साइलिसिया और वैराइटा में फर्क यह है,—साइलिसिया में कैलकेरिया की तरह रोगी के सिर में बहुत पसीना देखा जाता है किन्तु वैराइटा में यह लक्षण नहीं है।

टौन्सिल बढ़ जाने का स्वभाव वैराइटा के एक खास लक्षण है। जरा सा ठंढ लगने ही से टौन्सिल में प्रदाह होता है; टौन्सिल फूल जाता है; कभी कभी पक जाता है। ऐसी अवस्था में वैराइटा की २०० शक्ति व्यवहार करने

समय भी वेलाडोना से बहुत उपकार होता है—यदि जरायु के मुंह सक्त रहे और गरम हो और इससे प्रसव में देर हो तो वेलाडोना प्रयोग होता है। प्रसव के बाद पेडु में बिजली की तरह तेज दर्द हो, पेड़ की सब चीज ढेला बांध कर नीचे घसक जाय तो वेलाडोना से बहुत जल्द सब कष्ट दूर हो जाता है।

जीभ—वेलाडोना का जीभ का सफेद और उसके बीच २ में फुटके २ लाल २ दानें होते हैं।

वेलाडोना के रोगी सर्वदा सिर को ढांक कर रखता है कारण सिर खुला रखने से या बाल काटने ही से सर्दी लगता है। (साइलिसिया, सोराइनम)।

शयन अवस्था में सर्व प्रकार की बिमारी की वृद्धि होना वेलाडोना के एक सिद्धिप्रद लक्षण है विशेषतः सिर पीड़ा में।

बहुत चिकित्सक अकसर एकोनाइट और वेलाडोना को ज्वर में पर्य्यायक्रम से व्यवहार करते हैं। यदि उनलोग जरा सा विचार कर के देखें तब ऐसा भूल नहीं करेंगे। कारण एकोनाइट और वेलाडोना कभी एक किस्म के लक्षण पर व्यवहार नहीं हो सकता है। जैसे एकोनाइट के कइएक लक्षण वेलाडोना के साथ मिलता है वैसे एकोनाइट और वेलेडोना के लक्षणों में फर्क भी बहुत है। दोनों का ज्वर बहुत तेज होता है; दोनों का चेहरा लाल होता है किन्तु

बेलाडोना में लाली एकोनाइट से ज्यादा है। बेलाडोना में दिमाग की गड़बड़ी अधिक देखी जाती है; एकोनाइट में यह बहुत थोड़ा है। बेलाडोना के हाथ पांव ठंढा होता है किन्तु एकोनाइट में ऐसा नहीं होता है। एकोनाइट के चर्म सूखा खरखरा होता है, बेलाडोना के चर्म में थोड़ा २ पसीना होता है। एकोनाइट में बहुत ज्वाला; और प्यास देखा जाता है किन्तु बेलाडोना में ऐसा नहीं है। एकोनाइट के रोगी बहुत बेचैन, व्याकुल होता है और डरता है, बेलाडोना के रोगी बिलकुल ऐसा नहीं होता है।

शक्ति३—६—३०—२०० ।

बेनज़ोइक–एसिड ।

BENZOIC ACID

पेशाब का लक्षण ही इस औषध का सर्व प्रधान लक्षण है; शोथ, कुइनजि (quinzy), उदारमय, शिरपीड़ा, वातरोग इत्यादि कोई बिमारी हो यदि पेशाव के लक्षण मिले तो बेनजोइक–एसिड के प्रयोग से अति आश्चर्य्य फल मिलेगा। पेशाब घोड़े के पेशाव की तरह गाढ़ा रंग के

होता है। पेशाव इतना वदवूदार होता है कि जो एक वार इसका गंध मालूम किया है वह उसको कभी नहीं भूलेगा। पेशाव थोड़ा होता है और उसमें गाद पड़ता है।

वृद्धोंके प्रोस्टेट ग्लैन्ड की वृद्धि के कारण वेखवरी से बुन्द बुन्द पेशाव होने से इस औषध से फल मिलता है। कपड़े में जरासा पेशाव लगने से भी समस्त घर में वदवू फैलजाती है।

रजोकष्ट और जरायु के प्रलेपसस वा टलजाने में उस प्रकार के पेशाव होने से इस औषध से उपकार होगा।

गनोरिआ और सिफलिस जनित वात और गठिया रोग में यह औषध फलप्रद है, ठेहुना (knee joint) का प्रदाह वा आथ्राइटिस (Athritis) रोग में चलने के समय खट २ आवाज होने से यह औषध प्रयोग होता है (वार्बेरिस, लिथियम, लाइकोपोडियम)।

शक्ति ३—६—३०।

बार्बेरिस भल्गेरिस ।

BERBERIS VULGARIS.

गुर्दे (किडनी) में दर्द होना इस औषध का स्वाभाविक लक्षण है; इस कारण यह औषध मूत्र पथरी रोग में व्यवहार होता है। यकृत के ऊपर भी इसकी विशेष क्रिया देखी जाती है। पेशाब की गड़बड़ी के साथ जोड़ों के बात रोग में यह औषध फलप्रद है।

कमर दर्द—ऐसा मालूम होता है कि कमर में आघात लगा हुआ है; कमर का अकड़ाव; बैठी या लेटी हुई हालत से उठने के समय कमर में अत्यन्त दर्द मालूम होता है; बैठे या लेटे रहने से दर्द अधिक मालुम होता है; विशेषतः प्रातःकाल में बिछावन में लेटी हुई हालत में कमर-दर्द अधिक रहता है मालूम होता है कि कमर शून्य हो गया है; कमर में झिनझिनी होता है। रसटक्स में भी इस प्रकार के लक्षण है किन्तु बार्बेरिस का कमर-दर्द पेशाब और किडनी के रोग के कारण है; रसटक्स में पेशाब और किडनी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। बार्बेरिस की और भी विशेषता यह है कि कमर-दर्द मूत्रस्थली और मूत्रनली तक फैल जाता है और पेशाब का भी परिवर्तन हो जाता है।

पेशाव गदला और उसमें रूई के फाहा की तरह वस्तु देखा जाता है। कादो की तरह बहुत परिमाण म्यु-कस (बलगम) या लालवर्ण, मैदा के सदृश गाद नीचे जमता है। पेशाव कभी २ रक्तवर्ण होता है। पेशाव किसी किस्म का हो वार्बेरिस प्रयोग करना हो तो कमर-दर्द के प्रति अवश्य दृष्टि रखना चाहिये।

वात और गठिया के बिमारी में पेशाव में इस प्रकार का दोष और कमर-दर्द रहने से वार्बेरिस देना चाहिये। किसी उच्च स्थान से नीचे पांव फेकने के समय किडनी में दर्द; कमर में दर्द के साथ चेहरा फीका और मलिन दिखाता है और आंखों के चारो तरफ नीला दाग पड़ता है।

पित्त-पत्थरी के हेतु शूलदर्द और जौन्डिस होने से वार्बेरिस फलप्रद होता है। मल कादो की तरह रंग के होता है। भगन्दर के साथ पित्त-जनित लक्षण और गुह्यद्वार में खुजलाहट रहने से यह औषध प्रयोग होता है।

यह औषध विशेष कर बायां किडनी में टनकने और कतरने की तरह दर्द होकर ब्लाडर या मूत्रस्थली और इउरे-थरा वा मूत्रनली तक दर्द फैल जाने से प्रयोग होता है।

(ट्रेबेकम)। दाहिना किडनी के दर्द के लिए लाइकोपोडियम चलने फिरने से पेशाब के कष्ट अधिक होता है।

शक्ति १-३-६-३०-२००।

बिसमथ। BISMUTH.

यह औषध कालेरा इनफेन्टम वा शिशु-कालेरा में उत्तम है। मल बिना दर्द के पानी की तरह; बहुत परिमाण से और अत्यन्त दुर्गन्धी होता है। वमन और प्यास बहुत होता है; पानी पीते ही वमन हो जाता है। वमन में तरल भाग निकल जाता है, किन्तु अतरल भाग नहीं निकलता है; यदि खाद्यादि निकले तो कुछ देर के बाद निकलता है, (आर्सेनिक को वमन में खाद्य और पानीय दोनों खाते ही निकल जाता है); बिसमथ के शरीर गरम और पसीना से गीला रहता है। इस औषध में भी आर्सेनिक की तरह निस्तेज अवस्था देखी जाती है। चेहरा फीका और आंख के चारो तरफ नीला दाग होता है। इस पीड़ा में इसकी २०० शक्ति उत्तम फल देती है।

दन्तशूल में भी यह औषध उपकारी है; मुंह में शीतल जल रखने से दर्द कम होता है (ब्राइयोनिया, कफिया पलसेटिला)।

शक्ति ६—३०—२००

बोराक्स BORAX.

यह दवा सोहागा से बनती है।

स्नायु-विधान के ऊपर इसकी विशेस क्रिया है। रोगी की श्रवणशक्ति अत्यन्त तेज होती है। खांसी, छींक या कागज के खरखराहट शब्द इत्यादि किसी प्रकार का आवाज बर्दास्त नहीं कर सकता है, उससे क्रोध होता है। इसका और एक आश्चर्य्य मानसिक लक्षण देखा जाता है; नीचे के तरफ उतरने के समय अथवा और किसीने उसको उतारने के समय रोगी गिर जाने के डर से चित्कार मारता है; बालक को गोदी में से उतारने के समय या उसको गोदी में लेकर नीचे उतारने के समय वह गिर जाने के डर से चित्कार मारता है और मां को पकड़ लेता है। यह लक्षण बालक से बृद्ध तक सब में हो सकता है। रोगी पलङ्ग, कुर्सी या घोड़े पर चढ़ना नहीं चाहता

है। जेलसिमियम में भी यह लक्षण देखा जाता है; बालक निन्द्रा से अचानक चित्कार मार कर बिछावन को पकड़ता है।

मुंह के जखम (Aphthæ) या मिनावां के लिए यह एक खास दवा है। बोराक्स की क्रिया जो केवल मात्र मुंह के म्युकस झिल्ली में होता है ऐसा नहीं; आंखकी पपनी गोंद की तरह चटचटाहा किची से जुट जाता है। पुराना कान-पकना में भो यह उत्कृष्ट औषध है। नाक के भीतर खोइयां जमता है।

उदरामय—मुंह के जखम के साथ सबज रंग का तरल मल। शिशु पेशाब करने के समय रोता है।

श्वेतप्रदर—रोग में भी यह औषध प्रयोग होता है। स्राव बहुत परिमाण से और सफेद फेन की तरह होता है; स्राव निकलने के समय गरम मालुम होता है। दो रजा-स्राव के मध्यवर्त्ती समय में प्रदरस्राव।

शिर के बाल के जटा बान्धने की आदत।

शक्ति ३—६—३०—२००

—— ::※:: ——

बोभिष्टा BOVISTA

यह औषध प्रधानतः जरायु से रक्तस्राव, मेनोरेजिया (ज्यादा हैंज) मेट्रोरेजिया (जरायु से रक्तश्राव) और लिउकोरिया (श्वेतप्रदर) में व्यवहार होता है। ऋतुस्राव ज्यादेतर या सिर्फ रात में होता है; दिन में नहीं होता है (सिर्फ दिन में ऋतुस्राव, लेटने से स्राव बन्द हो जाता है—कैकटस, क्रियेकम, लिलियम)। ऋतु के पहले और ऋतु के समय उदरामय होता है (एमनकार्ब)। एक ऋतु के बाद अन्य ऋतु शुरु होने के पहले कभी कभी कपड़े में दाग देखा जाता है। रक्तस्राव बहुत जल्दी और बहुत परिमाण से होता है। मासिक ऋतुस्राव के पहले या कुछ दिन के बाद श्वेतप्रदर; चलने फिरने के समय अंडे की सफेदी की तरह स्राव निकलता है। (एमन-म्युर, बोराक्स, कैलकेरिया-फस): कभी कभी स्राव पीलापन सब्ज और झांसीला होता है।

यह औषध को जुरपित्त, टेटर (विसर्पिका) और एकजिमा में प्रयोग करके फल पाया गया। एकजिमा सूखा और लाल अथवा रसयुक्त होता है और उसके ऊपर मोटा खुरन्ट होता है: उसमें ज्वाला वो खुजलाहट होता है।

तोतलापन में भी यह औषध उपकारी है, रोगी पढ़ने के समय तोतलाता है।

हार्ट का पेलपिटेशन (दिल धड़कना); जोड़ों में निहायत कमजोरी, हाथ पैर दुर्बल, हाथ से चीज गिर जाती है: कैंची या चाकू की तरह अस्त्र व्यवहार करने से अंगुली में गहराई हो जाती है; कक्सिक्स (coccyx) प्रदेश या मल-द्वार में भयानक खुजली, ऐसा कि खुजलाते २ जखम कर लेता है। ये सब बोभिष्टा के साधारण लक्षण हैं।

बगल के पसीना में प्याज-की तरह गन्ध होता है। दांत निकलने के बाद रक्तश्राव हो तो बोभिष्टा प्रयोग किया जाता है। नाक से रक्तस्रावको निमित्त भी बोभिष्टा व्यवहार होता है। छींक आने के और नाक छिंड़ने के समय नाकसे खून निकलता है।

शक्ति ६—३०—२००।

ब्रोमियम) BROMIUM

म्युकस (बलगमी) झिल्ली विशेषतः ट्रेकिया (सांसा)

अथवा लेरिंगस (स्वरनली) की म्युकस झिल्ली में इसकी विशेष क्रिया देखी जाती है। उसमें सख्त प्रदाह होकर झूठा पर्दा पैदा करता है; इस कारण यह औषध पर्दायुक्त क्रुपखांसी और डिफथिरिया में बहुत फलप्रद होता है। लेरिंगस (स्वरनली) में ठंढ मालुम होता है; लेरिंगस में जखम और छिलने की तरह दर्द होता है और खांसी होता है; स्वरभङ्ग होता है; साफ बात नहीं कर सकता है। निगलने के समय अकसमात दम बन्द हो कर खांसी होता है। गले में सांय सांय या घड़घड़ आवाज होता है किन्तु बलगम नहीं निकलता है (एन्टिम टार्ट)। गम्भीर श्वांस नहीं ले सकता है; ऐसा मालूम होता है कि वायुनली धुआं से भरा हुआ है।

नाक के सर्दी में भी ब्रोमियम फलप्रद है; सर्दी ज्यादा निकलता है और छींक आता है; सर्दी बहुत दिन तक रहता है किसी तरह से आराम नहीं होता है; नाक के नीचे और किनारे पर जखम और दर्द होता है (सिपा)।

दम्मा, ब्रोंकाइटिस, न्युमोनिया इत्यादि बिमारी में यदि

उपरोक्त श्वांस के लक्षण मिले तो ब्रोमियम विशेष उपकार करता है।

यह औषध ग्लैन्डस का विशेषतः कन्ठमाला धातु के शिशुओं का गिल्टियों वृद्धि और कठिनता में अति उत्तम फलप्रद है। घेघा, पेरोटीड ग्लैन्ड, टौन्सिल, ठुड्डी का ग्लैन्ड, अण्डकोष, ओभारी, स्तन इत्यादि वृद्धि प्राप्त और सख्त हो जाता है या पक जाता है।

स्त्री-यन्त्रों के ऊपर भी इसकी विशेष क्रिया होती है। योनि से बहुत शब्द करके वायु निकलता है। पर्दायुक्त रजोकष्ट (Membraneous dysmenorrhœa) में बहुत सख्त ऐंठन को तरह दर्द होता है। ऋतु अति शीघ्र और बहुत परिमाण से होता है। इस औषध का एक आश्चर्य लक्षण यह है कि रोगी मालूम करता है कि उसके चेहरे पर मकड़ा के जाल लिपटा हुआ है, इस कारण बार २ चेहरा को पोंछता रहता है। नाक के पुरे श्वांस के साथ फड़कता रहता है।

जहाज के नाविक लोग जब जहाज़ से जमीन पर आते हैं उस समय उन लोगों को दम्मा हो तो ब्रोमियम से उपकार होता है।

व्यायामकारी लोगों के दिल की वृद्धि के निमित्त ब्रोमियम उत्तम है।

शक्ति ६—१२—३०—२०० ।

ब्राइयोनिया

BRYONIA ALBA

संचालन से वृद्धि व रोगी स्थिर भाव से रहने पर आफियत होती और जितना हिले डोले उतना ही रोग की वृद्धि होती है। यह ब्राइयोनिया का सर्व प्रधान लक्षण है। रोगी कोई हो यह लक्षण मिलने से ब्राइयोनिया का अवश्य स्मरण करना चाहिये।

दबाने से आराम—ब्राइयोनिया के आश्चर्य लक्षण है; अत्यन्त दर्द वाला स्थानपर भी जोर से दबाने से दर्द की कमी होती है। रोगी दर्द के स्थान को दबा कर लेटता है।

म्युकस झिल्ली की खुश्की भी इस औषध

का एक विशेष स्वाभाविक लक्षण में गिना जाता है। शरीर के सब म्युकस (बलगमी) झिल्ली में खुश्की देखी जाती है। ओष्ठ से गुह्यद्वार तक समस्त एलिमेन्टरी कैनाल (पाचकनली) खुश्क होता है; ओष्ठ, मुंह जीभ इत्यादि इतना खुश्क होता है कि फटा २ दिखाता है। मल अत्यन्त सूखा और कठिन, जला हुआ ऐसा होता है।

पाकस्थली की खुश्की के हेतु अत्यन्त प्यास होता है और बहुत देर २ के बाद बहुत परिमाण से पानी पीता है। फेफड़ा में भी खुश्की देखी जाती है, इस कारण खाँसी अत्यन्त कठिन और खुश्क होता है, बलगम नहीं निकलता है। खांसी के जोर से छाती में सुई भोकने की तरह दर्द होता है और मालूम होता है कि सिर फट कर टुकड़े २ हो जायगा। भोजन और पान के बाद गरम गृह में, श्वांस लेना इत्यादि से खांसी की वृद्धि होती है।

सुई भोकने की तरह दर्द केलिकार्ब में भी बिशेषरूप से देखा जाता है। ब्राइयोनिया के साथ इसका फर्क यह है कि केलिकार्ब का इस प्रकार का दर्द स्थिरभाव से रहने से भी होता रहता है, किसी तरह से कम नहीं होता है, किन्तु ब्राइयोनिया का दर्द स्थिरभाव से रहने से और दबाने से कम होता है और संचालन से वृद्धि पाता है। यह लक्षण

प्रायः सिरस मेम्ब्रेन (रितुवीझिल्ली) में देखा जाता है।

सिरपीडा इतना अधिक होता है कि मालुम होता है शिर फट जायगा; शिर नीचा करने से, खांसने से, आंख खोलने से या हरकत करने से शिरपीड़ा वृद्धि पाती है। शरीर संचालन करने से जी मिचलाता है और मूर्च्छा होने की तरह होता है।

जब ऋतु के समय ऋतुस्राव न होकर नाक या मुंह से रक्त निकलता है तब ब्राइयोनिया से बहुत उपकार होता है।

स्तन के प्रदाह या थनेल में ब्राइयोनिया विशेष फलप्रद है। स्तन पत्थर की तरह कठिन, गरम, मलिन, अत्यन्त भारी और दर्द के साथ होता है; स्तन को हाथ या कोई चीज से उठा कर रखने पड़ता है।

स्त्रियों के प्रदरश्राव बन्द होकर शिरपीड़ा। सख्त खुष्क खांसी, भोजन के बाद वृद्धि, कभी कभी खांसी के साथ वमन होता है।

उदरामय- ब्राइयोनियां का उदरामय भोजन के दोष से विशेषतः शीत के बाद गरमी पड़ने से आरम्भ होता है;

प्रातःकाल में बिछावन से उठने पर हिलने ही से दस्त शुरु होता है। मुंह के स्वाद कड़आ; उठकर बैठने से जी मिच-लाता हैं; सर्वदा चुप होकर लेटा रहना चाहता है।

ब्राइयोनिया गठिया और वात के धातुवाला चिड़-चिड़ाहा और क्रोधी स्वभाव के काला बाल दृढ़ मांसपेशी वाला और पतला दुबला शरीर के काला रंग के लोगों में अधिक उपयोगी है।

क्रोध हेतु पीड़ा (कलोसिन्थ, स्टेफिसेग्रिया) क्रोध के बाद शांत किन्तु उसके साथ शिर गरम और चेहरा लाल; शीत के बाद गरमी पड़ना; दिन में बहुत ठंढ पड़ना, वर्फ के ऐसा चीज पीना; ठंढ लग कर पसीना का रुक जाना; ठंढी हवा लगना; ऋतुस्राव, दुध अथवा किसी प्रकार नया इरपशन का बैठ जाना इत्यादि हेतु पीड़ा होने से ब्राइयोनिया उत्तम कार्य्य कारी होता है।

डिलिरियम में ब्राइयोनिया के रोगी सर्वदा विषयकर्म के बारे में बातचित करता रहता है। बिछावन से उठकर भाग जाना चाहता हैं और मकान जाना चाहता है। कहता है कि घर जाऊंगा।

हरकत से तकलीफ का बढ़ना, स्थिर भाव से रहने से आफियत; ज्यादा प्यास; दबाव से आफियत; ये तीन लक्षण

पर ध्यान रखकर आइयोनिया को व्यवहार करना चाहिये।

शक्ति ६—३०—२००।

——:o:——

बिउफो BUFO

यह मृगी रोग का एक महोषध है। जब इस का फिट रात में होता है और वह फिट के हेतु रोगी चाहे जाग पड़े या नहीं, उसमें बिउफो निश्चय फलप्रद होगा। हस्तमैथुन के हेतु युवकों का मृगी और ध्वजभङ्गरोग में यह उत्कृष्ट औषध है।

यह हुइटलो (Whitlow) वा अंगुलबेढ़ा रोग में अत्यन्त उपकारी है विशेषतः यदि इस रोग का दर्द एक अङ्ग के बराबर ऊपर के तरफ फैलता रहे। अंगुली में आघात लगने से वह स्थान काला हो जाता है और दर्द वहां से ऊपर को ओर फैलता जाता है।

आमाशय (पेत्रीस) के साथ डिलिरियम, शिरपीड़ा और अनिद्रा रहने से इस औषध से उत्तम फल मिलेगा।

घाघो; रक्तश्राव; स्तन के कैन्सर, टोनिक और क्रोनिक आक्षेप, आक्षेप के बाद निद्रा; पैरालेसिस, कार्बङ्कल इत्यादि में यह औषध विशेष लाभदायक होता है।

ब्लैटा ओरिएन्टालिस।

BLATTA ORIENTALIS.

यह दवा संकीरवा नामके कीड़े से बनती है। यह दम्मा के निमित्त खास औषध है, इसका चूर्ण और मादर टिंचर दोनों विशेष फलदायक है। इस कीड़े को पानी में उबाल कर वह पानी थोड़ा २ पीने से दम्मे की बिमारी में विशेष फल होता है।

शक्ति—१—३—६।

——:o:——

कैकटस ग्रान्डिफ्लोरस।

CACTUS GRANDIFLORUS.

यह हृदयरोग का एक अति प्रधान औषध है। दिल की जगह पर ऐसा मालूम होता है कि लोहे के पत्तर से वह कसी हुई है और इस कारण संचालित नहीं हो सकती है। इस प्रकार संकुचित अवस्था इस औषध का प्रधान लक्षण है। यह लक्षण सिर्फ दिल ही की जगह मालूम होता है ऐसा नहीं, यह छाती, मूत्रस्थली, मलद्वार, जरायु इत्यादि स्थान में भी देखा जाता है। दिल में

प्रदाह जनित वातरोग होने से यह औषध मुफीद होता है।

छाती में तकलीफ अथवा स्वांस में कष्ट। ऐसा मालूम होता है कि छाती कसकर बांधा हुआ है और उससे उसकी हरकत अच्छी तरह से नहीं हो सकती है। कभी कभी दम बन्द हो जाता और मूर्च्छा हो जाता है। चेहरे पर ठंढा पसीना होता है; नाड़ी गुम हो जाती है इस हालत में कैकटस महोपकारी है।

दिल का धड़कना, ऐसा की उससे शरीर कांपता है। चलने फिरने से या बायां तरफ लेटने से वृद्धि होता है। दिल की क्रिया अनियमित और नाड़ी इन्टरमिटेन्ट वा सविराम होती है।

दिल की बिमारी के हेतु हाथ और पैर में शोथ; बायां बाहु में भिनभिनी होता है। शरीर के उर्द्ध भाग से क्रमशः गिल्टियां आक्रान्त होती जाती है।

ऋतुश्राव के समय दिल का धड़कना; शयनावस्था में ऋतुश्राव बन्द रहता है (वोभिष्ठा, कष्टिकम)।

दिल की बिमारी के साथ रक्तश्राव होने से कैकटस अति उपयोगी होता है; नाक, फेफड़ा, मलद्वार, मूत्र-नली, अर्श इत्यादि किसी स्थान से रक्तश्राव हो सकता

है। यह औषध एपोप्लेकसी (दिमाग में रक्तश्राव) में भी उपकारी होता है।

ज्वर—पहले दो घंटे तक खुब शीत होता है; उसके बाद शरीर में ज्वाला होता है किन्तु पसीना नहीं होता है। पाकस्थली की गड़बड़ी के साथ इन्टरमिटेन्ट फीवर। ज्वर दिन ११ बजे और रात ११ बजे होता है।

एकोनाइट, डिजिटेलिस, जेलसिमियम, कैलमिया, लैकेसिस इत्यादि औषध के साथ इसकी तुलना करना चाहिये।

शक्ति ६—१२—३०।

कैलाडियम।

CALADIUM.

यह औषध ध्वजभङ्ग के लिए बहुत अच्छा है। रोगी निहायत गमगीन रहता है। स्त्रि-सङ्गम की तेज इच्छा होती है किन्तु पुरुषांग शिथिल रहता है। आलिङ्गन करने से भी लिङ्ग खड़ा नहीं होता है, वीर्य्य भी नहीं गिरता है। (सेलिनिअम)।

गर्भावस्था में योनिपथ में इतना अधिक खुजली होता है कि रमनी हस्थमैथुन करने में मजबुर होती है (ओरिगेनम)।

सायंकाल में ज्वर की हालत में रोगी निद्रित होता है और ज्वर के बाद जागता है। पसीना मीठा होता है, उसमें चींटी लगता है।

ज्यादा दिन तक इस दवे को व्यवहार करने से तम्बाकू खाने की इच्छा नष्ट हो जाती है (एभेना-सोटाइभा)।

शक्ति ३—६—३०।

कैलकेरिया आर्सेनिकम।

CALCAREA ARSENICUM.

शिशु-यकृत रोग में यह एक उत्तम औषध है, यकृत की वृद्धि के साथ एलवुमिनिउरिया रोग होना।

दिल के भलभुलर (valvular) रोग से मुर्दा या

मृगी रोग कि तरह लक्षण; सामान्य मानसिक उत्तेजना ही से दिल-धड़कना; शिर और छाती के बायां तरफ में रक्त का दौड़ा होना इत्यादि में यह औषध फलप्रद होता है।

शरीर में अत्यन्त चर्बी होकर मोटा होना; मोटा शरीर की स्त्रियों के आखरी ऋतु बन्ध होने के समय (Climacteirc period) की नाना प्रकार रोग में और कन्ठमाला व यक्ष्मा धातु के लोगों के लिए यह उत्तम है।

शक्ति १२—३०—२०० ।

कैलकेरिया फ्लुओरिका ।

CALCAREA FLUORICA.

अस्थि (हड्डी), अस्थि की गिलाफ झिल्ली और गिल्टियां के ऊपर इसकी विशेष क्रिया है। अस्थि में गिल्टी होना, अस्थि का फूलन अथवा अस्थि पक कर उस में पीव पैदा होने से यह औषध उत्तम है।

दांत के फिश्चुला रोग (सैन) में एसिड-फ्लुओरिक से फायदा न मिले तो इस औषध को व्यवहार करना चाहिए।

घेघा की प्रथमावस्था में इस औषध के प्रयोग से उप-

कार होता है। गर्दन की गिल्टियों की वृद्धि में भी यह औषध उपकारी है।

शक्ति १२—३०—२००।

कैलकेरिया कार्बोनिका।

CALCAREA CARBONICA.

यह दवा सीप का चूणा से बनती है। इसका दूसरा नाम कैलकेरिया अष्ट्रिअरम (Calcarea Ostriarum) है।

यह हनिमन साहब के अविष्कृत एक उत्तम एन्टीसोरिक और शरीर के धातुगत (constitutional) रोग का महौषध है। शरीर के वर्द्धनकारी यन्त्र समूह ही इसकी क्रिया का केन्द्रस्थान है; शरीर के पोषनाभाव द्वारा इसको पहचाना जाता है। यह गिल्टी, चर्म और अस्थि के ऊपर क्रिया कर के शरीर के परिवर्तन साधित करता है। आंशिक या सर्वांगिक पसीना की वृद्धि: सहज में रोग का पुनराक्रमण होना, रोगी आरोग्य होते २ फिर से रोगाक्रान्त होना: ढीला, मोटा शरीर के बलगमी मिजाज के व कन्ठमाला धातु के लोग जिसको हमेशा ठंढ लगकर सर्दि खांसी होता है उसके लिए यह दवा अमृत है। ढीला, मोटा शरीर के शिशु, जिसको हमेसा सर्दि होता है, जिसका पेट फूला व सिर बड़ा होता है, सिर में बहुत

पसीना होता है; जिसका चान्दी खुला रहता है, हड्डी कमजोर व टेढ़ामेढ़ा होता है, बदन खुनरहित व आंख बरौनक होता है उसके लिए कैलकेरिया निहायत उपकारी है।

कैलकेरिया और सलफर के शरीर के रोगी के शारीरिक और मानसिक धर्म बिलकुल उलटा है। कैलकेरिया के रोगी का शरीर मोटा, ढोला, चर्बीमय; पेट हांडी की तरह ऊंचा व चर्म फीका होता है; स्वभाव अति धीर होता है, कोई काम जल्दी नहीं कर सकता है; चलने फिरने में भी बहुत ढीला है; कैलकेरिया के रोगी के हाथ पांव व चांदी ठंढा रहता है। वहां ठंढक मालूम होता है; लेकिन सलफर इस से सम्पूर्ण विपरीत है; सलफर के रोगी के शरीर पतला व मजबुत होता है; खूब तकलीफ बर्दास्त कर सकता है, वह सब काम चटपट कर लेता है। सलफर के रोगी के हाथ पांव व चांदी ऐसा कि तमाम बदन में ज्वाला होता है; हाथ पांव व चांदी गरम होता है।

शरीर की पोषण क्रिया की गड़बड़ी होना कैलकेरिया का सर्व प्रधान लक्षण है। उसका शरीर बदशक्ल व भद्दा होता है। शरीर अनुचित भाव से कहीं मोटा कहीं पतला होता है। हड्डियां ठीक तरह से बढ़ती नहीं। हड्डी

बहुत धिरे २ बढ़ती है; नरम होती है; टेढ़ीमेढ़ी होती है; बच्चों का चांदी खुला रहता है; बच्चा जल्दी चलना नहीं सिखता है; दांत निकल ने में बहुत देर होता है। शरीर मोटा लेकिन ढीला होता है। रोगी कोई मेहनत नहीं कर सकता है, हमेशा थका हुआ रहता है। ग्राफाइटिस की रोगिणी भी कैल्केरिया की तरह ढीली मोटी होती है। लेकिन कैलकेरिया की तरह इसमें ऋतुस्राव जल्दी २ और ज्यादा न होकर देर में और कम होता है। ग्राफाइटिस में एक खास किस्म के चर्म्म रोग पाया जाता है जो कैलकेरिया में नहीं है।

कैलकेरिया के रोगी के दोनों पैर ऐसा ठंढा रहता है कि मालूम होता है पैर में भींगा, पैतावा पहना हुआ था; शिर के किसी अंश में ऐसा ठंढ मालुम होता है कि उस से बोध होता कि वहां बरफ रक्खा हुआ है। रोगी ठंढी हवा से बहुत कष्ट मालुम करता है। शरीर के किसी जगह में हो ऐसा ठंढ मालूम होने से अवश्य कैलकेरिया को स्मरण करना चाहिये। (सलफर के रोगी में हाथ पैर में ज्वाला विशेष लक्षण है)।

मस्तक में अत्यन्त पसीना; पसीना से तकिया

भींग जाता है। खास कर निद्रित अवस्था में मस्तक में पसीना होना कैलकेरिया का एक प्रधान लक्षण है। मोटा शरीर अथवा मोटा होने के आदत के साथ मस्तक में बहुत पसीना होने से सर्व प्रकार की बिमारी में कैलकेरिया प्रयोग किया जाता है। इस लक्षण पर हाइड्रोकेफेलस, रिकेटस, सुखौड़ी, कनभलशान, कालेरा-इन्फेन्टम इत्यादि रोग में कैलकेरिया देकर बहुत शिशुओं को बचाया गया है। यह लक्षण बच्चा, बुढ़ा जिसमें मिले उसी में कैलकेरिया को महौषध जानना चाहिये।

शरीर के किसी एक स्थान यथा पुरुषांग, गर्दन, छाती, बगल, हांथ, पेर इत्यादि में पसीना। रात को पसीना विशेषतः यदि यक्ष्मा रोग हो तो कैलकेरिया से विशेष उपकार मिलेगा। पसीना के साथ यदि शरीर अत्यन्त ठंढा हो विशेषतः पैर, तब कैलकेरिया उत्तम फल देगा।

खट्टी बू— कैलकेरिया के एक विशेष लक्षण है: गात्र में खट्टी बू, मल में खट्टी बू, पसीना में खट्टी बू, कै खट्टी बूदार: जैसे सलफर के रोगी के मल का दुर्गन्ध साथ २ फिरता है, वैसाही कैलकेरिया का मल की खट्टी बू साथ २ फिरती है।

उदर में इतना बायु जमा होता है कि ख्याल होता है

उसके पेट के भितर एक कटोरा उल्ट कर रक्खा हुआ है। बच्चों के उदरामय रोग में इस प्रकार के लक्षण देखा जाता है और उसमें कैलकेरिया अमृत है।

कैलकेरिया का रोगी मांस खाना नहीं चाहता है। अंडा खाने को बहुत इच्छा करता है।

सलफर के सदृश कैल्केरिया की भी चमड़े के उपर क्रिया है। कैलकेरिया के स्वभाविक शारीरिक लक्षण वाले दुग्धपोष्य बालकों का खुजली और एकजिमा वा अकौता रोग में कैलकेरिया विशेष उपकारी है। कैलकेरिया के रोगी का चर्म ठंढा, नरम और ढीला होता है।

श्वांस-यन्त्र के उपर कैलकेरिया की विशेष क्रिया है। दहिना तरफ के फेफड़े की पीड़ा में कैलकेरिया निहायत उपकारी है। श्वांस लेने के समय छाती में दर्द; स्पर्श से दर्द होना; चलने के समय विशेषतः सिढ़ी से उपर चढ़ने के समय श्वांस-कष्ट। बिना दर्द के गला बैठ जाना, प्रातःकाल में उसकी वृद्धि।

जिन बालिकाओं और स्त्रियों को अति शीघ्र २ बहुत परिमाण से और बहुत देर तक ऋतुश्राव होता है और उस के साथ स्वभावतः पैर से ठेहुना तक ठंढा मालूम होता

है कैलकेरिया उन के निमित्त महौषध है। कैलकेरिया के श्वेतप्रदर दूध की तरह पतला, सफेद व बहुत परिमाण से होता है। कैलकेरिया के शारीरिक लक्षण वाले लोगों में उपरोक्त लक्षण पर, यक्ष्मा रोग में भी कैलकेरिया विशेष फलदायक होता है; इसमें रोगी क्रमश शीर्ण होता जाता है।

पूर्णमासी के समय पीड़ा कि वृद्धि, गर्भावस्था में दन्त शूल; ठंढी हवा से वृद्धि; नाक और जरायु के पलिपस; ध्वज भङ्ग इत्यादि और वहुप्रकार रोग में कैलकेरिया उपयोगी है। फलतः कैलकेरिया के शरीरिक धर्म जो कोई रोगी में मिले उसी के निमित्त यह अमृत-तूल्य है।

सलफर के वाद कैलकेरिया उत्तम है, किन्तु कैलकेरिया के बाद सलफर देने से अनिष्ट करता है। कैलकेरिया को जलदी २ प्रयोग करना नहीं चाहिये।

शक्ति ३०—२०० ।

——:※:——

कैलकेरिया फसफारिका।

CALCAREA PHOSPHORICA.

कैलकेरिया-कार्व के सदृश कैलकेरिया फस-रिकेटी

(Rickety) वा कमजोर हड्डी वाले शिशुओं के निमित अति उतकृष्ट औषध है किन्तु कैलकेरिया–कार्ब के सदृश कैल-केरिया-फस के शिशु ढीला और मोटा नहीं होता है और शिर का पसीना होना भी कैलकेरिया-कार्ब की तरह इसमें प्रधान लक्षण नहीं है। कैलकेरिया-फस के शिशु पतला वो दुर्बल होता है, इस के शिशु के चांदी बहुत दिन तक खुला रहता है या एकबार बन्द होकर फिर खुल जाता है। बच्चा जल्दी चलना नहीं सिखता है; अस्थि टेढ़ा हो जाता है; दांत जलदी नहीं निकलता है।

साइलिसिया के शिशु भी कैलकेरिया-फस के सदृश होता है किन्तु साइलिसिया के शिर में पसीना होना प्रधान लक्षण है। बच्चा बहुत दुर्बल, कम खून के और पतला होता है।

बच्चों के दांत निकलने का समय उदरामयमें कैल-केरिया-फस विशेष उपयोगी है। मल सब्ज होता है मलत्याग के समय अत्यन्त वायु निकलता है और फरफर शब्द होता है, पेट फूला हुआ रहता है।

मेरुदण्ड का दुर्बल और टेढ़ा हो जाने का आदत, गर्दन और शिर को खड़ा नहीं रख सकता है।

टूटी हुई हड्डी को जोर लगाने में कैलकेरिया-फस अति उत्तम औषध है (सिमफाइटम)।

यह औषध बातरोग में अति उत्तम है। बातरोग के कारण और हेमंत काल में बर्फ गलने से जब हवा ठंढी गीली होती है उस समय में अधिक होता है।

यह पढ़ने वाली लड़कियों के शिरदर्द में अतिशय उपकारी है। (नेट्रम-म्युर)। उदरामय रोगी जब ही कुछ खाने की चेष्टा करता है उसी समय पेट में दर्द होता है।

यौवन में पतली दुबली बालिकाओं के बरें (Acne) के निमित्त कैलकेरिया-फस उत्कृष्ट है। बालिका शीघ्र बढ़ कर लम्बी हो जाती है; उसके अस्थि नरम होता है या मेरुदण्ड टेढ़ा हो जाता है।

कैलकेरिया-फस की पीड़ा उसके विषय में चिन्ता करने से ही वृद्धि पाती है।

भगन्दर और खांसी का अदल बदल कर होना कैलकेरिया फस के विशेष लक्षण है।

यह औषध रिकेटी वा कमजोर हड्डीवाला कन्ठमाला और यक्ष्मा-धातु के रोगी में उपयोगी है।

शक्ति ६—३०—२००।

कैलकेरिया आइयाडेटा

CALCAREA IODATA

यह औषध कैन्सर, यक्ष्मा, पेट-फूलना, ग्लैण्डस का फूलना, मेरुदण्ड के अस्थिरोग, स्तन के टिउमर इत्यादि में अति उपकारी है।

टौन्सिल का वढ़ने में यह बेराइटा-कार्ब के सम-तुल्य है।

शक्ति २X—३X विचूर्ण।

कैलकेरिया-हाइपोफसफोरिका

CALCAREA HYPOPHOSPHORICA.

इस औषध से बड़े २ पीवपूर्ण एवसेस वा फोड़े (Abscess) न फट कर पीव अन्दर ही अन्दर सुखकर बिलकुल आरोग्य होते देखा गया है। हड्डी के सैन (Caries) में भी यह औषध फलदायक है।

शक्ति ३०—२००।

कैलकेरिया सलफ्युरीका।

CALCAREA SULPHURICA.

यह हिपार-सलफर के तुल्य औषध है। किसी स्थान से पीवश्राव निकलते रहने से इसके व्यवहारसे उपकार मिलेगा। कैलकेरिया-सलफ के रोगी खुली हवा में अच्छा रहता है। आवहवा के बदलने के समय पीड़ा की वृद्धि होती है।

शक्ति २X—३X—१२

कैलेन्डुला।

CALENDULA.

कोई स्थान कटजाने से जखम को जल्दी २ जोड़ने के निमित्त और पीव पैदा होने न देने के निमित्त इस औषध का भीतरी और बाहरी प्रयोग द्वारा वांछित फल मिलता है। किसी जगह में चोट लगने से वह फट जाकर जखम हो जाए रक्तश्राव हो तो कैलेन्डुला के बाहरी और भीतरी प्रयोग से उपकार होता है। फलतः पीवश्राव दूर करने के लिये यह एक उत्तम है।

अवस्थाविशेष में १ ड्राम मादर टिंचर ६ औंस पानी में मिला कर जखमादि को धोआ जाता है। और १ ड्राम मादर टिंचर दो आउन्स परिमाण अलिभ अयेल, या गाय का घी या भेसलिन के साथ उत्तम रूप से मिला कर जखम मे लगाने से उत्तम फल मिलता है।

——:o:——

शक्ति १—६—३०—२०० ।

कैम्फर CAMPHOR

कोई विमारी हो यदि अकस्मात रोगी की जीवनीशक्ति निस्तेज होकर सर्वांग शीतल हो जाय ; नाड़ी क्षीण और दुर्बल हो जाय तो उसमें कैम्फ़र अमृत तुल्य फल देता है। कोई विमारी शुरू होते न होते ही अगर रोगी का सर्व शरीर वर्फ के सदृश ठढां हो किन्तु शरीर के अन्दर वहुत ज्वाला हो, रोगी वदनमें कपड़ा न रख सके तो सबसे पहले कैम्फर व्यवहार करो (सिकेल) उस प्रकारकी अवस्था साधारणतः कौलरा में देखी जाती है इस कारण कैम्फर कौलरा का एक उत्कृष्ट औषध है। कैम्फर के कौलरा में दर्द नहीं होता है वो थोड़ा २ दस्त

या दस्त बिलकुल नहीं होता है और भेरेट्रम एलबम में दस्त और कै बहुत परिमाण से होता है पेट में बहुत दर्द और ललाट में बहुत ठंढा पसीना होता है किन्तु कुप्रम में कोलैप्स के साथ अत्यन्त ऐंठन होना प्रधान लक्षण है।

आघातादि लग कर मन और शरीर में धमक (Shock) लगना, शरीर ठंढा, चेहरा फीका या नीला हो जाना, निढाल हालत।

प्राणनाशक इन्टरमिटेन्ट ज्वर की शीतावस्था में रेमिटेन्ट फीवर और प्लेग इत्यादि की कोलैप्स अवस्था में कोदवा लालज्वर इत्यादि में इरपशन न निकलने से या निकल कर दब जाने से कोलैप्स अवस्था में कैम्फर द्वारा विशेष फल मिलता है।

शक्ति १—३—६—३०—२०० ।

कैनाबिस-इन्डिका।

CANNABIS-INDICA.

हमलोग के देश में इसका नाम भांग है।

स्मरण शक्ति की गड़बड़ी होना ; इस औषध का प्रधान

लक्षण है। किसी विषय में बात करणे के समय उसको पूरा नहीं कर सकता है; थोरा सा कहने के बाद बाकी भूल जाता है। नाना प्रकार की चिन्ता इकट्ठा मन में आने के कारण से किसी विषय के ऊपर ख्याल नहीं रख सकता है।

सर्वदा नाना विषय में अनुमान और कल्पना करता रहता है; सामान्य तुच्छ बात से भी बहुत हंसता है; सर्वदा मिजाज चढ़ा हुआ रहता है; दुनियां में किसी को वह अपने से बड़ा नहीं देखता है, अपने ही को सब से बड़ा ख्याल करता है।

सामान्य मुहूर्त भी उसको वर्ष की तरह दीर्घ मालूम होता है (आर्जेन्टम–नाइट); सामान्य कईएक हाथ जगह को भी बहुत लम्बा बोध करता है।

डिलिरियम में यह एक उत्कृष्ट औषध है। उसके दिमाग में जो बात एक बार प्रवेश किया है सर्वदा उसी बात का ख्याल में रहता है। असम्बध प्रलाप बकता है; बहुत हंसता रहता है; गुंगुआता है और रोता है; रोगी दिल्लगी करने वाला और अनिष्ट कारक होता है। मृत्यु आ रही है ऐसा ख्याल से डरता है; मालुम होता है उसके चांदी एक बार खुल रहा है और फिर बन्द हो रहा है।

मलद्वार के निकट ऐसा फूलन मालुम होता है जिससे उसका ख्याल होता है कि वह एक गोला के ऊपर बैठा है।

अत्यन्त ऋतुश्राव ; रक्त काला व पतला होता है। आठ महीना गर्भकाल में रक्तश्राव होकर गर्भश्राव का डर हो तो कैनाबिस-इन्डिका के प्रयोग से उपकार होता है।

शक्ति—३—१२—३०—२००।

कैनाबिस--सैटिवा

CANNABIS-SATIVA.

यह दवा गांजा से बनती है।

यह गनोरिया रोग में, खास कर पहली हालत में जब पीव पतला रहता है ; उस समय में अति उत्कृष्ट औषध है। इउरेथ्रा (मूत्रनली) में स्पर्श करने से या दवाने से दर्द मालुम होता है ; ऐसा कि चलने के समय भी जांघ के साथ उस का रगड़से इउरेथ्रा में कष्ट होता है ; इस कारण रोगी दोनों पांव को फैला कर चलता है। गनोरिया पीड़ा,

ऊपर में ब्लैडर तक प्रवेश करने से ब्लैडर (मूत्रस्थली) में दर्द और कभी कभी पेशाब में खुन देखा जाता है।

N. B.—डा० नैश साहब कहते हैं कि वह इस रोग में इस औषध के Q. का पांच बून्द चार औंस पानी म मिला कर उसमें से एक चमच के परिमाण से रोज़ाना तीन बार सेवन करने को देते थे ; इस प्रकार से चार दिन सेवन से प्रदाह कम होकर पीब गाढ़ा और कुछ पीलापन होने से मार्क-सल ३० शक्ति प्रतिदिन तीन दफे देते थे ; इस प्रकार से बहुत रोगी आराम हुआ है किन्तु पीब यदि ग्लीट वा पुराना गनोरिया के पीब की तरह पतला हो तो कैनाबिस सैटिवा के बाद सलफर, कैपसिकम अथवा केलि-आइयोड प्रयोग करके रोगी को आराम करते थे, किन्तु अब डाक्टर नैश साहब कैनाबिस-सैटिवा C. M. शक्ति का सिर्फ एकही खुराक इस्तेमाल करके फल पा रहे हैं और मार्कुरियस इत्यादि और कोई औषध का आवश्यक नहीं पड़ता है ; यदि मार्कुरियस के व्यवहार निहायत दरकार हो तब मार्कुरियस-कर का C. M. शक्ति के एक खूराक यथेष्ट होता है।

कैनाबिस-सैटिवा के व्यवहार के बाद यदि गनोरिया के पीब गाढ़ा और सब्जापन हो और पेशाब में ज्वाला रहे तब रोग के सम्पूर्ण आराम के निमित्त मार्ककर अथवा

कभी कभी पलसेटिला, सिपिया अथवा सलफर व्यवहार होता है:) पीव गाढ़ा होने से और किसी प्रकार की तकलीफ न रहने से सिपिया अथवा पलसेटिला दिया जाता है; और ज्वाला रहने से सलफर अच्छा होता है।

दिल, मेदा, सिर, मलद्वार इत्यादि किसी स्थान से पानी के बून्द गिरने के सदृश मालूम होना: इस लक्षण पर कैलाबिस-सैटिवा द्वारा बहुत से रोगी को फ़ायदा मिला है।

ज्यादा कब्ज के के साथ पेशाव रुक जाना; गुह्यद्वार का सिकुड़ जाना।

आघात लगने के बाद हाथ के अंगुलिओं का अंकड़ाव: सिढ़ी से ऊपर चढ़ने के समय "पेटिला" अस्थि (चकरी) का हट जाना।

स्वांस-कष्ट अथवा दम्मा की बिमारी में रोगी सीर्फ खड़ा होकर स्वांस ले सकता है।

कोई चीज निगलने के समय दम फूल जाना या सरकना।

शक्ति ३०—२००—C. M.

केन्थारिस वेसिकेटोरिया।

CANTHARIS VESICATORIA.

मूत्र यन्त्रादि के ऊपर कैन्थारिस की जिस प्रकार क्रिया देखी जाती है ऐसी और किसी औषध की नहीं है। बार बार पेशाव के वेग के साथ अत्यन्त ज्वाला और कतरने के

सदृश दर्द रहने से बिमारी का नाम जो कुछ ही हो कैन्थारिस के प्रयोग से अवश्य आराम होगा; जैसा कि इस लक्षण के साथ यदि दिमाग, फेफड़ा, स्वांस नली इत्यादि का प्रदाह हो तो भी कैन्थारिस के प्रयोग से आराम होगा।

सर्वदा मुत्रत्याग करने की इच्छा किन्तु सिर्फ बुन्द बुन्द पेशाव निकलता है और वह भी खून मिला हुआ होता है। मूत्र त्याग के पहले, समय में और बाद भी अत्यन्त ज्वाला और कतरने की तरह दर्द होता है।

संगम-इच्छा—स्त्री पुरुष दोनों ही जाति में संगम-इच्छा भयानक प्रबल होती है ऐसा कि उससे रात में नींद नहीं पड़ती है; लिङ्ग भयानक कठिन होने से निहायत कष्ट होता है (पिकरिक-एसिड)।

स्वप्न-दोष में खून मिला हुआ शुक्रश्राव हो तो कैन्था-रिस फलदायक होता है। (लिडम, मार्क, पेट्रोलियम)।

इरिसिपेलस (जहरवाद) रोगमें कैन्थारिस, एपिस के सदृश औषध है। एपिस के इरिसिपेलस में प्रदाह-स्थान शोथ के ऐसा फूला फूला दिखाता है किन्तु कैन्थारिस में वह फफोला की तरह होता है; एपिस में डंक मारने की तरह दर्द होता है। किन्तु कैन्थारिस में ज्वाला अत्यन्त अधिक होती है।

कैन्थारिस में पेशाब की तकलीफ एपिस से अधिक कष्ट दायक है (आर्सेनिक और एपिस में वेश सादृश्य है; प्यास अधिक होने से आर्सेनिक और कम होने से एपिस देना चाहिये)।

कोई स्थान जल जाने से कैन्थारिस के भीतरी और वाहरी प्रयोग विशेष लाभदायक होता है। जल जाने के वाद यदि चमड़ा न फटे तब कैन्थारिस Q (यह न मिले तो) कैन्थरिस के ओर किसी डाइलुशन को एलकोहल के साथ मिला कर जली हुई जगह पर लगा कर रूई से वैन्डेज कर रखने से ज्वाला जल्दी दूर हो जाती है और फफोला नहीं हो सकता है। चमड़ा फट कर

जखम होने से एलकोहल के बदले में शुद्ध जल या डिसटिल्ड वाटर के साथ कैन्थारिस व्यवहार किया जाता है; उभय अवस्था में कैन्थारिस के सेवन भी आवश्यक है।

रक्तामाशय वा खूनीपेचिश रोग में कैन्थारिस विशेष फलदायक औषध है—मल सफेद, फीका रंग के; मल में अंतरी के छोले हुए टुकड़े की तरह सख्त व लाल आंव; मल में खुन भी होता है (कार्वालिक—एसिड, कलचिकम) किसी रोग में ज्वाला के साथ दर्द रहने से सिर्फ कैन्थारिस ही आर्से-निक के बराबर काम देता है। गला और पेट में ज्वाला के साथ प्यास; अंतरी में ज्वाला; छाती में ज्वाला; पेशाब में ज्वाला; सर्व शरीर में ज्वाला।

कालेरा की वापसी हालत में पेशाब न होने से अकसर कैन्थारिस का प्रयोग से पेशाब होता है। ऐसा कि मूत्र विकार की हालत में भी इससे फायदा होता है।

कोई बिमारी हो यदि उसमें कैन्थारिस प्रयोग करना चाहो तो इसके पेशाब के लक्षण पर अवश्य ख्याल रखिओ।

शक्ति ६—३० और उच्च शक्ति

———:※:———

कैपसिकम। CAPSICUM.

यह औषध लाल मिर्चा से बनती है।

शरीर की स्वभाविक गर्मी की कमीवाला दुर्ब्बला तथा शिथिल पट्ठोंवाले मनुष्यों के शरीर में यह विशेष उपयोगी औषध है। शरीर मोटा, बलगमी। रोगी शारीरिक या मानसिक, किसी प्रकार का परिश्रम करना नहीं चाहता है। सर्व्वदा शीत बोध करना खुली हवा में जाने से डरना वो गन्दा रहने का स्वभाव।

किसी स्थान में मिर्चा के पुलटिस लगाने के ऐसा ज्वाला होना कैप्सिकम का स्वाभाविक लक्षण है। रक्तामाशय वा पेचीश, गनोरिया की शेष अवस्था, गले के भीतर की म्युकस वा बलगमी झिल्ली का रोग इत्यादि में कैप्सिकम का विशेष लक्षण ज्वाला वर्तमान रहने से इस के प्रयोग द्वारा अवश्य उपकार मिलेगा। इसकी और एक विशेषता यह है कि इसका ज्वाला आर्सेनिक के ज्वाला की तरह गरम प्रयोग से कम नहीं होता है। गनोरिया में पीव गाढ़ा व पीला होता है।

नाना स्थान के म्युकस मेम्ब्रेन वा बलगमी झिल्ली के यथा—गला के भीतर, नाक के पाश्चात् भाग, छाती

मूत्रस्थली, मूत्रनली, मलद्वार इत्यादि का सिकुड़ जाना भी कैप्सिकम का एक प्रिय लक्षण है।

गले में और अन्यान्य स्थान में ज्वाला वो टीस मारना।

टौन्सिल का प्रदाह में अगर टौन्सिल बैगनी रंग के व उसमें ज्वाला हो, गले के भीतर ज्वाला के साथ संकोचन वा जखम सा दर्द मालूम हो तो कैप्सिकम के प्रयोग से फल लाभ होता है।

प्रतिवार मलत्याग करने के बाद प्यास होता है किन्तु जलपान करने से ही शरीर शिहर उठता है।

सिरपीड़ा में भी कैप्सिकम इस्तेमाल होता है। खांसने के समय रोगी को जान पड़ता है कि सिर फट जाएगा; रोगी दोनों हाथों से सिर को पकड़ रखता है। बैठा रहने से सिरपीड़ा की वृद्धि होती है। स्नायवीय वो आक्षेपयुक्त खांसी होता है; खांसी के साथ दुर्गन्धी हवा निकलती है।

खांसी के समय, दुरवर्त्ती स्थान यथा मूत्रस्थली ठेहुना, कान, पांव इत्यादि में भी दर्द मालुम होता है।

सविराम वा इन्टरमिटेन्ट ज्वर वा जाड़ा बुखार

शीतावस्था में प्यास होना किन्तु प्रत्येक बार पानी पीने से शीत बोध वो देह का शिहरना; उभय कन्धों के मध्यवर्त्ती स्थान में शीत शुरु होकर सर्व्वं शरीर में फैल जाना कैप्सिकम का सिद्धिदायक लक्षण है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

कार्बो—ऐनिमेलिस ।

CARBO ANIMALIS.

यह दवा पशु के चमड़े के कोयला से बनती है।

यह स्क्रफुला (कण्ठमाला) धातु के रोग में, किसी पिड़ा के बाद वृद्धलोगों का कमजोरी में व किसी वजह से रोगी की निढाल हालत व नाड़ी सुस्त हो जाने से इस दवा का व्यवहार से उत्तम फल देता है। गिल्टियों का कठिन होना व बढ़ना, शिराओं का फैल जाना, चमड़ा नीला होना इस दवा का प्रिय लक्षण है। प्लुरिसी रोग के बाद सिना में सुई चुभने की तरह दर्द रहजाना, जख्म का सड़ने की आदत बच्चे को स्तन पीलाने से कमजोरी मालुम होना इत्यादि भी इस दवाका उत्तम लक्षण है।

कार्बो-ऐनिमेलिस के रोगी के शरीर का ग्लेन्डस (गिल्टियां) विशेषतः बगल, कच्छा, स्तन इत्यादि स्थान की गिल्टियां कठिन होकर फूल जाती है, पक जाती है। पुराना और कठिन बाघी (Bubo) पकना शुरु होता है; अन्यान्य चिकित्सा होने के हेतु बाघी के किनारे का कठिन व चिमड़ा हो जाना वो उस से अति दुर्गन्धी पीव निकलते रहने से कार्बो-ऐनिमेलिस अति उत्तम क्रिया करता है।

किसी स्थान के **ग्लैन्ड के फूलन** वो कठिनता के साथ अत्यन्त दुर्बलता मालुम होने से अवश्य कार्बो एनिमेलिस, देना चाहिये। ऋतुस्राव, श्वेतप्रदर, उदरामय इत्यादि से दुर्बलता होना व स्राव अत्यन्त दुर्गन्धी होना इस दवा का खास लक्षण है।

ऋतुस्राव जल्दी २ होता है—थोड़ा २ करके बहुत दिन तक स्राव होता है। ऋतुस्राव होने से अत्यन्त दुर्बलता बोध; ऐसा कि रोगिणी बात तक कर नहीं सकती है।

श्वेतप्रदर दुर्गन्धी, जखम पैदा करनेवाला, पतला वो दीर्घकालस्थाई; उससे पैर में झिन्झिनी पैदा होना।

स्तन में कठिन गिल्टियां मालुम पड़ना, बदन में तामा का रंग का दानें (Eruption) होना।

सामान्य भारी वस्तु उठाने से या सामान्य व्याम करने ही से जोड़ों में कमजोरी व दर्द मालूम होना; बच्चों के ठेहूना मे अत्यन्त कमजोरी।

सड़ी मछली या तरकारी खाने के हेतु पीड़ा में यह अति उत्कृष्ट औषध है।

शक्ति ३०—२०० ।

कार्बो भेजिटेबिलिस।

CARBO VEGETABILIS.

यह लकड़ी का कोयला से बनता है।

नाना प्रकार औषध सेवन से कमजोरी में और वीर्य, खून वगैरह का ज्यादा स्राव से अथवा किसी बिमारी के कारण निहायत कमजोरी में यह दवा उपकारी है। टाइफायड ज्वर, कौलरा वगैरह रोग की अन्तिम व कोलैप्स अवस्था में यह दवा अमृत के समान है। बुढ़ें की शिराओं में ज्यादा खून होने से भी इस से फायदा होता है। रक्तस्राव के लिए भी यह एक आला दवा है। सर्व्वदा पंखे

की ख्वाहीश करना इस दवा का एक सिद्धिदायक लक्षण है।

यह एक मृत-संजीवनी औषध है। हर किसीम की बिमारी के शेष भाग में जब जीवनी शक्ति प्राय शेष हो जाती है, सर्वं शरीर शीतल हो जाता है, श्वांस प्रश्वास शीतल, नाड़ी सूत की तरह क्षीण भाव से तथा ठहर २ कर चलती रहती है या लुप्त हो जाती है, सर्व्व शरीर में विशेषतः शाखाओं में शीतल पसीना होती है। रोगी को देख कर ऐसा मालूम पड़ता है कि उस में प्राण नहीं है। उसका चेहरा वो नाखुन नीला हो जाता है। शरीर का जगह २ में खून जम कर चमड़ा नीला हो जाता है। रोगी इतना दुर्व्बल होता है कि उसके कारण श्वांस ले नहीं सक्ता है और हमेशा "हवा करो हवा करो" बोल कर चित्कार या इशारा करता रहता है। उस समय में यह जादु का असर देखलाती है। कौलराकी शेष अवस्थामें जब दस्त, कै, पेशाब, सब बन्द रहता है और पेट फूल जाता है इसके साथ पूर्वोक्त लक्षण वर्त्तमान भी रहते हैं तब कार्बो-भेज मंत्रशक्ती की तरह उपकार करता है।

दुर्व्बलता के निमित्त यह चायना, आर्सेनिक वा मिउरिएटिक एसिड के प्रायः तुल्य औषध है। सुस्त,

शीर्ण (Emaciated), दुर्ब्बल व्यक्तियों की कमजोरी पैदा करने वाली पीड़ा में यह विशेष उपकारी है। पूर्व्ववर्त्ती कोई पीड़ा वा शारीरिक गड़बड़ी के हेतु और कोई पीड़ा होकर रह जाय और किसी तरह से आराम न हो तो कार्ब्बो-भेज द्वारा विशेष फल लाभ होता है, (चायना, सोर, फस)। शरीर में कोई पीड़ा बद्धमूल होने से अगर देखो कि रोगी निहायत दुर्ब्बल हो गया है वो तुमको मालुम हो कि यह रोग पहले के कोई शारीरिक अथवा मानसिक रोग से पैदा हुआ तो कार्बो-भेजिटेबिलिस के प्रयोग द्वारा विशेष फल मिलेगा। जैसे रोगी कहेगा कि बचपन में उस को हुपिंग कफ हुआ था और उसी समय से वह दम्मा (Asthma) से तकलीफ पा रहा है; बहुत दिन पहले शराब पीता था और उसी समय से अजीर्ण दोष (Dyspepsia) हुआ है, बहुत दिन पहले चोट लगा था अब उसका कोई निशान नहीं है लेकिन वर्त्तमान तकलीफ उसी समय से शुरु हुई है; टाइफाइड ज्वर के बाद उसका उपसर्ग वो दुर्ब्बलता रह जाना इत्यादि हालत में यह दवा मुफीद है।

हाजमे की नली के ऊपर इस दवाई की विशेष क्रिया होती है। मसुढ़े से अति सहज से रक्तस्राव होता है; मसुढ़ा दांत से अलग हो जाता है; दांत को दवाने से दर्द होता

है। मेदा बहुत कमजोर; हमेशा अम्ल की उत्पत्ति होती है, जो पचपचाता है, सामान्य हलका खाना भी पचता नहीं विशेषतः चर्बीयुक्त खाद्य; (पलसेटिला) पेट फूल जाता है।

पेट-फूलना के निमित्त कार्ब्बोभेज महौषध है। मेदा में वायु जमा होकर पेट अत्यन्त फूलजाता है, पेट में अत्यन्त दर्द और शयनावस्था में उसकी वृद्धि होती है; ढेकार आने से आराम बोध होता है। उपरोक्त लक्षणों के ऊपर कार्बो-भेज के प्रयोग द्वारा सामान्य अजीर्ण से मेदा का कैन्सार तक आराम होता है। कैनसार रोग के साथ मेदा में अत्यन्त ज्वाला देखा जाता है, पेट फुलने के साथ दस्त में कार्बो-भेज दिया जाता है, (कब्ज में लाइको)

आगकी तरह ज्वाला कार्बो-भेज का एक प्रिय लक्षण है। छाती में उक्त प्रकारका ज्वाला तथा दुर्ब्बलता (फस-एसिड, स्टैनाम, सल्फर)। अतिशय सांघातिक निउमोनिया रोग में जब छाती तरल बलगम से भर जाता है किन्तु दुर्ब्बलता के हेतु रोगी बलगम निकाल नहीं सकता है, ऐसी अवस्था में एन्टिम-टार्ट द्वारा कोई फल न होकर शरीर की जगह २ पर नीला दाग होना, बलगम दुर्गन्धी होना व रोगी लगातार "हवा करो हवा करो" बोल कर चित्कार करते रहने से इस से विशेष फल लाभ होता है।

स्वरभंग में भी यह दवा विशेष उपकारी होता है। स्वरभंग विशेषतः गीली हवा में वो सन्ध्याकाल में उसकी वृद्धि (प्रातःकाल में वृद्धि—कष्टिकम); वृद्धों का ब्रंकाइटिस, दम्मा इत्यादि में भी यह उपकारी है।

रक्तस्राव के लिये यह एक उत्कृष्ट औषध है। रक्त बतला, कालाः नाक मसुढ़े, पाकस्थली इत्यादि से खुन चुता रहता है। शरीर जर्द, चेहरा वो सर्व्वांगात्र के चर्म्म के सिकुड़ जाना इत्यादि अवस्था के टाइफायड की अवस्था प्राप्त रोगी भी कार्बो-भेज से आराम होता है।

शक्ति ३०—२०० ।

कार्बोलिक एसिड

Carbolic acid.

सिर दर्द (Headache). सिर दर्द के साथ २ मालूम होता है कि सिर रस्सी से बंधा हुआ है और एही लक्षण वेलाडोना में भी है।

कपाल अर्थात पेशानी से लेकर कपाल के पिछले भाग अर्थात अक्सिपाट प्रयन्त सर्वदा दर्द का रहना और सिर के मध्य भाग में ज्वाला (सल्फर) गर्दन के ऊपर और नीचे और कान के पिछले हिस्सा में सर्वदा भारी मालूम होना और दर्द गर्दन में इतना दर्द और भारीपन मालूम होता है, कि रोगी छूने नहीं देता है।

सर्वदा सिर का चक्राना आंख मूंदने पर भी आराम नहीं मालूम होता

खुले हवा में वेग से चलने पर थोड़ा २ आराम मालूम होता है।

पाई रोजेन कान में भन २ आवाज के साथ सिर में दर्द किन्तु सुनने की शक्ती कम नहीं होती है।

सर्दी और गर्मी होकर सर दर्द और हठात दृष्टि शक्ती का कम होने से इस दवा का प्रयोग करना अति उपयोगी है।

अग्नि दग्ध जखम (आग से जलजाने से घाव)

जब जले हुये "स्थान पर जखम होना आरम्भ होता है और उससे दुर्गन्ध निकलने लगता तब कार्बोलिक एसिड ६ X दिन में तीन बार सेवन करना चाहिये और उसी का मदर

टिन्चर वेसलिन के साथ मिला कर मलहम तय्यार करके उस घाव पर लगाना चाहिये।

पेशाब कार्बोलिक एशिड का पेशाब काला रङ्ग का होता है।

गर्भावस्था में वमन और जीमिचलाना गर्भावस्था में प्रातः काल वमन या जी मिचलाने में इस दवा के प्रयोग से अति उत्तम फल मिलता है।

गर्भावस्था में आहार करने के साथही वमन करने से कार्बोलिक एसिड अति उपकारी है।

अजीर्ण और पेट फुलना खाने का पदार्थ पूर्ण रूप से हजम न होकर कभी कबजियत और कभी पतला पाखाना का होना और मल में सड़ा दुर्गन्ध आना पेट में दुर्गन्ध के साथ वायू का जमा होना और सर्वदा दुर्गन्ध युक्त वायू का बाहर होने से भी पेट फुलना कम नहीं होता।

कौलरा और शिशू कौलरा (Cholera and Cholera Infantum) मल में अत्यन्त सड़ा दुर्गन्ध, चावल धोआ जल के समान किम्बा सड़े हुय अन्डे के समान मल का

बाहर होना पाखाना आंव रक्त मिला हुआ मानो अतड़ी सड़ कर बाहर हो रहा है बदहोशी की अवस्था में काले रङ्ग का पतला जल के समान पाखाना होना ।

मलत्याग के समय कूंथना, दर्द, जी मिचलाना—

पाखाना मालूम होने पर भी न होना । नक्स भोमिका

जी मिचलाना, अत्यन्त वमन ।

हरा या काला रंग का के और बेचैनी का होना ।

कोलरा या शिशु कौलरा में उपरोक्त वमन और पाखाना के साथ निम्न लिखित लक्षणों पर भी ख्याल रखना चाहिये रोगी अत्यन्त चिल्लाता है और बेचैन रहता है और रह २ कर चितकार कर के उठता है एपिस मे भी यह लक्षण पाया जाता है प्रन्तु वमन और मल का रङ्ग हरा काला और प्यास नही रहता है रोगी सोये हुये अवस्था मे भी बर २ कर के बक्ता है और चौंक उठता है जीभ सूखा और पीले रङ्ग का लेप युक्त अत्यन्त प्यास अत्यन्त ज्वर ।

पेशाब अत्यन्त गदला काला और सबज रङ्ग का के हरा या काला रङ्ग का होता है ।

खांसी-सुर सुराहट के साथ तकलीफ देने वाली खांसी—

खांसी कभी सूखा और कभी थोड़ा सा बलगम का निकलना ।

हुपिङ्ग खांसी मे कार्बलिक एसिड ६x या १२x इस्तमाल कर के बहुत लाभ उठाया गया है ।

शक्ति ६—३०—२००

कार्डुयास मेरियेनस ।

CARDUS MARIANUS.

यह यकृत-पीड़ा का अति उत्कृष्ट औषध है। गलष्टोन (Gall stone) यानी पित्त-पत्थरी के हेतु पुराना गलष्टोन कलिक में यह निहायत उपकारी है । इसका कोई विशेष लक्षण निर्णित नहीं हुआ है लेकिन पित्तपत्थरी जनित शूल दर्द के समय में इसका मदर टिंचर का १० बुन्द करके

१५, २० मिनिट के अन्तर पर व्यवहार करने से बहुत फायदा होता है।

कौलोफाइलाम।

CAULOPHYLLUM.

यह स्त्री-रोग में महौषध है। श्वेत प्रदर वाली स्त्री वो बालिका के निमित्त यह बहुत फल दायक है। प्रसव के दर्द कमजोर, प्रसव में देर होना।

स्त्रियों के वात रोग विशेषतः छोटे २ जोड़ों के (एक्टिया स्पाइकेटा)। बार २ दर्द स्थान परिवर्त्तन करता है (प्रल्सेटिया); पीड़ा युक्त स्थान अंकड़ा हुआ वो दर्द के साथ।

लिउकोरिया वा श्वेत प्रदर झांसीला वो दुर्ब्बलता जनक। आंख के ऊपर वाले पपुटे भारी (जेल्स, सिपिया कष्टिकम); ललाट में सिहुली की तरह दाग; बालिकायों के लिउकोरिया (श्वेतप्रदर) लिउकोरिया के हेतु गर्भ न होना।

जरायु की दुर्बलता के हेतु गर्भस्राव का आदत (ऐलेट्रिस-फेरिनोसा)।

प्रसव-दर्द Labour—आक्षेप के हेतु "अस" (os) वा जरायु का मुख कठिन रहने के हेतु प्रसव-दर्द अल्पकाल स्थायी, असम ओ आक्षेपयुक्त; प्रसव के प्रारम्भ में कष्ट-दायक निष्फल (Ineffectual) दर्द; उससे प्रसव की सहायता नहीं होती है। इसप्रकार अवस्था में इस दवा के प्रयोग से प्रसव शीघ्र होता है। जोर से दर्द शुरु होकर फिर कम हो जाना इसका प्रिय लक्षण है।

प्रसवान्त में **प्रसवान्तिक स्राव** (Lochia) की कमी न होकर वृद्धि होना और उसका रंग कालापन होना (सिकेलि); उसके साथ दुर्ब्बलता वा शरीर के अन्दर कम्प मालुम होना इत्यादि कौलोफाइलम का अति प्रिय लक्षण है। जरायु की शिथिलता के हेतु प्रसवान्त में बहुत दिन तक कालापन रक्तस्राव होना।

ऐंठनेवाला दर्द के साथ ऋतुस्राव (Spasmodic dysmenorrhœa) होने में भी कौलोफाइलम विशेष उपकारी है।

शक्ति ३—१२—२०० ।

—— :※: ——

कष्टिकम । CAUSTICUM

यह भी एक ऐन्टिसोरिक (Anti Psoric) औषध है।

दुर्ब्बलता Weakness—इतनी अधिक दुर्ब्बलता कि उठने में बैठने में, चलने में या कोई चीज को पकड़ने के समय सर्व्व शरीर कांपता रहता है (जेलसिमियम)। यह इस दवा का सर्व्व प्रधान लक्षण है।

पक्षाघात Paralysis—ज्यादेतर रोगी में देखा जाता है कि उक्त प्रकार की दुर्ब्बलता से क्रमशः पक्षाघात हो जाता है। स्थानिक यानी शरीर के किसी एक स्थान, यथा-मुख-मण्डल, आंख के पपुटे, स्वर-यन्त्र, मांस-पेशी, निगलने की क्रिया का सहायक मांस-पेशी; जीभ, मूत्रस्थली इत्यादि किसी एक स्थान का-पक्षाघात में यह आश्चर्य्य फलदायक है। पक्षाघात साधारणतः दहिना तरफ में होता है।

प्रायः सर्व्व प्रकार स्नायवीय आक्षेप, यथाः—कोरिया (पेशियों का फड़कना), कन्वलशन, मृगी (Epilepsy,) लोकोमोटर एटाक्सिया (Locomotor Ataxia) इत्यादि रोग में भी यह दवाई उत्तम क्रिया करती है। नाना प्रकार

निउरैलजिया (Neurelgia) वा स्नायुशूल में भी यह विशेष फलदायक होता है।

मानसिक लक्षण के ऊपर भी कष्टिकम की विशेष क्रिया देखि जाती है। रोगी अत्यन्त गमगीन; निराश, सर्वदा चुपचाप बैठा रहने का और प्रत्येक विषय या कार्य्य का खराब नतिजा (मन्दफल) देखने का अभ्यास। बहुतकाल तक मानसिक दुःख चिन्ता, शोक, डर इत्यादि भोग करने के हेतु उस प्रकार मानसिक गड़बड़ी होना (इग्नेशिया नेट्रम म्युर, एसिड-फस); किसी प्रकार चर्म्मरोग दब जाने के हेतु दिमाग की गड़बड़ी; इत्यादि में यह उत्तम है।

श्रवणशक्ति Hearing कान में नाना प्रकार के शब्द यथा—भन २, सा २, भिन २, शब्द सुनाई पड़ता है। रोगी अपने बात की प्रतिध्वनि सुनता है। कान रक्तवर्ण और उसमें ज्वाला (सलफर) इन दोनों दवाई के विशेष सादृश्य है। इस लिये सलफर के बाद कष्टिकम और कष्टिकम के बाद सलफर उपकारी होता है।

गले के भीतर भी कष्टिकम की उत्कृष्ट क्रिया है। गले में ज्वाला; गलनली में सुरसुराहट वो खुश्की; गले में सुरसुराहट के साथ खुश्क खांसी, खासने के समय

गले में जख्म सा दर्द; अत्यन्त खुष्क खांसी; शीतल जल पीने से खांसी की कमी।

जीभ का पक्षाघात, बोली अस्पष्ट, जीभ के दोनों पार्श्व सफेद, मध्यभाग रक्तवर्ण।

आंख के सामने मकड़ा का जाला, कुहासा या बादल (Cloud) की तरह मालुम पड़ना, धुंधली दृष्टि। कैटारैक्ट वा मोतियाबिन्द की प्रथम अवस्था में इस प्रकार का लक्षण मिलने से कष्टिकम बहुत फायदा करता है।

उदर वो अन्त्रों में भी इस दवा की विशेष क्रिया देखी जाती है। उदर में चुना जलाने के ऐसा ज्वाला तथा डकार आना। कब्ज; बार बार मलत्याग करने की निष्फल चेष्टा, मलत्यागकाल में इतना कुंथना पड़ता है कि उससे रोगी का चेहरा लाल हो जाता है। और एक आश्चर्य्य लक्षण यह है कि रोगी खड़ा होकर कुछ आसानी से मलत्याग कर सकता है।

अर्श रोग वा बवासीर—अर्शमें फाड़ने की तरह या जखम सा दर्द, ज्वाला; उसमें से रस निकलना, खुजली। चल फिर करने के समय में अथवा जोर से बात करने से वृद्धि।

स्वरभंग प्रातः काल स्वरभंग की बृद्धि। गले में जखम सा दर्द; जोर से बोल नहीं सकता है।

मूत्रयन्त्र के ऊपर इसकी विशेष क्रिया है। ब्लाडर (Bladder) वा मूत्रस्थली के मुख की दुर्बलता में यह सर्व्व प्रधान औषध है। खांसने के वा हंसने के समय बेखबरी से मूत्रत्याग होता है। बिछावन में पेशाब करने का स्वभाव (सिपिया)।

वातरोग होकर क्रमशः हाथ या पैर का पक्षाघात होना। हाथ या पैर की मांसपेशियां कठिन, अकड़ा हुआ वो दुर्ब्बल, ऐसा कि हाथ पांव कंपता रहता है। गर्दन के मांसपेशियां अकड़ा हुआ; वहां का पट्ठों इतना कठिन होकर रहता है कि गर्दन को हिलाया नहीं जाता है।

मस्से Warts—के लिये कष्टिकम अति उत्तम औषध है। मस्से से सहज ही में रक्तस्राव होता है वो पतला रस निकलता है। आंख के पपुटे के ऊपर, मुखमण्डल वो नाक के ऊपर तथा सर्व्व शरीर में मस्से।

जल जानेका जखम पुराना हो जाय अथवा जखम आराम होकर फिर से हो जाय तो कष्टिकम से आराम होता है।

छाती वो गले में जखम सा दर्द; दर्द के हेतु बलगम को निकाल नहीं सकता हैं; निगल लेता है।

शरीर में शीसा का विष प्रवेश करने के हेतु पक्षाघात होने से कष्टिकम फलदायक होता है। यह पारा वो सल्फर के दोष को भी दूर करता है।

वृद्धि Aggravation——साफ, सूखा दिन में, गरम गृह में, ठंढो हवा में भिगनेसे वा नहाने से रोग की वृद्धि होती है।

कमी Amelioration——गीली Moist: हवा से आफियत होती है।

शक्ति ३०—२००

—:o:— —

सियानोथस आमेरिकानस

CEANOTHUS AMERICANUS,

यह प्लीहा रोग का अति उत्कृष्ट औषध है। प्लीहा की वृद्धि, प्रदाह वो दर्द, प्लीहा-स्थान में पूर्णता वो भारीपन मालूम होना। प्लीहा की वृद्धि के साथ

इन्टरमिटेन्ट वा जाड़ा बुखार में यह विशेष फल प्रद है। इसका मदर टिंचर का २० बुन्द, एक औंस ओलिव ओयाल में मिला कर प्लीहास्थान में मालीश करने से विशेष फायदा होता है।

शक्ति १—३—Q. ।

सिड्रन CEDRON.

मैलेरिया ज्वर में यह औषध विशेष फल दायक होता है। घड़ी की कांटा की तरह ठीक निर्दिष्ट समय में शीत के साथ ज्वर होना इसका स्वाभाविक लक्षण है।

शक्ति६—३०—२०० ।

कैमोमिला । CHAMOMILLA.

स्वभाव Temperament—कैमोमिला का मानसिक लक्षण ही सब से जरुरी लक्षण है। रोगी बच्चा, जवान, बुढ़ा, स्त्री या पुरुष कोई हो और किसी किस्म की बिमारी हो अगर उस में कैमोमिला का स्वाभाविक लक्षण मिले तो इसके प्रयोग द्वारा अवश्य फल लाभ होगा।

रोगी अत्यन्त चिड़चिड़ाहा, वहुत जिद्दी। सामान्य कारण से ही निहायत प्रिय वो अपना आदमी के साथ झगड़ा करता है। रोगी अच्छी तरह से समझता है कि वह अन्याय कर रहा है—अपना अन्याय स्वीकार करता है किन्तु फिर भी दोष करता है। रोगी को इसका कारण पुछने से वह कहता है कि वह ऐसा न कर के रह नहीं सकता है। स्त्रियों के ऋतु की गड़वड़ी होने से कभी २ इस प्रकार का लक्षण देखा जाता है।

शिशु मन की अवस्था बात से प्रकाश नहीं कर सकता है, लेकिन उसके भाव से ही समझ लेना पड़ता है। बच्चा बड़ा रोने वाला, ऐसा कि किसी तरह से ही उसको शान्त नहीं किया जाता है—सिर्फ गोदी में लेकर टहलने से कुछ शान्त रहता है। हमेशा तरह वे तरह की चीजोंकी ख्वाहिश करता रहता है किन्तु उसकी इच्छित चीज मिलने से उसको फेंक देकर दुसरी चीज मांगता है। शिशु जानता नहीं कि उसको ठीक क्या चाहिये, लेकिन होमियोपैथिक चिकित्सक जानता है कि उसको कैमोमिला चाहिए। ऐसी हालत में उसकी दो एक खुराक कैमोमिला देने ही से तुरन्त उसकी तबियत शान्त हो जाती है। ज्वर, उदरामय

दांत निकलना, अन्यान्य बहुत प्रकार के रोगों में इस प्रकार के लक्षण मिलने से कैमोमिला का प्रयोग द्वारा अवश्य लाभ होता है।

क्रोध होने के बाद कोई पीड़ा हो तो कैमोमिला प्रयोग होता है। एकोनाइट, ब्राइयोनिया, कलोसिन्थ नक्स, इगनेसिया, लाइकोपोडियम, स्टैफिसेग्रिया इत्यादि औषध भी क्रोधजनित पीड़ा में व्यवहार होता है। माता अथवा धाई के क्रोध होने के बाद उसका दूध पीने से; बच्चा को दस्त; कन्वलशन इत्यादि कोई तकलीफ हो तो भी कैमोमिला फलप्रद होता है।

दर्द Pain——कैमोमिला के रोगी का दर्द का मौका बिला तकलीफ के बहुत ज्यादा मालुम होता है। सामान्य दर्द होने से भी रोगी को वह असहनीय मालुम करता है। वह बार बार चित्कार करके कहता है दर्द बर्दास्त नहीं कर सकता हूं प्राण निकल जा रहा है।" रोगी पागल की तरह हो जाता है, रोता है। किसी ने भला या बुरा कोई बात कहे तो उसको गुस्सा आता है, यानी कैमोमिला का स्वभाविक मानसिक लक्षण प्रकाश पाता है। प्रसव-काल में उक्त प्रकार के दर्द देख पाने से एक या दो खुराक २०० शक्ति का कैमोमिला देने से सुप्रसव होकर

रोगीनी की तकलीफ दूर हो जाती है। दन्त-शूल वात रोग, स्नायु शूल (Neuralgia) इत्यादि में इस प्रकार का दर्द देख पाने से अवश्य कैमोमिला दो। दर्द के इस प्रकार के बोधाधिक्य (over sensitiveness) कौफी वा मादक द्रव्य के सेवन करने वालों में हो तो कैमोमिला द्वारा उपकार होता है।

उक्त प्रकार के दर्द के साथ दर्द की जगह में झिनझिनी पैदा होना। वात रोग, पक्षाघात इत्यादि रोग में अगर झिनझिनी पैदा होना देख पाया जावे तो कैमोमिला विशेष फलदायक होता है। कैमोमिला का दर्द प्रायः गरम प्रयोग से अधिक होना होता है। किन्तु पलसेटिला की तरह ठंढा प्रयोग से कम नहीं होता है बल्कि ठंढा प्रयोग से या ठंढा हवा से तकलीफ की वृद्धि होती है।

अत्यन्त अस्थिरता वातरोग, उदर-शूल इत्यादि सब्व प्रकार दर्द में ही रोगी अस्थिर होकर छटपटाता है—घुमता फिरता रहता है। शिशु किसी तरह से लेटा या बैठा रहना नहीं चाहता है ; सिर्फ रोता है और उसको गोदी में लेकर टहलने से चुप रहता है।

ऐकोनाइट, आर्सेनिक और रस—टक्स में भी इस

प्रकार की अस्थिरता है किन्तु प्रत्येक दवा के चित्र यानी स्वाभाविक लक्षणों पर ध्यान रखने से इन सबों को परस्पर अलग करना कठिन नहीं होगा यथा—ऐकोनाइट का डर घवराहट; आर्सेनिक की निस्तेजता के साथ डर, घवराहट और कैमोमिला का वदमिजाज वो गुस्सा के साथ अस्थिरता।

मस्तक में गरम पसीना, पसीना से बाल भिग जाता है। कर्ण-प्रदाह में इस प्रकार कष्ट होता है कि रोगी चित्कार कर रोता है, कान में ठंढी हवा लगने से कष्ट की वृद्धि होती है। एक तरफ के गाल गरम वो लाल और दूसरा गाल जर्द वो ठंढा।

खाने या पीने के बाद चेहरे पर पसीना; किसी प्रकार गरम चीज मुंह में रखने से दांत में दर्द, गरम गृह में जाने से दांत के दर्द की वृद्धि। रोगी मालूम करता है कि उसका दांत वहुत लम्बा हो गया।

उदरामय विशेषतः क्रोध या गुस्सा के हेतुः बच्चोंका दांत निकलने के समय उदरामय; मल हरा और उसमें सड़े अन्डे की तरह वू। मल सब्ज, पतला या थुड़ाया हुआ घास की तरह। कौफि सेवन कर्त्ताओं के उदर-शूल

पेट में हवा जमा होने के हेतु शूल, पेट बहुत फूल जाता है, अल्प २ हवा छुटता है लेकिन उससे आराम मालूम नहीं होता है।

रक्तस्राव—जरायु से बहुत परिमाण रक्त स्राव, रक्त कालापन वो ढेला २। क्रोध के बाद जरायु में शूल, प्रसव-दर्द ऊपर के तरफ से शुरु होकर जांघ के बराबर नीचे उतरता है: दर्द बर्दाश्त नहीं होता है।

खांसी—गले में सुरसुराहट के साथ खुष्क खांसी रात में विशेषतः निद्रावस्था में खांसी की वृद्धि।

सर्व शरीर में शीत बोध वो शरीर शीतल किन्तु मुखमण्डल वो श्वांस प्रश्वास गरम। शरीर में ज्वर की गर्मी के साथ शीत होता है, गरम पसीना।

स्तनदूध—बच्चों को दूध पीलाने के समय दूध चूकर गिरता रहता है (कोनायम)। स्तन की घुन्डी पर स्पर्श बर्दाश्त नहीं होता है।

ऊपर के लिखित किसी लक्षण के साथ कैमोमिला का मान

सिक लक्षण वर्त्तमान रहने से अवश्य कैमोमिला देना चाहिए। मल के लक्षण पर भी विशेष दृष्टि रखना चाहिये।

चेलिडानियम मेजस ।

CHELIDONIUM MAJUS.

यह यकृत का एक महौषध है । यकृत-पीड़ा के साथ अन्यान्य नाना प्रकार की पीड़ा में यह व्यवहार होता है। बदन का चमड़ा पीला । दहिना तरफ का पखुरा की हड्डी का नीचे का कोना में हमेशा दर्द होना । प्रत्येक ऋतु बदलने के समय रोग का पुनः आक्रमण होना । हाइड्रोसिल ।

दहिना पखुरा के नीचे का कोना में दर्द; यह चेलिडोनियम का अति प्रिय लक्षण है। इस प्रकार का दर्द यकृत की पीड़ा में देखा जाता है। पांडुरोग, खांसी; निउमोनिया, ऋतु की गड़बड़ी इत्यादि किसी प्रकार की बिमारी के साथ ऊपरके लिखित लक्षण मिलनेसे चेलिडोनियम के प्रयोग द्वारा

विशेष फल होता है। ऐसा दर्द बांया तरफ में होने से चिनोपोडियम व्यवहार होता है।

लाइकोपोडियमकी तरह चेलिडोनियम की क्रिया शरीरके दहिना अंग में विशेष भावसे प्रकाश पाता है। दहिना आंख में स्नायवीय दर्द, (Neuralgia); दहिनाछाती में स्नायवीय दर्द; दहिना कन्धे में दर्द, दहिना जांघ से दर्द शुरु होकर पेड़ू तक फैलता है। दहिना पांव बरफ की तरह ठंढा, बायां पांव स्वाभाविक। इसके अलावे लाइकोपोडियम का अन्यान्य बहुत लक्षण चेलिडोनियम के साथ मिलता है; इस लिये इन दोनोंका किसी एक से फायदा न होतो दूसरा का व्यवहार हो सकता है। फेफड़े वो यकृत की पीड़ा में अगर दहिना पखुरा का दर्द वर्त्तमान न भी रहे तथापि निम्नलिखित लक्षणों पर चेलिडोनियम का प्रयोग से बिमारी आराम होता है। यकृत की वृद्धि, यकृत-स्थान में दबाने से दर्द; मुंह का स्वाद कड़ुआ, जीभ पर गाढ़ा हल्दी रंग का लेप वो उस के बीच २ में लाल रंग, जीभका दोनों पार्श्व में दांत का छाप। आंखों के सफेद भाग, चेहरा वो शरीर का चमड़ा जर्द। मल धूमैला रंग का, कादो की तरह या

सोने की तरह पीला रंग; पेशाब गाढ़ा पीला रङ्ग का, उससे पात्र में पीला दाग पड़ता है । भूख न होना, मतली होना अथवा पित्त का कै होना । अलावे इसके अगर रोगी गरम पानी के अलावे और कोई चीज पचा न सके तो अवश्य चेलिडोनियम देओ । यदि चेलिडोनियम के प्रयोग से बिमारी सम्पूर्ण आरोग्य न हो तो लाइकोपो-डियम के सदृश कोई एन्टिसोरिक औषध के व्यवहार द्वारा सुफल मिलता है ।

निउमोनिया में भी चेलिडोनियम एक उत्तम दवा है। बिशेषतः यदि उसके साथ यकृत का लक्षण वर्त्तमान रहे तो । इसमें नाक के दोनों पुरे का फड़कना भी एक सिद्धि-प्रद लक्षण है । अगर खांसी के साथ पखुरे के नीचे वो छाती में दर्द रहे तो चेलिडोनियम के प्रयोग द्वारा आरोग्य होता है; रोगी भविष्यत यक्षमा रोग से बच जाता है ।

उदरामय—रात में दस्त होना; मल सफेदपन वो आंव-युक्त; थोका २, पीलापन; भूरा अथवा सफेद पानी की तरह; बेखबरी में मलत्याग । पर्य्यायक्रम से कब्ज वो दस्त ।

गलष्टोन वा पित्तपथरी के साथ दहिना पखुरे के नीचे दर्द होना ।

गरम पानी पीने की अतिशय इच्छा । शक्ति ३० · २०० ।

चायना वा सिंकोना।

CHINA OR CINCHONA.

अत्यन्त दुर्ब्बलता ही चायना का सर्व प्रधान लक्षन है। बहुत परिमाण से रक्तश्राव वो शरीरस्थ तरल पदार्थ का क्षय यथा-ज्यादा दुध या लार निकलना श्वेतप्रदर, शुक्रपातः पीवस्राव, बहुत दिन का उदरामय; जरायु, फेफड़ा अन्तरी अथवा नाक से अधिक परिमाण से रक्तस्राव इत्यादिके साथ यदि अत्यन्त दुर्ब्बलता देखी जाय और मूर्च्छा हो आंख धुन्धली हो कान में भून २ आवाज हो तो चायना के प्रयोग से अति उत्तम फल लाभ होता है। फलतः संजीवनी शक्ति का रक्षा करनेवाला किसी प्रकारका तरल पदार्थ का क्षय के हेतु दुर्ब्बलता में चायना अति उत्कृष्ट औषध है। अवस्था विशेष में इस औषध को अल्प या अधिक समय अन्तर २ दिया जा सक्ता है। बहुत दिन तक उदरामय या और किसी प्रकार का स्राव होकर चेहरा जर्द होना, आंख धस जाना वो उसका चारो तरफ में काला निशान पड़ना, धकधकाहट के साथ सिर-दर्द; रात में पसीना होना, समान्य परिश्रम से ही पसीना होना इत्यादि दिखाई पड़ने से चायना का प्रयोग से अति सन्तोष-जनक फल लाभ होता है।

पेट फूलना चायनाका एक विशेष लक्षण है। यह लक्षण लाइकोपोडियम वो कार्बो-भेज का भी है। पेट इतना फूल जाता है कि मालूम होता है, वह हवा से भरा हुआ है। ढेकार आने से भी कुछ आराम नहीं मालूम पड़ता है। इसके साथ राक्षस के ऐसा भूख होना भी चायना का एक प्रिय लक्षण है। इस प्रकार के रोगी को पाचन-शक्ति अत्यन्त खराब होती है। रोगी जो कुछ खाता है वही गैस बन जाता है, पेट इतना फूल जाता है कि रोगी को श्वांस लेना भी कठिन होता है किन्तु आश्चर्य्य यह है कि इस प्रकार की अवस्थामें भी रोगी को बहुत भुख लगता है।

उदरामय विशेषतः फलादि भोजन के हेतु दस्त, मल पतला पानीकी तरह, पीला या गेरू रंगका, अजीर्ण मल। पेट में किसी प्रकार की तकलीफ न होना। मलत्याग के साथ बहुत सी हवा निकलना। इस प्रकार के उदरामय प्रायः शिशुओं में देखा जाता है। प्लीहा वो यकृत का बढ़ जाना वो कठिन होना। गात्र चर्म्म पीला, पेशाब पीला, मल फीका, इत्यादि भी चायना का विशेष लक्षण है।

कौलिक शूल दर्द; प्रति दिन निर्दिष्ट समय में शूल दर्द उपस्थित होता है। गलष्टोन वा पित्त-पथरी के कारण सामयिक

शूल दर्द के लिये चायना अति उत्कृष्ट है। रात में वो आहारान्त में दर्द की वृद्धि, पेट को जोर से दबाने से दर्द की कमी। बेखबरी में मल वो मूत्रत्याग।

इन्टरमिटेन्ट ज्वर (जाड़ा बुखार) में चायना एक महौषध है। ज्वर का प्रत्येक आक्रमण, पूर्व आक्रमण के २—३ घंटे देर करके होता है। चायना का सविराम ज्वर में शीत, उत्ताप वो पसीना तीनों अवस्था देखी जाती है। एक दिन बाद एक दिन हर बिमारी का आक्रमन वा वृद्धि होना चायना का अति प्रधान लक्षण है। इस लक्षण के ऊपर चायना प्रयोग करके ज्वर व और भी बहुत प्रकार की बिमारी में उत्तम फल मिला है।

अधिक कुइनाइन सेवन हेतु अटका हुआ ज्वर वो दूसरी २ तकलीफ को दूर करने के लिये लक्षणानुसार इपिकाक, आर्सेनिक, नेट्रम-म्युर, फेरम, पल्सेटिला इत्यादि औषध व्यवहार होता है।

स्पर्शासहिष्णुता चायना का और एक प्रधान लक्षण है। समस्त शरीर में स्पर्शासहिष्णुता, ऐसा कि बाल को हिलाने से भी बाल के जड़ में दर्द मालूम होता है। सामान्य स्पर्श से दर्द वाला जगह में अत्यन्त कष्ट होता है

किन्तु दर्द की जगह को जोर से दबाने से आराम मालूम होता है, मामुली स्पर्श से तकलीफ बढ़ती है, ऐसा कि शरीर के ऊपर से हवा बहने से भी कष्ट होता है ।

रक्तस्राव Haemorrhages——मुंह, नाक, कान, मलद्वार इत्यादि शरीर के कोई छिद्र से रक्तस्राव हो सकता है । रक्तस्राव के साथ कान में भन २ आवाज़ वो मूर्च्छा होना व अत्यन्त दुर्बलता । तरुण शोथ रोग ।

शक्ति—१ से लेकर सर्व प्रकार की शक्ति व्यवहार होती है ।

सिकिउटा विरोसा ।

CICUTA VIROSA.

अत्यन्त "फिट" वा कौन्वलशन (Convulsion) होना ही इस औषध का प्रधान लक्षण है । फ़िट के समय हाथ-पैर, सिर, गर्दन इत्यादि का पीछे के तरफ टेढ़ा हो जाना सिकुटा का विशेष धर्म्म है । रोगी ज्ञानरहित हो जाता है । सामान्य स्पर्श, शोरगुल अथवा झटका लगने से फिर से फिट उपस्थित होता है । फिट के समय रोगी चित्कार करता है, उसका चेहरा नीला होता है व दांत लगता है । एपिलेप्सी

(मृगी) कोरिया, दांत निकलना, कृमीरोग, प्रसव काल में, कौलरा में यानी सर्व प्रकार कन्वलशन वा आक्षेप में ही उपरोक्त प्रकार के लक्षण पाने से सिकिउटा के प्रयोग से उपकार होता है।

चर्म रोग में भी सिकिउटा उत्तम है। बहुतसी छोटी २ फुन्सियां इकट्ठी उत्पन्न होती हैं और उसके ऊपर पीला रंग का मोटा खुरंट पड़ता है। इस प्रकार का चर्मरोग मुखमण्डल, मस्तक वो शरीर का अन्यान्य स्थान में भी होता है।

शक्ति ३० २००।

सिना। CINA.

सिना वो कैमोमिला के मानसिक लक्षण में विशेष सादृश्य है। रोगी निहायत चिड़चिड़ाहा, वो जिद्दी होता है। सिना के रोगी कैमोमिला की तरह सर्वदा यह चीज वह चीज मांगता है किन्तु चीज देने से फेंक देता है; शिशु गोदी में चढ़कर टहलना चाहता है किन्तु कैमोमिला की तरह सिना के रोगी इससे आराम बोध नहीं करता है। किसीका उसके पास जाना बरदास्त नहीं कर सकता है। उसको प्यार करने से दिक् मालूम करता है।

यह **कृमी रोग** का एक महौषध है। हमेशा नाक खोंटना, नाक के भीतर अंगुली से खुजलाना, मल-द्वार खुजलाना

शिशुको रात में अच्छी निन्द न होना। शिशु सोए २ चित्कार मारता है, दांत किड़किड़ाता है। चेहरा फीका, आंख के चारो ओर में नीलापन दाग पड़ना। एक गाल फीका दूसरा गाल लाल (कैमो)।

राक्षस की तरह क्षुधा (Revenous Hunger), हमेशा भुख लगा रहता है। पेटभर के खाकर उठते ही फिर खाना चाहता है। सर्वदा मिठा और अन्यान्य वस्तु चाहता है। मां का दूध पीना नहीं चाहता है।

पेशाव वहुत परिमाण से होता है; पेशाव कुछ देर तक रहने से दूध की तरह सफेद हो जाता है।

हूपिंग कफ, मूर्च्छा (Convulsion) कालरा, दस्त, कौलिक इत्यादि हर रोग में सिना के स्वभाविक कृमि का लक्षण देख पाने से फौरन सिना का प्रयोग करो।

कृमि की तकलीफ सिना से आराम न हो तो शन्टोनाइन २x प्रयोग कर सकते हो (टिउक्रियम, स्पाइजिलिया)।

शक्ति ३०—२००।

क्लिमेटीस इरेक्टा।

CLEMATIS ERECTA.

पुराना गनोरिया के हेतु मूत्रनलीके स्टीकचर (संकोचन)

होने से पेशाब अति धीरे अथवा ठहर २ कर निकलता है। इस प्रकार की अवस्था के शुरु में ही क्लिमेटिस की उच्च शक्ति प्रयोग करने से रोगी सहज ही से आरोग्य लाभ करता है।

लुप्त गनोरिया यानी गनोरिया पीड़ा किसी दवाई के प्रयोग से या और किसी तरह से आराम न होकर उसके पीवस्रावबन्द हो जाने से अण्डकोस का प्रदाह वा अर्काइटिस (Orchitis सांजर) हो तो इस दवे से उत्तम फल मिलता है। अन्डकोष फूल जाता है वो कठिन हो जाता है। गनोरिया पीड़ा के साथ भी अर्काईटिस पीड़ा में उस प्रकारके लक्षण हो तो क्लिमेटिस का प्रयोगसे उपकार होता है।

पल्सेटिला भी इस प्रकार के लुप्त गनोरिया जनित अर्काइटिस में व्यवहार होता है पल्सेटिला के प्रयोग से अकसर तकलीफ दूर हो जाती है और फिर पीवस्राव होना शुरु होता है। ऐसी हालत में क्लिमेटिस का प्रयोग से बहुत फायदा होता है।

शक्ति, साधारणतः ३०—२००।

कौलिन्सोनिय केनाडेन्सिस।

COLLINSONIA CANADENSIS.

यह अर्श (ववासीर) वो रेक्टम के अन्यान्य नाना प्रकार की पीड़ा में उपकारी है। मालूम होता है कि मल द्वार में बहुत सा कांटि या कांच के टुकड़े भरा हुआ है। एस्किउलस नामक औषध में भी यह लक्षण देखा जाता है अतएव इन दोनों में भ्रम होने की सम्भावना है; इस लिये नीचे इन दोनों का फर्क बताया जाता है। एस्किउलस में मल-द्वार भारी मालूम होता है कौलिन्सोनिया में यह नहीं है। साधारणतः एस्किउलस का अर्श से रक्तस्राव नहीं होता है किन्तु कौलिन्सोनिया में हमेशा कम या बेश रक्तस्राव होता है। एस्किउलस में अत्यन्त कमर-दर्द देखा जाता है किन्तु कोलिनसोनिया में यह नहीं देखा जाता है। एस्किउलस में कभी २ कब्ज होता है किन्तु कोलिनसोनिया में हमेशा सख्त कब्ज रहता है।

शक्ति ६—३०—२००।

——:o:——

कोकिउलस इन्डिकस।

COCCULUS INDICUS.

दिमाग वो मेरुमज्जा के ऊपर इस दवा की विशेष क्रिया

देखी जाती है । इस कारण से कमर में पक्षाघात (Paralysis)। पीड़ा का शुरु में कमर अत्यन्त दुर्व्वलता मालुम होती है चलने फिरने के समय मालुम होता है कि कमर शरीर का भार सह नहीं सकेगा। निम्न शाखाओं की दुर्व्वलता, चलते २ ठेहुना टुट जाने के ऐसा और पैर के तलवा शून्य ऐसा हो जाता है। ठेहुना में बहुत दर्द होता है। दोनों बाहु शून्य हो जाता है, मालूम होता है कि बाहु फुल गया है। पहले एक बाहु पीछे दूसरा बाहु शून्य हो जाता है।

सिर-चकराना, बोध शक्ति की गड़बड़ी अथवा हीनता: भोजन वा पान के बाद उसकी वृद्धि। नशा करने की तरह सिर घुमता है। बिछावन से उठते समय सिर ऐसा घुमता है कि रोगी लेटे रहने में मजबुर होता है। यह लक्षण गाड़ी या किस्ती में चढ़ने से ज्यादा होता है। समुद्र-यात्रियों में प्रायः इस प्रकार की तकलीफ होती है, इस लिये उसको समुद्र पीड़ा (Sea-Sickness) कहते हैं। समुद्र पीड़ा के लिये ककिउलस सर्व्व प्रधान दवा है।

ऐच्छिक मांसपेशी (Voluntary muscle) के ऊपर इसकी विशेष क्रिया होती है। गर्दन के मांसपेशियों की दुर्व्व-लता के साथ मस्तक भारी मालुम होना ऐसा मालुम होता है की

गर्दन सिर को खड़ा नहीं रखसकता है। कमर में पक्षाघात की तरह दर्द ठेहुना में टुट जाने की ऐसी दुर्ब्बलता; चलने के समय मतवाला की तरह टगना। जांघ में अंकड़ाव के ऐसी दर्द; दुर्ब्बलता के कारण हाथ पाँव कांपता है। कभी हाथ, कभी पांव शून्य हो जाता है। पहले एक हाथ शून्य हो जाता है, उसके बाद ही दुसरा हाथ भी वैसा हो जाता है। बैठे हुय हालत में पैर का तलवा का शून्य जाना।

"खाली बोध" यह ककिउलस के एक विशेष लक्षण है। दुर्ब्बलता के हेतु सिर, पेट, छाती, मेदा इत्यादि किसी स्थानमें खाली खाली बोध वा शून्यता मालूम हो सक्ता है।

सिर दर्द— दर्द गर्दन वो सिर के पीछे होता है वो रीढ़ तक फैल जाता है। ऐसा मालुम पड़ता है कि सिर रस्सी से कस कर बांधा हुआ है। सिर-पीड़ा के साथ मतली होना ककिउलस का प्रिय लक्षण है। मुह में तामा की तरह स्वाद मालुम होना भी इस का प्रिय लक्षन है।

स्त्रियों के ऋतु-कष्ट में भी यह दवा व्यवहार होती है। इस के साथ पेट फूलना वा पेट में शूल होना। मालुम होता है कि पेट में लकड़ी या पत्थर भरा हुआ है। आधी रात में पेट

फूलना,हवा निकलनेसे भी कुछ आराम नहीं मालुम होता है।

यदि ऋतु की गड़बड़ी के साथ रोगिणी अत्यन्त दुर्व्बलता बोध करे ऐसा कि बोलना या हरकत करने में भी तकलीफ हो तो ककिउलस से फ़ायदा होता है।

कार्वो-एनिमेलिस की दुर्व्बलता ज्यादा रजो-स्राव से होता है लेकिन ककिउलस की दुर्बलता सामान्य रजोस्राव से ही होता है। ककिउलस का रजोस्राव क्रमशः कम हो कर श्वेतप्रदर हो जाता है।

ऋतु के बदले में श्वेतप्रदर; दो ऋतु के मध्यवर्त्ती समय में श्वेतप्रदर; (Leuchorroea); मांस धोअन की तरह स्राव गर्भावस्था के श्वेतप्रदर में यह मुफीद है।

अनिद्रा मानसिक उत्तेजना रात जागना, क्रोध; शोक, इत्यादि जनित अनिद्राके हेतु कोई तकलिफ होने से ककिउलस अच्छा है।

मतवालों की पीड़ा में भी यह उत्तम है।

शक्ति ३०—२०० ।

——:o:——

चिनिनम-सलफिउरिकम वा कुइनाइन-सल्फ

CHININUM SULPHURICUM

यह औषध रक्तस्रावादि के हेतु शरीर की शीर्णता व दुर्बलता में चायना के सदृश उपकारी है। ज्वर के समय डिलिरियम । सिर चकराना, इनटरमिटेन्ट निउरैलजिया, सिर दर्द यथानिर्दिष्ट समय में उपस्थित होता है। सुप्रा अर्बिटाल (Supra orbital) वा आंख के ऊपरीभाग में निउरैलजिया (Neuralgia) वा स्नायुशूल । नाक से रक्तस्राव । धून्दली दृष्टि। कान में भ्न भ्न आवाज चेहरा फीका। प्लीहा वो यकृत को वृद्धि वो उस में दर्द। गर्दन, पीठ वो रीढ़ में स्पर्शासहिष्णुता; दुर्बलता; सामान्य मेहनत से ही दिल धड़कना (Palpitation of Heart) इत्यादि इसका स्वाभाविक लक्षण है।

यह इन्टरमिटेन्ट (Intermittent) वा सविराम ज्वर का एक महौषधि है। ज्वर के आक्रमण काल में सामान्य शीत होता है; प्रतिदिन एक ही समय में शीत आरम्भ होता है। दिन ३ बजे कम्प के साथ शीत । प्रति तृतीय दिवस में रात १० बजे शीत के साथ ज्वर होता है। उसके साथ

बहुत प्यास होता है। उसके बाद खूब पसीना होता है वो प्यास नहीं रहता है। ज्वर की सब प्रकार अवस्था में ही रीढ़ की हड्डिओं में दर्द; पसीना होने से रोगी को आराम मालुम होता है।

नानाप्रकार के इन्टरमिटेन्ट ज्वर में यह औषध उपकारी होता है। यथा एक दिन नागा देकर ज्वर, दो रोज अन्तर ज्वर; १४ दिन अन्तर ज्वर; तीन रोज अन्तर ज्वर। ज्वर कदाचित प्रत्यह होता है। प्रतिवार ज्वर का आक्रमन पूर्वा-क्रमण से ३ घन्टे पहले होता है। चिनिनम के ज्वर में भी, शीत, गर्मी व पसीना यह तीन हालत पायी जाती है।

एक दिन बाद एक दिन बिमारी की वृद्धि होना देख कर चिनिनम—सल्फ की २०० शक्ति के प्रयोग से बहुत रोगी को आराम किया गया।

इस दवा के ज्वर के आक्रमन वो गति अति नियमित है; शीत उत्ताप वो पसीना भी नियमित होते हैं; विरामकाल (Remmission) बिलकुल साफ (Clear) होता है।

चिनसल्फ यानी कुइनाइन का अपव्यवहार के हेतु बात रोग, प्राचीन उदरामय, जलोदरी; प्लीहा वो यकृत की पीड़ा इत्यादि होने से उसके प्रतिकार करने के लिये अवस्थानु-

सार आर्निका, आर्स: कार्बो-भेज, फेरम, लैकेसिस, नेट्रम-म्युर, पल्स, इपिकाक इत्यादि व्यवहार होता है ।

ज्वर का समय- दिन ३ बजे, रात १० बजे; दिन १०-११ बजे (नेट्रम म्युर) ।

शक्ति २x—३०—२००

कक्कास कैक्टाइ ।

COCCUS CACTI.

यह प्रधानतः श्वांस-यन्त्रों की बिमारी में फलप्रद है। हुपींग कफ के साथ सफेद रस्सी की तरह कठिन बलगम निकलता है; जी मिचलाता है और कै होता है ।

यह रेनल.कौलिक (Renal Colic) वा मूत्र-पत्थरी के कारण शूलदर्द में भी उपकारी है । पेशाब के नीचे ईंट के चूर्ण की तरह गाद पड़ना ईसका स्वभाविक लक्षण है ।

शक्ति १ ३—Q. ।

कफिया क्रुडा

COFFEA CRUDA.

यह कौफि है। स्नायु-विधान के ऊपर इसकी विशेष क्रिया है। स्नायुमंडल की शक्ति अतिशय तेज यानी हर प्रकार की बोधशक्ति की अतिशय वृद्धि होती है। दृष्टि शक्ति इतनी प्रबल होती है कि रोगी अति क्षुद्र हरूफ भी आसानी से पढ़ सकता है। इसी तरह घ्राणेन्द्रीय, श्रवनेन्द्री स्पर्शनेन्द्री इत्यादि की क्रिया भी अतिशय वृद्धि पाती है। मन वो शरीर उभय की ही कार्य्यं करने की शक्ति अतिशय अधिक होती है। मन नाना प्रकार के कल्पना वो मतलब से पूर्ण, भविष्य के लिये भी नाना प्रकार के मतलब करता रहता है। इस से रोगो को निन्द नहीं होती है। मन में किसी प्रकार का मतलब होने से ही रोगी फौरन उसको पूरा करने की चेष्टा करता है।

दर्द—असहनीय दर्द, रोगी उससे छटपटाता है, रोता है दौड़ता भागता रहता है। किसी तरह से स्थिर रह नहीं सकता है। यह लक्षण कैमोमिला वो एकोनाइट में भी है लेकिन कैमोमिला का मानसिक लक्षण, कफिया के मानसिक लक्षण के साथ नहीं मिलता है और एकोनाइट का मृत्तुभय भी कफिया में नहीं देखा जाता है।

कौफी सेवन कर्त्ताओं को इस प्रकार की पीड़ा होने से कफिया न देकर कैमोमिला देना चाहिये, क्योंकि कैमोमिला कौफी के दोष-नाशक है।

सिर-पीड़ा—साधारणतः कफिया का सिर पीड़ा सिर का एक तरफ में होता है और उस में मालुम होता है कि कांटा वा सलाई भोंका गया है ऐसा सिर दर्द (वाईगोला वा हिष्टिरिया के मिजाज वाले रोगी को होने से इगनेसिया व्यवहार होता है)।

दंत-शुल——कफिया का दंत-शूल मूंह में ठंढा पानी रखने से कम होता है। कैमोमिला का दंत-शूल मुंह में गरम पानी रखने से वृद्धि पाता है लेकिन कफिया की तरह मुंह में ठंढा पानी रखने से कम नहीं होता है।

दंतशुल के हेतु मुखमंडल में स्नायुशुल (Prosopalgia or Facial Neuralgia) हो तो कफिया उत्तम है।

बाधक वा डिसमेनोरिया (Dysmenorrhoea) तल पेट में असहनीय दर्द के साथ ऋतु कष्ट में कफिया उत्तम है (यदि काला व बड़े २ थक्कों के साथ रक्तस्राव हो और कफिया से फायदा न मिले तो कैमोमिला द्वारा उपकार होगा) दर्द

के साथ गर्भपात की सम्भावना, प्रसवान्तिक दर्द अथवा असहनीय प्रसव दर्द कफिया से आराम होता है; फलतः स्मरण रखना चाहिये कि किसी प्रकार दर्द हो यदि वह रोगी के निकट एकदम असहनीय मालुम हो तो अवश्य कफिया को स्मरण करो।

अनिद्रा——कौफी सेवन करनेवाले को निन्द नहीं होती है। इसलिये कफिया अनिद्रा का महौषध है। अगर यह सत्य न हो तो होमियोपैथी मिथ्या है। कोदवा रोग के बाद अगर खांसी के साथ अनिद्राके हेतु रोगी कष्ट पावे तो कफिया उत्तम फलप्रद होता है। अत्यन्त आनन्द वा मन के हलचल के हेतु अनिद्रा में कफिया सेवन करने से जो निद्रा होती है वह प्रकृत निद्रा है वह अफिम अथवा अन्य किसी प्रकार के मादक द्रव्य सेवन-जनित नशा की तरह नींद नहीं।

शक्ति ३—६—३०—२००।

——:o:——

कल्चिकम।

COLCHICUM.

रसोई की बू ही से जी-मिचलाना कल्चिकम का

अति प्रिय लक्षण है। खाद्य वस्तु रसोई करने के समय वा रसोई किया हुआ खाद्य वस्तु की बू नाकमें जाने ही से इतना जी मिचलाता है कि उससे मूर्च्छा वा अज्ञान अवस्था उपस्थित होती है। सिर्फ यही लक्षण के ऊपर ख्याल रख कर कलचिकम का प्रयोगसे पेचीश, ब्राइट-पीड़ा, ऐपेन्डिसाइटिस, वात इत्यादि नाना प्रकार की पीड़ा आराम किया गया है। अलावे इसके कलचिकम में पेट में और भी चंद लक्षण देखा जाता है। पाकस्थली में ज्वाला के साथ वर्फ के सदृश शीतलता बोध: ऐसी अवस्था तलपेट में भी होती है।

आमाशय (Dysentery) वा पेचिश रोग, खास कर शरतकालके पेचिश रोगमें यह बहुत उपकारी है। आंव सफेद या खून मिला हुआ व देखने में अंतरी के अन्दर से छिली हुई चीज की तरह यानी टुकड़े २ झिल्ली की तरह मालुम पड़ता है। कैन्थारिस में भी इस प्रकार लक्षण देखा जाता है किन्तु कैन्थारिसके रोगी में इसके स्वभाविक लक्षण मूत्रकी तकलीफ वर्तमान रहता है। कलोसिन्थ में भी इस प्रकार का मल है किन्तु उसके पेट में अत्यन्त शूल होता है वो उससे रोगी दोहरा हो जाता है: खूब जोर से पेट को दवाने से आराम मालूम होता है। उपरोक्त लक्षण में भी कलचिकम का प्रयोग से फल मिलता है।

कलचिकम के रोगी के पेट में अत्यन्त वायु जमा होता है। अजीर्ण रोग में अत्यन्त ज्वाला के साथ पेट में वर्फ की तरह ठन्ड मालूम होना वो पेट फूलना देख पाने से अवश्य कलचिकम का प्रयोग से उपकार होगा। इस प्रकार पेट फूलना में चायना, कार्बो-भेज वो लाईकोपोडियम के साथ कलचिकम की तुलना करके देखना चाहिये।

कलचिकम बात रोग (Rheumatism) व गठिया (Gout) रोग में भी एक महौषध है। यह जोड़ोंमें होता है और विशेषतः जब दर्द बार २ स्थान बदलता रहता है तब यह अच्छा काम करता है। नया वात रोग का पुराना होता जाना। पीड़ित-स्थान में छूना बरदास्त नहीं होता है। फाड़ने की तरह दर्द हरकत से वो रात में बढ़ जाता है। पीड़ा के स्थान में खास कर हाथ पांव, विशेषतः छोटे २ जोड़ों में शोथ होता है। गठिया शरीर के ऊपर से लुप्त होकर दिल (heart) में पहुंचे तो कलचिकम से विशेष उपकार होता है।

रसोई की बू ही से जी मिचलाना------

कलचिकम का इस लक्षणपर हमेशा ध्यान रखना चाहिये। कलचिकम का रोगी रोशनी, तेज गन्ध, शोरगूल, दूसरा का संस्पर्श इत्यादि बरदास्त नहीं कर सकता है, बहुत चिड़चिड़ाहा होता है। ठंड हवा से उसकी तकलीफ बढ़ती है।

मूत्र (Urine) कडुआ, अल्प परिमाण या बुन्द २ से होता है, मूत्र रक्तमय, भूरा या काला रंग का; मूत्र में रक्त के सड़े ढेले, एलवुमेन (Albumen) या शर्करा (Starch) देखा जाता है।

रोगी मछली, अन्डा वो चर्वी सह नही सकता है।

शक्तिः—३० – २०० ।

———:o:———

कलोसिंथ ।

COLOCYNTH.

इस के ज्यादेतर लक्षण ही सिर व पेट में प्रकास पाते हैं। तेज स्नायविक दर्द होना इसका स्वभाव है। क्रोधी व्यक्तिके शरीर में वो क्रोध के कारण पीड़ा में यह विशेष काम करता है। आलसी वो बहुत परिमाण से ऋतुस्राव होने के आदत वाली स्त्रियों के लिये यह अच्छा है; दबाने से स्नायविक दर्द की कमी मांसपेशियों का आक्षेप; पसीना में पेशाव की बू; कतरना, ममोड़ना, कुचलना वो संकोचन सा दर्द होना इत्यादि इसके स्वभाविक लक्षण है।

यह उदर शुल—(Colic) का एक महौषध है। पेट में अत्यन्त कष्टदायक शूल दर्द; रोगी टांग को सिकुड़ा कर वा पेट को कोई कठिन वस्तु के ऊपर दवा कर लेटा रहने से आराम बोध करता है। यह कलोसिंथ का अतिप्रिय लक्षण है। जहां यह लक्षण मिलेगा वहीं कलोसिंथ देने से फायदा होगा। इस प्रकार पेट का दर्द के साथ प्रायः कै व दस्त होते देखा जाता है। रक्तामाशय रोग (पेचीस) में भी यह औषध व्यवहार होता है। और दवाने से पेट का दर्द में आफियत होती है।

डायोसकोरिया का शूल दर्द हाथ पैर को फैलाकर शरीर को तानने से कम होती है।

मैगनेसिया-फस का शूल दर्द आर्सेनिक की तरह गरम सेक से कम होता है। कलच्चिकम वो मैगनेसिया-फस उभय औषध ही नाना स्थान के स्नायविक दर्द वा Neuralgia यथा-सायाटिका (Sciatica), मुखमंडल के स्नायविक दर्द (Facial neuralgia), जरायु का शूल (Uterin colic) इत्यादि में फलप्रद है।

कैमोमिला भी कलोसिन्थ की तरह क्रोध-जनित शूल दर्द में उपकारी है; किन्तु कैमोमिला (का शूल दर्द शिशुओं

में ही देखा जाता है; फूलना; दर्द से छटपटाना किन्तु पांव को सिकुड़ा कर दोहरा होने से दर्द कम होना व शिशु का निहायत बद मिजाज होना कैमोमिला का प्रिय लक्षण है। स्टैफिसेग्रिया भी कलोसिन्थ की तरह शिशुओं के शूल दर्द में उपकारी है। स्टैफिसेग्रिया के शिशु के दांत में कीड़ा पड़ता है, दांत खोखला वो काला होजाता है।

भेरेट्रम का शूल दर्द कलोसिन्थ की तरह दोहरा होने से कम होता है लेकिन इसके रोगी के ललाट में पसीना वो अत्यन्त निस्तेजता होती है।

ष्टैनम का कौलिक में शिशु का पेट को कन्धे पर रख कर टहलाने से कम होता है।

सायेटिका रोग में कलोसिन्थ का दर्द कमर के निचे से शुरू होकर जांघ के पीछे होकर निचे को ओर जाता है। फाइटोलक्का नामक औषध में यह दर्द जांघ के बाहर के तरफ में होता है।

शक्ति ६—३०—२००

—-※—-

कोनीयम मेकिउलेटम।

CONIUM MACULATUM.

सिर चकराना (Vertigo) के लिये यह औषध आश्चर्य्य फलदायक है। सिर को किसी एक तरह घुमाने से, लेटने से वा करवट बदलने ही से सिर चकराता है।

यह औषध लोकोमोटर एटाकसिया Loco motor ataxia) नामक पीड़ा में अति उत्तम है। डाक्टर नैश साहबने एक रोगी के बारे में लिखे हैं, "एक रोगी के पैर क्रमशः सून्य हो जा रहा था: वह अन्धेरे में खड़ा नही हो सकता था। रास्ता चलने के समय वह अपनी स्त्री को सामने या पिछे रख कर चलता था। उसको स्त्री उसको "दहिना तरफ, बांयातरफ, " कह कर चलाती थी। कारण वह उस का सिरको या आंख को दाहिना या बांया किसी तरफ घुमाने ही से गिर जाने लगता था। उसको कोनायम देने से पहले रोग की वृद्धि हुई थी; औषध बन्द कर देने से वह सम्पुर्ण आरोग्य लाभ किया था। स्वभावतः कोनायम के प्रयोग से पहले रोग कीवृद्धि हुआ करती है। डाक्टर नैश साहब ने इस रोगी मे कोनायम की सि०

एम० (C. M.) वा एक लाख शक्ति के एक खोराक ४ सप्ताह अन्तर २ व्यवहार करता था। इस प्रकार से एक वर्ष में वह रोगी आरोग्य लाभ किया था।

उक्त प्रकार के सिर-चकराना वृद्ध व्यक्ति में, अथवा स्त्रियों में जरायु वा ओभारी के प्रदाह के साथ देख पाने से कोनायम द्वारा फल लाभ होगा। बायां ओर में सिर घुमाने से सिर-चकराना।

कोनायम **आंख के प्रदाह** वा आँख आने में भी व्यवहार होता है। रात में वह समान्य रोशनी लगने ही से तकलीफ की वृद्धि होती है, अंधेरा गृहमें वो दबाव से आराम होता है। जेलसिमियम, कष्टिकम, वो सिपिया की तरह आंख के पपुटे की कमजोरी कोनायम में भी देखी जाती है।

किसी स्थान में किसी प्रकार के आघातादि लगने के बाद यदि उस स्थान का फूलन रह जावे, उस में सुई भोकने की तरह दर्द हो तो कोनायम से फायदा मिलेगा। जरायु (uterus) पाकस्थली, अस्तन, अन्डकोष इत्यादि स्थान के फूलन में ऐसा की कैनसर रोग में भी कोनायम सुन्दर क्रिया करता है। उक्त प्रकार के फूलन यदि आघातादि से उत्पन्न हो तो कोनायम ज्यादा फल प्रदान करता है। किसी प्रकार आघातादि के

बाद किसी जगह की फूलन यदि पत्थर की तरह कठिनता वो भारीपन बोध हो तो पहले कोनायम का स्मरण करना कर्तव्य है। दहिना स्तन की कठिनता वो फूलन के लिये कोनायम वो 'बायां तरफ के लिए साइलिशिया व्यवहार होता है। स्त्रियों के प्रत्येक ऋतु के समय यदि स्तन भारी व बड़ा हो वो ज्यादा चलने फिरने से या सामान्य झटका लगने से उस में अत्यन्त दर्द हो तो कोनायम से आराम होता है कोनायम में भी ज्वाला वो डंक चुभने की तरह दर्द है। यहां कोनायम को एपिस के साथ तुलना करो।

ऋतुस्राव मृदु अथवा लुप्त, देर में, अल्प परिमाण से और अल्पदिन स्थाई: ऋतुस्राव के साथ सर्व्वांग में एक प्रकार रक्तवर्ण फुन्सियां निकलता है (डलकामेरा) ठंढ लगने से, ऐसा कि ठंढा पानी में हाथ भिंगने से ऋतुस्राव बन्द हो जाता है।

श्वेतप्रदर (Leuchorrhoea)—ऋतुस्राव के १० दिन बाद श्वेतप्रदर देखाई देता है, (बोराक्स, बोभिस्टा) श्वेत प्रदर झांसीला, दूध की तरह, बहुत परिमाण से, गाढ़ा व रक्तमय होता है। यह कभी २ निर्दिष्ट समय में (Periodical) होता है।

जननेन्द्री के उपर कोनायम की अति उत्तम क्रिया देखी जाती है। पुरुषांग को अत्यन्त दुर्ब्बलता: संगम करने का अत्यन्त ख्वाहिश किन्तु रतिक्रिया में अक्षम। स्त्रीलोग देखनेसे स्त्रीलोग के विषय में चिन्ता करने से या स्त्रीको आलिंगन करने से शुक्रपात हो जाता है। संगम की इच्छा से लिंग शक्त होता है लेकिन अलिंगन करने के कवल ही में ढिला हो जाता है। लिंग पूरा तरह से शक्त नहीं होता है। रोगी को कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। सहज से ही दीक हो जाता है और अपने रोग के नाना प्रकार के खराब फल के विषय कल्पना करता है। इस प्रकार की मानसिक अवस्था स्त्री वो पुरुष उभय में ही देखी जाती है। स्त्री अथवा पुरुष अतिरिक्त कामाचार करके अथवा एकदम कौमार्य्यब्रत अवलम्बन करके उक्त प्रकार के मानसिक रोगप्राप्त होने से वो उसके साथ स्वाभाविक सिरचकराना रहने से कोनायम अतिशय उपकारी होता है।

संगमेच्छा को रुकने से, ऋतुस्राव वन्द होने से संगमेच्छा पूरा न कर सकने से अथवा अतिरिक्त संगम के कुफल के निमित्त कोनायम अति उत्कृष्ट दवाई है।

पेशाब रुक २ कर निकलता है। वृद्ध मनुष्यों का प्राष्टेट ग्लैंड की वृद्धि के हेतु प्रायः इस प्रकार की अवस्था देखि जाती है और इसमें कोनायम एक उत्तम दवा है

सोने से ही पसोना होता है, ऐसा कि उंघाय आने से या आंख मुदने से ही पसीना होता है। यह कोनायम का अति प्रिय लक्षण है। सिर्फ इसी लक्षण पर कोनायम के प्रयोग द्वारा अनेक प्रकार रोग में फायदा उठाया गया है।

शक्ति—३०—२००।

——:o:——

कोरालियम रुब्रम।

CORALLIUM RUBRUM.

हुपिंगकफ वो आक्षेपयुक्त खांसी में यह महोपकारी औषध है। दिनमे गले में सुरसुराहट के साथ थोड़ा २ खांसी होता है; और यह उतना तकलिफदार नही होता है लेकिन रात में आक्षेप के साथ बहुत जोर खांसी होता है और उससे अतिशय कष्ट होता है। खांसी के आवाज छोटे २ बंदुक की आवाज की तरह होता है।

उपदंश रोग (Syphilis) का श्यांकार (Chancre) का जखम रक्तवर्ण व चिपटा होता है, उस में बहुत दर्द होता है. स्पर्श बर्दास्त नहीं होता है।

शक्ति ६—३०।

क्रोकस सैटाइवस।

CROCUS SATIVUS.

स्त्री-जननेन्द्री के ऊपर इस की विशेष क्रिया देखी जाती है। जरायु से काला रक्तस्राव और उसके साथ काला व लम्बा २ रस्सी या सूत की तरह ढेले निकलते हैं। ऐसा रक्तस्राव बदन के कहीं से हो उस में क्रोकस द्वारा फायदा मिलेगा (इलैप्स)

नाक से रक्तस्राव (Epitaxis)—रस्सी की तरह रक्त नाक के साथ लटकता रहता है। ललाट में शीतल पसीना के बड़े २ बुन्द देखा जाता है।

क्रोकस् के मानसिक लक्षण बड़ा आश्चर्य्य जनक है।

हंसी का कोई कारण नहीं है फिर भी रोगिणी पागल की तरह हंसती रहती है। अभी रोगिणी इतना हंस रही है कि मालूम होता है वह कितनी खुश है फौरन ऐसी चूप हो जाती है कि उसको देख कर मालूम होता है कि वह कितनी दुःखी और गमगीन है। फिर फौरन ही अत्यन्त क्रोधी हो जाती है (इगनेशिया, नक्स-मस्केटा)। कोरिया वो हिष्टिरिया रोग में इस प्रकार के मानसिक लक्षण देखा जाता है।

उदर, पाकस्थली, जरायु, बाहु अथवा शरीर के और किसी स्थान में ऐसा मालुम होना कि उस मे कोई जिन्दा जानवर चल फिर रहा है (सैबाइनां, थुजा, सल्फर)।

इन के मतली होना।

गृह में रहने से आंख में धुआं की तरह अथवा रोने की तरह हालत मालुम पड़ना, मालुम होता है कि आंख के अन्दर से ठंडी हवा चल रही हैं।

शक्ति ६—३०—१००।

कोपेइवा।

COPAIVA.

यह गणोरिया के अति उत्कृष्ट औषधि है। मूत्रनली

(Urethra) वा मूत्रस्थली (Bladder) की अत्यन्त उत्तेजना रोग के प्रारम्भ में पतला अथवा दूध की तरह स्राव होते रहने से कोपेइवा देओ। यदि पुराना गनोरिया (Gleet) में खून के साथ थोड़ा २ पीब निकले और पेशाब में म्युकस वा बलगम देखा जाय तो कोपेइवा के प्रयोग से विशेष फल होता है। इउरेथ्रा से ज्वाला के साथ पीला रंग का पीवस्राव। रक्तस्राव के साथ कर्डि (Chordee) वा लिंग की कष्टदायक कठिनता।

पुराना खांसी में जब बहुत परिमान से सफेद व पीलापन व दुर्गन्धी, पीब की तरह बलगम निकलता है तब कोपेइवा से विशेष उपकार होता है (एन्टेनम, लाइको, सल्फ: फस)।

शक्ति—३०—२०० ।

——:※:——

कोटेलस होराइडस।

CROTALUS HORRIDUS.

इस दवा की प्रधान क्रिया रक्त के ऊपर होती है। रक्त ऐसा खराब होता है कि उससे शरीर के सब छिद्रों

यथा—आंख, कान, नाक, फेफड़ा, मेदा, मूत्रनली, जरायु, अन्तड़िया ऐसा की रोमकुप तक से रक्तस्राव होता है। टाइफाईड, पीतज्वर, प्लेग प्रभृति निस्तेजक बिमारो में इस प्रकार के लक्षण देखा जाता है। रक्तस्राव के हेतु रोगी नितान्त निस्तेज या दुर्ब्बल हो जाता है।

खराब किस्म का पान्डु रोग (Jaundice) यानी रक्त दूषित होने के हेतु पान्डु रोग में क्रोटेलस अति उत्कृष्ट औषध है।

सांघातिक डिफथिरिया रोग में नाक से रक्त स्राव होना रक्तदोष हेतु गले में शोथ, गेंग्रीन। सिर्फ निगलने के समय गले में दर्द होना।

जीभ—आग की तरह लाल, चिकना, चमकीला: अत्यन्त फूला हुआ।

वमन—कालापन हरा: कौफीचुर्ण मिश्रित ऐसा अथवा हल्दी का तरह पीला।

उदरामय—मल काला, पतला या कौफीचुर्ण मिला हुआ ऐसा दुर्गन्धी मल।

शवच्छेद वा मुर्दा चिड़नेके समय कट जाना, विषैला कीड़ा का काटना वो टीका का कुफल के लिये यह उतकृष्ट दवा है।

इलैप्स, लैकेसिस, नैजा, पाइरोजेन इत्यादि इसके सम-तुल्य औषध है।

शक्ति ६—३०—२००।

क्रोटन टिगलियम।

CROTON TIGLIUM.

यह उदरामय रोग में विशेष फलदायक औषध है। बहुत परिमाण से जल के सदृश पतला, हलदी रंग के दस्त पिचकारी की तरह जोर से, एकदम से निकलता है। सामान्य कोई चीज पान या भोजन करने से फौरन दस्त होता है।

शिशु स्तन पान करने के समय स्तन की घुन्डी (Nipple) में से दर्द शुरू होकर पखुरा में पहुंचता है। स्तन की घुन्डी में जखम।

चर्म्म रोग में भी इस दवाई की विशेष क्रिया है,

अत्यन्त खुजली; किन्तु पीड़ित स्थान पर जरासा छुना भी बर्दास्त नहीं होता है इस लिए खुजलाया नहीं जाता है। उसके ऊपर धीरे २ हाथ फिराने से आराम मालुम होता है।

एकजिमा (Eczema) वा अकौता रोग विशेषतः अन्डकोष (Scrotum) का एकजिमामें क्रोटन विशेष फायदा करता है।

शक्ति ६—३० – २०० ।

किउबेब।

CUBEB.

यह भी **गणोरिया** के लिये एक उत्तम औषध है। गणोरिआको प्रथमावस्था बीत जाने के बाद जब स्राव गाढ़ा, पीला अथवा पीब की तरह होता है। और पेशाब के बाद मूत्र-नली में ज्वाला होता है तब किउबेब दिया जाता है इस प्रकार के स्राव पलसेटीला वो मारकिउरिअस में भी देखा जाता है।

शक्ति—३०—२०० ।

कुप्रम मेटालिकम।

CUPRUM METALLICUM.

आक्षेप वा ऐंठन (Spasm) ही कुप्रम का सर्वप्रधान लक्षण है। ऐंठन अंगुलियों से शुरू होकर हाथ पांव, पेट, छाती इत्यादि सर्व शरीर में फैलता है। ऐंठन से अंगुलियां मुट्ठी बांध जाता है और अकसर अंगुठा मुट्ठी के अन्दर हो जाता है।

कनभल्शन; मृगी, हुपींग कफ; कौलरा, हाइड्रोकेफेलस, प्लेग, संन्यास रोग, प्रसवदर्द, इत्यादि कोई रोग हो यदि उसमें उक्त प्रकार का ऐंठन वर्त्तमान हो तो अवश्य कुप्रम से फायदा मिलेगा।

एपिलेप्सि (Epilepsy) वा मृगी रोग का "औरा" (aura) वा पूर्वभाव ठेहुना से आरम्भ हो कर पेट में आता है। और उस के बाद ही रोगी बेहोश होकर गिर जाता है। रोगी का मुंह से फेन निकलता है। शरीर का बायां ओर से ऐंठन शुरू होता है और ऐंठन बहुत ज्यादा होता है। प्रति अमावस में यथा नियम से मृगी का फीट होना इसका स्वभाविक लक्षण है। गिर जाना, चोट लगना,

विशेषतः सिर में चोट लगने से वा पानी में भिगने से मृगी रोग हो तो कुप्रम से फायदा मिलता है।

कौलरा रोग में कुप्रम एक सर्व प्रधान दवा है, यदि इसका स्वभाविक ऐंठन का लक्षण मिले तो। हांथ पांव पिंडली, छाती इत्यादि में सख्त ऐंठन होता है। इसके साथ कौलरा के अन्यान्य लक्षण जैसे आंख वो चेहरे का धस जाना, चेहरे का नीला होना इत्यादि लक्षण भी होते हैं। लेकिन ऐंठन के लक्षण ही पर ख्याल रख कर कुप्रम को व्यवहार किया जाता है। क्योंकि ऐसा ऐंठन और किसी दवा में नहीं है।

सिकेली भी कौलरा में ऐंठन होने से व्यवहार होता है— लेकिन सिकेली का ऐंठन से रोगी का हांथ पैर की अंगुलियां ऐंठ कर अलग २ होकर पीछे के ओर टेढ़ा हो जाते हैं। सिकुटा के ऐंठन से रोगी की अंगुली इकट्ठे सट कर ही पीछे के ओर टेढ़ी हो जाती है।

भेरेट्रम—अल्बम में भी ऐंठन है लेकिन यह इसका प्रधान लक्षण नहीं है। ज्यादा दस्त व कै के साथ पेट में दर्द होना वो कपाड़ में पसीना होना इसका प्रधान लक्षण है।

कैम्फर भी कौलरा में कुप्रम की तरह एक आला दवा है और रोग के शुरू ही में अचानक कोलैप्स होकर सर्व शरीर वर्फ की तरह ठंढा हो जाना व शरीर में ज्वाला होना इसका खास लक्षण है। सिकेली में भी इस तरह को कोलैप्स है लेकिन यह बिमारी के शुरू में नहीं होता है, बिमारी की आखिर ही में होता है।

कुप्रम (Copper तामा) कौलरा का एक उत्तम प्रति षेधक्त औषध है। इस लिए बहुत से लोग अकसर कमर में पैसा बांध रखते हैं।

हुपिंग कफ (whooping cough) : बहुत देर तक स्थाई आक्षेपयुक्त खांसी; खांसते २ रोगी, का शरीर कठिन हो जाता है और दम बन्द होने का उपक्रम होता है। कै होने से आराम बोध करता है। ठंढा पानी पीने से खांसी को कमी होती है। (कष्टिकम)।

गर्भावस्था में आक्षेप। पिउआरपेराल कनभलशन (Puerperal cnvulsion) वा प्रसवान्तिक आक्षेप। भय अथवा अज्ञाता हेतु आक्षेप। इसके विशेषत्व यह है कि आक्षेप हाथ, पैर के अंगुली से शुरु होता है। और अंगुलियां मुट्ठी बांधती है।

जीभ का लकवा (paralysis) ; जीभ, सांप की तरह बार बार बाहर निकलता है। तुतलाना।

कोदसा इत्यादि के इरपशन अथवा और कोई चर्म्म रोग दब जाने के हेतु नाना प्रकार की पीड़ा (जिंक), यथा— दिमाग की पीड़ा, ऐंठन इत्यादि में कुप्रम मुफिद है। पैर का पसीना रुक जाने के हेतु पीड़ा (साइलिशिया) में भी यह उत्तम है।

तरल वस्तु पीने से गलगल शब्द के साथ पेट में उतरता है। (आर्स: थुजा)। यह भी कुप्रम का एक प्रिय लक्षण है।

अत्यन्त अधिक मानसिक परिश्रम अथवा अनिद्रा-जनित मानसिक वा दैहिक क्लान्ति होना भी कुप्रम का एक लक्षण है।

शक्ति ३० और उच्च शक्ति।

साइक्लेमेन युरोपिअम

CYCLAMEN EUROPEAM.

दिमाग के ऊपर इस दवा की विशेष क्रिया होती है

अचानक अज्ञान भाव ; सिर चकराना ; सिर दर्द ; धुन्धली दृष्टि ; पुतली फैली हुई ; कुस्वप्न से निद्रा का व्याघात ; रोगी चिड़चिड़ाहा, रोने वाला ; दुःखी और गमगीन ; निर्ज्जनता पसन्द करता है, खुली हवा में रहना नहीं चाहता है।

उदर—अत्यन्त दस्त वो कै होना, रक्तवमन के साथ ठंढा पसीना ; कान में सां सां आवाज ; सिर चकराना। थोड़ा सा खाने से ही पेट भर जाता है वो उससे जी मिचलाता है। खाद्य वो लार के स्वाद नमकीन मालुम पड़ता है।

स्त्री-जननेन्द्री के ऊपर इसका विशेष अधिकार देखा जाता है। रज-स्राव अति शीघ्र २ वो बहुत परिमाण से होता है। प्रसव दर्द की तरह दर्द होकर डेला २ काला रक्तस्राव होता है। रजःस्राव के समय में रमणी आराम बोध करती है। शरीर के वर्ण फीका। ऋतु के गड़बड़ी के साथ शिर पीड़ा, धुन्धली दृष्टि।

दृष्टि Eye Sight—आंख का सामने रोशनी कंपता हुआ नजर आना ; नाना रंग के चिन्गारियां वा चमकीला सुई की तरह वस्तु दिखाई पड़ता है ; धुन्धली दृष्टि। एड़ी में ज्वाला के साथ छनछना कर दर्द होना एगारिकस; कष्टिकम मेलेरियाना, फाइटोलैक्का।)

खुली हवा में और शीतल जल में स्नान करने से कष्ट का वृद्धि; गरम गृह में कमी।

शक्ति ६—३०—२०० ।

डिजिटैलिस परपुरिया

DIGITALIS PURPULEA.

जिन रोगों के शुरू ही में नाड़ी ज्यादा सुस्त बेकायदे व रुक २ कर चलता है और शरीर में शोथ का लक्षण देखा जाता है, उन रोगों में डिजिटैलिस व्यवहार होता है। दिल का यंत्रिक रोग में निम्नलिखित लक्षण होने से डिजिटैलिस का प्रयोग होता है, यथा—ज्यादा कमजोरी मूर्छाभाव, चेहरा मुर्दे की तरह, बदन ठंढा व नीलापन आंख के पपुटे, जीभ व ओन्ठ कालापन, कभी २ लम्बा स्वांस लेना मेदा शून्यता वा दुर्बलता बोध इत्यादि।

दिल—दिल के ऊपर डिजिटैलिस की विशेष क्रिया है। इस लिए एलोपैथिक मत में यह हर्ट (दिल heart) का टौनिक रूप से व्यवहार होता है। लेकिन होमियोपैथिक मत में सिवाय बलकारी खाद्य के टौनिक वा बलकारी वो बलकार

कोई दवा व्यवहार नहीं होती है। क्योंकि स्वस्थ शरीर में दवा खाने से अथवा बगैर लक्षण मिलने के कोई दवा खाने से वह फायदा तो करती ही नहीं बलकि बिमारी पैदा करती है। रोग के लक्षणों के साथ जिस दवा का लक्षण मिलता है वही दवा के व्यवहार से रोग भी दूर होता है और बल भी होता है। नाड़ी की चाल निहायत सुस्त होना डिजिटैलिस का सर्व प्रधान लक्षण है। नाड़ी धीरे २ चलते २ अचानक जल्दी २ चलने लगती है थोड़ी देर के बाद फिर धीर हो जाती है। नाड़ी कभी २ रुक २ कर चलती है। प्रति तृतीय, पञ्चम, सप्तम, अथवा नवम चाल के बाद थोड़ा देर रूक कर फिर चलती है। रोगी को ऐसा मालूम होता है कि हरकत करने ही से दिल बन्द हो जायगा (कोफिन) (जेलसिमियम के रोगी को मालूम होता है कि शरीर की हरकत बन्द करने ही से दिल बन्द हो जायगा)। रोगी के सीने में अत्यन्त कमजोरी मालूम होती है (ष्टैनम)। बिमारी कोई हो यदि उपरोक्त लक्षण मिले तो डिजिटैलिस के प्रयोग से अवश्य उपकार होगा।

यकृत रोग- यकृत की बृद्धि व कठिनता के साथ पान्डुरोग में यदि मल बेरंग या सफेद हो पेशाब भूरा रंग

का हो और मतली व ऊंघाय आवे तो डिजिटैलिस के प्रयोग से अवश्य फायदा मिलेगा। इसके साथ नाड़ी के प्रति भी अवश्य ख्याल रखना चाहिये।

दिलके रोग के हेतु शोथ रोग में डिजिटैलिस अति उपकारी होता है। ब्राइट-पीड़ा (Bright's Disease) में मूत्र की उत्पत्ति न होने से भी इस से उपकार होता है। दिल की दुर्ब्बलता के हेतु सिर चक्राना में डिजिटैलिस दिया जा सकता है। डिजिटैलिस का शोथ-रोगी का गात्रचर्म्म नीलापन होता है। नाड़ी अत्यन्त धीरे २ चलती है।

रात में शुक्रपात वो अतिशय दुर्ब्बलता; वो विशेषतः स्त्री संगम के बाद।

उदरामय--मल सफेद अथवा खाकी रंग के (Ash Colour): दुर्ब्बलता वो नाड़ी की गति निहायत सुस्त होना डिजिटेलिस का सर्व्व प्रधान लक्षण है। डिजिटेलिस प्रयोग करना हो तो इस का ऊपर हमेशा ध्यान रखना।

शक्ति ६—३० २००।

डायोस्कोरिआ विलोसा ।

DIOSCOREA VILLOSA.

उदर-शूल के लिये यह एक महौषध है। शूल दर्द, पेट पड़ने से बढ़ता है किन्तु सर्व्व शरीर को तान कर पीछे के तरफ टेढ़ा होने से आराम बोध होता है। (इस का विपरीत लक्षण होने से (कलोसिन्थ) ।

जननेन्द्री Genital organs—निद्रितावस्था में शुक्र-पात; रातभर स्त्रीओं के विषय में स्वप्न-दर्शन; टेडुना दुर्ब्बल; लिंग शीतल; नितान्त निराशभाव ।

अंगुलबेढ़ा (Witlow) रोग की प्रथमावस्था में जब दर्द सुई भोकने की तरह और नितान्त कष्टदायक होता है तब इससे विशेष फायदा होता है। कुनख या अंगुल बेढ़ा रोग होने का आदती लोगों के लिये यह उत्तम औषध है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

ड्रोसेरा रोटान्डिफोलिया।

DROSERA ROTANDIFOLIA.

यह खांसी विशेषतः हपींग खांसी का एक महौषध है। एक बार खांसीकी तकलीफ रफा होते न होते ही फिर खांसी शुरु होता है। खांसी से रोगी को स्वांस लेने का समय नहीं मिलता है। गम्भीर शब्द के साथ स्वरभंग की तरह व कुत्ता भोखने के ऐसा शब्द के साथ खांसी: मध्यरात में अत्यन्त अधिक होता है। आक्षेपयुक्त खांसी वो उसके साथ मतली वो कै होना (ब्राइओनिया, केलि-कार्ब)।

शिशुओं को लगातार गले में खुसखुसाहट के साथ खांसी, लेटकर तकिया पर सिर रखने से ही खांसी शुरु होता है। (बेल, हाइओसायमस, रिउमेक्स।)

खांसते २ नाक वो मुंह से रक्तस्राव होता है (कुप्रम): लगातार गले में पर घुसने की तरह खुसखुसाहट के साथ खांसी होना है। एपिडेमिक (Epidemic) वा व्यापक भाव से हुपिंग कफ होने से यह उत्तम है।

यक्ष्मा रोगाक्रान्त युवक के रात्रिकालीन खांसी: बलगम रक्तमय अथवा पीब की तरह।

पादरी, गायक वो वक्ता करनेवालों के सोर-थ्रोट वा गले का प्रदाह (Sore throat) अतिकष्ट से बात कर सकता है, (ऐराम)। लेरिंगस वा स्वरनली का थाइसिस (Phthisis) वो उस के साथ हूपींगकफ।

वृद्धि Aggravation--गरम गृह में, गान करने के पान करने के या हंसने के वा रोने के समय लेटने से वो आधिरात में खांसी की वृद्धि होती है।

यह आक्षेपयुक्त खांसी में सिना, कोक्षा, कुप्रम, इपिकाक, सैम्बुकस इत्यादि औषधियों के सदृश है।

शक्ति ६—३०—२००।

——:o:——

डलकामेरा।

DULCAMARA.

ग्रीष्मकाल के शेष भाग में जब दिन में बहुत गर्मी वो रात में ठँढ पड़ता है, उस समय की हरएक पीड़ा में डलकामेरा उपकारी होता है। गीली ठंढी हवा लग कर कोई पीड़ा होने से इस से फायदा होता है।

ऋतु-परिवर्त्तन-काल में अचानक गरम शरीरमें ठंढ

लग कर कोई पीड़ा होने से डलकामेरा व्यवहार होता है। इस से सर्व्व प्रकार प्रदाह से वात रोग तक हो सकता है। इस कारण से यदि कोई रोग की वृद्धि हो तो भी इस से उपकार होता है। ठंढ लगने के बाद पीठ, कमर, गर्दन वो शाखा समूह की अंकड़ी हुई अवस्था वो कभी २ जीभ को लकवा भी हो जाता है। यह लक्षण डलकामेरा वो वैराइटा कार्ब, दोनों में है इस लिए वैराइटा-कार्ब के बाद डलकामेरा वो डलकामेरा के बाद वैराइटा-कार्ब सुन्दर क्रिया करता है।

यदि गले में दर्द के साथ ऊपर के लिखित अंकड़ी हुई अवस्था देखी जाय तो वैराइटा-कार्ब के बदले में डलकामेरा हो देना चाहिये। ठंढ लगने के बाद गले में इस प्रकार का अवस्था हो कर, वह क्रमशः फेफड़ा तक फैल जा सकती है, वो उस से खांसी वो खांसी के साथ रक्त निकलना भी देखा जाता है। ऐसी अवस्था प्रायः वृद्ध अवथा शिशुओं में देखी जाती है। बलगम के साथ दम्मा वो तर वा ढीला खांसी में भी डलकामेरा व्यवहार होता है। यहां नेट्रम-सल्फ के साथ डलकामेरा को तुलना करके देखना चाहिए कारण नेट्रम-सल्फ की पीड़ा भी ठंढी गिली हवा से वृद्धि होती है।

उदरामय, शूलदर्द, पेचीस, वातरोग, पोठमें दर्द इत्यादि

यदि ग्रीष्मकाल में अचानक ठंढ लग कर उत्पन्न हो तो डलकामेरा अति उत्तम है।

चर्म्म रोग अचानक ठन्ढ लगकर पसिना का रुक जाना ठंढ लगने से ही किसी प्रकार के चर्म्म रोग या आर्टिकेरिआ (जुरपित्त) होना, शोथ रोग, पेशाव दूध की तरह सफेद होना या वेखवरी में पेशाव होना इत्यादि किसी प्रकार की पीड़ा हो अगर वह ठंढो, भिजी हवा लगने से उत्पन्न हो तो डलकामेरा को अवश्य स्मरण करो।

इकुइसिटम हाइमेल।

EQUISETUM HYEMALE.

इस दवा की क्रिया प्रधानतः मूत्रस्थली के ऊपर होती है। वार २ असहनीय पेशाव के वेग होता है लेकिन पेशाव करने के अन्त में भयानक तकलिफ होती है (वारवेरिसः स्यापिरिला; थुजा)। बहुत परिमाण से पानी की तरह पेशाव होता है। लेकिन उससे पेशाव के वेग दूर नहीं होता है। पेशाव के समय ज्वाला वो कतरने की तरह दर्द। वृद्धा स्त्रियों के मूत्रस्थली (Bladder) के लकवा (Paralysis) ; दिन वो रात में वेखवरी से विछावन में पेशाव करना।

शक्ति ३—६—२००।

इउपेटोरिअम पारफोलिएटम।

EUPATORIUM PERFOLIATUM.

सर्व्व शरीर में विशेषतः हड्डियों में कुचलने की तरह दर्द होना इस दवा का सर्व्वप्रधान लक्षण है। पीठ, हाथ, पैर, तथा शरीर में ऐसा दर्द होता है कि मालूम पड़ता है वे सब टूट गये और जोड़ों खुल गये हैं। इस लिये इस के नाम बोनसेट (Bone-set) वो हड्डी जोड़ने वाला भी है। इस लक्षण पर विलिअस वा पैत्तिक वो इन्टर-मिटेन्ट फीवर वा जाड़ा बुखार, ब्रोंकाइटीस, इन्फ्लुयेंजा, डेंगुज्वर इत्यादि रोगों में इस को प्रयोग किया जाता है (आर्निका, पाइरोजेन, बैपटिशिया, वेलिस)।

इन्टरमिटेन्ट वा सविराम ज्वर में निम्न लिखत तीन लक्षणों पर इसका प्रयोग द्वारा आशतीत फल मिलता है:—प्रति दिन प्रातःकाल सात बजे से नौ बजे के अन्दर अथवा एक दिन सात बजे से नौ बजे के अन्दर और उसका दुसरा दिन दोपहर को शीत होकर ज्वर होना; शीत वो उत्ताप के मध्यवर्त्ती समय में पित्तवमन। शीत के पहले से ही अंग प्रत्यंग ऐसा कि हड्डियों में भी कुचलने की तरह दर्द।

स्वांसयन्त्र के ऊपर भी इस का विशेष अधिकार है। पुराना खांसी; हेकटिक ज्वर (तपेदिक) के साथ खांसी; खांसते २ छाती में इतना दर्द होता है कि हाथ से छाती को दबा कर रखना पड़ता है (ब्राई,नेट्रम-कार्ब)। इस औषध में भी कष्टिकम की तरह प्रातःकाल में स्वर-भंग देखा जाता है। कष्टिकम में छाती में ज्वाला वो जखम सा दर्द दोनों देखा जाता है, लेकिन इउपेटोरिअम में सिर्फ जखम सा दर्द देखा जाता है।

आंख के गोला में भयानक दर्द; कोराइजा वा सर्दी; एपिडेमिक इनफ्लुयेन्जा के समय नितान्त शय्याशायी अवस्था वा शरीर में दर्द होना इत्यादि में यह फायदेमन्द है।

शक्ति ३—६—३०—२०० ।

इउपेटोरिअम पारपुरिअम ।

EUPATORIUM PURPUREUM.

यह भी सविराम ज्वर के एक उत्कृष्ट औषध है। कमर से शीत आरम्भ हो कर नीचे के तरफ फैलता है; यह

इस दवे का सिद्धिप्रद लक्षण है। इस दवे में भी हड्डियों में दर्द देखा जाता है।

कैप्सिकम शीत गर्दन के नीचे वो दोनों कन्धे के मध्यवर्त्ती स्थान से शुरु हो कर सर्व्वशरीर में फैलता है। कैप्सिकम का शीत अत्यन्त प्रबल वो उस के साथ सर्व्व-शरीर ठंढा हो जाता है। इउपेटोरिअम पारपुरिअम में शरीर ठंढ नहीं होता है। इउपेटोरिअम-पार्फ में शीत के साथ कम्प होता है वो शरीर सामान्य ठंढा होता है। तीनो दवे में हड्डियों में दर्द है लेकिन इन में इउपेटो-पार्फ ही सर्व्व प्रधान है।

शक्ति ३ – ६—३० – २०० ।

इलैप्स कोरालिनम ।

ELAPS CORALINUM.

रक्तस्राव वो अन्यान्य नाना प्रकार के स्राव काला रोश-नाई। (स्याही) की तरह काला होना इसका विशेष लक्षण है। कान का मैल काला होता है।

ठंढ पानीय वो फल सेवन करने से पाकस्थली में

बरफ की तरह ठन्ढ वो उसके साथ छाती के भीतर भी ठन्ढा मालुम पड़ता है।

नाक वो गलनली (pharynx) के सर्दी वो उस से पीलापन वो दुर्गन्धी चोइआं पड़ता है।

कोई चीज निगलने के समय वह पेंच की तरह घुमते २ नीचे उतरता है। कोई तरल वस्तु पीने से आवाज के साथ पेट में जाता है।

बगल के ग्लैन्डस (गाठों) का बार २ पक जाना। बलगम में खुजलाहट के साथ पुराना इरपशन (चर्म्मोद्भेद)।

शक्ति—६ - ३०—२०० ।

——:o:——

इरिजिरण कैनाडेन्सिस।

ERIGERON CANADENSIS.

यह रक्तस्राव का एक अति उत्कृष्ट दवा है। मस्तक के कनजेशन (Conjestion) वा रक्ताधिक्य वो रक्तवर्ण मुखमंडल के साथ एपिष्कसिस वा नाक से रक्तस्राव (मेलिलोटस) और इसके साथ ज्वर, इरिजिरण से आरोग्य हुआ

है । भयानक सूखा मतली वो पेट में ज्वाला के साथ रक्त-वमन में भी यह अद्वितीय औषध है । फेफड़ा से रक्तस्राव के लिये भी इरिजिरण उपकारी है ।

अर्श (बवासिर)से ज्वाला के साथ रक्तस्राव । मूत्रस्थली (Bladder) में पत्थरी होने के हेतु रक्तस्राव; जरायु से रक्त स्राव । यदि तलपेट के इन यन्त्रों से रक्तस्राव के साथ: रेक्टम (मलद्वार) वो ब्लाडर या मूत्रस्थली (Rectum & Bladder) के इरिटेशन (उत्तेजना) देख पावो तब इरि-जिरण को अति उत्तम औषध जानो ।

शक्ति १—३—६—३० ।

——:o:——

इउफ्रे शिया ।

EUPHRASIA.

मिउकस वा बलगमी झिल्लियों के सर्दि, विशेषतः आंख वो नाक के सर्दि के लिये अति उत्तम औषध है । आंख से बहुत परिमाण से झांसीला वो जखम पैदा करने वाला पानी निकलना इसका विशेष धर्म्म है । नाक से भी बहुत परिमाण से सर्दि निकलता है लेकिन यह दाहक वो

जखम पैदा करने वाला नहीं होता है। (एलियम-सिपा में यह उभय धर्म्म ही विपरीत देखा जाता है)। सर्व्वदा आंख से पानी निकलता है वो रात में पपुटे परस्पर जुट जाते हैं। पपुटे रक्तवर्ण, फूला वो ज्वालायुक्त रहते हैं।

प्रातः काल में भयानक खांसी के साथ बहुत सा बलगम वो नाक से बहुत सा पानी निकलता है। गरम हवा से तकलीफ की वृद्धि होती है। बहुत खखार कर वो हूल दे कर श्लेष्मा निकलने की चेष्टा।

रजोबन्द; उसके साथ नाक वो आंख से श्लेश्मा निकलना; आंख से बहुत सा दाहक पानी निकलना; ऋतुस्राव नियमित, दर्द के साथ; एक घंटा मात्र स्थाई होता है, अथवा देर में वो अल्प परिमाण से होता है और एक दिन मात्र रहता है (बैराइटा)।

हूपींग कफ के साथ आंख से बहुत सा पानी निकलना। सिर्फ दिन में खांसी।

सिर पीड़ा के साथ आंख वो कान से पानी निकलता है। बिछावन में, गरम गृह में, गर्मी में, सर्द स्थान में,

गरम हवा से, सन्ध्या के समय, स्पर्श से रोग की वृद्धि होती है।

शक्ति ३—६—३०—२०० ।

फेरम मेटालिकम।

FERRUM METALICUM.

यह विशुद्ध इस्पात से बनती है।

रक्त के ऊपर इस दवे की विशेष क्रिया है। इस से रक्त के जलियभाग की वृद्धि होती है वो एलवुमेन और लाल कणिका समूह (Red blood Corpuscles) की कमी होती है। प्लीहा छोटा हो जाता है। रक्त की हीनता के हेतु शरीर क्षीर्ण वो दुर्ब्बल हो जाता है। यह एनिमिया वा रक्तात्पता के एक उत्तम दवा है।

मुखमण्डल मलिन, फीका अथवा हरापन। अति सामान्य मानसिक उत्तेजना से मुखमण्डल रक्तवर्ण हो जाता है। मस्तक में रक्ताधिक्य वो उसके कारण शिर के शिरा समूह (Veins) फूल जाता है वो धक्धक करके सिरदर्द होता है (वेल, चायना, नेट्रम म्यूर, ग्लोनइन)। मुंह के

भीतर के रंग मलिन होता है; पहले की तरह लाल नहीं रहता है। धीरे २ चल फिर करने से आराम बोध होता है लेकिन रोगी दुर्ब्बलता के हेतु लेटे रहने में मजबुर होता है।

स्त्रियों के ऋतु शीघ्र २ होता है वो बहुत परिमान से रक्तस्राव होता है वो बहुत दिन तक रहता है। रक्त मलिन वो पानी की तरह पतला होता है। उक्त प्रकार स्राव के साथ मुखमण्डल, रक्तवर्ण, कान में भन २ शब्द इत्यादि लक्षण भी देखा जाता है।

ऊपर के लिखित लक्षणों फेरम का विशेष धर्म्म है। यह रक्ताल्पता के एक महौषध है। शरीर में खून निहायत कम होने से भी, मुखमण्डल, सिर छाती इत्यादि स्थान में रक्ताधिक्य हो जाय तो फेरम आशातिरिक्त फल प्रदान करता है। रक्तक्षीणता (Anaemia) में फीका जर्द चेहरा का, सामान्य मानसिक उत्तेजना वा दैहिक परिश्रम से रक्तवर्ण होना फेरम का सिद्धिप्रद लक्षण है। चेहरे में गर्मी का धां मालूम पड़ता है, सिर के रग समूह फूल उठता है, मस्तक में हथौरी के आघात की तरह दर्द होता है।

रक्तस्राव (Hæmorrhages) ; रक्तहीन (Anaemic)

वो दुर्ब्बल रोगी का नाक, फेफड़ा; जरायु, मूत्रयन्त्र इत्यादि कोई स्थान से रक्तस्राव होने से भी फेरम अति उत्तम फल देता है। रक्तस्राव के आदत में फेरम अति उपकारी है खून का कुछ हिस्सा पतला और कुछ हिस्सा थक्का २ होता है; जल्द ही जम जाता है।

केवल मात्र रक्त के ऊपर ही फेरम की क्रिया सीमाबद्ध नहीं है। मेदा या अंतरी के ऊपर भी इसकी विशेष क्रिया देखी जाती है। राक्षस की तरह भूख (Ravenous hunger), रोगी सर्व्वदा खाय २ करता है। फिर कभी ऐसा भी होता है कि भूख एकदम नहीं होता है। भोजन के बाद डेकार के साथ खाई हुई चीज निकल पड़ती है। रोटी वा मक्खन खाने की अत्यन्त इच्छा: मांस, चाय इत्यादि में अरुचि। समस्त दिन खाद्य मेदे में रह कर रात में के हो जाता है। अंतरी में कुचलने की तरह दर्द होता है। कोई चीज पान या भोजन करने के समय मलत्यागकी इच्छा होती है। रात में अजीर्ण वो वगैर दर्द के दस्त होना इसका प्रिय लक्षण है।

ऊपरोक्त लक्षणों के साथ चायना के विशेष मिलाव है लेकिन फेरम और चायना में फर्क यह है कि चायना में पेट में अत्यन्त अधिक हवा जमा होने के हेतु पेट, फेरम से

अधिक फूला रहता है। चायना के बाद फेरम, वो फेरम के बाद चायना अति उपकारी होता है।

धीरे २ चल फिर करने से रोगी आराम बोध करता है (पलसेटिला): रोगी अत्यन्त दुर्बलता के हेतु चल नहीं सकता है किन्तु फिर भी चले फिरे बिना रहा नहीं जाता है। यह भी फेरम के अति प्रिय लक्षण है।

मैलेरिया ज्वर, सविराम (Intermittent) ज्वर इत्यादि में भी फेरम अति सुन्दर क्रिया करता है। मैलेरिया ज्वर में अधिक कुइनाइन सेवन करने के हेतु प्लीहा बढ़ जाय, प्लीहा में दर्द हो तो भी फेरम से उत्कृष्ट फल लाभ होता है। ज्वर की शीत अवस्था में रोगी का चेहरा रक्तवर्ण होता है।

इन्टर मिटेन्ट ज्वर का रूका रहना, कुइनाइन के अपव्यवहार, रक्त इत्यादि शरीर का कोई संजीवनी रस का ज्यादा निकल जाना इत्यादि के हेतु शोथ रोग में भी फेरम उपकारी है (कार्बो-भेज, चायना)।

सिर्फ दिन में खांसी होना, लेटने से या आहार करने से खांसी की कमी होना।

साक्त ६—१२—३०—२००।

फेरम फस्फोरिकम।

FERRUM PHOSPHORICUM.

सर्व्व प्रकार ज्वर की प्रथमावस्था में वो सर्व्व प्रकार प्रदाह में जब तक उस में रससंचय न हो तब तक इसको प्रयोग किया जाता है। विशेषतः स्वांसयन्त्र का सर्दि में यह विशेष उपयोगी है। शरीर के किसी द्वार से गाढ़ा लाल रंग का रक्तस्राव के लिए व रक्ताल्प व्यक्ति के शरीर के किसी स्थान में तेज प्रदाह हो तो यह उपकारी है।

फेरम-फस डाक्टर सुसलार-कृत एक महौषध है। यह कई एक प्रदाह युक्त बिमारी के लिए उत्तम औषध है। यह रक्तस्राव के लिए भी उत्कृष्ट औषध है। शरीर के सब छिद्र से रक्तस्राव के लिये यह व्यवहार होता है। एको-नाइट के सदृश शरीर में अधिक परिमाण शुद्ध रक्त संचित होने के हेतु रक्तस्राव में फेरम-फस उपकार नहीं करता है। फेरम-फस के रोगी के शरीर जर्द, रक्तहीन व दुर्ब्बल अचानक निउमोनिया की तरह स्थानीय प्रदाह वो रक्ताधिक्य देखा जाता है। शरीर के किसी स्थान में यथा— मस्तक अंतरी इत्यादि में अचानक रक्ताधिक्य होना। वात रोगी की तरह प्रदाह युक्त व्याधि। ऊपर के लिखित

व्याधियों की प्रथम अवस्था में फेरम-फस विशेष उपकारी है। उक्त प्रकार के दुर्ब्बलता वो रक्तल्पता के साथ खट्टा ढेकार होना। इस प्रकार की अवस्था पाकस्थली की गड़-बड़ी के हेतु होती है। पेचीस रोग में मलत्याग काल में बहुत परिमाण से रक्त निकलने से फेरम-फस विशेष फायदा करता है।

दुर्ब्बल वो रक्तहीन व्यक्ति के रात का पसीना के लिये यह उपकारी है।

आंख का प्रदाह, आंख रक्तवर्ण; ज्वालायुक्त, आंख में जखम सा दर्द, मालुम होता है कि आंख में बालु पड़ा है आंख में फोड़ा, नीचला पपुटे में गुहेरी, पपुटे में दिदमर होना इत्यादि में भी यह फायदेमन्द है।

कान में प्रदाह, पैरोटीड ग्लैन्ड (कर्णमूल की गिल्टी) फूला या दर्द के साथ होना।

नाक के सर्दि की प्रथम अवस्था में नाक से रक्त-स्राव होना।

प्रसव के बाद के दर्द व ज्वर निवारण करने के लिये यह उत्तम औषध है।

एनिमिया वा रक्तहीनता के साथ एकदम ऋतु बन्द हो जाने से फेरम-फस द्वारा विशेष फायदा होता है।

प्रतिदिन ९ बजे शीत हो कर सविराम ज्वर (जाड़ा बुखार) होना। अत्यन्त उत्तापवाला ज्वाल ज्वर; खाई हुई चीज का कै के साथ जाड़ा बुखार होना; रात को बहुत पसीना होना इत्यादि में यह उपकारी है।

शक्ति ६—१२—३०—२०० ।

फ्लुओरिक एसिड।

FLUORIC ACID.

वृद्ध वयस की पीड़ा अथवा अकाल वृद्ध की पीड़ा में, शरीर में उपदंश वो पारा के दोष के वर्त्तमानता में, युवक का बुड्ढे की तरह सुस्त हो जाना इत्यादि में यह विशेष उपयोगी है। ज्यादा परिश्रम से भी थकावट मालुम न होना इसका स्वाभाविक शारीरिय धर्म्म है।

बहुत दिन का सूखा जखम का चिन्ह (Cicatrix) का चारो ओर लाल वो प्रदाहयुक्त होकर फिरसे जखम होने का उपक्रम (कसिकम, ग्राफाइटिस)। बहुत सन्तान प्रसवकारिणी स्त्रियों के भेरिकोज भेइन (Varicose Veins) या शिरायों का फूलन व जखम इत्यादी में यही ज्यादा

दिन तक आरोग्य न हो तो इसका प्रयोग से विशेष फल होता है।

जख़म के चारो ओर लाल वो उसमें रक्तपूर्ण फुन्सियां होना और उस से बहुत परिमान से रस निकलना। गर्मी से रोग की वृद्धि व ठंढ प्रयोग से आराम बोध, अति शीघ्र २ बिजली चमकने की तरह दर्द होना इत्यादि में यह बहुत फायदा करता है।

हड्डियों का विशेषतः लम्बी हड्डियों का क्षय रोग (जख़म व मुर्दार होना Caries & Necrosis); सोरा (Psora) अथवा उपदंश का दोश अथवा पारा वा साइलिसिया के अपव्यवहार के कुफल इत्यादि में फ्लुओरिक-एसिड बहुत उपकारी है।

दांतों का क्षयरोग वा कैरिज (Caries), लैक्रिमल फिस्चुला (Lachrymal Fistula) वा आंख का अन्तः कोण में सैन होना, अथवा डेन्टल फिस्चुला (Dental Fistula) वा दांत में सैन होना, मुखमंडल की किसी अस्थि की वृद्धि इत्यादि में यह महोपकारी औषध है। घेघा के लिए भी यह उपकारी है।

शक्ति १२—३०—२००

——:o:——

गैलिक एसिड।

GALLIC ACID

लिङ्ग से रक्त स्राव ब्राईट रोग — मे गुर्दे से रक्तस्राव होने से इस दवा का १x ट्राई-टूरेशन प्रयोग करने से विशेष फल मिलता है एलबू मेनुरिया बिमारी मे भी यह औषध बहुत उपकारी है मुत्रस्थलि (बलैडर) के प्रदाह होने के कारण पेशाब निकल ने मे ज्वाला और कष्ट निवारन के हेतु इस दवा का १x ट्राई-टूरेशन प्रयोग करने से अती शीघ्र लाभ होता है कोई २ कहते हैं कि प्रस्टेट गलैन्ड प्रदाह होकर बहुत रक्तस्राव होने मे भी यह दवा बहुत उपकारी है।

कोष्ठबध (Constipation) होमियोपैथिक मत से यह दवा इस रोग के निमित अति उपयोगी है।

मुख से जल पड़ना, पेट फूल ना इत्यादि इससे अति लाभ दायक है।

शक्ति ३० — २०० ।

गैम्बोजिया।

GAMBOGIA.

यह उदरामय (दस्त) रोग का एक उत्कृष्ट औषध है। अचानक मल त्याग की इच्छा होती है और अत्यन्त वेग के साथ समस्त मल एकदम से निकल पड़ता है। आहार अथवा जलपान करने के बाद, ही पीड़ा की वृद्धि होती है (क्रोटन)। मल त्याग के बाद मलद्वार में ज्वाला। मल अत्यन्त दुर्गन्धी, पानी की तरह पतला व पीला अथवा हरापन; पेट का बोलना। यह नया वो पुराना उभय प्रकार के उदरामय में ही उपकारी है।

शक्ति ६—३०—२००।

ग्रैटिओला अफिसिनालिस।

GRATIOLA OFFICINALIS.

यह भी क्रोटन वो गैम्बोज की तरह पिलापन, पतला मल अत्यन्त वेग के साथ निकलने से व्यवहार होता है। शिशुओं का गर्मी के दिनों के दस्त; विशेषतः ठंढा पानी पीने से

उदरामय रोग हो तो इस से बहुत उपकार होता है ।

जेलसिमियम ।

GELSEMIUM.

यह चालनाकारी स्नायुसमूह (Motor nerves) की संजीवनी शक्ति को ह्रास करके मांसपेशियों का पक्षाघात (Paralysis) उत्पन्न करता है । यह अवस्था धीरे २ उपस्थित होती है । सर्व्व प्रथम में रोगी सर्व्वांग में दुर्व्वलता व थकावट मालूम करता है । रोगी सर्व्वदा चुप चाप पड़ा रहना चाहता है । बेहोश की तरह आंख मुन्द कर पड़ा रहता है । नाड़ी अत्यन्त दुर्व्वल होती है वो धीरे २ चलती है लेकिन हरकत करने से ही खूब जल्द चलने लगती है । रोगी चलने की चेष्टा करने से पांव कांपता है; हाथ उठाने की चेष्टा करने से हाथ कांपता है, जीभ निकालने की चेष्टा करने से जीभ कांपता है । ये सब लक्षण ही दुर्व्वलता के परिचायक है । ऐसी कमजोरी बढ़ते २ आखिर में पक्षाघात हो जाय तो जेलसिमियम अमोघ है ।

संक्षेप में जेलसिमियम को कम्प रोग का प्रधान औषधि कहा जा सकता है कारण इसमें कम्प इतना अधिक

होता है कि देखने से मालूम होता है—रोगी शीत से कांप रहा है। यह कम्प की अन्त अवस्था में पक्षाघात उपस्थित होता है। आँख के ऊपर वाला पपुटा लटक जाता है (कष्टिकम, सिपिया) ; आँख बन्द हो जाता है। अंगुलियों में भी क्रमशः इस प्रकार के पैरालेसिस (पक्षाघात) उपस्थित होता है, उस से इच्छानुसार अंगुलियों का संचालन नहीं किया जाता है, पियानो वा हारमुनियम बजाने के समय अंगुली ठिक जगह पर नहीं पड़ता है। चलने के समय रोगी समझता है कि उसका पाँव (Foot-Steps) ठिक तरह से नहीं पड़ रहा है किन्तु फिर भी यथारीति से पांव को फेंक नहीं सकता है। रोगी को बोध-शक्ति पूरी रहती है, उसको क्या करना चाहिये सब समझता है लेकिन उसका अंग प्रत्यंग इच्छानुजायी कार्य्य नहीं कर सकता है। ऐसी हालत में जेलसिमियम अवर्थ औषध है।

जेलसिमियम में स्नायविक दर्द (Neuralgic Pain) भी देखा जाता है। सर्व्वांग में मृदु २ दर्द अथवा अचानक बिजली छमकने की तरह दर्द आकर रोगी को चमका देता है। कनभलसन वो आक्षेप के साथ जेलसिमियम के स्वाभाविक दुर्ब्बलता वो कम्पन देख पाने से इस का प्रयोग से उपकार मिलेगा।

जेलसिमियम मन को भी निहायत सुस्त कर डालता है। किसी विषय में मन लगा कर चिन्ता नहीं कर सकता है। सर्व्वदा चुप चाप आंख मुन्द कर के वो अकेले पड़ा रहना चाहता है, किसी का उस के पास जाना या उसके साथ वोलना पसन्द नहीं करता है। उस से दीक हो जाता है। इस प्रकार के मानसिक लक्षण ऊपर के लिखित स्नायवीय दुर्वलता के साथ देखा जाता है। कभी २ मानसिक उत्तेजना भी देखा जाता है। किन्तु यह जेलसिमियम के अपना लक्षण नहीं है, जेलसिमियम का प्रतिक्रिया से उत्पन्न लक्षण है।

यह स्नायवीय उदरामय की बड़ी अच्छी दवा है अचानक किसी प्रकार की मानसिक उत्तेजना यथा—भय विपद के संवाद से, मन्दिर मसजिद अथवा जलसा में जाने के समय घबराहट होने ही से दौड़ कर पैखाना में जाना पड़ता है (आर्जेन्टम नाइट्रस।)

दिमाग वा ज्ञानोत्पादक शक्ति के ऊपर भी इसकी विशेष क्रिया होती है। सिर चकराना के साथ अस्पष्ट दृष्टि, पुतली फैली हुई; द्वित्वदृष्टि यानी एक वस्तु को दो देखना' मतवाला की तरह अवस्था। शिशु विना कारण से

गिर जाने के डर से माँ को पकड़ लेता है वो चित्कार करता है (शिशु को नीचे उतारने के समय गिर जाने के डर से माँ को पकड़ लेता है—बोराक्स) इत्यादि में यह उपकारी है।

जेलसिमियम में एक विशेष प्रकार के **सिर-पीड़ा** देखा जाता है। दिमाग के तलदेश में क्लान्ति बोध के साथ मृदु दर्द; रोगी तकिया के ऊपर सिर रख कर चुपचाप पड़ा रहता है। मानसिक परिश्रम, तमाकु पीना, नीचा तकिया पर सिर रखना वो सूर्य का ताप से सिर-पीड़ा की वृद्धि होती है। (ग्लोनइन, लैकेसिस, लाइसिन)। दबा कर रखने से या उत्तेजक वस्तु (Stimulant) सेवन करने से आराम होता है। कभी २ सिर में ज्यादा खून होने के कारण सिर के पश्चात् भाग में, गर्दन के ऊपरी भाग से सिर-पीड़ा शुरु होकर तमाम सिर में फैल जाता है। यह सिर पीड़ा भी पूर्व्वोक्त कारणों से वृद्धि पाति है लेकिन इस प्रकार के सिर-पीड़ा बहुत परिमाण से पेशाब होने से आराम होता है। जेलसिमियम में और एक प्रकार के सिर-दर्द देखा जाता है। इस में मतली वो वमन होता है वो यह सिर-पीड़ा आरम्भ होने के पहले रोगी अन्धा हो जाता है। सिर-पीड़ा आरम्भ होने से फिर दृष्टिशक्ति प्राप्त होता है।

केलि-बाइक्रम, सैंगुइनारिया, आइरिस इत्यादि दवाइयों में जितना अधिक मतली इत्यादि है जेलसिमियम में वह उतना नहीं है किन्तु जेलसिमियम के सिर-पीड़ा के साथ इसको स्वाभाविक दुर्ब्बलता वो कम्पन अवश्य रहता है।

जेलसिमियम ज्वर रोग में भी एक उतकृष्ट औषध है। स्वल्पविराम ज्वर वा रेमिटेन्ट फिवर में यह महोपकारी है। इसका ज्वर एकोनाइट, बेलाडोना, बैप्टिशिया इत्यादि की तरह उतना तेज नहीं होता है। कोइ २ कहते हैं यह बेले-डोना वो बैपटिशिया के मध्यवर्त्ती औषध है। बैपटिशिया की तरह इस में भी नितान्त दुर्ब्बलता वो कालापन चेहरा देखा जाता है। लेकिन बैपटिशिया के टाइफायड जीभ वा अन्यान्य लक्षण इसमें नहीं देखा जाता है। बैप्टिशिया का रोगी को प्रश्न करने से उसका जबाव देते २ सो जाता है—जेलसिमियम में इस प्रकार नहीं होता है। बैप्टिशिया का मल, मूत्र, पसीना इत्यादि शरीर के सर्व्व प्रकार स्राव हो अत्यन्त बदबुदार होता है। जेलसिमियम में ऐसा नहीं है। जेलसिमियम में भी मस्तक में रक्ताधिक्य देखा जाता है लेकिन बेलेडोना की तरह उतना अधिक नहीं होता है और उग्र विकार भी नहीं होता है। जेलसिमियम के रोगी होश में रहने से भी कमजोरी के कारण बेहोश की तरह नींद में पड़ा रहता है

यह इन्टरमिटेन्ट (सविराम) ज्वर का उत्कृष्ट दवा नहीं है लेकिन जब ज्वर में अत्यन्त कम्पन के साथ रोगी थरथर करके कांपता है और उसको जोर से दवा रखने से भी कंपना कम नहीं होता है तब इसका व्यवहार होता है। इस प्रकार के कम्पन हिष्टिरिया वो हृद्रोग में भी देखा जाता है। रोगी की नाड़ी अत्यन्त दुर्व्वल वो धीरे २ चलती है किन्तु हरकत से नाड़ी तेज होती है। रोगी को मालुम होता है कि हरकत बन्द करने ही से नाड़ी भी बन्द हो जायगी। वृद्धों की दुर्व्वल वो धीरे २ चलने वाली नाड़ी में जेलसिमियम विशेष उपकारी है। ज्वर की उत्ताप अवस्था में प्यास नहीं रहता है। किन्तु शरीर में भयानक ज्वाला के साथ मुखमंडल में दाह मालुम होता है। रोगी ज्वर के समय निद्रित भाव में अथवा वेहोश की तरह पड़ा रहता है। मालुम होता है कि शीत रीढ़ के बराबर एक बार ऊपर वो एक बार नीचे जा वा आरहा है। रात में ज्वर की वृद्धि होती है।

ध्यान रखना कि नितान्त दुर्व्वलता ही इसका प्रधान लक्षण है।

शक्ति ३—६—१२—३०—२०० ।

——:o:——

ग्लोनइन।

GLONOIN.

अत्यन्त ठंढ वा गर्म्मी लगने के हेतु मस्तक में रक्ताधिक्य वो शिर-पीड़ा; अचानक रक्त संचालन-क्रिया के व्याघात होने की सम्भावना ; मस्तक में रक्ताधिक्य के हेतु भयानक आक्षेप ; सर्व्वांग में धमनी का स्पन्दन की तरह मालुम पड़ना; कभी २ मतली व कै होना इत्यादि ग्लोनइन का स्वाभाविक लक्षण है।

यह शिर-पीड़ा का महौषध है। शिर-पीड़ा गर्दन से आरम्भ हो कर, क्रमशः ललाट वो पुटपुरी में प्रकट होता है और धक् धकाना के साथ सिर-पीड़ा होता है। ऐसा दर्द होता है कि मालुम पड़ता है सिर फट जाएगा। इस प्रकार की अवस्था में यदि रक्त के नलियों का दिवार स्वस्थ व सक्त ना रहे तो फट जा कर ऐपोप्लेक्सि (Appoplexy) वा सन्यास रोग हो सकता है।

बेलेडोना ग्लोनइन उभय औषध में ही सिर में रक्ताधिक्य वो धकधकाना के साथ सिर-पीड़ा होता है। इन दोनों में फर्क यह है,—ग्लोनइन का सिर—पीड़ा वो रक्ताधिक्य बेलेडोना से अत्यन्त तेज वो अचानक होता है, अ

शीघ्र आराम भी होता है। बेलेडोना में मस्तक को पीछे के तरफ हिलाने से आराम बोध होता है किन्तु ग्लोनइन में ऐसा करने से सिर दर्द होता है। बेलेडोना का रोग का बाल काटने से या मस्तक के कपड़ा उतारने से दर्द की वृद्धि होती है लेकिन ग्लोनइन का रोगी बाल काटना वो सिर से टोपी उतार देना चाहता है। याने बेलेडोना के रोगी ठंढ बर्दास्त नहीं कर सकता है लेकिन ग्लोनइन के रोगी ठंढ से आराम बोध करता है। बेलेडोना के रोगी लेट नहीं सकता है, लेटी हुई हालत में तकलीफ की वृद्धि होती है लेकिन ग्लोनइन के रोगी लेटने से प्रथम २ आराम बोध करता है पीछे कष्ट की वृद्धि होती है। ग्लोनइन का एक विशेष धर्म्म यह है कि रोगी उसके सिर को बहुत साव-धानता से बचाता है कारण सामान्य मात्र झटका लगने ही से दर्द बहुत बढ़ता है। रोगी को मालुम पड़ता है की उसकी नाड़ी की गति के साथ २ उसका सिर में भी तरंग संचालन हो रहा है। ग्लोनइन में दिल की क्रिया की अधिक गड़बड़ी देखी जाती है।

मेलिलोटस नामक औषध में भी सिर में खून की ज्यादती वा सिर में पूर्णता मालूम होती है। चेहरा चम-कीला होता है। इसका और एक प्रिय लक्षण यह है कि रोगी

के नाक से बहुत परिमाण से रक्तस्राव होने से सिड़-पीड़ा की कमी होती है

यह सनष्ट्रोक (Sunstroke) वा लू लगने का एक महौषध है। उसके कारण कोई दूसरी तकलीफ होने से भी इससे उपकार होता है। आग के उत्ताप वा गरम गृह में रहने के हेतु पीड़ा में भी ग्लोनइन उपकारी है। दोनों कन्धे के मध्यवर्त्ती स्थान में ज्वाला; यह लक्षण भी ग्लोनइन में देखा जाता है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

ग्रैफाइटिस

GRAPHITES.

यह एक उत्कृष्ट एेन्टिसोरिक (Antipsoric) औषध है। अर्थात् यह दवा भी खाज-खुजली के विष को नाश करने वाली है। (सोरिनम, लाइको, कष्टिकम, सलफर) चर्म्म, गिल्टियां मेदा व अंतरियों की बलगमी झिल्ली वो जरायु के ऊपर इसकी क्रिया प्रधान है। ढिली, मोटी सन्धिवाली स्त्रीआं जो हमेशा शीत बोध करती है; जिस

को हमेशा कब्ज रहता है, ऋतु देर में होता है उनके लिये यह अति उपकारी है। जैसी रोगिणी में यौवन काल में पलसेटिला कार्य्यकारी होता है, अधिक वयस (Climacteric period) में वैसी रोगिणी में ऋतु लुप्त होने से ग्रैफाइटिस उपकारी होता है।

रोगी शक्की, सावधान व डरफोक होता है। किसी विषय का फायसला नहीं कर सकता है; अत्यन्त गमगीन रहता है, गाना वो बजाना सुनने से रोता है; मृत्यु के सिवाय और कोई चिन्ता उसके मन में नहीं आती है।

मध (शहद) की तरह गाढ़ा वो चटचटाहा रस निकलना—इसका सिद्धिप्रद लक्षण है। किसी प्रकार का चर्मरोग, शरीर के किसी स्थान में हो अगर उस में से इस प्रकार के रस निकले तो अवश्य ग्रैफाइटिस प्रयोग करना चाहिये। इस प्रकार के चर्म-रोग ज्यादेतर कान के ऊपर या पीछे, सिर, मुखमण्डल, आंख के पपुटे, जननेन्द्री व हाथ पैर के अंगुलियों के बीच में होता है। यह एक्जिमा (Eczema) रोग (उकौता) का महौषध है। आंख के पपुटे में एकजिमा, पपुटे फटा २, उस में से रस निकलता है; पपुटे रक्तवर्ण वो उसके किनारे पर खुरंट

(Crust) पड़ना (स्टैफिसेग्रिया)। सल्फर की तरह ग्रैफाईटिस भी एन्टिसोरिक औषध है। शरीर में सोरा (Psora) वा खाज-खुजली के विष वर्त्तमान रहने से रोग शीघ्र आरोग्य नहीं होता है, रोग आरोग्य हो कर भी वारवार वापीस आता है। इस अवस्था में शरीर के सोरा-दोष को नष्ट कर सकने से रोगी सहज से ही आरोग्य लाभ करता है। सल्फर वो ग्रैफाइटिस के अलावे लाइकोपोडियम' कष्टिकम, सोरिनम वगैरह और वहुत ऐन्टिसोरिक औषध है। अतएव जिस रोगी के शरीर में सोरा-दोष वर्त्तमान रहे उसका विशेष स्वभाविक लक्षणों जिस एन्टिसोरिक औषध के विशेष प्राकृतिक लक्षणों के सदृश होगा वही औषध उस रोगी के लिये उपकारी होगा। वहुत लोग सोरा-दोष देखने से ही बिना कुछ सोंच समझ कर सल्फर व्यवहार करते हैं। इस प्रकार से चिकित्सा करना होमिओपैथिक मत के विरोध है।

डाक्टर नैश साहब ने लिखा है "एक वालक को एकजिमा हुआ था। एलोपैथिक चिकित्सा द्वारा वह गुम हो कर उसको दस्त होता था। उसके लिये ऐलोपैथिक मत से वहुत चिकित्सा की गई थी लेकिन कुछ भी फायदा नहीं मिला। तब होमियो पैथिक इलाज शुरू किया गया। बालक अत्यन्त शीर्ण हो गया था; भूख नहीं था; मल्ल

गेरू रंग का और अतिशय दुर्गन्धी वो अनपच चीज के साथ होता था। उस बालक के रोग का इतिहास लेने से मालुम हुआ, एकजिमा रोग दब जाने से उसको यह बिमारी हुई ; इस बार एक खुराक उच्चशक्ति के ग्रैफाइटिस देने से वह बालक सम्पूर्ण आरोग्य लाभ किया था"। सोरिनम नामक औषध में भी उस प्रकार का मल देखा जाता है लेकिन सोरिनम वो ग्रैफाइटिस के चर्म्मरोग स्वतन्त्र है। चायना में भी उक्त प्रकार के मल हैं किन्तु चर्म्म रोग का ऊपर इसका विशेष क्रिया नहीं है।

हरेक जख्म का ऐसा कि चमड़े में मामूली खसोट लगने ही से उसका पक जाना (हिपर) ; सुखा जखम का चिन्ह (Cicatrix) का फिर से पक कर जखम होना विशेषतः स्तन के सुखा जखम का पक जाना ; हाथ या पैर के नाखुन का सहज ही से टुट जाना , नाखुन मोटा वो बदशक्ल होना (ऐन्टिम क्रुड) ; नाखुन फटा २; अंगुली का दोनाय अंगुली का अग्र भाग, स्तन के घुन्डी (Nipple) ओष्ठ का मध्य भाग, मलद्वार व हाथ पैर के चमड़ा फटा २।

उदरामय Diarrhoea—मल पतला, दुर्गन्धी, भूरा रंग का वो उस के साथ अनपच खाद्य का निकलना। प्रायः किसी प्रकार के चर्म्मरोग के साथ उदरामय देखा जाता है।

कब्ज (Constipation), मल बड़े बड़े गुठली २ और वे गुठलियां बलगम से इकट्ठे लिप्टा रहता है। मल त्याग के बाद प्रायःम्युकस (आंव) निकलता है।

मलद्वार में एकजिमा; मलद्वार के फट जाना (Fissura ani); मलत्याग के बाद भयानक दर्द।

ऋतुस्राव अत्यन्त अल्प, प्रायः वर्णशून्य, भयानक दर्द के साथ व देर में होता है; अनियमित ऋतु, पानी में भींगने के हेतु देर में ऋतुस्राव (पल्स) कैलकेरिया वो ग्रैफाइटिस का स्वभाव में विशेष मिलान है, लेकिन कैलकेरिया के ऋतुस्राव अति शीघ्र २ वो बहुत परिमाण से होता है। लिउकोरिया (Leuchorrhoea) या प्रदरस्राव दाहक वो जखम पैदा करनेवाला होता है। रात में वो दिन में अचानक वेग के साथ प्रदरस्राव होता है। अतिरिक्त काम सेवा के हेतु संगम में अनिच्छा।

बधिरता, शोरगुल में कान में अच्छा सुनाई पड़ता है।

शिशु दुर्विनित, ब्यादब, दीक करनेवाला; तिरष्कार करने से हंसता है।

मालुम होता है कि चेहरे पर मकड़ा का जाल लिपटा हुआ है, बार बार उसको पोंछने के लिये चेष्टा करता है (बैराइटा, बोरैक्स, ब्रोमाइड)।

लाइकोपोडियम वो पल्सेटिला के बाद: चर्म्म-रोग में सलफर के बाद; ढिली, मोटी स्त्रियों में कैलकेरिया के बाद; वो लिउकोरिया में सिपिया के बाद यह विशेष उपकारी होता है।

शक्ति—३०—२०० ।

हैमामेलिस भर्जिनिका।

HAMMAMELIS VERGINICA.

भेइन (vein) वा शिरासमूह के ऊपर इसकी प्रधान क्रिया होती है।

आर्णिका की तरह हैमामेलिस में भी अघात लगने की तरह दर्द देखा जाता है। इस प्रकार का दर्द प्रायः बात रोग के साथ प्रकाश पाता है। इस प्रकार के दर्द में आर्णिका द्वारा फल न मिले तो हैमामेलिस के प्रयोग द्वारा फायदा होता है।

यह शौरिक वा भेनस VENOUS **रक्तस्राव** वा काला रक्तस्राव के लिए एक महौषध है। बहुत परिमाणसे वो ढेला २ रक्तस्राव होता है। शरीर का हरएक द्वार से रक्तस्राव; यथा—नाक, फेफड़ा, अंतरी, जरायु, मूत्र-थली इत्यादि से। मलद्वार से अथवा बवासिर से उक्त-प्रकार के रक्तस्राव होने से इस दवा से फल लाभ होता है।

यह अर्काइटिस (Orchitis) वा सांजर वो पोता का शिरायों के वरम में अति उत्तम फायदा करता है। रोगी का भेरिकोज भेइन (vericose veins) यानी भेइन वा शिरा में बहुत सा रक्त जमा हो कर वह फूल जावे तब हैमामेलिस बहुत फलप्रद होता है।

पतन, आघात अस्त्र से कटना इत्यादि के हेतु रक्तस्राव और दर्द के लिये हैमामेलिस प्रयोग होता है (आर्णिका)। आघातादि के हेतु या बहुत जोर खांसी के हेतु आंख में रक्तस्राव होने से भी हैमामेलिस उपकारी है। आर्णिका, कलेन्डुला, लिडम)।

इस का मदर टिंचर का २० या ३० बुन्द एक गिलास पानी में मिला कर उस में कपड़ा भींगा कर जहां से रक्त

स्राव होता है वहां पर टेपि दे देने से रक्त बन्द होता है।

शक्ति—१—३—६ ।

हेलेबोरस नाइजर ।

HELLEBORUS NIGER

मेनिन्जाइटिस (Meningitis) वा दिमाग की गिलाफ झिल्ली का प्रदाह की तरह कठिन मस्तिष्क की पीड़ा में मस्तिष्क में जल संचय होने का कराना वा जलसंचय होने से हेलेबोरस अति उत्तम औषध है । शिशुओं का ज्वर अथवा उदरामय की शेष अवस्था में क्रमशः मस्तिष्क का लक्षणसमूह प्रकट हो कर मस्तक में जलसंचय होता है; ऐसी अवस्था में निम्नलिखित लक्षणसमूह देख पाने से हेलेबोरस का प्रयोग होता है । शिशु अपना मस्तक को तकिया के ऊपर इधर उधर करता रहता है और गाड़ता रहता है और चितकार करता है । रोगी अज्ञानवस्था में या घोर निद्रावस्था में पड़ा रहता है, प्यास इतना अधिक होता है कि हमेशा पानी पीने से भी प्यास बुझता नहीं; ललाट में शीतल पसीना के साथ ललाट सिकुड़ा हुआ।

रागी मुंह का ऐसा भाव करता है कि मालुम होता है कोई चीज चूस रहा है। आंख की पुतली फैली हुई। रोगी कुछ भी देख या सुन नहीं सकता है। इस के अन्यान्य सर्व प्रकार बोध शक्ति की ही हीनता देखी जाती है। रोगी का एक हांथ और एक पांव हमेशा संचालित होता है, और दूसरे हांथ और पांव एकदम स्थिर भाव से पड़ा रहता है। मूत्र, अति अल्प परिमाण से होता है अथवा एकदम बन्द रहता है वो कभी २ मूत्र में कौफि का चूर्ण के सदृश गाद पड़ता है। यह अति खतरनाक अवस्था है; इस प्रकार की अवस्था के रोगी क्रमशः बेहोश होकर मूर्छित होता है या मर जाता है। हेलेबोरस का प्रयोग से इस प्रकार के बहुत रोगी आरोग्य लाभ किये हैं। यह औषध प्रयोग करने के बाद यदि पेशाब की बृद्धि हो तो सुलक्षण जानो। (इस प्रकार की अवस्था में एपिस भी उपकारी है लेकिन एपिस में प्यास नहीं रहता है)।

दांत निकलने के समय में दिमाग के लक्षण (बेल पोडो) : हाइड्रोकेफेलस वा दिमाग में जलसंचय : कन्भलशन के साथ सर्व्व शरीर ठंढा; सिर्फ सिर गरम रहता है (आर्णिका)। राक्षस की तरह पानी पीता है और

कभी २ अज्ञान अवस्था में चम्मच को दांत से पकड़ लेता है।

मुंह का कोणे में जखम या दरार ; नाक के छिद्र सूखा और मैला वो झोल (Soot) की तरह चीज से भरा हुआ। हमेशा ओष्ट को खोंटता है।

साम को चार से आठ बजे के अन्दर बिमारी का बढ़ना, इस दवा का एक विशेष लक्षण है।

शक्ति ३०—२००—वो उच्च शक्ति।

—:o:—

हेलोनियस डायोइका।

HELONIAS DIOICA

जरायु के ऊपर इस दवा की विशेष क्रिया होती है। जरायु की नाना प्रकार की पीड़ा के हेतु जो दुर्ब्बलता उपस्थित होती है उस में यह विशेष उपकारी औषध है। बहुत परिमाण से रक्तस्राव के हेतु रक्ताल्पता के कारण यह दुर्ब्बलता उतपन्न होती है। कभी २ गर्भवती स्त्री का मूत्र में ऐलबुमेन वा अन्डे की सफेदी की तरह वस्तु उत्पन्न होने से इस प्रकार की दुर्ब्बलता देखी जाती है रोगिणी नितान्त चिरचिराहा वो गमगीन ; सामान्य प्रतिवाद या किसी प्रकार का प्रस्ताव भी उसके निकट असहनीय

मालुम होता है। रोग के विषय में चिन्ता करने से तकलीफ अधिक मालुम पड़ती है, अन्य विषय में मनोनिवेश करने से आफियत मालुम होती है (कैलकेरिया-फस, अक्जेलिक-एसिड)।

डांड़ में नितान्त दुर्ब्बलता, जरायु को अपने स्थान से टल जाना, पीठ में दर्द के साथ कमर में सून्यता वो अकराव, कमर में गर्म्मी वो ज्वाला; ऐसी हालत साधारणतः यौवन-काल में, गर्भावस्था में वो प्रसव के बाद देखी जाती है वो इस में हेलोनियस अति फलप्रद होता है।

ऋतु (Menses) अति शीघ्र २ वो बहुत परिमाण से होता है। जरायु की शिथिलता ही इस के कारण है। स्तन फूला; स्तन के घुन्डी (Nipple) में दर्द व स्पर्श न सहना। ऋतु का रक्त काला, ढेला २ वो दुर्गन्धी; पेडु में दर्द वो भारीपन;

बहुमुत्र (Diabetes) रोग की प्रथम अवस्था में जब बहुत परिमाण से साफ व चिनी (Sugar) के साथ पेशाब होता है, ओष्ठ सूखा और सटा हुआ रहता है, अत्यन्त प्यास, अस्थिरता, शरीर की क्षीणता, चिरचिराहा वो गमगीन

स्वभाव देखा जाय तब हेलोनियस के प्रयोग से विशेष फायदा होता है।

शक्ति ३—६—३०।

—:※:—

हिपर सलफर।

HEPAR SULPHUR.

अत्यन्त स्पर्शासहिष्णुता वो शीतल हवा बरदास्त न कर सकना हिपर का अति प्रिय लक्षण है। किसी प्रकार का प्रदाह वा फूलन में यह लक्षण वर्त्तमान रहने से उच्चशक्ति के एक खुराक हिपर प्रयोग करके धैर्य्य के साथ इन्तजार करने से अति सन्तोषजनक फल मिलता है। अत्यन्त स्पर्शासहिष्णुता यानी प्रदाह, फूलन अथवा वात रोग इत्यादि में इतना दर्द होता है कि रोगी उस पर स्पर्श बिलकुल बरदास्त नहीं कर सकता है, स्पर्श करने से तकलीफ बहुत ज्यादा होने के हेतु रोगी अस्थिर हो जाता है; शीतल हवा एकदम सह नहीं सकता है। रोगी पीड़ित स्थान को कपड़ा से ढाक कर अथवा गृह का द्वार वो खिड़की बन्द कर रखता है। ज्वर इत्यादि कोई बिमारी हो अगर उस में रोगी

को शीतल हवा से अत्यन्त कष्ट मालूम हो तो हिपर का प्रयोग करना चाहिये ।

पीब के ऊपर हिपर की अति सुन्दर क्रिया होती है।

शरीर का किसी जगह में सामान्य आघात लगने से वा खसोट लगने ही से या प्रदाह होने ही से उसमें पीव उतपन्न होता है फोड़ा वा किसी प्रकार के प्रदाह में पीव पैदा होने की सम्भावना वा पीव पड़ जाना उभय अवस्था ही में हिपर उपकारी है। यदि देखो कि पीब पड़ने की सम्भावना हुई है लेकिन पीब नहीं पड़ा है तब उच्च शक्ति का हिपर एक खुराक प्रयोग करके धैर्य्य के साथ इन्तजार करने से देख पावोगे कि उस में पीव उत्पन्न न हो कर प्रदाह कम हो जायगा। खबरदार ! जल्दी फायदा उठाने के ख्याल से इसको बार बार प्रयोग करने से उल्टा ही फल मिलेगा। किन्तु यदि पीव उत्पन्न हो जाय तो हिपर के प्रयोग से पीव के परिमाण वृद्धि हो कर फोड़ादि फट जाता है वो जखम खुल जाकर आराम हो जाता है।

अनेक डाक्टरों का मत है कि फोड़ा इत्यादि को पका कर फटाने के लिये निम्न शक्ति के हिपर को पुनः २ प्रयोग

करना चाहिये। किन्तु इस अवस्था में भी उच्च शक्ति के हियर के व्यवहार ही से सन्तोष जनक फल लाभ होते देखा है।

श्वांसयन्त्र के ऊपर भी हिपर की अति उत्तम क्रिया है। पुराना सर्दी, विशेषतः ठण्ढी हवा लगने से सर्दी लगना इसका विशेष धर्म्म है (टिउवारकुलिन); गरम गृह में पीड़ा की कमी बोध होती है। क्रुप खांसी में भी हिपर विशेष उपकारी है। क्रुप के साथ तरल खांसी, गले में सांय सांय अथवा घड़घड़ाहट रहने से हिपर प्रधान औषध है। खांसी के साथ मालूम होता है कि बहुत स्रा बलगम निकलेगा लेकिन नहीं निकलता है। हिपर के खांसी शेष-रात में बढ़ता है। खुश्क ठंडी हवा लग कर पीड़ा होने से एकोनाइट फायदे मन्द होता है; सन्ध्या के समय सोने के बाद क्रुप की वृद्धि या आरम्भ होने से उस में एकोनाइट फायदा करता है। स्पंजिया का खांसी मध्य रात में बढ़ता है। हिपर के दम्मा (Asthma) खुश्क ठंढी हवा से वृद्धि होता है किन्तु ठंढी गिली हवा से कम होता है। इस में गले में सांय सांय आवाज होती है, रोगी बैठा रहता है वो सिर को पीछे के तरफ झुका कर रखता है।

पसीना SWEAT—मार्कँउरिअस की तरह हिपर में भी बहुत पसीना होता है लेकिन उससे रोगी को कुछ भी आराम मालूम नहीं होता है। हिपर का पसीना चटचटा, खट्टा या दुर्गन्धी होता है।

हिपर भी एक उत्कृष्ट ऐन्टिसोरिक औषध है। किसी चर्मरोग लुप्त (Suppressed) हो जाने से यदि कोई पीड़ा हो वो उसका लक्षण समूह हिपर के सदृश हो तो यह फल देता है। गला के भीतर कांटा गड़ने के ऐसा मालूम होता है। (आर्जेन्टम–नाइट, नाइट्रिक-एसिड, डलिकस) टॉन्सिल का प्रदाह होकर उसका पक जाने का सम्भावना। टॉन्सिल का प्राचिन प्रदाह वो वृद्धि के हेतु कान में कम सुनाई पड़ना (बेराइटा, लाइको प्लम्बम, सोरिनम)। पारा के अपव्यवहार जनित कुफल के लिये हिपर महौषध है।

मूत्रयन्त्र के ऊपर भी हिपर की विशेष क्रिया होती है। मूत्रस्थली की दुर्ब्बलता: पेशाब करने के लिये देर तक बैठे रहने से तब बुन्द २ पेशाब होता है। पेशाब करने के बाद भी ख्याल होता है कि सब पेशाब नहीं निकला।

उदरामय वो डिसपेपसिया वा बदहजमी (Dys-

PUBLISHING CO PRIVATE CALCUTTA-12 MANN

pepsia) में हिपर फलप्रद है। खट्टा खाने की बहुत इच्छा; खट्टा बूदार दस्त (मैगनेसिया-कार्ब, कैल्केरिया-कार्ब रिडम); ऐसा कि शिशु का समस्त शरीर धो देने से भी खट्टा बू दूर नहीं होती है (रिउम)। कादो की तरह रंग के मल। नरम मल भी जोड़ दे कर निकालना पड़ता है।

शक्ति ६—३०—२००।

—o—

हाइड्रास्टि कैनडेन्सिस।

HYDRASTIS CANDENSIS.

शरीर का किसी स्थान वा जख्म, दम्मा कैन्सर सेहि, उपदंश का जख्म, गनोरिया पीड़ा कान की पीड़ा सैन (sinus), पेचिस, श्वेत प्रदर, गला के जखम इत्यादि जो कुछ ही हो अगर उस में पीला वा मोटा, रस्सी की तरह लस्सादार म्युक्स (श्लेष्मा) निकले तो इस दवा का प्रयोग से अवश्य फायदा होगा।

लिउकोरिया (Leuchorrhoea) वा श्वेत प्रदर रस्सी की तरह (Ropy), मोटा (Thick), लस्सादार वा

पीला होता है । जरायु का मुह से उस का कुछ हिस्सा निकल कर रस्सी की तरह लटकता रहता है (कैलि-बाइ)। प्रुराइटिस भल्वा (Pruritis vulva) वा जननेन्द्रीय के बाहरी भाग में खुजली ।

नाक से मोटा रस्सी की तरह पीलापन नेटा निकलता है। नाक के पीछला द्वार (Posterior Nairs) से खखारने के समय चटचटा पोलापन बलगम निकलता है। पारा के अपव्यवहार-जनित गला के जखम में यह उत्कृष्ट औषध है। वृद्ध व्यक्ति का खांसी में इससे सुन्दर फल लाभ होता है।

कैन्सर (Cancer) घोरा: जखम के चारो तरफ का स्थान समूह सुसंयुक्त: चर्म्म लकीरदार । पीब अत्यन्त बदबूदार ।

पाकस्थली में धीमा २ दर्द के साथ सून्यता बोध होना और इसके साथ दिल धड़कना भी इस का एक प्रिय लक्षण है । पाकस्थली वा अंतरी के शिथिलता जनित वो अम्ल पीड़ा के साथ (with Acidity) अजीर्ण रोग (Dyspepsia) विशेषतः बुढ़ा आदमी में। पेट के प्राचीन सर्दि; जखम ।

यह यकृत के प्राचीन इन्फ्लामेशन (Inflammation) या प्रदाह में अकसर व्यवहार होता है। इस में चर्म्म पीला, यकृत में जख्म सा दर्द; कब्ज वो सफेदपन पैखाना होता है। पान्डुरोग: पित्तपत्थरी के शूलदर्द के साथ पान्डु-रोग में भी यह विशेष फलदायक होता है।

अर्श रोग (बवासिर) के साथ कब्ज: मलद्वार का फट जाना: कांच निकलना।

डिफ्थिरिया, लिउकोरिया, गनोरिया: कैन्सर, गले के जखम इत्यादि सर्व्वप्रकार के जखम में ही इस दवा का स्थानीय (Local) वा बाहरी प्रयोग से विशेष उपकार होता है। इस दवा का मदर टिंचर आधा ड्राम एक ग्लास पानी में मिला कर प्रयोग किया जाता है। इस के प्रयोग से चेचक का दाग मिट जाता है।

शक्ति १—३—३०—२००

हाइओसायमस नाइजर।

HYOSCIAMUS NIGER.

यह दिमाग के हलचल (Irritation) के कारण रक्त-

धिक्य के कारण नहीं) **डिलिरियम वा विकार** में अति उत्कृष्ट औषध है। हाइओसायेमस का रोगी स्थिर होकर पड़ा रहता है और वरवराता रहता है। किन्तु कभी २ रोगी भयानक उग्रमूर्त्ति भी धारण करता है अथवा डिलिरियम पहले उग्रभाव से ही आरम्भ होता है, उसके बाद रोगी क्रमशः दुर्बल वो निस्तेज होने के कारण वह उग्रभाव नहीं रहता है। हाइयोसायेमस के रोगी का चेहरा मलिन वो धसा हुआ होता है। बेलेडोना के डिलिरिअम, दिमाग में रक्ताधिक्य-हेतु होता है, चेहरा रक्त वर्ण व फूला २ होता है और डिलिरिअम अत्यन्त उग्रभाव से होता है।

हाइओसायमस के रोगी क्रमशः निस्तेज हो कर अति शीघ्र ही टाइफायेड अवस्था प्राप्त होता है। जीभ सूखा वो भारी होता है; अति कष्ट से उस को बाहर निकाल सकता है; रोगी इतना बेहोश होता है कि बहुत कष्ट से उसको जगाया जाता है किन्तु जागते २ ही फिर अज्ञान हो जाता है (ओपियम के रोगी को किसी तरह से भी जगाया नहीं जा सकता है।) अचेतन अवस्था में रोगी की आंख खुली रहती है, आंख फाड़ कर चारो तरफ ताकता रहता है किन्तु उसको कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता है। रोगी शून्य में हाथ को इस तरह से संचालन करता रहता है कि मालुम

पड़ता है वह किसी चिज को पकड़ रहा है। बिछावन को खोंटता रहता है, बरबराता है अथवा कभी २ एक दम चुपचाप पड़ा रहता हैं, दांत में सर्डिस (Sordes) या खल्ली को तरह मैल पड़ता है; नोचला चहु लटक जाता है, मलमूत्र बेखबरी से निकलता है। टाइफोनिउमोनिया, टाइफायेड ज्वर, सकारलेटिना वा लाल ज्वर इत्यादि रोग की शेष अवस्था मे उक्तप्रकार के लक्षण प्रायः देखा जाता है। ऐसी हालत में हाइओसायेमस के प्रयोग से आश्चर्यजनीय फल मिलता है।

नया विकार क्रमशः पुराना भाव के होकर पागलपन की तरह होने से भी हाइओसायेमस अति उपकारी होता है। रोगी का सन्देह बहुत वृद्धि पाता है; किसी को, ऐसा कि अपने स्त्री-पुत्र पर भी बिश्वास नहीं करता है। रोगी सर्व्वदा ख्याल करता है कि कोइ उसको विष खिला कर मार देगा। किसी के हाथ से दवा तक नहीं पीता है। रोगी के बात चीत से मालुम पड़ता है कि उस के दिल में सर्व्वदा ख्याल होता है कि उसके विरुद्ध में षड़यन्त्र चल रहा है। इस प्रकार की मानसिक गड़बड़ी यदि किसी के प्रति सर्व्वदा हिंसा के कारण हो तो हाइयोसायेमस उत्तम है। हाइओसायमस में और एक प्रकार का मानसिक

लक्षण देखा जाता है। रोगी कामोन्मत्त; सर्व्वदा जननेन्द्रा में हांथ देता है, अश्लील भाव से अंगभंगी करता है, अश्लील बात करता है और बार २ नंगा होता है। इस प्रकार की उन्माद अवस्था में रोगी कभी २ भयानक उग्रभाव धारण करता है, निकट में जो कोई रहता है उसी को मारता है, काटता है, खसोटता है; झगड़ा करता है; उसके बाद ही सिर विपरीत अवस्था प्राप्त होता है यानी नम्र वो धीर भाव धारन करता है; चुपचाप पड़ा रहता है और कभी बरबराता है। और ये दोनों अवस्था प्रायः पर्य्यायक्रम से देखा जाता है। दुर्ब्बल वृद्ध व्यक्ति के उन्माद रोग में हाइओसायमस विशेष उपकारी है।

हाइओसायेमस के पैर की अंगुली से सिर तक सर्व्वस्थान के मांसपेशी में ऐंठन देखा जाता है। यह लक्षण प्रायः मृगीरोग अथवा और किसी प्रकार के आक्षेप वाला रोग में देखा जाता है।

सुखा आक्षेपयुक्त खांसी में हाइओसायेमस एक महौषध है। लेटने से ही खांसी शुरू अथवा वृद्धि होता है, बैठने से कम होता है। वृद्ध व्यक्ति के सूखा खांसी में

ऊपरोक्त लक्षण देख पाने से अवश्य हाइओसायेमस से उपकार होगा ।

कन्भलशन (Convulsion) : भय अथवा कृमी के हेतु शिशुओं के कन्भलशन या आक्षेप में यह दवा विशेष उपकारी है। प्रसव के समय वा प्रसव के बाद कन्भलशन ।

उदरामय (Diarrhoea)—मल हल्दी रंग के पानी की तरह पतला, रोगी बेखबरी में मलत्याग करता है ।

पेशाव (Urine) बेखबरी में निकलता है; पेशाव सूख जाने से बिछावन पर लाल रेत की तरह पदार्थ देखा जाता है। प्रसव के बाद पेशाव बन्द रहना अथवा पेशाव के वेग को रोक न सकना। प्रसूति का मूत्र वेग एकदम न होने से हाइओसायेमस द्वारा बहुत उपकार होता है (आर्णिका, ओपियम) ।

शक्ति ३०—२०० —वा उच्च शक्ति ।

———:o:———

हाइपेरिकम परफोरेटम ।

HYPERICUM PERFORATUM.

शरीर के किसी स्थान में आघात लगने के हेतु स्नायु-

मंडली में चमक पहुंचने से यह दवा व्यवहार होती है। मेरुदन्ड में आघात लगने के हेतु कष्ट वो पीड़ा समूह। मेरुदन्ड में स्पर्शासहिष्णुता वा छुना बर्दास्त न होना; रीढ़ वो दिमाग में आघात लगने से चमक लगना Concussion of the Brain & Spinal cord.

सुई, छुरी, कांटि इत्यादि तेज चीज चुभ जाने से, चुहा काटने से, कुत्ता काटने से हाइपेरिकम अति उत्तम है। प्रकाउ कर के जखम से धनुष्टंकार हो सकता है; उस में भी यह अति उपकारी होता है (फाइसोष्टिगमा)। किसी अंग के प्रायः सर्ब्बांश कट जाय और थोड़ा सा वाकी रहे तो हाइपेरिकम के प्रयोग से वह अंग बच जा सकता है।

आघात अथवा सर्जिकल अपौरेशन के हेतु कोलैप्स अवस्था में व डर या चमक लगने का कुफल में यह दवा बहुत उपकारी है। इस दवे का मदर टिंचर २० बुन्द एक औन्स सैलाड औयेल में मिला कर क्षत स्थान में प्रयोग वा मालीश करने से विशेष उपकार होता है।

शक्ति ६—३०—२००।

——:०:——

इग्नेशिया ऐमेरा ।

IGNATIA AMARA.

स्नायुमण्डल के ऊपर ही इग्नेशिया की मुख्य क्रिया होती है। सर्व्वदा मानसिक लक्षण का परिवर्तन होना इसका सर्व्व प्रधान लक्षण है। रोगी अब ही अत्यन्त आनन्दित है, फिर थोड़ी ही देर में बहुत ही गमगीन हो जाता है। आनन्द से हंसते २ ही रो पड़ता है या इतना गमगीन हो जाता है कि चुपचाप बैठा रहता है और दीर्घ स्वांस लेता रहता है। इस प्रकार से अति शीघ्र २ स्वांस लेता रहता है। किसी प्रकार के गम्भीर दुःख अथवा शोक-सन्ताप प्रकाश न कर के दिल का दुःख दिल ही में दबा रखना यानी शोक वा दुःख से एक दम मूक होकर रहने से किसी मानसिक पीड़ा हो तो उसमें इग्नेशिया अति सुन्दर क्रिया करता है। रोगी सर्व्वदा अकेले, निर्ज्जन स्थान में रह कर दुःख भोग करने की इच्छा करता है। अपने दिल का दुःख किसी के पास प्रकाश नहीं करता है। मानसिक अवस्था का बदल जाना प्रायः **हिष्टिरीया रोग** वालों में वा उन्माद रोग में

देखा जाता है। किसी प्रकार का डर लग कर पीड़ा होने से भी इग्नेशिया उपकारी है।

पाकस्थली में दुर्ब्बलता मालुम होना इग्नेशिया का और एक विशेष लक्षण है। पाकस्थली में ऐसी दुर्ब्बलता मालूम होता है कि वह बिलकुल खाली हो गयी है, आहार करने से भी इस किसीम का खाली भाव दूर नहीं होता है (हाइड्रोस्टिस, सिपिया)।

भय, तिरस्कार, शासन वा और किसी कारण से शिशु के दिल में अत्यन्त दुःख होने के कारण आक्षेप वा कनभलशान (मूर्च्छा) होने से इग्नेशिया अति उपकारी है।

शोक, दुःख, भय, दांतनिकलना वा क्रमि के हेतु कोरिया वा ताण्डव रोग में इग्नेशिया विशेष उपयोगी औषध है। इग्नेशिया पैरालेसिस (लकवा) रोग में भी उपकारी है। हिष्टिरिआ के मिजाज वाले मनुष्य में यह विशेष फलदायक होता है।

स्नायवीय शिरपीड़ा—रोगी को मालूम होता

है कि उसका सिरका एक बगल में सलाई चुभ गया है; उस पार्श्व को दबा कर लेटने से दर्द कम होता है। यह हिष्ट्रिआ-जनित स्नायवीय व आधा सिर दर्द में विशेष उपकारी है, विशेषतः शोकादि मानसिक उद्वेग जनित सिर दर्द होने से। इग्नेशिया का सिर दर्द का और एक विशेष लक्षण यह है कि दर्द स्थान बदलता है, दर्द का स्थान बदलने के साथ साथ कभी २ दर्द की प्रकृति भी बदल जाती है। दर्द धीरे २ आराम होकर अचानक कम हो जाता है। (सलफिउरिक-एसिड) अथवा दर्द अचानक उपस्थित होकर अचानक ही छूट जाता है (बेलेडोना) ऐकोनाइट, जेलसिमियम, साइलिशिया वा भेरेट्रम-ऐलबम की तरह बहुत परिमान से पेशाब होकर सिर दर्द आराम हो जाता है।

कौफि पीना, तमाकु पीना, अत्यन्त नाश लेना, शराब पीना, अति मनोयोग के साथ मानसिक परिश्रम करना, मल त्याग के समय कुंथना, ठंढी हवा, अचानक सिर को हिलाना, सिर को झुकाना, करवट बदलना, दौड़ना, ऊपर के तरफ देर तक ताकना इत्यादि कारणों से सिरपीड़ा की वृद्धि होती है। इग्नेशिया में सोरीनम की तरह भूख के साथ सिरपीड़ा आराम होता है।

बहुत परिमाण से पेशाव होना, उत्ताप प्रयोग, दर्दवाला पार्श्व को दवा कर लेटना इत्यादि से सिर पीड़ा की कमी होती है।

गले में इग्नेशिया का चन्द लक्षण देखा जाता है। रोगिणी को ख्याल होता है कि उसकी पाकस्थली से गोली की तरह कोई वस्तु गले में चढ़ रहा है, रोगिणी बार बार उसको गले से उतारने की चेष्ट करती है किन्तु वह बार बार ऊपर के तरफ चढ़ कर बड़ा कष्ट देता है। यह लक्षण "ग्लोबस हिष्टिरिकस" (Globus Hystericus) का है। मानसिक कष्ट से वो रोने की चेष्टा करने से इस अवस्था की वृद्धि होती है। टौन्सिल का प्रदाह वो डिफथिरिआ रोग में भी इग्नेशिया का व्यवहार होता है। इस प्रकार के रोगों में यदि निगलने से तकलीफ की कमी हो अथवा दो बार निगलने का मध्यवर्ती समय में तकलीफ की वृद्धि हो तो इग्नेशिया अति फल दायक होता है। रोगी तरल पदार्थ निगलने से कष्ट वो कठिन वस्तु निगलने में आराम बोध करता है (लैकेसिस)। (वैपटिशिया का रोगी सिर्फ तरल पदार्थ निगल सकता है कठिन वस्तु गले में अटक जाता है।)

इग्नेशिया के और चन्द विशेष लक्षण नीचे लिखा जाता है—धूम पान से या तमाकु की बू से सब प्रकार के कष्ट अधिक होता है। पाकस्थली में सून्यता मालुम होना भोजन से भी आराम नहीं होता है। कान में भन २ शब्द होता है और गाना बजाना से उसकी कमी होती है। किसी चिज को निगलने से गले का दर्द कम होता है। रोगी जितना अधिक खांसता है उतनाही खांसी की वृद्धि होती है। खड़ा होने से या चक्क फिर करने से भी खांसी होती है। एकदम ध्वजभंग किन्तु संगम की ज्यादा इच्छा। विश्राम-वस्था में चेहरे का रंग बदल जाना। पीड़ा हमेशा ठीक एकही समय में उपस्थित होता है।

मलद्वार में इग्नेशिया की विशेष क्रिया देखि जाती है। कांच निकलना इग्नेशिया के एक अति प्रिय लक्षण है। नक्स—भोमिका के सदृश बार बार मलत्याग की चेष्टा होता है किन्तु मल के बदले में मलद्वार का निकलने का डर से कुंथ नहीं सकता है। मलत्याग के बाद मलद्वार में जखम सा दर्द होता है और दर्द बहुत देर तक रहता है (नाइट्रिक एसिड)।

बवासीर में भी इग्नेशिया अति फलप्रद है। प्रत्येक बार मलत्यागके साथ बवासिर का मस्से निकल पड़ता है और बहुत देर तक वह बाहर रहता है। (रैटानिया)।

इग्नेशिया **सविराम ज्वर** में अति उत्तम औषध है। निम्न लिखित च्यार इसका सिद्धिदायक लक्षण है—सिर्फ शीत अवस्था में प्यास होता है। शरीर में गर्मी लगनेसे आफियत होता है: बदन को ढाकनेसे गर्मी की वृद्धि: शीत के समय चेहरा रक्तवर्ण होना। बहुत दिन तक कुइनाइन सेवन करने के कारण ज्वर के प्राचीन होने से भी इग्नेशिया द्वारा फल मिलता है।

शक्ति ६-३०—२०० ।

—:o:—

आइयोडियम ।

IODIUM.

राक्षस कि तरह भुख (Ravenous Hunger) रोगी सर्व्वदा खांय २ करता है, खाना मिलने से वह और

कुछ भी नहीं चाहता है कारण भोजन काल में रोगी को बहुत आराम मालुम होता है,—यह आइयोडियम का सर्व्व प्रधान लक्षण है । इस लक्षण की और विशेषता यह है कि बहुत परिमाण से भोजन करने पर भी रोगी अति दुर्ब्बल वो शीर्ण होता जाता है। अगर किसी रोगी में आइयोडियम को प्रयोग करना चाहे तो अवश्य इस लक्षण के ऊपर दृष्टि रखें, कारण यह आइयोडियम का सिद्धि प्रद लक्षण है।

रोगी अत्यन्त दुर्ब्बलता अनुभव करता है और सिढ़ी से ऊपर चढ़ने के समय उसको दम बन्द होने के ऐसा मालुम पड़ता है; भोजन के बाद अथवा भोजनकाल में विशेष आराम मालुम होता है।

स्क्रफ़ुला वा कण्ठ माला धातुयुक्त लोगों के नाना प्रकार बिमारियों में यह अति उपकारी औषध है; रोगी खूब खाते पीते रहने पर भी उसका शरीर सूखता जाता है लेकिन शरीर के नाना स्थान के विशेषतः गला व गर्दन के निकट की ग्लैंडस (Glands) वा गिल्टियां बढ़ जाती है। लेकिन स्तन सूखता जाता है।

स्त्रियों के स्तन उपयुक्त भाव से वृद्धि नहीं पाता है वो

उसमें जखम की तरह दर्द होता है। ऋतुस्राव के समय अत्यन्त दुर्ब्बलता होती है। यद्यपि रोगिणी दिनरात भोजन करती रहती है तथापि शरीर सूखता जाता है। जरायु का कैन्सर रोग में जरायु से ज्यादा रक्तस्राव होता है। प्राचीन श्वेतप्रदर रोग में बहुत परिमाण से प्रदरस्राव होता है और वह स्राव इतना तेज होता है कि उस से रोगिणी के कपड़ा में छेद हो जाता है।

शिशुओं के क्रुप-खांसी में भी यह व्यवहार होता है। सूखी खांसी के साथ गले में सांय २ आवाज; खांसी की आवाज कुत्ते की आवाज की तरह; खांसने के समय शिशु गला को पकड़ कर दबा रखता है।

आइयोडियम की पीड़ा गर्म गृह में बृद्धि पाता है।

सर्ब्बदा खाली ढेकार आता है, मालुम होता है कि खाये हुये वस्तु का प्रत्येक कण ही गैस बन जाता है।

कब्ज, मलत्याग की निष्फल चेष्टा, ठंढा दूध पीने से पैखाना साफ होता है।

शक्ति३०—२०० ।

इपिकाकुआना।

IPECACUANHA.

लगातार मतली होना, कै हो जाने पर भी मतली का कुछ भी आराम न होना—यह इपिकाक का सिद्धिप्रद लक्षण है। किसी किस्मकी बिमारी हो अगर उस में यह लक्षण वर्तमान रहे तो अवश्य इपिकाक से, आरोग्य होगा। अनियमित भोजन के हेतु खाना अच्छी तरह से न पचने से प्रायः ऐसा होता है। यहां इपिकाक को पलसेटिला के साथ तुलना करके देखना चाहिये। कारण चर्ब्बीयुक्त वस्तु भोजन करने से अनपच होने पर दोनों का व्यवहार होता है। इपिकाक में लगातार मतली होती है, किन्तु पलसेटिला में मतली इतनी अधिक नहीं है। जबतक खाये हुये वस्तु पाकस्थली में रहता है पलसेटिला में सिर्फ तबतक ही मतली होती है किन्तु इपिकाक में खाये हुये वस्तु पेट से निकल जाने पर भी मतली होती है। एन्टिम क्रुड की तरह पलसेटिला की जीभ पर गाढ़ा सफेद मैल पड़ता है किन्तु इपिकाक का जीभ प्रायः साफ रहता है। बमन के साथ जीभ साफ और कृमि का लक्षण वर्तमान रहने से सिना उपकारी है। उक्त

प्रकार की अवस्था के साथ दिल की पीड़ा में डिजिटैलिस विशेष उपकारी होता है। पेट में इपिकाक के और एक विशेष लक्षण यह होता है कि रोगी को मालुम पड़ता है कि उसके पाकस्थली वो अंतरियां ढिली हो कर लटक गई है।

लगातार मतली के साथ जी पचपचाना; खाली ढेकार आना; मुंह से बहुत परिमाण से लार निकलना, वमन से मतली का कुछ भी कमी न होना इत्यादि में इपिकाक उत्तम है। वमन के बाद सो जाना, सामने झुकने से मतली होना तमाकु सेवन से वो गर्भावस्था में मतली। मतली के समय चेहरा का फीका हो जाना। आंख धस जाना वो आंख के चारो ओर नीलापन होना इत्यादि लक्षण भी इपिकाक में देखा जाता है (एन्ट्रिम-टार्ट)।

कौलिक (Colic) वा शूलदर्द में भी इपिकाक व्यवहार होता है। पेट फूलने के साथ नाभी-स्थान में कतरने की तरह शूलदर्द। अंतरी में ऐसा दर्द होता है कि मालुम होता है हाथ के अंगुलियों से अंतरी को कुचल रहा हैं।

दस्तः—फेनदार हरा मल, घास की तरह हरा आंवदार

अथवा पानी की तरह मल, खुन मिला हुआ सब्ज आंवदार मल, ये तीन प्रकार के मल इपिकाक के स्वाभाविक लक्षण है। हैजा में मतली वो कै की प्रधानता रहने से इपिकाक द्वारा उपकार होता है। शरत काल के अमाशय वा पेचीश में यह महौषध है।

सिर-पीड़ा के साथ लगातार मतली होना, पहले मतली होकर सिर-पीड़ा शुरू होता है, सिर में ऐसा दर्द होता है कि मालूम होता है सिर की हड्डियां चूर्ण हो जा रही है। इस प्रकार के दर्द जीभ का मूलदेश तक फैल जाता है, और यह प्रायः वात रोग के साथ देखा जाता है। पाकस्थली की गड़बड़ी के साथ सिर-पीड़ा। दिमाग में जल संचय वा **हाइड्रोकेफेलस** रोग में लगातार मतली रहने से इपिकाक द्वारा विशेष उपकार होता है।

स्वांसप्रस्वांस-यन्त्र (Respiratory organs) के ऊपर इपिकाक की विशेष क्रिया होती है। फेफड़े में बहुत परिमाण से बलगम जमा होने के कारण रोगी के दम बन्द होने के ऐसा होता है; छाती में बोझ सा मालुम पड़ता है, गले में सांय सांय आवाज़; रोगी अत्यन्त व्याकुल होता है। छाती में बलगम जमा होने के कारण दमा

वा आक्षेपयुक्त (ऐठन के साथ) खाँसी होता है। दम्मा वो हूपींग कफ की प्रथम अवस्था में यह विशेष उपकारी है खांसते २ हूल आना (Retening) वो कै करना।

शिशु को खांसते २ दम बन्द होने की तरह हो जाता है और शिशु लकड़ी की तरह कठिन हो जाता है, चेहरा नीला-पन हो जाता है। खाँसते २ नाक वो मुख से रक्तस्राव होता है। स्वांस लेने के समय गले में घड़घड़ाहट आवाज़ से मालूम होता है कि बहुत सा बलगम निकलेगा लेकिन उतना नहीं निकलता है। **एन्टिम-टाट** भी इस लक्षण पर दिया जाता है लेकिन एन्टिम—टार्ट के रोगी में कै होने पर मतली के आराम होता है और इपिकाक के रोगी के मतली किसी तरह से आराम नहीं होता है।

शिशुओं के **निउमोनिया** रोग में छाती बलगम से भरा हुआ रहना; जल्द व सांय २ आवाज के साथ स्वांस प्रस्वांस, चेहरा फीका व शरीर नीला होने से इपिकाक द्वारा विशेष फल मिलता है वृद्धों का दम्मा में इपिकाक के प्रयोग से विशेष उपकार होता है।

रक्तस्राव (Haemorrhages) में इपिकाक एक महौ

षध है। शरीर का किसी छिद्र, यथा—नाक, मुख, मलद्वार, जरायु, फेफड़ा इत्यादि किसी स्थान से बहुत परिमाण से गाढ़ा लाल (Bright Red) रक्त स्राव होने से इपिकाक व्यवहार होता है। अवश्य इस के साथ इपिकाक का

मतली भी रहता है।

रक्त स्राव के लिये कइ एक अति उत्तम औषधियों का लक्षण नीचे लिखा जाता है :—

इपिकाक :—बहुत परिमाण से गाढ़ा लाल रक्तस्राव के साथ स्वांस कष्ट वो लगातार मतली।

एकोनाइट :—गाढ़ा लाल रक्तस्राव के साथ अत्यन्त भय वो घबराहट।

आर्निका :—शरीर के थकावट वो आघातादि जनित रक्तस्राव।

बेलाडोना :—दिमाग में रक्ताधिक्य वो पुरपुरी के रग (Carotid artery) के धकधकाना के साथ गर्म रक्तस्राव।

कार्बो-भेज :——समस्त शरीर बर्फ की तरह ठंढा वो

निहायत कमजोरी: रोगी हमेशा पंखा चाहता है; चेहरा फीका, मूर्दे की तरह; रक्तस्राव।

चायना:—अत्यन्त रक्तस्राव, दुर्ब्बलता; मूर्च्छा; कान में भन भन आवाज।

क्रोकस:—काला काला सूत की तरह जमा हुआ रक्तस्राव

फ़ेरम:—स्रावित रक्त का कुछ अंश पतला वो कुछ अंश जमा हुआ, ढेला ढेला।

लैकेसिस:—सड़ा हुआ रक्तस्राव और उसके नीचे जला हुआ पोआल (Charred Straw) के कोयला की तरह गाद पड़ना।

क्रोटेलस:—रक्त तरल वो काला (इलैप्स, सलफि‌उरिक-एसिड)

नाइट्रिक-एसिड:—गाढ़ा लाला (Bright red) रक्तस्राव।

फसफोरस:—ऐसा कि सामान्य जखम वा टिउमर से बहुत परिमाण से रक्तस्राव का आदत होना।

प्लैटिना:—स्रावित रक्त का कुछ अंश तरल और कुछ अंश काला, सख्त वो जमा हुआ।

पलसेटिला:—ठहर २ कर रक्तस्राव होना।

सिकेली—कम खुन वाला (Anaemic) पतला दुबला रोगी को काला रक्तस्राव।

सलफर:—अन्य २ औषध के प्रयोग से फायदा न होना वो शरीर में सोरा वा खाज खुजली के विष की वर्त्तमानता।

ज्वर रोग में भी इपीकाक महा उपकारी औषध है। ज्वर की सब अवस्था में ही लगातार मतली होना ही इसका विशेष लक्षण है। प्यास अधिक नहीं होता है।

कुनाइन के अपव्यवहार के हेतु अटका हुआ ज्वर में इपिकाक अति उपकारी है। भोजन के अत्याचार के हेतु बार बार ज्वर होने से इपिकाक के प्रयोग से फायदा मिलेगा।

इपिकाक के प्रायः सर्व्व प्रकार पीड़ा ही में लगातार मतली वर्त्तमान रहता है। अतएव मतली के ऊपर हमेशा ध्यान रख कर इपिकाक को व्यवहार करना चाहिये।

शक्ति ६—३०—२०० ।

आइरिस वर्सिकोलर।

IRIS VERSICOLER.

मुंह से मलद्वार तक समस्त अन्ननली में इसका सुन्दर क्रिया देखी जाती है। दस्त, कौलरा, मेदे की गड़बड़ी इत्यादि रोग में मुंह से मलद्वार तक समस्त नली में भयानक ज्वाला होती है। पेट, सीना, गला, मलद्वार इत्यादि में इस प्रकार के ज्वाला उदरामय वा कौलरा रोग के साथ देख पाने से अवश्य आइरिस के प्रयोग करना चाहिये।

खट्टा स्वाद के बमन आइरिस का द्वितीय प्रधान लक्षण है। वमन इतना खट्टा होता है कि उससे गले के भीतरीभाग में जखम पैदा हो जाता है, अनेक समय आइरिस का वमन में मिठा या कड़ुआ स्वाद भी रहता है। वहुत परिमान से लार निकलता है।

सिरपीड़ाः—अजीर्णदोष वा यकृत का दोष के हेतु सिरपीड़ा में आइरिस उत्तम है। सिरपीड़ा के पहले रोगी उसका आंख के सामने सफेद व काला बिन्द २ चीज देखता है।

शक्ति ३—६—३०—२००।

जैलापा।

JALAPA.

उदरामय (Diarrhoea) वा दस्त वो उदारमयिक कौलरा (Diarrhoeaic Cholera) में यह एक उत्कृष्ट औषध है पानी की तरह, खट्टा बू दार दस्त के साथ अस्थिरता वो रोना, विशेषतः शिशुओं में। मतली, कै, पेट में दर्द वो पानी सा दस्त होना इसका विशेष लक्षण है।

शिशुओं का पेट में दर्द, अस्थिरता वो रोना के साथ उदरामय। शिशु सारी रात अस्थिर रहता है वो चित्कार करता है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

जैट्रोफा।

JATROPHA.

उदरामय वो कौलरा में यह भी अति उत्तम औषध है

पानी की तरह अथवा भात के फेन की तरह, बहुत परिमाण, मल अति वेग के साथ निकल पड़ता है। भयानक प्यास। कै भी भात का फेना या अन्डे के सफेदी की तरह वो बहुत परिमाण से होता है; पेट का भयानक बोलना। पैर में ऐंठन। शरीर शीतल; बदन में चटचटाहा पसीना; दस्त के साथ दर्द न होना इत्यादि इस का खास लक्षण है।

पानी की तरह मल के ऊपर भात का फेन अथवा साबुदाने वा ख़ूबी के लाई की तरह वस्तु देख पाने से जेट्रोफा के प्रयोग से अवश्य उपकार मिलेगा।

शक्ति २–६—३०।

केलि बाइक्रमिकम।

KALI-BICHROMICUM.

मिउकस बा लस्सादार झिल्ली से रस्सी की तरह (Ropy); मोटा (Thick), सख्त, लस्सादार श्लेष्मा निकलना इसका सर्व्व प्रधान लक्षण है। नाक, मुख, आंख, कान, मलद्वार, योनि, फेफड़ा इत्यादि किसी जगह के

म्युकस झिल्ली से इस प्रकार के श्लेष्मा निकले तो अवश्य केलि-बाई द्वारा फायदा मिलेगा। वह श्लेष्मा ऐसा होता है कि उसको खिंचने से रस्सी की तरह लम्बा होता जाता है लेकिन टुटता नहीं। खांसते २ बलगम निकल कर मुख के साथ लटकता रहता है, हाथ से खेंच कर उसको फेंकना पड़ता है।

म्युकस झिल्ली के जखम में यह अति उतम औषध है। क्षतस्थान गहरा और उसके किनारा बिलकुल गोलाकार वा साफ होता है। मालुम पड़ता है कि उसको "पञ्च" से काटा गया है। (रेल का टिकट काटने का एक प्रकार यन्त्र को पञ्च (Punch) कहते हैं।

नाक के जखम वा प्राचीन सर्दी में केलि-बाइक्रम विशेष उपकारी है। पारा अथवा गर्मी रोग के दोष में अथवा शरीर के किसी प्रकार के स्वाभाविक स्राव बन्द हो कर नाक में पिड़ा होने से केलि-बाइक्रम विशेष उपकारी होता है। इस प्रकार के क्षत से यदि रस्सी की तरह (Ropy) बलगम निकले तो सर्व्वप्रथम केलि-बाइक्रम को प्रयोग करना चाहिये। नाक के मूल में दर्द, अंगुली द्वारा दबाने से दर्द मालूम पड़ता है। नाक में नकटी जमता है।

उस को साफ कर डालने से फिर नया चोइयां जमता है। इस प्रकार के नाक के जख्म गहरा से क्रमशः और गहरा होता जाता है वो उक्त स्थान की हड्डी क्षय प्राप्त हो कर एकदम छेद हो जाता हैं। नाक के सुराख का पश्चात् भाग के प्राचीन सर्दि और उस में से रस्सी की तरह लम्बा वा लस्सादार बलगम गले के भीतर आ जाने से, अथवा वह चोइयां की तरह कठिन हो कर रहने से या ढेलापन हो कर नाक बन्द कर रखने से केलि-बाइक्रम द्वारा विशेष फायदा मिलेगा।

अजीर्णरोग वा डिसपेपशिया (Dyspepsia) में वह अति उत्तम औषध है। बमन में रस्सी की तरह म्युकस (बलगम) निकलना इसका विशेष लक्षण है। मतवालों विशेषतः बियर (Beer) नामक शराब पीने वालों में ऐसा डिसपेपसिया देखा जाता है। भोजन के बाद फौरन ही पाकस्थली में बोझ वो पूर्णता बोध होना केलि-बाइक्रम के एक प्रिय लक्षण है (नक्स मसकेटा)। भोजन के २, ३ घन्टे के बाद ऐसा हो तो नक्स भोमिका, ऐनाकार्डियम। पाकस्थली की गड़बड़ी के साथ साधारणतः दो प्रकार के जीभ देखा जाता है। प्रथम-जीभ का मध्यस्थल वा पश्चात् भाग हल्दी रंग का होता है : द्वितीय-जीभ चमकीला, रक्त वर्ण वो फटा २। द्वितीय प्रकार के जीभ प्रायः आमाशय

रोग में देखा जाता है आंव ऐसा होता है कि मालुम पड़ता है अंतरी को छिल कर निकाला गया है।

स्वांस प्रस्वांस की पीड़ा, खांसी, क्रुप खांसी, यक्ष्मा, दम्मा इत्यादि रोग में रस्सी की तरह म्युकस देख पाने से अवश्य केलि-बाइक्रम को प्रयोग करना चाहिये

सिरपीड़ा में केलि-बाइक्रम का एक विशेष लक्षण देखा जाता है। सिरपीड़ा शुरू होने के कबल में रोगी अन्धा हो जाता है लेकिन सिरपीड़ा आरम्भ होने से रोगी फिर स्वभाविक दृष्टि लाभ करता है। केलि-बाइक्रम का दर्द में एक आश्चर्य्य लक्षण देखा जाता है। एक बिन्दु परिमाण स्थान में दर्द कायम रहता है। दर्द की जगह इतना अल्प होता है कि उसको अंगुली का अग्रभाग द्वारा ही ढाका जा सक्ता है। दर्द अचानक उपस्थित हो कर अचानक ही आराम हो जाता है (बेल, इग्नेशिया)। दर्द एक स्थान से लुप्त हो कर स्थानान्तर में प्रकाश पाता है (लैक-कैन, पलस: मेंगानम)। शरीर के और किसी स्थान में ऐसा दर्द होने पर भी केलि-बाइक्रम द्वारा फायदा मिलेगा।

केलि-बाइक्रम में गठिया के साथ पेचीश के लक्षण का अदल-बदल होना देखा जाता है। केलि-बाइक्रम, बलगमी

मोटा शरीर वा पतला बालवाला मनुष्य में और सहज से ठंढ लगने वाला बच्चों में व कण्ठमाला धातुके और गर्मीरोग के दोष वाला लोगों में उपयोगी है।

शक्ति ३०—२००।

——:o:——

केलि कार्बोनिकम।

KALI CARBONICUM.

सुई चुभने की तरह दर्द—इसका सर्व्व प्रधान लक्षण है। इस प्रकार के दर्द ब्राइयोनिया में भी है; इस लिये यहां केलि-कार्ब को ब्राइयोनिया के साथ तुलना करना चाहिये। ब्राइयोनिया का दर्द प्रत्येक बार करवट लेने के साथ उपस्थित होता है और रोगी जितना हिलता डोलता है उतना ही बढ़ता है। लेकिन केलिकार्ब के रोगी चाहे स्थिर रहे और चाहे करवट ले, सब अवस्था में दर्द ही समभाव से रहता है। ब्राइयोनिया का सुई चुभने की तरह दर्द सिर्फ सिरस मेम्ब्रेन वा झिल्लियों में होता है लेकिन केलि-कार्ब के दर्द शरीर के सर्व्वत्र स्थान ऐसा कि मेरुदण्ड (रीढ़) में भी देखा जाता है। दहिना छाती के निम्नभाग केलिकार्ब का अति प्रिय स्थान है; यदि उक्तस्थान में दर्द शुरू होकर

सीधा पीठ के तरफ जावे तो केलिकार्ब महौषध है। निउमोनिया प्रभृति रोग में उस प्रकार का सुई चुभनेवाला दर्द स्वांस प्रस्वांस वा करवट के साथ किसी तरह का सम्बन्ध न रख कर समभाव से होता रहे तो केलिकार्ब द्वारा ही आरोग्य होगा।

कभी २ उस प्रकारके दर्द अचानक उपस्थित होता है। इस से रोगी चीत्कार करके उठता है लेकिन फिर अचानक ही दर्द दूर हो जाता है। इस प्रकार के दर्द शरीर के किसी स्थान में हो, केलिकार्ब ही से आराम होता है।

रक्ताल्पता—चेहरा फूला २ विशेषतः आंख के ऊपर वाला पपुटा जलपूर्ण वटुएकी तरह शोथयुक्त; गात्रचर्म्म फीका अथवा सफेदापन; युवती स्त्रियों की रक्ताल्पताके हेतु यदि प्रथम ऋतुस्राव में देर हो और ऊपर के लिखित लक्षणों के साथ कमर में दर्द व दुर्बलता देखी जाय तो केलिकार्ब उत्तम है। आंखके ऊपरवाले पपुटे में शोथ होना (नीचले पपुटे में शोथ एपिस) केलिकार्ब का अति प्रिय लक्षण है। स्त्रियों के ऋतु के उम्र बीत जाने के बाद रक्तलपता वो शोथयुक्त फूलन; आंख के ऊपर वाला पपुटा फूला। इस प्रकार के रोग में प्रायः दिल का

दुर्ब्बलता देखी जाती है। कमर में दर्द व दुर्ब्बलता सर्ब्बदा कमर में ऐसा दर्द होता है कि रोगी बोध करता है उसका कमर वा निम्न शाखायें सून्य हो जा रही है। रोगी चौकी वा बिछावन पर धिरे २ बैठ नहीं सकता है। एका एक धप करके बैठ जाता है। इस प्रकार के कमर दर्द निम्नशाखा में धावित होता है। सहज से ही रोगी को पसीना होता है। इकट्ट इस प्रकार की दुर्ब्बलता, कमर दर्द वो पसीना और किसी औषध में नहीं है।

उपरोक्त सुई चुभनेवाला दर्द निउमोनिया प्लुरिसी इत्यादि किसी रोगी ऐसा कि यक्षमा रोग में मिले तो भी केलिकार्ब के प्रयोग से फल होता है।

रात तिन बजे रोगकी बृद्धि—यह इस दवा का एक सिद्धिप्रद लक्षण है। खांसी, यक्षमा, शोथ, दिलका रोग इत्यादि किसी पिड़ा में रात तीन बजे बृद्धि देख पाने से अवश्य केलिकार्ब के प्रयोग से अति सन्तोष जनक फल मिले गा।

पीड़ित पार्श पर लेटने से रोग की बृद्धि। आक्षेपयुक्त खांसी के साथ अत्यन्त हुल आना अथवा खाई हुई चीज का वमन होना। सफेद या धुमयला रंगका, उबाला हुआ बड़े साबुदाने की तरह ढेलापन बलग़म खांसने के समय गले से छुट कर निकलता है (बैडियागा, चेलिडोनियम)।

दम्मा (Asthma)—बैठे रहने से अथवा सामने झूकने से, अथवा कुर्सी पर बैठ कर हिलाते रहने से आराम बोध होता है।

पेट-फुलना केलि कार्ब का एक विशेष स्वाभाविक लक्षण है। रोगी जो कुछ ही भोजन करता है वही गैस बन जाता है। आहार के बाद से ही उदर में वायु जमा होता रहता है, मालुम होता है कि उदर फट जायगा। पेट पर छुना बर्दास्त न होना। वृद्ध व नष्ट स्वास्थ्य वालालोग के अम्लपीड़ा में इस प्रकार के लक्षण पाये जाने से केलि-कार्ब उत्तम है।

स्पर्शासहिष्णुता केलि-कार्बका एक स्वाभाविक लक्षण है। सामान्य स्पर्श मात्र ही रोगी चमक उठता है: खासकर पैर के तलवे में स्पर्श बर्दास्त न होना; दर्द वाला कर लेटने से रोग की वृद्धि होना केलिकार्ब का प्रिय लक्षण है।

उदरामय में भी केलि कार्ब व्यवहार होता है। प्रायः प्राचीन अजीर्ण रोग केलि-कार्ब उपयोगी है। उदरामय के साथ आंख के ऊपर वाले पपुटे में शोथ होना; पेट में हवा होना।

शक्ति ३०—२०० ।

——:o:——

केलि-हाइड्रोजोडिकम।

KALI HYDROJODICUM.

स्वांसप्रस्वांस-यन्त्र के ऊपर इसकी विशेष क्रिया देखी जाती है। अत्यन्त तेज ठण्ढा लगने के बाद दीर्घकाल स्थाई खांसी अथवा निउमोनिया के बाद उस प्रकार के खांसी से ऐसा मालूम होता है कि रोगी को थाइसिस (यक्ष्मा रोग) हो गया या होने के उपक्रम हुआ है। बहुत परिमाण से गाढ़ा बलगम छाती के अति गम्भीर स्थान जैसा मध्य ष्टार्नम-स्थान से निकलता है और उस के साथ दर्द उस स्थान से शुरु होकर दोनों कन्धे के मध्यवर्ती स्थान तक फैलता है। यदि इस प्रकार के खांसी के साथ रात में पसीना हो और शरीर निहायत दुर्बल हो जाय तो केलि-आइयोड के प्रयोग से आशातीत फल मिलेगा।

ष्टैनम, सैंगुइनेरिया वो केली-हाइड्रो ये तीन दवायों का बलगम में कुछ मिलाव है। तीनों दवाइयों का बलगम गाढ़ा होता है वो बहुत परिमाण से निकलता है; किन्तु ष्टैनम का बलगम के स्वाद मीठा वो सैंगुइनेरिया के स्वांस वो बलगम अति दुर्गन्धो होता है। केलि-हाइड्रो का बलगम

का स्वाद बहुत नमकीन होता है (सिपिया)। केलि हाइड्रो वो स्टेनम के बलगम गाढ़ा वो हरापन होता है; सैंगुइनेरिया के बलगम उतना गाढ़ा वो हरा नहीं होता है। केलीहाइड्रो का बलगम कभी २ साबुन के फेन का तरह भी होता है। किन्तु बलगम गाढ़ा, भारी, हरा वो नमकीन होना ही इस का विशेष स्वभाव है।

ऐलोपैथिक चिकित्सक लोग प्रायः सिफिलिस में विशेषतः सिफिलिस में पारा के अपव्यवहार होने से वो स्क्रुफुला रोग में केलि-हाइड्रो यानी आइयोडाइड अव पटाश के अपव्यवहार करते हैं। इस से जो कुफल होता है उस के लिये हिपर-सल्फ व्यवहार करना चाहिये।

फैरिंगटन साहब लिखते हैं कि **निउमोनिया का हिपाटिजेंशन** (Hepatization Stage) के आरम्भ में यानी जब फेफड़े में अपस्राव वा रस जमना (Infiltration) शुरु हो और उस में ब्राइओनिया, फसफोरस वा सल्फर का कोई विशेष लक्षण न मिले तो केलि-आइयोड प्रयोग करना चाहिये। हिपाटिजेशन बहुत ज्यादा हो कर दिमाग में रक्ताधिक्य वा जलसंचय होने से जब चेहरा लाल, पुतली फैली हुई, रोगी तन्द्रालु, श्वासकष्ट, रोशनी की

क्रिया से भी पुतली का सून्य रहना इत्यादि लक्षण देखा जाय तो केलि-हाइड्रो के व्यवहार से उपकार होता है।

ब्राइट-पीड़ा और फेफड़े के शोथ में यदि वलगम फेनदार हो तो केलि-आइयोड उपकारी होता है।

टिशुयों में जल संचय के हेतु फूलन, शोथ; ग्लेन्डस वा गिल्टियां की वृद्धि, हड्डी का फूलना हड्डी के टिउमर इत्यादि में केलि-आइयोड उपकारी है। किन्तु इसका विशेष लक्षण न मिलने पर कभी इसको व्यवहार नहीं करना चाहिये। रात में हड्डी में असहनीय दर्द होना इसका प्रिय लक्षण है। यह एक ऐन्टि-सिफिलिटिक औषध है। यह लेड-पौयजन (Lead Poison) वा सीसा के विष के उतकृष्ट प्रतिषेधक है और पारा के भी प्रतिषेधक है।

शक्ति–इसका क्रुड वा आदत औषध प्रति खुराक में २ या ४ ग्रेन द्विवा १म वो द्वितीय टिट्ठरेशान के व्यवहार से विशेष उपकार मिला है; साधारणतः ३० और २०० शक्ति व्यवहार होती है।

केलि-म्युरियेटिकम।

KALI MURIATICUM.

डा० सुसलार के मत में यह एक उतकृष्ट टिसु रेमिडी

(Tissue Remedy) है। तरुण बात रोग में जोड़े फूल जाने से इससे विशेष फायदा होता है। टौन्सिल (Tonsil) के तरुण प्रदाह में ऐकोनाइट, बेलाडोना अथवा फेरम द्वारा रोग की कमी होने के बाद केलि-म्युर के प्रयोग से अति उपकार होता है। कर्णनली के प्रदाह वा रुकावट होने के हेतु बधिरता में इससे विशेष फल लाभ किया गया है। पीड़ा की प्रथम अवस्था में इसके व्यवहार से अति कठिन बधिरता भी आरोग्य हुआ है।

शक्ति ३—६—३०।

——:o:——

केलि-फसफोरिकम।

KALI-PHOSPHORICUM-

क्रुप खांसी के शेषावस्था में रोगी अतिशय दुर्बल, चेहरा फीका वा चमकीला इत्यादि लक्षण पर इसके प्रयोग से अति सन्तोषजनक फल लाभ हुआ है।

ऋतुस्राव बन्द होना वा गौण में होने के साथ गमगीन मिजाज वो दुर्बलता में यह उपकार करता है।

स्वांस दुर्गन्धी, मसुड़े से रक्तस्राव। स्मरणशक्ति की

कमो। अत्यन्त मानसिक परिश्रम से दिमाग की बिमारी। सिर के पश्चात भाग में दर्द। नाक से गाढ़ा पिला रंग का स्राव। प्रातःकाल में जीभ सूखा। दिल के रोग के साथ पेट फूलना। बदबूदार वायु का जोर आवाज के साथ निकलना। किसी यन्त्र के स्नायविक दर्द के साथ दुर्ब्बलता: रोशनी वा शब्द न सहना: आनन्द-जनक विषय द्वारा इन सबों में आराम। किसी स्थान का पक्षाघात। सूतिका ज्वर के प्रसवान्तिक पागलपन। बाल का उड़ जाना: बदन में खुजली। दुर्गन्धी दस्त के साथ यक्ष्मारोग इत्यादि में यह फायदेमंद है।

भींगा भात के पानी की तरह दस्त, कोलैप्स, नाड़ी करिब लुप्त, चेहरा चमकीला वो नीलापान होने से कौलरा में इसका प्रयोग होता है।

हिष्टिरिया रोग में यह इग्नेशिया, कफिया कैमोमिला के सदृश औषध है।

शक्ति ३—६—३०—२००।

कैलमिया लैटिफोलिया।

KALMIA LATIFOLIA.

यह बात रोग के एक महौषध है। कैलमिया का वात

रोग कैकटस की तरह ऊपर अंग से आरम्भ हो कर क्रमश नीचे के तर्फ फैलता जाता है । (लिडम का वातरोग नीचेसे ऊपर की तरफ जाता है) । कैलमिया का दर्द एकाएक एक स्थान से स्थानान्तर में धावित होता है । किसी प्रकार के वातव्याधि में यद्यपि दर्द शीघ्र २ एक स्थान से स्थानान्तर में जाता रहे और उस के साथ दिल की पीड़ा वर्तमान रहे तो पलसेटिला के बदले में कैलमिया का व्यवहार करना चाहिये; कैलमिया का दर्द प्रायः बायां बाहु के ऊपर से नीचे के तरफ फैलता जाता है ।

मुखमण्डल के स्नायु-शूल Facial (Neuralgia)के निमित्त कैलमिला वो स्पाइजिलिया दोनों ही अति उत्तम औषध हैं । विशेष कर कैलमिया दहिना तरफ के वो स्पाइजिलिया बायां तरफ के स्नायविक दर्द में व्यवहृत होता है । कैलमिया के निउरैलजिक दर्द के साथ दुर्बलता रहता है । कभी २ दर्द के समय वा अन्त में झिनझिनी (Numbness) की तरह सून भाव मालुम होता है । (एकोन, कैमो, नैफेलियम, प्लैटिना) । दर्द प्रातःकाल से शुरु होकर दोपहर के समय वृद्धि वो संध्या के समय कम होता है (स्पाइजि, नैट्रम, सैंगुइ) स्पाइजिलिआ की तरह

कलमिया में भी आंख घुमाने से दर्द की वृद्धि होती है। किन्तु कैलमिया के विशेषत्व यह है कि कैलमिया का रोगी के आंख में अंकड़ा हुआ भाव देखा जाता है किन्तु स्पाइजिलिया का रोगी को ख्याल होता है कि उस के आंख का गोला इतना बड़ा हो गया कि वह आंख के कोठरी में अंट नहीं सकता है। स्पाइजिलिया की तरह कैलमिया में सारा सिर में दर्द नहीं है।

वातरोगसे दिलकेरोग की उत्पत्ति अथवा पर्य्यायक्रम से वात रोग और हृदरोग होने से कैलमिया अति उपयोगी औषध है। भयानक दिलधड़कना। कभी कभी कैलमिया की नाड़ी अति धीरे २ चलती है।

यह औषध स्पाइजिलिया के प्रयोग के बाद सुन्दर क्रिया करता है।

शक्ति ६—३०—२००।

क्रियोजाटम।

KREOSOTUM

शरीर के म्युकस (बलगमी) झिल्ली के ऊपर इस की विशेष क्रिया होती है। म्युकस झिल्ली में जखम: उस से दुर्गन्धी स्राव वो जीवनिशक्ति की हीनता होना इसका विशेष लक्षण है। स्त्री-जननेन्द्रीय में उक्त प्रकार की अवस्था देखी जाती है। श्वेतप्रदर (Leuchorrhoea) अति दुर्गन्धी, तेजाव की तरह जखम पैदा करने वाला वो पीलारंग होता है। जहां पर वह स्राव लगता है वहीं पर खुजली वो ज्वाला होता है; खुजलाने से आराम बोध नहीं होता है परन्तु प्रदाहयुक्त हो जाता है। क्रियोजाटम में रक्तस्राव की अति प्रवलता देखी जाती है। प्रदरस्राव के साथ रक्तस्राव, रुक रुक कर होता है। लोकिया Lochia या प्रसवान्तिक क्लेदस्राव भूरा रंग का वो दुर्गन्धी, एक वार आराम होकर फिर देखाई देता है। लोकिया के साथ उक्त प्रकार के रक्तस्राव देख पाने से भी क्रियोजोट का प्रयोग होता है (सलफर, रसटक्स)। अति क्षुद्र जखम से भी बहुत परिमान से रक्तस्राव होते रहने से यह अमृत है

(क्रोटेलस, लैकेसिस, फसफोरस)। दांत निकलने के बाद बहुत परिमाण से काला रक्त चुता रहता है।

जरायु के कैन्सरादि जखम में यह अति उत्कृष्ट है तलपेट वा पेंडू में अत्यन्त ज्वाला व उस दुर्गन्धी रक्त का ढेला निकलता है। स्तन के कैन्सर कठिन: बैगनी रंग का छोटे २ दानें के ऐसा देखाई पड़ने से इस से विशेष लाभ होता है।

ऋतुस्राव नियमित समय के बहुत पहले, बहुत परिमाण से, बहुत दिन स्थायी वो दर्द के साथ होता है; लेटी हुई हालत में स्राव होता है लेकिन बैठने से या खड़ा होने से रुक जाता है। ठन्ढी चीज पीने से दर्द का कमी होती है। स्राव ठहर २ कर होता है।

दंतपीड़ा के यह एक प्रधान औषध है। मसुड़े में अत्यन्त दर्द; मसुड़े में नीलापन या बैगनी रंग के फूलन। दांत निकलते २ ही उस में कोड़ा पड़ना और उस के क्षय हो जाना। मसुड़े से खून निकलना। ठन्डी खुली हवा में वो ठन्ढा पानी से दंत पीड़ा की वृद्धि।

शिशुओं के दांत निकलने के समय कौलरा में लगातार भयानक कष्टदायक वमन वा मल में अत्यन्त दुर्गन्ध होने से क्रियाजोट से निश्चित आरोग्य होगा।

क्रियाजोट में **मूत्र** के कइएक विशेष लक्षण है। मूत्र बेरंग (फीका) वो बहुत परिमाण से होता है। अचानक मूत्र का वेग इतना अधिक होता है। कि तुरन्त मूत्र त्याग न करने से कपड़े में ही हो जाता है। प्रथम निद्रा में ही बिछावन में पेशाब होना; शिशु की निद्रा इतनी गहरी होती है कि कठिनाई से उसको जगाया जाता है। लेटि हुई हालत में पेशाब निकलता है।

शक्ति ६--३०--२००।

लैक-कैनाइनम।

LAC-CANINUM.

यह कुत्ती का दूध है।

दर्द के स्थान बदला—यह लैक-कैनाइन का सर्व्वप्रधान लक्षण है। पलसेटिला में भी दर्द हमेशा स्थान

परिवर्त्तन करता है, किन्तु इन दोनों में फर्क यह है कि लैक-कैनाइनम के दर्द प्रायः आमने सामने भाव से पार्श्व परिवर्त्तन करता है यानी एक बार दहिना तर्फ से बायां तर्फ और फिर बायां तर्फ से दहिना तर्फ में पुनः २ जाता आता रहता है। इस प्रकार के स्थान परिवर्त्तन घन्टे २ में या एक दिन अन्तर २ देखा जाता है। वात रोग के दर्द इत्यादि किसी प्रकार की दर्द हो अगर उस में यह लक्षण मिले तो इस औषध के द्वारा अवश्य आरोग्य होगा।

वात रोग के अलावे डिफथिरिया, गले के जखम टौन्सिलाइटिस प्रभृति कोई पीड़ा हो यदि उसमें उक्त प्रकार से रोग का पार्श्व परिवर्तन करता देखो तो लैक-कैनाइनम प्रयोग करो (मैंगानम-एसेटिकम का दर्द तिर्छा तिर्छा भाव से (Cross wise) (स्थान परिवर्त्तन करता है)।

मैस्टाइटिस (Mastitis) वा स्तन प्रदाहः स्तन की घुन्डी के प्रदाह, उस में मामुली स्पर्श भी सहा नहीं जाता है या ऐसा दर्द होता है कि चल फिर करने के समय या और किसी तरह से जरासा धमक लगने से ही दर्द असहनीय होता है।

ऋतुस्राव के समय स्तन में वा गले में दर्द होने से

विशेषतः यदि स्राव लगातार न हो कर एक दम से बहुत परिमाण से हो तो लैक-कैनाइनम विशेष फलदायक होता है।

स्मृति-भ्रम इस दवे का एक विशेष लक्षण है। कोई चीज खरीद कर उसको ले जाने में भूल जाता है। कोई बात लिखते २ दूसरी बात लिख देता है। शब्द के शेष हरुफ भूल जाता है, पढ़ने के समय मन लगा नहीं सकता है।

रोगी आशाशून्य; ख्याल करता है कि उस की पीड़ा आरोग्य नहीं होगी, उसके कोई भी मित्र जिवत नहीं है, उस का जीना फजूल है; रोगी अत्यन्त रोनेवाला। इत्यादि इसका अन्यान्य मानसिक लक्षण है।

प्राचीन सर्दि में नाक से मोटा व सफेद श्लेष्मा निकलता है। एक नाक के बन्द रहना अन्यनाक से सर्दि का निकलना; कभी २ यह अवस्था पर्य्यायक्रम से देखी जाती है स्राव अत्यन्त तेज, उससे नाक ओष्ठ में जखम हो जाता है।

अति भोजन के बाद भी भोजन के पहले की तरह भूख मालूम होना इस का प्रिय लक्षण है।

स्तन के दूध कम करने के लिये यह विशेष उपयोगी

औषध है (ऐसाफोटिडा) । विशेष कोई कारण के सिवाय दूध सुख जाय तो भी यह विशेष फलदायक होता है (स्तन के दूध सूख जाने से उसको बढ़ाने के लिये लैल-डिफ्लोरेटम विशेष कार्य्यकारी होता है) ।

बायां कर लेटने से भयानक दिल-धड़कना, दहिना कर लेटने से आफियत ।

योनि से वायु निकलना भी इस दवा का एक अच्छा लक्षण है ।

चलने के समय रोगी को बोध होता है कि वह हवा में उड़ रहा है । शयन करने से मालूम होता है, शरीर बिछा-वनको स्पर्श नहीं किया है ।

शक्ति ३०—२०० ।

——:o:——

लैकटिक एसिड ।

LACTIC ACID

यह डायेबेटिस (बहुमूत्र रोग) का महौषध है । यदि अत्यन्त प्यास, वो राक्षस की तरह भूख

रहे तो अवश्य इस का प्रयोग से फायदा होगा। बहुमूत्र रोग के साथ जोड़ों में वात रोग वर्त्तमान रहने से इस से अति उतकृष्ट फल मिलता है।

शक्ति ६—३०—२००।

———:o:———

लेप्टान्ड्रा।

LEPTANDRA.

यह यकृत रोग का एक उत्तम औषध है। पर्य्यायक्रम से छाई रंग का (Ash Coloured) वा काला रंग का मल होना: रोगी अत्यन्त दुर्ब्बल: ज्यादा नींद आना; रोगी बेहोश की तरह: ताप के साथ शरीर के चर्म्म सूखा, हाथ पैर ठन्ढा। दुर्गन्धी काला रंग के पतला मलका स्रोत की तरह वेग से निकलना; शरीर पीला, पान्डुरोग: इत्यादि इसका विशेष लक्षण है।

शक्ति ६—३०

लैकेसिस ट्राइगोनोकेफेलस।

LACHESIS TRYGONOCEPHALUS.

दक्षिण अमेरिका के सुरुकुकु नाम के साँप के विष से यह दवा बनती है।

नाना प्रकार के विषैला व खतरनाक रोग में यह अति उत्कृष्ट औषध है। मन वो बोधशक्ति (Mind and Sensorium) के ऊपर इसकी प्रभूत क्रिया देखी जाती है। रोगी हरदम बकता रहता है, और ख्याल करता है कि वह बहुत बुद्धिमान है ; तुरंत सब समझ सकता है और भविष्य में क्या होगा वह भी कह सकता है। अबही बहुत आनन्द से है और फिर तुरत अज्ञान हो जाता है। लगातार बकवास करता रहता है और तुरंत २ ही बकने के विषय को बदलता रहता है। मानसिक भाव भी अचानक बदलता रहता है। इस प्रकार की मानसिक अवस्था नया वो पुराना उभय प्रकार के ज्वर-विकार वो पागलपन रोग में देखी जाती है।

फिर लैकेसिस में और एक प्रकार की मानसिक अवस्था देखी जाती है ; यह ऊपर के लिखित लक्षणों से बिपरीत है। यह लक्षण भी नया और पुराना दोनों प्रकार के मानसिक रोग

में देखा जाता है। स्मृतिशक्ति दुर्व्बल: लिखने के समय भूल करता है। समय विषय में गड़बड़ी होती है। रात में विकार: बरबराना: चेहरा लाल, नीचला चहुं का लटक जाना अति कष्ट से धीरे २ बात करना और सदा ही उँघना। जिनके स्वास्थ्य विगड़ गया है, अत्यन्त वृद्ध अथवा बहुत दिन तक नाना प्रकार के मानसिक दुःखकष्ट सह कर जिनको इस प्रकार की मानसिक अवस्था हुई : उन लोगों के लिये लेके-सिस उत्तम है। निद्रा के बाद रोगी अत्यन्त दुःखित, आशाहींन वो स्फुर्त्तिहीन हो जाता है, इस प्रकार का मानसिक अवस्था प्रायः निद्रा के बाद वृद्धि होती है।

वृद्ध, मतवाला: स्वास्थ्यहीन युवा, प्रौढ़ावस्था वा तीसरी उम्र के बीती हुई स्त्री इत्यादि में उक्त प्रकार की अवस्था देखी जाती है। इस अवस्था के साथ अचानक दुर्व्बल हो जाना, मूर्च्छा: दिमाग में रक्ताधिक्य के हेतु सिरचकराना, ऐपोप्लेक्सि अथवा दिमाग को रक्तहीनता की उतपत्ति होता है। जिन स्त्रियों के ऋतु होने का उम्र बीत चुका है उनके चेहरे के अचानक रक्तवर्ण हो जाना इसका एक प्रधान लक्षण है।

निद्रा के बाद ही पीड़ा की वृद्धि, लेकेसिस का

एक सिद्धिप्रद लक्षण है। सिर्फ यही लक्षण के ऊपर निर्भर कर लैकेसिस का प्रयोग से बहुत रोगी को आरोग्य किया गया है।

सिरपीड़ा :—सिरपीड़ा के निमित्त रोगी सोने से डरता है, कारण सो कर उठते ही सिरपीड़ा का अत्यन्त वृद्धि

होती है। फिर कभी २ सिरपीड़ा के समय ही रोगी सो जाता है। धूप में जाने से ही शिरपीड़ा होना इस का एक प्रिय लक्षण है। जब ही धूप में जाय तब ही सिरपीड़ा होना वा उस की वृद्धि होना वा क्रमशः इस अवस्था का प्राचीन होना; चांदी में बोझ अथवा दबाउ बोध, विशेषतः जिन स्त्रियों के ऋतु होने के वयस बीत चुका है, उन में; उसके साथ सिर में ज्वाला।

मुखमध्य में लैकेसिस के कई एक उत्कृष्ट लक्षण है। दांत का मसूढ़ा फूला, स्पंज की तरह (Spongy) वो उस से सहज से ही रक्तस्राव होता है (ऐसी अवस्था में लैकेसिस के बाद मार्किउरियस अच्छा है, फायदा करता है)। उक्त प्रकार के लक्षण के साथ यदि मसूढ़े का रंग बैगनी हो तो अवश्य

लैकेसिस प्रयोग करना चाहिये। मुखमध्य के जखम में मार्किडरियस को तरह लैकेसिस भी उपकारी है। मुंह में दुर्गन्ध, मुंह सूखा अथवा चटचटाहा श्लेष्मा से भरा हुआ। यक्ष्मा रोग की शेष अवस्था में मुंह के जखम में लैके-सिस अति उपकारी है।

अति कष्ट से जीभ को बाहर निकाल सकता है, बाहर निकालने के समय जीभ कांपती है या दांत में अटक जाती है; जीभ अत्यन्त खुष्क होना लैकेसिस का विशेष लक्षण है। ज्वर विकार, टाइफाइड ज्वर इत्यादि खतरेनाक बिमारियों की शेष अवस्था में उपरोक्त जीभ के लक्षण मिलने से लैकेसिस द्वारा अवश्य लाभ होगा। इस प्रकार के जीभ होना नितान्त दुर्ब्बलता का लक्षण है। जेलसिमियम में भी दुर्ब्बलता के कारण जीभ का कंपाहट देखा जाता है किन्तु यह ज्वरादि की प्रथम अवस्था में ही देखा जाता है। ज्वरादि की प्रथम अवस्था में कम्पयुक्त जीभ देखने से जेलसिमियम और शेष अवस्था में लैकेसिस व्यवहार करना चाहिये।

गले के भीतर और बाहर निहायत मामुली स्पर्श भी न सहना, ऐसा कि वहां चादर लगने से भी अत्यन्त कष्ट

होता है। रोगी किसी प्रकार के स्पर्श वा दबाउ बरदास्त नहीं कर सकता है। इस का और एक आश्चर्य्य लक्षण यह है कि खाली घोंट लेने से या तरल वस्तु निगलने के समय रोगी को कष्ट की वृद्धि होती है लेकिन किसी कड़ी चीज निगलने में तकलीफ नहीं होती है। टौन्सिल का प्रदाह (Tonsilitis), डीफथिरिआ (Diphtheria) इत्यादि रोग में उक्त प्रकार के लक्षण मिले तो लैकेसिस अति उत्तम है। शरीर के बायां तर्फ से पीड़ा का आरम्भ हो कर दहिना तरफ में फैलना लैकेसिस का विशेष प्रधान लक्षण है। टौन्सिलाइटिस, डिफथिरिया, वात रोग वा और किसी रोग यदि बायां तरफ आरम्भ हो कर दहिना तर्फ में फैले या सिर्फ बायां तरफ में ही रहे तो लैकेसिस को अवश्य स्मरण करो। निद्रान्त में वा गरम पानी पीने से गले का दर्द की वृद्धि। प्रदाहयुक्त स्थान का रंग नीलापन वा बैगनी होना लैकेसिस का और एक विशेष चरित्र है। गले के भीतर का किसी प्रकार के प्रदाह या जखम अथवा फोड़ा इत्यादि अथवा शरीर के और किसी जगह के प्रदाह वा जखम में यह लक्षण मिलने से ही लैकेसिस का स्मरण करना चाहिये।

स्पर्श न सहना भी इस दवा का एक प्रधानतम लक्षण है। शरीर के किसी स्थान में स्पर्श अथवा दबाउ बरदास्त न होना। गर्दन में सामान्य स्पर्श भी बरदास्त नहीं होता है, ऐसा कि कमीज का बटन भी लगा नहीं सकता है, कालर वा गूलेबन्द के दबाउ से ही रोगी अस्थिर हो जाता है। पाकस्थली के ऊपर स्पर्श, ऐसा कि उस पर कपड़े के दबाव से ही अतिशय कष्ट होता है। पेट फूलने से उस पर पतला कपड़ा भी नहीं रखसकता है। कमर में कपड़ा बान्ध नहीं सकता है। जरायु के ऊपर भी सामान्य स्पर्श असहनीय होता है। लेरिंगस की जगह स्पर्श करने से ही दम बन्द होने के ऐसा होना; मालुम होता है कि गले में गोलासा कोई वस्तु अटका हुआ है। फलतः दबाउ से रोग की वृद्धि होना देख पाने से फौरन लैकेसिस को स्मरण करो।

मुख अथवा नाक के पास कोई चीज ऐसा कि रुमाल लाने से भी दम बन्द हो जाता है। दम्मा इत्यादि रोग में अचानक दम्मा के "फिट" हो कर इस प्रकार के कष्ट होता है और रोगी बदन का कपड़ा, कुर्त्ता इत्यादि खोल डालता है।

निद्रित अवस्था में सूखी खांसी—रोगी सोय २ खांसता

है। जब इस में कैमोमिला से उपकार न हो और उपरोक्त लक्षण वर्त्तमान रहे तब लेकेसिस विशेष फलदायक होता है।

जरायु के सर्व्वप्रकार की पीड़ा, ऋतुस्राव बन्द रहने से अत्यन्त वृद्धि पाती है लेकिन ऋतुस्राव होने पर तकलीफ दूर हो जाती है वो ऋतुस्राव बन्द होने से ही फिर तकलीफ दिखाई देती है—यह लक्षण जरायु के कोई पीड़ा में मिलने से अवश्य लेकेसिस प्रयोग करना चाहिये।

औभारी वा डिम्बाधारकी पीड़ामें, विशेषतः बायां औभारी के निउरैलजिया (स्नायविक दर्द) टिउमर इत्यादि पीड़ा में लैकेसिस अति उत्तम है। बायां औभारी में पीड़ा का शुरू हो कर दहिना औभारी में फैलना, औभारी स्थान में स्पर्श न सहना इत्यादि वर्तमान रहने से अवश्य लैकेसिस द्वारा फायदा होगा।

रक्तस्राव ऐसा कि निहायत सामान्य जखम से भी अति सहज से ही रक्तपात होना (क्रोटेलस, क्रियोजोट, फस); रक्त काला होता है वो जम नहीं सकता है, टाइफायेड इत्यादि में सड़ा, काला, ढेला २ रक्तस्राव, रक्त देखने में जला हुआ पोआल के टुकड़ों की तरह। पेशाव के साथ रक्तस्राव।

अर्श—मस्से भीतर वो बाहर दोनों प्रकार का हो सकता है। मलद्वार सिकुड़ जाता है। उस में हथौरी के आघात सा दर्द होता है। अर्श के साथ ऋतुस्राव: मलद्वार से सुई भोंकने के ऐसा दर्द, ऊपर के तरफ धावित होता है।

मल वो मलद्वार—लैकेसिस का विशेष लक्षण यह है कि मलवेग उपस्थित होने से मलत्याग के लिये वेग देने से इतना अधिक कष्ट होता है कि रोगी वेग देना नहीं चाहता है: वेग देने से मलद्वार संकुचित वा बन्द हो जाता है। ऐसे लक्षण में नक्स-भोमिका की तरह लगातार निष्फल मलवेग अथवा लाइकोपोडियम की तरह मलद्वार के सिकुड़ने के हेतु मल निकलने में बाधा होता है। कठिन मल भी अत्यन्त दुर्गन्धी होता है। पतला व बदबूदार मल में जला हुआ पोआल के कोयला की तरह वस्तु दिखाई पड़ने से लैकेसिस के प्रयोग में जरासा भी देर नहीं करना चाहिये।

प्रति वर्ष के अन्त में प्रायः एक ही समय में ज्वर का आक्रमण होना; प्रति वर्ष वसन्त काल में ज्वर होना लैकेसिस का एक विशेष लक्षण है।

हृद् रोग—दिल की जगह में ऐंठन की तरह दर्द

के साथ दिल-धड़कना वो व्याकुलता, मतली, मूर्च्छा; चेहरा फीका, सिर चकराना। सोते ही दम बन्द हो जाता है।

कोदवा, लालज्वर, माता इत्यादि के दानें व फोड़ा, कार्बंकल, जख्म इत्यादि का बैंगनी रंग वा नीलापन होना लैकेसिस का प्रिय लक्षण है।

बायां तर्फ में बिमारी का आरम्भ होना, स्पर्श न सहना, निद्रान्त में पीड़ा की वृद्धि प्रदाहयुक्त स्थान वा जखम के रंग कालापन होना, मल जला हुआ पोआल के कोयला की तरह, ऋतुस्राव होने के बाद आराम बोध ये लैकेसिस का प्रधान लक्षण है। अतएव सर्व्वदा इन के ऊपर ध्यान देना चाहिये।

शक्ति ३० – २००।

लिडम पालस्टार।

LEDUM PALSTER.

यह सीसा से बनती है।

वात-रोगी वो ज्यादा शराब पीने वालों के लिए यह उपयोगी औषध है।

यह बात रोग का एक महौषध है। विशेष कर निम्नांग से वात रोग प्रथम आरम्भ हो कर क्रमशः ऊपर के तरफ फैलता जाता है। यह नया वो पुराना दोनों प्रकार के बात रोग में व्यवहार होता है। नया बात रोग में रोगी के शरीर के जोड़ों फूला वो गर्म्म होता है किन्तु लाल नहीं होता है; फूला हुआ स्थान फीका दिखाई पड़ता है। लिडम के रोगी की तकलीफ, रात में वो बिछावन की गर्मी से वृद्धि होती है। रोगी सर्व्वदा दर्द के स्थान को नंगा रखता है, ढाकना नहीं चाहता है। यह लक्षण मार्किउरियस में भी देखा जाता है किन्तु मार्किउरियस के सदृश बहुत पसीना होने पर भी आराम न होना वो उस के स्वाभाविक जीभ का लक्षण लिडम में नहीं पाया जाता है। प्राचीन बात रोग में भी यह विशेष कार्य्यकारी है। इस में भी जोड़ों का फूलना वो बिछावन के गर्म्मी से वृद्धि देखी जाती है। पहले पैर के जोड़ों से दर्द वो फूलन शुरू हो कर ऊपर के तरफ फैलता जाता है, पैर के तलवे में इतना अधिक दर्द होता है कि रोगी चल नहीं सकता है (ऐन्टिम-क्रुड, लाइकोपोडियम, साइलिसिया)। साइलिसिया के रोगी को भी रात में दर्द की वृद्धि होती है लेकिन लिडम की तरह बिछावन की गर्मी से उसकी वृद्धि नहीं होती है बलके

उससे आराम ही मालुम होता है। लिडम के रोगी का दर्द ठन्ढ प्रयोग से ऐसा कि ठन्ढा पानी से धोने से आराम होता है। लिडम के रोगी साइलिसिया के रोगी की तरह सदा शीत बोध करता है, मालूम होता है कि उसके शरीर में प्राणीसुलभ ताप नहीं है आघातप्राप्त स्थान वा वातयुक्त स्थान दूसरे आदमी को ठन्ढा मालुम होता है लेकिन रोगी स्वयं गर्म मालुम करता है। एड़ी में आघात सा दर्द हो तो लिडम उत्तम है।

आघात के कारण दर्द में यह आर्णिका के सदृश उपकारी है। किसी स्थान में आघात लग कर रक्त जमा होने से यह विशेष उपकारी है आंख में आघात लग कर रक्त जमा होना। आघातादि में आर्निका के प्रयोग से सम्पूर्ण आरोग्य न होने से लिडम के प्रयोग से सम्पूर्ण आरोग्य होता है।

कांटि चुभना, कीटादि का दंशन वा डंक चुभना इत्यादि के लिये लिडम महौषध है। इस में इस औषध का भीतरी और बाहरी दोनों प्रकार का प्रयोग होता है। इसका मदर टिञ्चर १५, २० बुन्द दो आउन्स पानी में मिलाकर उससे कपड़ा भींगा कर पट्टी दिया जाता है।

उक्त प्रकार का दंशन वा चुभना स्नायु तक पहुंचे तो हाइ-पेरिकम दिया जाता है। आघात हड्डी के गिलाफ झिल्ली में लगे तो रूटा: हड्डी टुट जाने से—कैलकेरिआ फस अथवा सिम्फाइटम अधिक उपकारी है।

गाल वो ललाट में वर्ण हो तो लिडम उत्तम है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

लिलियम टिग्रिनम ।

LILLIUM TIGRINUM.

पेडु के यन्त्रसमूह की पीड़ा में लिलियम वो सिपिया में विशेष सादृश्य है। पेडु में ऐसा बोझ मालुम होता है कि रोगिणी ख्याल करती है उस के पेट से समस्त वस्तु ठेल कर योनि द्वार से वाहर हो जा रहा है। रोगिणी हाथ से दवा कर या दवा के बैठा कर उन सब के पथरोध करना चाहती है।

जरायु के टल जाने (Prolapsus uteri) में यह अति उत्कृष्ट औषध है। सिपिया से लिलियम को

फरक करना कठिन है। लिलियम की तकलीफ अत्यन्त तेज होती है किन्तु सिपिया की तकलीफ कुछ मृदुभाव के वा पुराना भाव का होता है। सिपिया की स्वभाविक रक्ताल्पता वा पीला रंग के चर्म देख कर सिपिया को लिलियम से फर्क कर लेना चाहिये।

वार २ मूत्रत्याग करने की इच्छा लिलियम में विशेष भाव से देखी जाती है। मार्किउरियस, नक्स वा कैप्सिकम की तरह वार वार मलत्याग की इच्छा भी इस में देखी जाती है। मलद्वार के लक्षण के साथ कांच निकलना।

ऋतुस्राव जल्दी, अल्प परिमाण से, काला वा दुर्गन्धी होता है। वह स्राव सिर्फ चलने फिरने के समय होता है; विश्राम के समय वन्द हो जाता है। जरायु की पीड़ा के साथ दिल का भी विशेष सम्बन्ध है। दिल में तेज सूई चुभने की तरह दर्द; मालुम होता है कि दिल को लोहे की वेड़ी से दवा कर रक्खा गया है, उस से रोगिणी सिधा हो कर चल नहीं सकती है। नाड़ियों में अति पूर्णता बोध; मालुम होता है कि नाड़ियां फट जायगी। दिल के धड़कन के साथ मूर्च्छा, व्याकुलता, नाड़ी वेकायदा, अंगप्रत्यंग शीतल वा उस में शीत; पसीना, आहारान्त में लेटने से तक-

लीफ की वृद्धि। कभी २ दिलकी तकलीफ इतना अधिक होती है कि रोगिणी जरायु के लक्षण को चिकित्सक से कहने में भूल जाती है या चिकित्सक जरायु के लक्षण के ऊपर विशेष ध्यान नहीं देता है। मूत्र, मलपथ वो दिल के लक्षण समूह जरायु के लक्षण के आनुसंगिक है, अतएवःसर्व्वदा जरायु के लक्षण के ऊपर ध्यान रख कर लिलियम को प्रयोग करना चाहिये।

जरायु की गड़बड़ी के साथ लिलियम की रोगिणी के मानसिक लक्षण का भी विशेष परिवर्त्तन देखा जाता है। रोगिणी रोनेवाली, उदास वो गमगीन होती है। अपनी मुक्ति-विषय में सर्व्वदा व्याकुल रहती है। सब काम ही निहायत जल्दी २ करना चाहती है, लेकिन कोई काम नहीं कर सकती है। सर्व्वदा अश्लील विषय में चिन्ता करने की इच्छा। संगमेच्छा को रोक कर रखने की चेष्टा करती है: डरती है कि उस की पीड़ा आरोग्य नहीं होगी या वह पागल हो जायगी। इस प्रकार की जरायु की पीड़ा के साथ प्रातःकाल में अतिसार होने से लिलियम बहुत फायदा करता है।

शक्ति ६--३०—२०० ।

लिथियम कार्बोनेकम।

LITHIUM CARBONICUM.

वात रोग के साथ दिल का भल्व (valve) की पीड़ा में यह अति उत्तम औषध है। दिल की जगह पर वात की तरह दर्द; शरीर को सामने झुकाने से दिल में असहनीय दर्द होता है। पेशाव करने के समय या ऋतुस्राव के समय दिल में दर्द होता है; मानसिक अस्थिरता के साथ दिल-धड़कना इत्यादि लक्षण के साथ यदि छोटे २ जोड़ो में फुलना लाली व दर्द होता रहे तो अवश्य लिथियम का प्रयोग करना चाहिये। पेशाव में प्रायः वलगम, इउरिक-एसिड (Uric acid) अथवा पीव देखा जात है।

शक्ति ६—३०—२००।

——:o:——

लोबेलिया इनफ्लेटा।

LOBELIA INFLATA.

स्वांसप्रस्वांस यन्त्र के ऊपर इसकी क्रिया विशेष भाव से देखी जाती है। आक्षेपयुक्त दम्मा; हूपिंग कफ के साथ

स्वांसकष्ट हो कर दम बन्द होने के ऐसा होने से यह व्यवहार होता है।

श्वांस कष्ट (Dyspnoea) से छाती कसी हुई मालुम होना; ठन्ढ लगना, सामान्य परिश्रम वो सिढ़ी से ऊपर चढ़ने व नीचे उतरने के समय में वृद्धि, छाती में रक्ताधिक्य व बोझ मालुम होना। जल्द चलने से आफियत होना।

मालुम होता है कि दिल बन्द हो जायगा। दिल के मूलदेश के गभीर प्रदेश में दर्द होता है।

सिरपीड़ा —मेदे की गड़बड़ी के हेतु सिरपीड़ा के साथ मतली, वमन वो अत्यन्त निढाल हालत; मादक द्रव्य सेवन से सिरपीड़ा; दिन दोपहर से रात दोपहर तक उसकी वृद्धि; अचानक चेहरे का फीका हो जाने के साथ बहुत पसीना; तमाकु सेवन से वृद्धि।

वमन के साथ बहुत परिमान से शीतल पसीना; गर्भावस्थामें वमन व बहुत लार निकलना; वमन की प्राचीन अवस्थामें खाने के बहुत रुचि रहने पर भी अत्यन्त मतली, बहुत पसीना वो कमजोरी होती है। बहुत तमाकु वो चाय सेवन के हेतु मूर्च्छा; दुर्ब्बलता वो पाकस्थली में अत्यन्त कष्ट होना, इत्यादि इसका स्वभाविक लक्षण है।

पेशाब गाढ़ा, वो पीला रंग के बहुत परिमाण से वो गदला होता है।

सेक्रम (Sacrum) वा डांड़ में अत्यन्त स्पर्शासहिष्णुता, सामान्य स्पर्श ऐसा कि कोमल तकिया के स्पर्श भी सहा नहीं जाता है। कपड़ा के घिसट लगने के डर से सामने के तर्फ झुंका रहता है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

लाइकोपोडियम।

LYCOPODIUM.

यह एक प्रधान ऐन्टिसोरिक, अर्थात खाज खुजली के विष को दूर करने वाला औषध है। इस का असर बहुत गहरा वा दीर्घकाल स्थाई होती है, इस लिये इसको बार २ प्रयोग करना नहीं चाहिये।

शिशु वो वृद्ध व्यक्ति के लिये यह विशेष उपयोगी औषध है। शरीर के ऊपर अंग शीर्ण, सूखा वो निम्नांग शोथयुक्तः

बुद्धि तेज लेकिन मांसपेशी ढीला: शरीर वो चेहरा अकाल वृद्ध की तरह; शिशु के शरीर शीर्ण वो दुर्ब्बल किन्तु सिर बड़ा; स्वभाव चिड़चिड़ाहा: दिनभर रोता रहता है लेकिन रात भर सोया रहता है ।

दहिना अंग में पीड़ा वा पहले दहिना अंग में पीड़ा हो कर बायां अंग में फैलना लाइकोपोडियम का अति मूल्यवान लक्षण है । किसी प्रकार की पीड़ा, जैसे टौन्सिल के प्रदाह, पहले दहिना तर्फ में आरम्भ हो कर बायां तर्फ में फैल जाना; ऐसा कि दहिना चरण गर्म्म व बायां चरण ठन्ढा रहना; अथवा एक्जिमा, फोड़ा ;इत्यादि किसी प्रकार के इरपशन पहले दहिना तर्फ में हो कर पीछे बायां तर्फ में होना; ऐसी हालतमें लाइकोपोडियम द्वारा उपकार मिलेगा । प्रथम दहिना फेफड़े में निउमोनिया हो कर बायां फेफड़ामें फैलने से लाइकोपोडियम का प्रयोग से आश्चर्य्यजनक फायदा होता है । दहिना तर्फ का हर्निया रोग में लाइकोपोडियम अति उत्कृष्ट औषध है ।

पेट—फूलना लाइकोपोडियम का एक सिद्धिप्रद

लक्षण है। नीचला पेट अधिक फुलता है। चायना में सारा पेट वो कार्वो—भेज में ऊपर वाला पेट अधिक फूलता है। पेट में नाना प्रकार के शब्द होता है।

लाइकोपोडियम के रोगी को भुख बहुत होता है लेकिन सामान्य एक दो ग्रास भोजन करने ही से पेट भर जाता है, पेट में दर्द होता है। कभी २ अत्यन्त भूख होता और पेट में दर्द होता है। कभी २ अत्यन्त भुख होना और भुख न होना पार्य्यायक्रम से होते देखा जाता है।

कब्ज—नक्स—भोमिका की तरह लाइकोपोडियम में भी बार २ मलत्याग की चेष्टा होती है। इन दोनों का फर्क यह है कि नक्स-भोमिका में अंतरी के अनियमित हरकत (irregular peristaltic action) से वैसा होता है लेकिन लाइकोपोडियम में मलयत्याग-काल में मल-द्वार के संकोचन के हेतु मलत्याग नहीं कर सकता है। अतिसार वो पेचीश रोग में मल-द्वार में ठंढ मालुम होने से लाइकोपोडियम विशेष उपकारी है।

यकृतपीड़ा में पेटफूलना, कब्ज इत्यादि लक्षण प्रायः वर्त्तमान रहता है; उसमें लाइकोपोडियम अति उत्तम है। लाइकोपोडियम के यकृत बढ़ने के बदले में संकुचित होता है।

अम्ल पीड़ा-खट्टा स्वाद, खट्टा ढेकार, छाती में ज्वाला जी पचपचाना, खट्टा कै। पेशाव मे लाल रंग के रेत की तरह गाद पड़ना लाइकोपोडियम का विशेष चरित्र है। यदि इस प्रकार के गाद (Sediment) पड़ना शीघ्र आरोग्य न हो तो क्रमशः मूत्रयन्त्र में पत्थरी रोगी (Gravel in the kidney) की उत्पत्ति वा उस से रेनल कलिक (Renal colic) वा मूत्र पत्थरी के कारण शूलदर्द उत्पन्न होता है। उक्त प्रकार के दर्द यदि उदर के दहिना तर्फ में हो तो लाइकोपोडियम महौषध है। शिशु, पेशाव करने के समय चीत्कार करता है। पेशाव सूख जाने से बिछावन के ऊपर लालरंग रेत की तरह चीज दिखाई पड़ती है।

शाम को ४ बजे से ८ बजे के अन्दर पीड़ा की वृद्धि यह लाइकोपोडियम का एक विशेष प्रधान लक्षण है। हेलिबोरस में शाम को ४ बजे से ९ बजे के अन्दर सिरपीड़ा वा सर्दि की वृद्धि, कलोसिन्थ में ४ बजे से ९ बजे के अन्दर शूल-दर्द की वृद्धि होती है। लेकिन लाइकोपोडियम की सर्व्व प्रकार बिमारी ही उक्त समय में वृद्धि पाती है, विशेषतः ज्वर, अजीर्णदोष-जनित पेट-फूलना इत्यादि लक्षण दिन तीसरा पहर में वृद्धि होने से लाइकोपोडियम व्यवहार होता है।

खुश्क सर्दि के हेतु रात में नाक बन्द हो जाता है वो मुंह खोल कर स्वांस लेना पड़ता है (एमन कार्ब, नक्स)। नाक के भीतर चोंइटा पड़ता है (केलि-बाइ)।

निउमोनिया का, दहिना फेफड़े से आरम्भ हो कर बांया फेफड़े में प्रसारित होना। निउमोनिया की शेष अवस्था में जब फेफड़े के भीतर का जमा हुआ बलगम तरल होना शुरु होता है खांसने से मालुम होता है कि छाती तरल बलगम से भरा हुआ है: भयानक स्वांसकष्ट, प्रत्येक बार खांसी के साथ मुंह भर भर के बलगम निकलता है, तथापि कुछ भी आराम नहीं मालूम होता है: प्रति स्वांसप्रस्वांस के साथ नाक के पूरा बार बार फड़कता है तब लाइकोपोडियम के प्रयोग से मंत्र की तरह फायदा मिलता है। निउमोनिया के साथ यकृत की पीड़ा। श्लेष्मा गाढ़ा और हल्दीरंग के और सड़ा या नमकिन स्वादयुक्त, पीब की तरह होना भी लाइकोपोडियम के एक प्रिय लक्षण है।

वृद्ध व्यक्ति की स्मरणशक्ति का क्रमशः कमी हो जाना, इन्द्रीयशक्ति का निस्तेज हो जाना इत्यादि में लाइकोपोडियम अति उत्तम है।

ध्वजभंग (Impotency) लिंग का शिथिल वो छोटा हो जाना। जो युवक अल्प वयस में अत्यन्त स्त्री सहवास अथवा अस्वाभाविक उपाय से शुक्रपात करके उक्तप्रकार के अवस्था प्राप्त हुआ है वो संगम की वहुत इच्छा होने पर भी इच्छा को पूरा नहीं कर सकता है उस में लाइकोपोडियम के प्रयोग से अति उत्कृष्ट फल मिलता है। ऐसी हालत में लाइकोपोडियम की उच्चशक्ति, एक या दो सप्ताह के अन्तर २ प्रयोग करना चाहिये।

योनि-पथ वा भेजाइना (Vagina) खुश्क, रति क्रिया वाद वा समय में उस में ज्वाला। फाइसामेट्रा वा जरायु से वायु निकलना। प्रत्येक वार मलत्याग काल में जरायु से रक्तस्राव होना इत्यादि में भी यह उपकारी है।

अर्द्ध दृष्टि—सिर्फ वस्तुओं का दहिना अंश दिखाई पड़ता है।

लाइकोपोडियम का विशेष चरित्रगत लक्षण मिलने पर यह हृदरोग, गठिया, वातरोग, डिफ्थिरिआ प्रभृति नानाप्रकार के रोग में फलदायक होता है।

शक्ति–३०–२०० । उच्च शक्ति ही अधिक फल प्रद होता है

—:०:—

मैग्नेसिया कार्बोनिका।

MAGNESIA CARBONICA.

अतिसार वा डायेरिया (Diarrhoea) —मल हरा सिवार की तरह वा फेनदार और उसमें वहुत सा छोटे २ अन्डे की तरह चीज होती है। मलत्याग के पहले पेट में भयानक मड़ोड़ वा शूल दर्द से रोगी कुब्ज हो जाता है।

कलोसिन्थ, रिउम, कैमोमिला, मार्क्युरियस इत्यादि औषध के साथ मैग्नेसिया-कार्ब को तुलना करके देखना चाहिये, कारण इन के वहुत लक्षण एकसां है। मैग्नेसिया की तरह कलोसिन्थ में पेट में भयानक शुल-दर्द के साथ रोगी कुब्ज हो जाता है लेकिन कलोसिन्थ का मल खट्टा नहीं होता है, मैग्नेसिया का मल खट्टा वूदार होता है। रिउम में भी मलत्याग के पहले पेट में दर्द वो खट्टा वूदार मल देखा जाता है—किन्तु रिउम के मल कालापन गेडु रंग का वो पतला पानी की तरह और मैग्नेसिया का मल हरा फेनदार वो कादो २ होता है। कैमोमिला में पेट में दर्द व हरा जलवत् मल देखा जाता है। मार्क्युरियस का मल आंवदार वो हरा होता है लेकिन इस में अत्यन्त कुंथना देखा जाता है; मैग्नेसिया में

यह नहीं है। मार्कुरियस के रोगी को बहुत पसीना होता है लेकिन उस से कुछ भी आराम नहीं होता है।

दन्तशुल में मार्क्युरियस के साथ मैग्नेसिया के कुछ सादृश्य है। दोनों का दर्द रात में बढ़ता है। मार्क्युरियस का दर्द बिछावन के गर्म्मी से बढ़ता है लेकिन मैग्नेसिया का दर्द स्थिरभाव से रहने से बहुत बढ़ता है और चल फिर करते रहने से कम होता है। इस प्रकार के दन्तशूल प्रायः गर्भवती स्त्रियों में देखा जाता है।

दूध पीने वाले शिशुओं से दूध अनपच भाव से निकल जाता है।

अम्ल पीड़ा व छाती में ज्वाला, विशेषतः गर्भावस्था में।

बिजली चमकने की तरह स्नायुशूल, स्थिर भाव से रहने में वृद्धि वो चल फिर करने से कम होता है।

ऋतुस्राव के पहले गले में दर्द, जरायु में प्रसव की तरह दर्द व दुर्व्वलता। शयनावस्था में अथवा सिर्फ रात में ऋतुस्राव। चल फिर करने से स्राव बन्द हो जाता है। रक्त काला, अलकतरा की तरह, फांसीला वो धोने से भी कपड़ा से दाग नहीं जाता है।

शक्ति ६—३०—२००।

मैग्नेशिया मिउरियेटिका।

MAGNESIA MURIATICA.

यकृतपीड़ा के साथ इसका कब्ज का स्वाभाविक लक्षण रहने से यह अति उत्कृष्ट फलदायक होता है। मैग्नेशिया-मिउर के मल कठिन भेंड़ारी की तरह, अति कष्ट से निकलता है अथवा मलद्वार में आकर अटका रहता है। कभी २ अत्यन्त जोर से कुंथते २ तब निकलता है। मल-त्याग काल में मल, मल-द्वार में आकर टुट २ कर बड़ि बड़ि हो कर गिरता है (नेट्रक-म्युर, ऐमन-म्युर)।

शिशु दूध पचा नहीं सकता है; शिशु के शरीर शीर्ण वो हड्डियां अपुष्ट (Rickety) होती है।

उपरोक्त प्रकार का मल के साथ दर्द वो आक्षेपयुक्त ऋतुस्राव, और आक्षेपयुक्त हिष्टिरिया रोग देखा जाने से भी यह उपकारी होता है।

सिरदर्द—खुब जोर से मस्तक को दवा कर रखने से अथवा गरम कपड़ा से मस्तक को अच्छी तरह से बान्ध कर रखने से आराम होता है।

मुह से फेनदार थुक निकलना; ढेकार में सड़े अन्डे की अथवा प्यांज की बू आती है।

रोगी स्थिरभाव से लेटने से दिल धड़कता है, चल फिर करने से आराम होता है।

यकृत दर्द के साथ बढ़ा हुआ वो कठिन और उस के साथ पूर्व्वोक्त प्रकार का मल; जीभ में दांत के छाप पड़ना; दहिना कर लेटने से वृद्धि इत्यादि लक्षण इस में प्रधान है।

शक्ति ३—६—३०—२०० ।

——:o:——

मैग्नेशिया फसफोरिका।

MAGNESIA PHOSPHORICA.

स्नायविक दर्द (Neuralgia) के लिये यह अति उत्कृष्ट औषध है। कतरना, सुई चुभना, तीर भोंकना बिजली चमकना इत्यादि की तरह नाना प्रकार के दर्द इस में देखा जाता है। दर्द बिजली की तरह अचानक आकर चला जाता है। असहनीय दर्द के हेतु रोगी अस्थिर हो जाता है। दर्द अचानक स्थान बदलता है। इस प्रकार का

दर्द प्रायः पेड़ु वो उदर में देखा जाता है। शिशुओं का उदरशुल में यह कैमोमिला वो कलोसिन्थ की तरह उपकारी है। ऋतु की गड़बड़ी के साथ जरायु में ऐंठनेवाला दर्द देखा जाने से यह विशेष फायदा करता है। रोगिणी के ऋतुस्राव होना शुरु होने ही से कष्ट की कमी होती है। (लैकेसिस)।

गरम प्रयोग से आफियत होना—मैगनेशिया-फस का अति प्रिय लक्षण है। आर्सेनिक में गरम प्रयोग से आफियत होता है लेकिन आर्स के वैसा ज्वाला मैग्नेशिया में नहीं है।

मुखमन्डल के स्नायविक दर्द (Facial Neuralgia) में भी यह उपकारी है। फलतः शरीर की सब जगह के आक्षेपयुक्त स्नायविक दर्द में यह महोपकारी औषध है।

सिर पीड़ा—सिर के पश्चात् भाग से शुरू हो कर सिर के ऊपर तक प्रसारित होता है।

दंतशूल—ठन्ढ प्रयोग से वृद्धिः गरम प्रयोग से कमी।

राइटार्स कैम्प (Writer's cramp) वा लिखते २ अंगुली में ऐंठन होने में यह विशेष फलदायक है। वेहाला,

पियानो (Piano) इत्यादि बजाने वाले के अंगुली में ऐंठन ।

दांत निकलने के समय शिशुओं के ज्वर रहित फरका में यह उत्तम है ।

शीतल जल में या भींगा मिट्टी से काम करने के हेतु पीड़ा में यह कैलकेरिया की तरह फलदायक है ।

शक्ति ६X—६-३०—२०० ।

——:o:—

मेडोरिनम ।

MEDORRHINUM.

यह औषध गनोरिया रोगी के बीज (Virus) से बना है। गनोरिया पिड़ा लुप्त होकर किसी प्रकार की प्राचीन पीड़ा होने से इसका प्रयोग हो सकता है । प्राचिन वात-रोग में यह महोपकारी औषध है, विशेषतः गनोरिया पीड़ा लुप्त होकर वातरोग होने से। जोड़ों में वातरोग। जिस वातरोग का दर्द सिर्फ दिन में अतिशय वृद्धि पाता है उस में यह महौषधि है।

बहुत परिमाण से काला वो ढेलेदार रजो, स्राव कपड़ा

से हाथ उठाना कठिन होता है; हिलने डोलने से जोर के साथ जरायु से रक्तस्राव। ऋतु के समय जरायु में दर्द। स्तन की घुन्डी में जरासा भी छूना वर्दास्त नहीं होता है। ऋतुस्राव के समय सिर्फ स्तन या घुन्डी को ठन्ढा होना।

समस्त रीढ़ में स्पर्शासहिष्णुता वा छूना वर्दास्त न होना।

सर्व्वदा पैर में अत्यन्त अस्थिरता वा कंपाहट।

हाथ पैर में अत्यन्त ज्वाला।

सिर्फ दिवाभाग में सर्व्व प्रकार की तकलीफ की वृद्धि।

शक्ति—२००।

——:o:——

मेलिलोटस एल्बा।

MELILOTUS ALBA.

शरीर का किसी यन्त्र वा अंग के कौनजेश्न (Congestion) वा रक्ताधिक्य; रक्तस्राव होने से ही कम होने से यह महौषधि है। जैसे पहले चेहरा रक्तवर्ण वा घुरघुरी के दपदपाहट के साथ सिरपीड़ा होते २ नाक से रक्तस्राव होने पर

हो सिरपीड़ा की कमी होती है । प्रत्येक यन्त्र से रक्तस्राव होने के पहले चेहरा लाल होता है । गले से रक्तस्राव ।

कब्ज—मलद्वार में अत्यन्त धकधकाना के साथ दर्द वो संकुचित अवस्था । बहुत सा मल इकट्ठा न होने से पैखाना के वेग ही नहीं होता है ।

शक्ति १—३—६—३० ।

—:o:—

मिलिफोलियम ।

MILLEFOLIUM.

यह रक्तस्राव के लिये एक मूल्यवान औषध है । फेफड़ा, ब्रंकस, मुंह, नाक, पाकस्थली, मूत्रस्थली, मलद्वार, जरायु इत्यादि किसी स्थान से वगैर दर्द के पतला वो बहुत परिमाण चमकीला लाल रक्तस्राव होने से यह महौषध है । इपिकाक के स्रावित रक्त लाल है किन्तु इपिकाक के वैसा मतली, मिलिफोलियम में नहीं है । एकोनाइट के स्रावित रक्त चमकीला लाल होता है किन्तु एकोनाइट का वैसा व्याकुलता वो मृत्यूभय इस में नहीं है ।

जखम से रक्तस्राव, नस्तर करने से वा आघात से रक्तस्राव।

यक्ष्मारोग, के प्रारम्भ में रक्तस्राव, अर्श से रक्तस्राव पेपुर्ज किस वा किसी स्थान की रक्तनली का फट जाने से रक्तस्राव।

पेशाव के साथ रक्तस्राव होकर पैर का तलवा में चकति की तरह जम कर रहता है।

शक्ति—१-३-६-३०-२०० ।

मार्किउरियस ।

MERCURIUS

इस दवा का **मुंहका लक्षणसमूह** अति सिद्धिप्रद है। किसी किस्म की पीड़ा हो, मुंह का लक्षण मिलने से, उसमें मार्किउरियस द्वारा फायदा होता है। दांत के मसूड़ा फूला, स्पजं की तरह (Spongy); उसमें से रक्तस्राव होता है। जीभ बहुत मोटा और दांत के छापयुक्त; मुंह से अत्यन्त लार निकलता है। मुख गीला किन्तु अत्यन्त प्यास होता है। (पलसेटिला का मुख वो जीभ शुष्क किन्तु प्यास बिल्कुल

नहीं होता है)। लार नमकीन, साबुन की पानी की तरह या गाढ़ा श्लेश्मा की तरह। मुंह वो स्वांसप्रस्वांस अत्यन्त दुर्गन्धी। जीभ में लाल या सफेद रंग के जखम। इस प्रकार के लक्षण पर दो एक खुराक मार्किउरियस प्रयोग करने ही से आशातीत फल मिलता है।

उपरोक्त लक्षण के ऊपर डिफथिरिया, टौन्सिलाइटिस, कर्णमूल-प्रदाह इत्यादि रोगों में इस से आश्चर्यजनक उपकार होता है। टौन्सिल फूला वो उस में पीब होने का आदतः ऐसी हालत में इस को उच्चशक्ति का एक खुराक प्रयोग करके धीरता के साथ इन्तजार करने से रोगी शीघ्र २ आरोग्य लाभ करता है किन्तु निम्नशक्ति के मार्किउरियस के बार बार प्रयोग से टौन्सिल में पीब पैदा हो जाता है।

दन्तशूल में धकधक दर्द; फाड़ डालने की तरह तीर भोकने की तरह दर्द मुखमण्डल वो कान तक प्रसारित होता है। सर्द हवा, सन्ध्याकाल के वायु, बिछावन की गर्मी, ठन्ढ लगना अथवा गर्म्मी लगना इत्यादि से दंतपीड़ा की वृद्धिः गाल पर हथेली रगड़ने से आफियत बोध होती है। दांत के मुकुटभाग का खिया जाना वो मूलभाग का अच्छा रहना (मेजिरिअम में दांत का मूलभाग के क्षय होता है किन्तु मुकुटभाग अच्छा रहता है)।

अत्यन्त पसीना होना किन्तु उससे कुछ भी आराम मालुम न होना—यह भी मार्किउरियस का विशेष प्रधान लक्षण है। ज्वर, गले के दर्द, ब्रोंकाइटिस, निउमोनिया, वातरोग, फोड़ा इत्यादि कोई रोग हो उस में यह लक्षण देख पाने से मार्किउरियस के प्रयोग में जरा सा भी देर नहीं करना चाहिये! इस के सिवाय **शीत बोध होना** मार्किउरियस के और एक प्रिय लक्षण है। रोगी ख्याल करता है कि शीत उस का शरीर के ऊपर से कीड़ा की गति से चल रहा है। ब्रोंकाइटिस, गला के जखम, सर्दि इत्यादि रोग होने का पहले ऐसा शीत देखा जाता है उक्त प्रकार के शीत प्रायः सन्धया के समय से शुरू होकर रात में वृद्धि पाता है। पर्य्यायक्रम से शीत और गर्मी। फोड़ा किम्वा उक्त प्रकार के प्रदाह-स्थान में उक्त प्रकार के शीत बोध होने से मार्किउरियस का प्रयोग से अति उत्तम फल होता है। यदि फोड़ा में पीवसंचय होने के बाद निम्नशक्ति के मार्किउरियस के प्रयोग किया जाय तो शीघ्रगति से फोड़ा में पीव पैदा होकर उस को फटा देता है। और पीव पैदा होने के पहले दो एक खुराक उच्चशक्ति के मार्किउरियस का प्रयोग से वहुत परिमाण से पसीना होकर प्रदाह वा फूलन कम हो जाता है वो रोगी आरोग्य लाभ करता है।

रात में वो बिछावन की गर्म्मी से पीड़ा की वृद्धि होना भी इस का खास लक्षन है।

रक्तामाशय (Dysentery) रोग में यह एक अमूल्य ओषध है। आंव के साथ खूनमिला हुआ मल; पेट में अत्यन्त मड़ोड़; मलत्यागकाल में वो मलत्याग के वाद भयानक कुंथना। मलत्याग के वाद भी वहुत देर तक कुंथना पड़ता है (नक्सभोमिका में मलत्याग के वाद ही सब यन्त्रना दूर हो जाता है)। कुंथने के साथ शीतबोध। (आंव के साथ ज्यादा खुन रहने से मार्क-कर देना चाहिये)। जितना पानी पीता है पेशाव उस से अधिक होता है।

म्युकस झिल्ली के ऊपर इस की विशेष क्रिया देखी जाती है। पहले पहल म्युकस झिल्ली से पतला जखम पैदा करने वाला स्राव होता है। वाद वह स्राव गाढ़ा हो जाता है और उस से ज़ख्म पैदा नहीं होता है। इस प्रकार के स्राव नाक; मलद्वार, यानि इत्यादि किसी स्थान से हो सकता है। नाक में सर्दी होने से अत्यन्त छींक आता है और नाक से जखम पैदा करने वाला पतला स्राव होता है।

श्वेतप्रदर (Leuchorrhoea) के स्राव के साथ

योनि में ज्वाला वो खुजलाहट (सल्फर); स्राव जखम पैदा करने वाला वो रात में अधिक होता है।

गर्भावस्था में मतली; लार से तकिया भींग जाता है (लैकटिक-एसिड) स्तन में दर्द होता है। प्रत्येक ऋतु का समय ही स्तन में जखम सा दर्द (कोनायम, लैक-कैन)। ऋतु के बदले में स्तन में दूध दिखाई देता है।

कान के पीव रक्तमय, वो दुर्गन्धी; कान में छुरी भोंकने की तरह दर्द; दहिना तरफ की पीड़ा, रात में वृद्धि।

नाक से रक्तस्राव (Epistaxis)—खांसते समय या सोने में नाक से रक्तस्राव; रक्त काला और ढेला २ या रस्सी की तरह गाढ़ा रक्त नाक के साथ लटकता रहता है।

खांसी—खुष्क, दुर्व्वलता-उत्पादक वो कष्ट दायक, रात में वा बिछावन के गर्मी से उसकी वृद्धि। रोगी दहिना कर लेट नहीं सकता है। निउमोनिया; छाती के निम्न भाग से टीस पीठ तक पहूंचता है। निउमोनिया के बाद फेफड़े में पीव होना।

गनोरिया रोग में यह अति उत्तम औषध है। पीव

हरापन; पेशाव के अत्यन्त वेग; पेशाव का अन्त में ज्वाला रात में पीड़ा की वृद्धि । फाइमोसिस; प्रिपिउस वा लिङ्ग मुन्ड फूला, गर्म वो दर्द के साथ ।

उपदंश रोग में भी यह महोपकारी औषध है। पीव की तरह दुर्गन्धी स्राव; रात में रोग की वृद्धि और बहुत परिमाण से पसीना होना इसका विशेष लक्षण है ।

यकृत-पीड़ा में यह मूल्य वान औषध है। यकृत की वृद्धि; यकृत में दर्द; पीलापन सफेद मैलयुक्त जीभ; उस पर दांत का छाप पड़ता है। मसूढ़े फूला वो क्षतयुक्त। स्वांसप्रस्वांस दुर्गंधी । आंख वो शरीर पीला, दहिना कर लेट नहीं सकता है। मल कादो की तरह, कुछ पीलापन हरा। यह शिशुयकृत के लिये एक प्रधान औषध है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

मार्किउरियस करोसाइभस ।

MERCURIUS CORROSIVUS.

रक्तामाशय में यह एक महौषध है। लगातार

कुंथना इस का खास लक्षण है। मलत्याग होने से भी कुंथना दूर नहीं होता है। इस प्रकार के कुंथना मूत्रस्थली तक प्रसारित होता है यानि अत्यन्त कुंथने के साथ बुन्द २ से पेशाब होता है वो मूत्रनली में ज्वाला होता है। मल गर्म्म: अल्प, आंवदार व ज्यादा खून मिला हुआ व दुर्गन्धी। आंत्र से रक्त का परिमाण अधिक होता है। पेट में मड़ोड़।

शिशु-उदरामय—मल घास की तरह हरा, बहुत परिमाण वो मलद्वार में जखम पैदा करने वाला होता है।

गणोरिया की द्वितीयावस्था में हरा पीव निकलना: रात में वृद्धि: पेशाब का अत्यन्त वेग के साथ मूत्रनली में ज्वाला।

शक्ति ३०—२००।

मार्किउरियस सायेनाइड।

MERCURIUS CYANIDE.

डिफथिरिया रोग में यह महौषध है। गले के भितर भाग लाल वर्ण होना, घोंट लेने में अत्यन्त कष्ट होना:

गला वो मुख के भीतर जगह २ पर झिल्ली की तरह चीज दिखाई पड़ती है। दुर्गन्धी, गलित अवस्था के (Gangrenous) डिफथिरिया। अत्यन्त दुर्ब्बलता इस दवा का प्रधान लक्षण है।

गला के जखम, गायक, कथक, वक्तृताकारियों का कठिन स्वरभंग में इस के प्रयोग से अकसर फल लाभ होता है।

शक्ति ३—६—३०।

——:o:——

मार्किउरियस प्रटो-आइयोडाइड।

MERCURIUS PROTO-IODIDE.

जीभ का मूलदेश हल्दीरंग का मोटा मैलयुक्त, अग्रभाग वो दोनों पार्श्व फीका, उस में दाँत का छाप भी रह सकता है—यह इस दवा का प्रधान लक्षण है। इस प्रकार का जीभ देख पाने से डिफथिरिया, पाकस्थली वो यकृत इत्यादि की पीड़ा में मार्क-प्रटो के प्रयोग से विशेष उपकार मिलेगा।

डिफथिरिया वा गला के जखम में गर्दन के ग्लैन्डस (गिल्टियाँ) बहुत बढ़ जाता है। दहिना तरफ की पीड़ा

(लाइको)। मुह में दुर्गन्ध, गरम पानिय से घो घोंट लेने में अतिशय कष्ट होता है। इस के साथ पूर्व्वोक्त प्रकार के जीभ रहने से इस दवा का प्रयोग में जरा सा भी देर न करो।

प्रकृत उपदंश रोग में इस दवा की उच्च शक्ति के व्यवहार से बहुत फायदा होता है।

शक्ति ६—३०—२००।

मार्किउरियस विन-आइयोडाइड।

MERCURIUS BINIODIDE

बायां पार्श्व का डिफथिरिया वो ग्लैन्डस की पीड़ा समूह: गला के भीतर बेगनी रंग: कोइ चीज निगलने में अत्यन्त कष्ट। टौन्सिल वो गला के भीतर जखम। गला के भीतर सब्जापन कठिन श्लेष्मा का जमा रहना। टिउबर कुलार फेरिंजाइटिस (Pharyngitis) इत्यादि में यह फायदा देता है।

शक्ति १२—३०—२००।

—–o––

मेज़िरीयम ।

MEZERIUM.

यह एकज़िमारोग का एक अति उत्तम औषध है टीका देने के बाद एकज़िमा अथवा खुजली होता है एकज़िमा में भयानक खुजलाहट होता है। स्पर्श से वं बिछावन में लेटने से वृद्धि होती है। एकज़िमा से बहु परिमानसे पतला रस निकलता है। शिशु सर्व्वदा खुजलाते रक्त निकाल देता है। रात में वृद्धि। मुखमण्डल का एक ज़िमा प्रदाहयुक्त वो लालवर्ण होता है।

हड्डी के दर्द के लिये भी यह अति फलदायक औषध है। लम्बा अस्थिसमूह में विशेषतः टिबिया अस्थि में भयानक दर्द। रात में दर्द की वृद्धिः दर्द ऊपर से नीचे के तरफ चलता है। पारा के अपव्यवहार, ऊपदंश जनित केरिज (अस्थि में ज़खम) होना, अस्थि का टिउमर में पीव होना। रात में बिछावन की गर्म्मी से वा गीली हवा से वृद्धि।

दन्तपीड़ा में यह अति उपयोगी औषध है। दांत में दर्द, दांत में केरिज (क्रियोज़ोट): कोइ चीज़ चिबाने से

वा जीभ से दांत को स्पर्श करने से मालुम पड़ता है कि दाँत अतिशय लम्बा हो गया है। रात में वृद्धि; मुंह खोल कर स्वांस लेने से आराम मालूम पड़ता है। दांत का मूलदेश के क्षय हो जाता है।

सामान्य दिक होने ही से सिर दर्द होता है। सामान्य स्पर्श से ही दर्द होता है। दहिना तर्फ के दर्द। सिर की हड्डी में दर्द।

मस्तक में चमड़े की तरह मोटा खुरन्द पड़ता है और उसके नीचे गाढ़ा सफेद पीव उत्पन्न होता है। बाल उक्त प्रकार के पीव से इकट्ठे होकर जटा की तरह हो जाता है। पीव दुर्गन्धी होता है और उस में कीड़ा पैदा होता है।

मुखमन्डल का स्नायुशुल Facial Neuralgia: भोजन के समय वो भोजन से उक्त पीड़ा की वृद्धि होना है। मुखमण्डल को आग के पास रखने से आराम बोध होता है। गर्म्म सेंक से आफियत।

क्षतादि में भी यह अति उपकारी औषध है। क्षत में भयानक दर्द। क्षत के चारो ओर बहुत सा फुन्सियां और उस में खुजलाहट वो ज्वाला होता है। क्षत के चारो ओर

लाल वर्ण । क्षतस्थान में कपड़ा सट जाता है । और कपड़ा को अलग करने से खुन निकलता है ।

जखम के उपर पीला रंग का मोटा खुरन्ट पड़ता है। और उसके निचे गाढ़ा, पीलापन पीव रहता है।

शक्ति १—३—३० - २०० ।

——:०:——

मिउरेक्स ।

MUREX.

जननेन्द्रिय के ऊपर इस की सर्व्व प्रधान क्रिया देखी जाती है। जननेन्द्रिय के ऊपर सामान्य स्पर्श से ही सहवास की इच्छा भयानक प्रबल होती है। सर्व्वदा सहवास की बहुत इच्छा होती है। जरायु-स्थान में जखम सा दर्द; जरायु में एक प्रकार के भाव होता है जिसे वह कह नहीं सकता है ।

जरायु में प्रसवकी तरह दर्द, मालूम होता है कि

पेट में से सब चीज योनी द्वार से वाहर निकल जायगी। इस कारण रोगिणी जांघ को दवा कर बैठती है।

ऋतुस्राव असमय, पूरा समय के कवल, वहुत परिमाण से वहुकालस्थाई वो वड़े २ ढेले के साथ होता है।

शक्ति ६—३०।

मिउरिएटिक एसिड।

MURIATIC ACID.

यह टाइफायेड ज्वर में वलकि सर्व्व प्रकार की पीड़ा की टाइफायेड अवस्था में अति उपकारी औषध है। यह प्रायः कार्बो-भेज का समतुल्य है। शरीर के मध्यस्थ तरल पदार्थ समूह की सड़ी हालत; मल कालां वो पतला अथवा मलद्वार से काला, पतला रक्तस्राव होता है। वेहोशी में मलत्याग। पेशाव करते समय मलत्याग कर डालता है। मुंह में कालापन नीला रंग के जखम। रोगी सम्पूर्ण वेहोश। रोगी गूंगुआता है और दुर्व्वलता के हेतु विछावन से पैर के तरफ घसक जाता है। नीचला चहु लटक जाता

है, जीभ सून वो सूखा चर्म्म की तरह वो स्वभाविक से बहुत छोटा हो जाता है। नाड़ी अत्यन्त दुर्व्वल वो सवि-राम। दिल का धड़कन, मुखमन्डल में मालूम पड़ता है। यह अति भयानक अवस्था है। इस अवस्था में मिउर-एसिड मन्त्रौषधी की तरह उपकार करता है।

बवासिर में भी मिउरिएटिक-एसिड व्यवहार होता है। अर्श के मस्से फूला वो नीला रंग और उस में जरासा भी स्पर्श सहा नहीं जाता है, ऐसा कि सामान्य कपड़ा का स्पर्श भी बरदास्त नहीं होता है। मूत्रकाल में अर्श के मस्से निकल परता है। गरम पानी के प्रयोग से आफियत होती है।

कांच निकलना—अति सहज ही से ऐसा कि वायु त्याग करने के समय मलद्वार बाहर निकल पड़ता है।

मूत्रस्थली की दुर्व्वलता, पेशाव अति धीरे २ निकलता है, पेशाव करने में बहुत देर लगता है। पेशाव के समय कुंथते २ कांच निकल पड़ता है।

अतिसार—मूत्रत्याग-काल में वेखबरी से मल निकल

पड़ता है। यह टाइफायेड का ही आनुसंगिक लक्षण है।
सिहुली वो एकजिमा रोग में भी यह फलदायक है।

शक्ति ३०—२०० ।

मस्कस ।

MOSCHUS.

यह विशुद्ध कस्तुरी से बनती है।

यह हिष्टिरिया रोग में महोपकारी औषध है। हिष्टिरिया के कारण सीने में ऐंठन; स्नायवीय उत्तेजना हेतु सीने में दमे बन्द होने के ऐसा दबावबोध; विशेषतः हिमाग अवस्था में; दिल-धड़कना। रोगी कभी तो विकटभाव से हंसता है और कभी रोता है और कभी गाली देता है। और नीला व आंख फैली हुई होती है; आखिरकार रोगिणी मूर्च्छित वो अज्ञान हो कर गिर जाती है।

ठंढ और शीत बोध—इसका एक विशेष लक्षण है। स्नायवीय अथवा आक्षेप युक्त रोग में रोगी अत्यन्त शीत बोध करता है और कांपता है।

नेट्रम कार्बोनिकम ।

NATRUM CARBONICUM.

यह औषध मामूलि सोडा (Soda) से बनता है। यह अत्यधिक मानसिक परिश्रम या चिन्ता से सिर पीड़ा, सिर चकराना, मूर्छा इत्यादि होने से निहायत फलदायक होता है। मानसिक परिश्रम से पीड़ा की वृद्धि - इस का विशेष लक्षण है। उक्त प्रकार के सिरदर्द सूर्य्य का उत्ताप से भी वृद्धि होता है। सूर्य्य का उत्ताप से पीड़ा की वृद्धि में यह औषध लैकेसिस, ग्लोनइन इत्यादि के सदृश फलप्रद है। ग्रीष्मकाल में थकावट वो दुर्व्वलता की उत्पत्ति होती है।

अत्यन्त मानसिक दुर्व्वलता। रोगी सर्व्वदा नाना प्रकार के दुःख की चिन्ता से भावित रहता है। गाना बजाना से रोगी को ठीक होता है।

पेडु में प्रसवके दर्द की तरह दर्द होना भी नेट्रम-कार्ब में देखा जाता है। यदि इस लक्षणके साथ नेट्रम-कार्बका खास मानसिक लक्षण देखा जाय तो नेट्रम-कार्ब को व्यवहार करना कर्त्तव्य है।

फिल्ली (Ankle) के जोड़ में दुर्व्वलता; रोगी अच्छी तरह से चल नहीं सकता है; इस लिये नेट्रम-कार्ब एक उत्तम औषध है।

शक्ति ६—३० ।

—:o:—

नेट्रम मिउरिएटिकम !

NATRUM MURIATICUM.

यह हमलोगों का नित्य व्यवहार का नमक है। रक्तालपता के लिये यह एक महौषध है।

रक्तालपता; अत्यन्त रक्तस्राव, ऋतु की गड़बड़ी अत्याधिक शुक्रपात, शोक, दुःखादि मानसिक कष्ट इत्यादि किसी कारण से ही रक्तलपता (Anaemia) हो, नेट्रम-म्युर व्यवहार हो सकता है। नेट्रम की रक्तालपता में रोगी के शरीर फीका हो जाता है वो रोगी अच्छी तरह पान भोजन करने से भी उसका शरीर सूखता जाता है। हथौड़ी की आघात की तरह सिरपीड़ा, दम फूलना विशेषतः सीढ़ी से ऊपर चढ़ने के समय अथवा और किसी प्रकार के परिश्रम करने के समय। ऋतुस्राव अतिशय अल्प होता है और कब्ज रहता है। उपरोक्त लक्षण समूह के साथ नेट्रम में पलसेटिला की तरह गमगीनी और रोने का स्वभाव देखा जाता है। किन्तु नेट्रम के रोगी को पलसेटिला की तरह तसल्ली देने से शांत नहीं होता है वल के उससे उसका रोना इत्यादि और बढ़ जाता है। इस प्रकार की रक्तालपता के साथ दिल-धड़कना देखा जाता है।

सीरपीड़ा—नेट्रम-म्युर पुराना सिरपीड़ा का एक महौषध है। इस प्रकार धकधकाना के साथ सिरपीड़ा होता है कि वेलाडोना को प्रयोग करने की इच्छा होती है लेकिन ख्याल रखना चाहिये कि वेलाडोना का आंख और चेहरा चमकीला लाल होता है और नेट्रम का चेहरा फीका अथवा सामान्य लाल होता है। स्त्रियों के ऋतुस्राव के वाद उक्त प्रकार के सिर पीड़ा होने से नेट्रम-म्युर अति उत्तम है (चायना)। पढ़नेवाली वालिकायों का सिरपीड़ा में नेट्रम-म्युर अति उपकारी है। (कैल्क-फस)। रक्तहीन पढ़नेवाली वालिकायों का सिर दर्द नेट्रम से आराम न हो तो कैल्क-फस देना चाहिये। वहुत काल तक एक दृष्टि से ताक कर पढ़ने से वा सोने से सिर दर्द में, नेट्रम-म्युर वो कैल्क-फस दोनों अच्छा है।

मुख से मलद्वार तक सारी अन्ननली में ही नेट्रम की विशेष क्रिया देखी जाती है। नाइट्रिक-एसिड की तरह इस में भी ओष्ठ वो मुख के कोण क्षतयुक्त वो फटा फटा देखा जाता है, मलद्वार भी क्षतयुक्त वो फटा फटा होता है और कभी कभी उस में से रक्तस्राव होता है। ग्रैफाइटिस में भी यह लक्षण है। लेकिन उस में एकजिमा रोग की प्रवलता देखी जाता है। नेट्रम का मुख तर रहने पर भी रोगी के मुह में खुष्की वा प्यास होता है। मार्किउरियस

में गीली जीभ के साथ प्यास; मूह में दुर्गन्ध वो जीभ पर दांत का छाप देखा जाता है। नेट्रम-म्युर के स्वाद पलसेटिला की तरह तीता होता है; किन्तु पलसेटिला में प्यास नहीं है। नेट्रम का रोगी मालुम करता है कि उसका जीभ के ऊपर बाल लिप्टा हुआ है (साइलिसिया)।

सविराम ज्वरमें ज्वर-पक (Feva Blister) यानी ओष्ट के ऊपर मोती की तरह दानें देख पाने से ही नेट्रम को स्मरण कर कारण यह नेट्रम के खास लक्षण है।

जीभ, नाक वो ओष्ट में झिनझिनी होना भी नेट्रम का विशेष लक्षण है। पैत्तिक दोष के कारण यकृत का पुराना दर्द वो परिपाक शक्ति की गड़बड़ी के साथ यह लक्षण प्रायः देखा जाता है। जीभ के और एक लक्षण नेट्रम-म्युर में देखा जाता है। जीभ फटा फटा, और मानचित्र की तरह चित्रबिचित्र दिखाई पड़ता है (टैराक्सेकम, नाइट्रिक-एसिड, आर्स, लैकेसिस)।

नेट्रम का रोगी लगातार खांय खांय करता रहता है। रोगी लगातार यथेष्ट परिमाण से खाता रहता है लेकिन उस से शरीर की पुष्टि न होकर क्रमशः शरीर सूखता जाता है। आइयोडियम के रोगी को भी अत्यन्त भुख के साथ शरीर सूखता जाता है। इन दोनों में विशेषता यह है—नेट्रम

का रोगी आहार के बाद दुर्व्वल व क्लान्त बोध करता है और आइयोडियम के रोगी भोजन के बाद स्वस्थ बोध करता है। नेट्रम के रोगी के पेट में खाना पहुंचते ही पेट में एक प्रकार की तकलीफ वो भारीपन मालूम होता है किन्तु आइयोडियम के रोगी का पेट भरा रहने से ही स्वस्थ रहता है। नेट्रम के रोगी को नमक वो नमकीन चिज खाने को बहुत इच्छा होती है अतिशय प्यास इस का एक प्रधान लक्षण है। **बहुमूत्र** रोग में अतिशय प्यास वो नमक खाने की इच्छा रहने से नेट्रम द्वारा अवश्य लाभ होता है।

कब्ज के लिये नेट्रम म्युर एक महौषध है। इसमें बहुत किस्म का मल देखा जाता है। मल अल्प होता है साफ नहीं होता है ऋतुकाल में कवज; मल बड़ा २ ढेला २ होता है या भेंड़ारी की तरह होता है; मल कठिन; सूखा वो खन्ड २ हो कर निकलता है (ऐमन म्युर, मैगनेशिया-म्युर); मलद्वार की शून्य अवस्था के हेतु कवज (एलुमिना, सेरेट्रम: साइलिशिया) मल द्वार फटा फटा, उस से रक्त निकलना, उस में जख्म सा दर्द होना (नाइट्रिक-एसिड) मलद्वार अत्यन्त खुष्क; ब्राइयोनिया, ओपियम,) कवज के साथ जरायु का टल जाना।

नेट्रम-म्युर कालेरा इन्फेन्टम वो पुराना अतिसार में भी उपकारी है। मल पतला; वायुत्याग के साथ मलत्याग होने से भी मालुम नहीं होता है (ऐलो; औलिएन्डर, पोडो)। शिशु-कालेरा में गर्दन का सूख जाना, वो अत्यन्त भूख वो प्यास रहने से नेट्रम अति उत्तम है।

मूत्र बहुत परिमाण से वो चलते, खांसते वो हंसते समय वेखबरी से निकलता है (जिंकम, कष्टिकम, पलस, सिला) पेशाव के बाद मूत्रनली में तकलीफ वो कतरने की तरह दर्द; मूत्रनली में इस प्रकार की तकलीफ प्रायः पुराना गनोरिया या ग्लीट में, मूत्रनली संकुचित (Stricture) होने से देखा जाता है। ग्लीट में पानी की तरह पतला पीव-स्राव होता है। कोई आदमी निकट में रहने से सहज से पेशाव नहीं होता है, बहुत देर तक बैठा रहना पड़ता है (एसिड-म्युर)।

प्रसव की तरह दर्द; प्रातःकाल में वृद्धिः मालूम होता है कि पेट से सब चीज योनिद्वार के राह से निकल जायगी। यह सिपिया का भी एक विशेष लक्षण है। यदि उक्त प्रकार का दर्द के साथ नेट्रम-म्युर का कब्ज वो मलपथ का लक्षण

समूह यो मानसिक लक्षण वर्त्तमान रहे तो नेट्रम-म्युर से अवश्य फल मिलेगा। जरायु का इस लक्षण के साथ प्रायः कमर में दर्द होता है और दर्द चित होकर लेटने से कम होता है (रस-टक्स)।

दिल के ऊपर भी नेट्रम-म्युर की विशेष क्रिया देखी जाती है। दिल में निहायत दुर्बलता बोध, दिल धड़कना, लेटने से वृद्धि। दिल-धड़कना के साथ शरीर कांपता है (स्पाइजि)। दिल का स्पन्दन बेकायदा और कभी २ नागा हो जाता है। कम खून के मनुष्यों जिनका शरीर अतिशय, शुक्रक्षय, रक्तक्षय, मानसिक शोक दुःख इत्यादि कारण से अत्यन्त दुर्ब्बल हो गया है उन का दिल की ऐसी हालत होने से नेट्रम अति उपयोगी है।

सविराम ज्वर के लिये नेट्रम एक महौषध है। जो ज्वर कुइनाइन सेवन से दब कर पुराना हो गया है, उस में नेट्रम अति उत्तम क्रिया करता है। दिन १० बजे से ११ बजे के अन्दर शीत हो कर ज्वर होना नेट्रम का विशेष स्वभाव है। ज्वर के सब तकलीफ बहुत परिमाण से पसीना होने से कम होती है।

नाखून का कुणाख रोगमें भी नेट्रम द्वारा लाभ होता

है; रोगी के अंगुलियों में झिनझिनी बोध; पैर के जोड़ों में दुर्ब्बलता वो अकड़ाव मालुम होना। मेरुदन्ड में अत्यन्त स्पर्शासहिष्णुता के साथ शाखाओं में दुर्ब्बलता, दिल धड़कना मेरुदन्ड का उक्त प्रकार के दर्द जोर से दबाने से कम होता है।

पुरुषाङ्ग की दुर्ब्बलता के हेतु संगम के समय शुक्र नहीं निकलता है; अत्याधिक रति क्रिया के हेतु ध्वजभंग; लकवा; संगम की अतिशय इच्छा किन्तु बहुत जल्दी शुक्रपात होना। सिलभार-नाइट्रेट से किसी स्थान का जला देना व शोक; दुःख, भय, क्रोध इत्यादि के हेतु पीड़ा की उत्पत्ति होने से नेट्रम फलदायक होता है।

सिर का बाल का उड़ जाना विशेषतः दूध पिलाने वाली स्त्रियों का।

चेहरा चिकणा, तेल मला हुआ ऐसा दिखाना।

चर्म्म रोग में भी नेट्रम फलदायक है। एक जिमा विशेषतः बाल के जड़ में वो जोड़ों में देखा जाता है। वह फटा फटा व चोइयांदार होता है और उस से जखम पैदा करने वाला रस निकलता है।

शक्ति २०० वीं और उच्च शक्ति।

नेट्रम सल्फ।

NATRUM SULPH.

नया वो पुराना दोनों प्रकार **अतिसार** में हा नेट्रम सल्फ विशेष उपकारी है। सलफर की तरह इसका अतिसार भी प्रातः काल में बढ़ता है। भोर में जागने पर ही सलफर के रोगी को इतना मल का वेग होता है कि भागते भागते उसको पखाना में जाना पड़ता है किन्तु नेट्रम सल्फ में ब्राइयोनिया की तरह निद्रा से उठ कर हिलने डोलने पर पैखाना का वेग होता है। ऐलो की तरह नेट्रम-सल्फ में पेट में गड़गड़ाहट होता है। नेट्रम–सल्फ में चायना, आर्जेन्टम, कैलकेरिया–फस इत्यादि की तरह मलत्याग के साथ बहुत वायुत्याग होता है। पुराना दस्त के साथ यकृत में दर्द व छुना बर्दास्त न होना वो चल फिर करने के समय अथवा सामानय धमक लगने से ही दर्द देखा जाता है। वर्षाकाल में उदरामय की वृद्धि होना नेट्रम सल्फ का एक विशेष लक्षण है।

वर्षाकाल में **दम्मा** रोग की वृद्धि होना नेट्रम-सलफ का एक प्रिय लक्षण है।

गनोरिया में बिना दर्द के, सब्जाभन, गाढ़ा, पीब सा स्राव हो तो नेट्रम-सलफ द्वारा फल मिलेगा।

तरखांसी के साथ छाती में जखम सा दर्द होना

ब्राइयोनिया में भी छाती में इस प्रकार का दर्द है लेकिन ब्राइयोनिया का खांसी सुखा होता है। नेट्रम-सल्फ के रोगी को खांसी के समय इतनी तकलिफ होती है कि वह खांसते खांसते अचानक उठकर बैठता है और छाती को हाथ से दवा रखता है। यह लक्षण प्रायः दम्मा; यक्ष्मा,व पुराना निउमोनिया में देखा जाता है। छाती के दाहिना तरफ में इस प्रकार का दर्द होने से केलि कार्ब वा बायां तरफमें होने से नेट्रम सल्फ उपकारी है।

शक्ति ३०—२०० ।

——:o:——

नाइट्रिक एसिड

NITRIC ACID.

पारा के अपव्यवहार के कुफल के लिये यह अति उत्कृष्ट औषध है। उपदंशादि रोग में पारायुक्त हाकमी वा एलौपैथिक दवाई व्यवहार करने से कुफल हो ता नाइट्रिक-एसिड अति उत्तम है। और किसी प्रकार से

पारा के अपव्यवहार होने से हिपर-सलफर, व कैलकेरिया व्यवहार होता है।

म्युकस झिल्ली के ऊपर नाइट्रिक एसिड की विशेष क्रिया है विशेषतः जहां म्युकस झिल्ली वो चमड़ा मिला हुआ है; मुख का कोण; ओष्ठ मलद्वार इत्यादि फटा फटा और क्षतयुक्त होता है। मुख के भीतर जखम; मुंह से अत्यन्त लार निकलना, मसूढ़ा फूला, मुंह में दुर्गन्ध। इस प्रकार का मुंह का जखम मार्किउरिअस से आराम न हो तो नाइट्रिक-एसिड व्यवहार करना चाहिये। सिफलिस रोग में पारादि के व्यवहार के कारण मुंह में जखम होने से मसूढ़ा फूल जाने से और उक्त रोग गले के भीतर तक फैल जाने से नाइट्रिक-एसिड द्वारा अवश्य फललाभ होगा।

पेशाब में बदबू नाइट्रिक-एसिड का एक प्रधान लक्षण है। नाइट्रिक-एसिड बेनजोइक-एसिड और सिपिया ये तीन दवा में पेशाब में दुर्गन्ध देखा जाता है। बेनजोइक-एसिड का पेशाब गाढ़ा रंग का और तेज गन्धयुक्त है। सिपिया का पेशाब खट्टा बूदार होता है। नाइट्रिक-एसिड का पेशाब का रंग गाढ़ा और उस से घोड़े की पेशाब की तरह बू आती है।

मलद्वार फटा फटा, जखमदार । अर्श वा बवासीर के मस्से का निकल पड़ना और वह फट कर जखम वो रक्तस्राव होना । मल निकलने के समय ऐसा कि नरम मल निकलने के समय भी मलद्वार में अतिशय कष्ट होना, नाइट्रिक-एसिड का और एक विशेष लक्षण है।

आमाशय वा पेचीश रोग । मलत्याग के वाद एक दो घन्टे तक रोगी तकलीफ से वेचैन रहता है। (मलत्याग के वाद ही कष्ट की कमी होने से नक्स; मलत्याग के पहले वा पीछे भी कुंथन रहने से मार्किउरियस)

अतिसार में हरा रंग का आंव निकलना नाइ-ट्रिक—एसिड का एक विशेष लक्षण है । पारादि के अपव्यवहार हेतु प्राचीन उदरामय में यह विशेष उपकारी है। नरम मल त्याग करने में भी अतिशय कुंथना पड़ता है (एलुमिना) मालुम होता है कि मलद्वार फट जायगा; मलत्याग के वाद अकसर कतरने की तरह दर्द होता है।

पीड़ित स्थान में, जखम में, अर्श में गलमध्य इत्यादि में कांटा सा चुभना इसका एक प्रधान लक्षण है (हिपर-सल्फ)।

वह **कन्डाइलोमैटा** के लिये एक उत्तम औषध है।

बहरापन, किन्तु गाड़ी में चलने के समय अच्छी सुनाई देता है (ग्रैफाइटिस)।

जखमादि चारो ओर फैलता जाता है लेकिन गहरा नहीं होता है। जखम से सहज ही से रक्तस्राव होता है। जखम के दानें (Granules) बहुत लाल होते हैं। कंठमाला के रोगी में उपदंश अथवा पारा के अपव्यवहार, पीव पतला तेज और दुर्गन्धी।

चिबाने के समय कान में और चलने के समय जोड़ों में खट खट आवाज होती है।

रक्तस्राव में भी नाइट्रिक एसिड व्यवहार होता है। शरीर का कोई द्वार से चमकीला लाल वर्ण का रक्तस्राव।

टाइफायेड वो अर्श रोग में रक्तस्राव।

शक्ति ३०—२०० और उच्च शक्ति।

— —:o: – —

नक्स मस्कैटा।

NUX MOSCHATA.

यह मन वो ज्ञानोत्पादनकारी स्नायुविधान के ऊपर विशेष भाव से क्रिया प्रकाश करता है। रोगी सर्व्वदा निन्द में वो अचेतन रहता है। इतना गहरी निन्द में पड़ा रहता है कि किसी तरह से उस को जगाया नहीं जाता है (एपिस, एन्टिम-टार्ट, ओपिअम)। एपिस का रोगी अज्ञानावस्था में कभी कभी जोर से चिल्ला उठता है। ओपिअम के रोगी में अज्ञानता के साथ खर्राटेदार स्वांस होता है। नक्स मस्कैटा के रोगी में स्मरणशक्ति की अत्यन्त दुर्बलता या अभाव देखा जाता है। बात करने के समय, लिखने या पढ़ने के समय मन का भाव नष्ट हो जाता है। जाना हुआ रास्ता भी भूल जाता है। कोई विषय में चिन्ता नहीं कर सकता है। सामान्य प्रश्न का जवाब देने में भी सोचना पड़ता है। इस में इगनेशिया की तरह मन का लक्षण बदलना भी देखा जाता है। रोगी एकबार बहुत खुश होता फिर बहुत गमगीन हो जाता है। उपरोक्त मानसिक लक्षणसमूह टाइफायेड शिशु-उदरामय, हिष्टिरिया इत्यादि जो कोई बिमारी में मिले उसी में इस से फल मिलेगा। मूर्च्छा होने की प्रबलता रहने से हिष्टिरिया में इस से बहुत लाभ होगा।

जीभ वो मुंह सूखा रहना किन्तु प्यास न होना इस का एक सिद्धिप्रद लक्षण है। मुंह इतना सूखा होता है कि जीभ, तालू के साथ अंटका रहता है। थुक रूई की तरह होता है। पल्स, एपिस वो लैकेसिस में भी मुंह का इस प्रकार की खुष्की देखी जाती है किन्तु इन में नक्स-मस्कैटा ही सर्व-प्रधान है। टाइफायेड आदि सांघातिक पीड़ा में यह लक्षण देख पाने से अवश्य इस दवा को स्मरण करो।

पेटफूलना विशेषतः आहार के बाद ही पेट में इतनो वायु संचार होता है, कि मालुम होता है, पेट फट जायगा: भोजन करना मात्र ही इस प्रकार का कष्ट होता है (केलिवाइ) (भोजन के दो, तीन घन्टे बाद इस प्रकार होने से नक्स-भोम, एनाकार्ड)। नक्स-मस्कैटा के रोगी जो चीज खाता है वही हवा बन जाता है (केलि–कार्ब)।

अतिसार रोग में भी यह व्यवहार होता है। शिशु कौलेरा में इसका दिमागी लक्षण देख पाने से नक्स-मस्कैटा का प्रयोग में जरा सा भी देर न करना चाहिये। मुंह को शुष्कता के ऊपर भी अवश्य ख्याल रखना चाहिये।

शक्ति ३० २००।

——:※:——

नक्स भोमिका।

NUX VOMICA.

यह कुंचला से बनती है।

पतला, क्रोधी, चिरचिराहा, सावधानी, स्फूर्त्तिबाज, चंचल, हिंसुक, मज़बुत पेशी वाला, झगड़ा करने वालों के लिये यह विशेष उपयोगी औषध है।

नाना प्रकार के मसालेदार, गुरुपाक वस्तु भोजन, ज्यादा कौफी, चाय, गांजा, तम्बाकु, शराब, ऐलोपैथिक दवा इत्यादि सेवन, ज्यादा सहवास इत्यादि हेतु पीड़ाओं में अवश्य नक्स-भोमिका को स्मरण करो। उक्त प्रकार के कारण-हेतु अजीर्ण रोग में यह निहायत उपकारी है।

बहुत होमियोपैथिक चिकित्सक का ख्याल है कि एलोपैथिक वा हकिमी चिकित्सा के बाद रोगी होमियोपैथिक चिकित्सा में आने से पहले उसको एक दो खुराक नक्स-भोमिका देना चाहिये। यद्यपि इस प्रकार के ज्यादेतर रोगी ही में नक्स-भोमिका के लक्षण मिलता है और इसी कारण से बिना सोच समझ कर नक्स का व्यवहार का

नियम हुआ है, तथापि बिना सोच समझ कर कोई दवा ब्यवहार नहीं करना चाहिये। तुम पहले रोगी का लक्षण देखो। वह जिस दवा के साथ मिले वही देवो।

नक्स-भोमिका में औरम-मेटालिकम की तरह सर्व्वदा आत्महत्या करने की इच्छा देखी जाती है। किन्तु नक्स का रोगी आत्महत्या करने में डरता है लेकिन औरम का रोगी सुविधा मिलने से आत्महत्या कर ही बैठता है। सर्व्वदा पड़ने वाला, बैठा रहने वाला या बैठ कर काम करने वालों—जो कोई शारीरिक परिश्रम नहीं करता है उस की मेदा की गड़बड़ी, कब्ज इत्यादि के लिये नक्स सर्वोत्कृष्ट दवा है।

कब्ज, <u>वार वार मलत्याग करने की निष्फल चेष्टा</u>—नक्स का एक प्रधान लक्षण है। कब्ज, पेचिश या और किसी बिमारी के साथ यह लक्षण मिलने से नक्स-भोमिका को याद करो।

<u>मलत्याग करने के पहले पेट में ममोड़ और कुंथना; मलत्याग के वाद ही ममोड़ और कुंथना का थोड़ा देर के लिये आराम रहना;</u> यह लक्षण प्राय **पेचिश** में देखा जाता

HAHNEMANN P... CO. PRIVATE LTD. CALCUTTA-12

है। बार २ मलत्याग करने की इच्छा होती है लेकिन चेष्टा करने से अल्प परिमाण मल निकलता है; मलत्याग करने के पहले कुंथना वो पेट में दर्द होता है किन्तु मलत्याग के बाद थोड़ा देर के लिये सब तकलीफ दूर हो जाती है (मलत्याग के बाद भी देर तक कुंथना वो ममोड़ रहने से मार्क–सल)।

ऋतुस्राव नियमित समय के बहुत पहले, बहुत परिमाण से वो बहुत दिन तक होता है। ऋतुस्राव के साथ नाना प्रकार के कष्ट होता है और जब तक स्राव बन्द न होता है तब तक कष्ट होता रहता है। ऋतुस्राव के साथ प्रायः इसका खास कब्ज का लक्षण देखा जाता है।

प्रसव के दर्द; भयानक आक्षेप के साथ प्रसव दर्द, मल द्वार वो मूत्रस्थली तक फैल जाता है; इस कारण बार बार मल वो मूत्रत्याग करने की निष्फल चेष्टा होती है। इस में नक्स–भोमिका का २०० शक्ति विशेष उपकारी है।

ज्वर को सर्वप्रकार अवस्था में यानी शीत गर्मी वो पसीना इत्यादि सब हालत में ही अत्यन्त शीत बोध होना नक्स–भोमिका का एक विशेष लक्षण है ज्वर में अत्यन्त उत्ताप, मुखमण्डल रक्तवर्ण, सर्व शरीर में ज्वाला के साथ

उत्ताप रहने पर भी अत्यन्त शीत बोध होता है। बदन का कपड़ा उतार नहीं सकता है।

अजीर्ण रोग—भोजन के कुछ देर के बाद यानी एक या दो घण्टे बाद खट्टा ढेकार आना, जी पचपचाना, जी मिचलाना, मेदा में बोझ मालूम होना, कमर में कसावट मालूम होना। मालुम होता है कि पेट में पत्थर भरा हुआ है, पेट अंकड़ जाता है। किसी प्रकार के मानसिक परिश्रम नहीं कर सकता है। (भोजन करते ही पेट में उक्त प्रकार का कष्ट हो तो केलि-बाई वा नक्स-मस्कैटा)।

अजीर्णदोष वा अर्शरोग के कारण सिरपीड़ा में नक्स-भोमिका अति उपयोगी औषध है। ज्यादा मानसिक परिश्रम, क्रोध, मद्यपान, गरममसालेदार भोजन, ज्यादा सहवास, रात जागना; गरम औषध सेवन, कब्ज इत्यादि हेतु सिर पीड़ा। नक्स-भोमिका का सिरपीड़ा प्रायः प्रातः काल में बढ़ता है।

कमर-दर्द, नक्स-भोमिका का एक प्रिय लक्षण है। ज्वर, आमाशय, वात, लम्बैगो, अर्श इत्यादि रोगों में भी नक्स भोमिका का कमर-दर्द देखा जाता है। इस कमर-दर्द को

विशेषता यह है कि रोगी लेटे लेटे कर बदल नहीं सकता है, बैठ कर उसको कर बदलना पड़ता है।

निन्द्—साम को यानी नियमित निन्द के समय के बहुत पहले ही निन्द पड़ती है, शेष रात में (रात तीन बजे जाग पड़ता है, भोर में फिर निन्द पड़ती है और कुबेर तक सोया रहता है।

प्रातःकाल में वृद्धि नक्स का विशेष लक्षण है। प्रातःकाल में जागने के बाद तबियत् खराब मालूम होता है। मानसिक परिश्रम के बाद रोग की वृद्धि होती है। उमदा व साफ हवा में रोग की वृद्धि वो खराब गोली हवा में कमी मालुम होती है।

रात में सोने के कबल में इस औषध को सेवन कर के सो जाने से इस की क्रिया अच्छी होती है।

सर्दी—पतला सर्दी; दिन में सूख जाता व रात में तरल होता है। गरम गृह में वृद्धि, ठन्डी हवा में कमी। शिशुयो का नाक बन्द हो जाना।

कनभल्शन-(Convulsion) के साथ होसका वर्तमान

रहना; क्रोध, मानसिक उत्तेजना स्पर्श इत्यादि से पेठन की वृद्धि होना इत्यादि इसका अच्छा लक्षण है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

ओलिएन्डर ।

OLEANDER.

प्रत्येकवार वायुत्याग के साथ बेखबरी में मलत्याग होना इस का सर्व प्रधान लक्षण है। अजीर्ण पतला मल, मल में खाई हुई चीज देखी जाती है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

ओपिअम ।

OPIUM.

घोर अचेतनावस्था में स्वांस के साथ खड़खड़ाहट आवाज होना ओपिअम का प्रधान लक्षण है। इसके साथ चेहरा लाल फूला २ आंख लाल वो आधा खुला

हुआ रहता है और गर्म पसीना होता है। रोगी बिलकुल वेहोश रहता है, किसी तरह से उसको जगाया नहीं जाता है। टाइफायेड, इउरिमिया, निउमोनिया, कनभल्शन प्रभृति नाना प्रकार की बिमारी में इस लक्षण पर ओपिअम का प्रयोग से आश्चर्य फल लाभ हुआ है। नीचला चहु को लटक जाना व दांत लग जाना भी देखा जाता है। अनेक समय मृगी रोग में भी ओपिअम से उत्तम फल लाभ होता है। लैकेसिस वो हाइयोसायेमस इसका प्रतियोगी औषध है।

दर्द-शून्यता; किसी प्रकार कष्ट को ही मालूम न कर सकना भी ओपिअम का खास लक्षण है।

समस्त अन्ननली की अचेतन अवस्था

ओपिअम का और एक स्वाभाविक लक्षण है। मलद्वार की अचेतनावस्था, मलत्याग की इच्छा एकदम नहीं होती है। मलद्वार में वहुत सा मल जमा हुआ है लेकिन मलत्याग की इच्छा बिलकुल नहीं होती है; मलद्वार में भेंड़ारी की तरह गुठली २ काला मल बन्द रहता है और पीचकारी करना इत्यादि अस्वाभाविक उपाय के बिना मल नहीं निकलता है। मूत्रस्थली की अवस्था भी वैसी ही होती है। **मूत्रस्थली** की अचेतनावस्थाके हेतु मूत्र से वह भरा रहने पर भी पेशाब नहीं

निकलता है। फिर इस का उल्टा लक्षण भी देखा जाता है यानी बेखबरी से पैखाना वो पेशाब निकल जाता है।

फिर कभी २ ओपिअम में उपरोक्त लक्षणों के विपरीत लक्षण भी देखा जाता है। यह ओपिअम की प्रतिक्रिया जनित (Secondary) लक्षण है। रोगीको विकार होता है, आंख फैली हुई रहती है, रोगी आंख फाड़ कर चारो तरफ ताकता रहता है, चेहरा रक्तवर्ण: फूला २, रोगी के मन में नाना प्रकार की भयानक चिन्ता होती रहती है: सामान्य कारण से ही रोगी भय से अस्थिर होता है, हाथ पैर में ऐंठन होता है, मूर्च्छा होती है। **अनिद्रा**—रोगी किसी तरह से सो नहीं सकता है, श्रवणशक्ति इतना तेज होती है कि अति दूर की सामान्य आवाज अथवा घड़ी की आवाज कान में आने के हेतु सो नहीं सकता है, रोगी ऊंघता रहता है किन्तु सो नहीं सकता है।

एकाएक कोदवा, माता इत्यादि का इरपशन दब जाने के हेतु दिमाग का पैरालिसिस (लकवा) अथवा कनभल्शन में ओपिअम उत्तम है (जिंक)।

भयजनित प्राचीन व्याधि के लिये ओपिअम एक प्रधान दवाई है। भय के कारण मृगी होना; भय के कारण गर्भपातका डर होना; कब भय पाया था लेकिन अभी तक वह

डर न गया। ऐसी हालत में यह दवा बहुत मुफीद होती है।

संजीवनी शक्ति की नितान्त हीन अवस्था के हेतु यदि देखो कि औषध की क्रिया के व्याघात हो रहा है यानी तुम्हारे निर्व्वाचित औषध से फायदा नहीं हो रहा है तब ओपिअम के प्रयोग द्वारा प्रतिक्रिया शक्ति जागरित होगी और तुम्हारे निर्वाचित औषधि द्वारा फल मिलेगा (लरोसिरेसस)।

शक्ति ३०—२००।

ओक्सलिक एसिड।

OXALIC ACID.

कमर में दर्द पीठ और कमर में बहुत जोर दर्द और वही दर्द पीठ से लेकर ठेहुने के पीछे तक फूल जाना रोगी जिस तौर से बिस्तर पर सोया या बैठा रहता है उसमें अदल बदल होने से दर्द में कमी हो जाती है।

कमर में इतनी दर्द पैदा होती है कि रोगी अपने को समझता है कि कमर या अपना शरीर को संभाल नहीं सकेगा

और दर्द का ख्याल होने से ही दर्द बढ़ता है, इस दर्द के सिवाय निम्नलिखित दर्द में विशेष उपकारी है ।

(१) शरीर के भिन्न २ स्थानों में अल्प स्थान में दर्द ।

(२) धातु निकलने की नली (रेतः प्रवाहक Spermatic chord) में दर्द सामन्यरूप घूमने फिरने से उसमें दर्द की वृद्धि होती है ।

हृतपिन्ड पीड़ा (Desease of the heart) हृतपिन्ड के पीड़े में दिलका धड़कना और सांसकृच्छ (Dysponea) इन्हीं दो लक्षणों की बातें याद पढ़ने से उस बीमारी की वृद्धि होती है ऐसे हालत में औक्सलिक एसिड प्रयोग करने से एक अजीब फल प्राप्त होता है ।

हैजा (Cholera) गदला जल के माफिक पतला पखाना, पानी के तरह पतला पखाना, रक्त और आंव मिला हुआ पतला पखाना कभी २ सर्व्वदा आंत्र निकलता रहता है । प्रातः काल में रोग की वृद्धि, पतला पखाना होने के पहले ही नाभी (ढाढी) के चारो तरफ दर्द पतला पखाना के समय ढाढी के पास में ममोरा होकर दर्द होता है ।

पहले पेट के किसी अल्पस्थान से दर्द आरम्भ होकर पेट

के चारों तरफ फैल जाता है। मलद्वार (पखाने के रास्ता) पर दर्द, वही दर्द आहिस्ते २ इतना वृद्धि होती है कि माथा भी दूखने लगता है।

पतला पखाना के बाद जी का मिचलाना।

शक्ति ६—३०—२०० ।

——:o:——

पेट्रोलियम ।

PETROLEUM.

यह केरासन तेल से बनता है।

यह एक ऐन्टिसोरिक औषध है। यह चर्म्म रोग में ग्रैफाइटिस का सदृश औषध है। **एकजिमा** की तरह चर्म्मरोग मस्तक कान के पार्श्व, पोता, योनि, हाथः पैर इत्यादि स्थान में होता है। इस चर्म्मरोग की विशेषता यह है कि यह शीतकाल में बढ़ता है और ग्रीष्मकाल में आराम हो जाता है। यह इस दवा का एक सिद्धिप्रद लक्षण है।

किसी प्रकार की बिमारी हो अगर उस में इस प्रकार का चर्म्मरोग वर्तमान रहे तो वह भी पेट्रोलियम द्वारा चर्म्मरोग के साथ ही आरोग्य हो जाता है।

बेवाय—शीत काल में गाल का चर्म्म का फट जाना (Chilblains); उस में ज्वाला वो खुजली होता है और उस से रस निकलता है पैर के तलवा में दुर्गन्धी पसीना होता है और स्पर्श वर्दास्त नहीं होता है। (ग्रैफाइटिस, सैनिकिउला, साइलिसिया)। हिपर-सलफर के सदृश सामान्य जखम में भी पीव उत्पन्न होता है। हिपर–सल्फ का रोग भी शीत काल में वढ़ता है।

हार्पिस या जहरवाद रोग विशेषतः पेरिनियम (गुह्यद्वार वो जननेन्द्रिय का मध्यवर्तीस्थान) में वो जांघ में: उस में खुजली वो ज्वाला। चर्म्म खरखरा, फटाफटा, उस से रक्तस्राव होना अथवा उसका खुश्क होना। हथेली व तलवा में ज्वाला व गर्मी। जननेन्द्रिय में पसीना होना।

उदरामय विशेषतः प्राचीन अतिसार में यह एक उत्कृष्ट औषध है। दस्त सिर्फ दिन में होता है। बन्धाकोबी वो

ज्यादा खट्टा खाने से, गर्भावस्था में वो बिजली चमकने के साथ तुफान के दिन में दस्त वो जुरपित्त की वृद्धि। चर्म्म रोग दब जाने से अतिसार होना।

प्राचीन वात रोग में भी यह दवा उत्तम है। उठने बैठने के समय जोड़ों में "कड़क कड़क" शब्द होता है (कष्टिकम)।

सिर चकराना—खड़ा होने से मतवाला की तरह टलना किस्ती वो रेलगाड़ी में सवार होने से सिरचकराना।

सिरदर्द—सिर का पश्चात् भाग में सीसा की तरह भारी वोझ मालूम होना; मस्तक के बीच में आघात वा झिनझिनी सा मालुम होना; मालुम होता है कि मस्तक लकड़ी से बना है।

डिलिरियम—में रोगी ख्याल करता है कि उसका एक टांग दुगुणा बड़ा हो गया है अथवा और कोई उसका बिछावन में लेटा है, या उसका दोनों पार्श्व में दो बच्चे लेटे हैं।

पाकस्थली में सून्यता बोध; भोजन के बाद दर्द की कमी (चेलिड, ऐनाकार्ड)।

यह सीसा के विष के प्रतिषेधक औषध है।

शक्ति ३०—२०० ।

——::०——

फसफोरस ।

PHOSPHORUS.

गोरा, पतला, लम्बा सामान्य कुब्ज, भूरा रंग का केश वाला व तेज बुद्धि वाला लोगों के शरीर फसफोरस की क्रिया के विशेष उपयोगी है। फसफोरस के प्रिय व्यक्ति के स्वभाव कोमल, वह सामान्य कारण ही से मन में दुःख पाता है। वयस के अनुपात से ज्यादा लम्बा वो कुछ कुब्ज होने वाला लोगों के शरीर में यह ज्यादा मुफीद है।

फेफड़े के नाना प्रकार रोग में फसफोरस अति उपयोगी है। खांसी, ब्रोंकाइटिस इत्यादि रोगों में खांसी सन्ध्या समय से शुरु होकर मध्यरात तक अधिक होता है। सूखी

खांसी। बात करने से, बायां कर में लेटने से वा ठन्ढ से खांसी की वृद्धि होती है। खांसी इतना कठीन होता है कि उस के कारण रोगी का शरीर कंपता है। खांसी के समय इतनी तकलीफ होती है कि रोगी खांसी को दबा रखने के कोशीश करने से गले में गुंगुआना की तरह आवाज होती है।

निउमोनिया रोग में फसफोरस एक अमूल्य औषध है। रोगी को मालूम होता कि उसके छाती पर बहुत भारी बोझ पड़ा है और इस कारण स्वांस लेने में कष्ट होता है। विशेषतः दाहिना फेफड़े के निम्नभाग निउमोनिया द्वारा आक्रान्त होने से फसफोरस अति उत्तम है। निउमोनिया की प्रथमावस्था में लक्षणानुसार इसका प्रयोग से अति आश्चर्य्य फल लाभ होता है। स्वांस प्रस्वांस के साथ नाक के पुरे का संचालन होना। रोगी बायां कर लेट नहीं सकता है। बायां छाती में सुई भोकने की तरह दर्द बायां कर लेटने से उसकी वृद्धिः यह लक्षण प्लुरिसी में देखा जाता है: जिस तरफ का फेफड़ा आक्रान्त होता है उस तरफ का गाल लाल होता है।

यक्ष्मा रोग में भी फसफोरस अति उत्तम है। फसफोरस के खास गठन के व्यक्ति को यक्ष्मा रोग। फसफोरस

के रोगी के सर्वांग में दुर्बलता व छाती में दबाव मालुम होता है। इस प्रकार के रोगों में फसफोरसकी उच्चशक्ति अधिक फलप्रद है।

स्वर भंग सन्ध्याकाल में वृद्धि होता है, रोगी का आवाज एकदम बैठ जाता है। शिशुयों का क्रूप खांसी में एकोनाइट वो स्पंजिया द्वारा आराम न मिलने से फसफोरस दिया जा सकता है। रोगी के खांसी अन्यान्य औषध के प्रयोग द्वारा कम हो जाय लेकिन प्रतिदिन सन्ध्या समय खांसी हो अथवा स्वरभंग हो अथवा फिर से पहले की तरह खांसी हो; ऐसी हालत में फसफोरस दिया जा सकता है।

ज्वाला; आरसेनिक वो सलफर की तरह ज्वाला फसफोरस के एक प्रधान लक्षण है। शरीर के भीतर ऐसा कोई स्थान नहीं जिस में ज्वाला नहीं देखा जाता है। शरीर के चर्म्म से लेकर भितरी स्थान तकमें भी फसफोरसके ज्वाला देखा जाता है विशेषतः प्रातःकाल में सूर्य्योदय के पहले और सांझ को सूर्यास्त के बाद जब सामान्य रोशनी रहती है, उस समय में शरीर के नाना स्थान में प्रधानतः गात्रचर्म्म में ज्वाली, अस्थिरता, व्याकुलता इत्यादि होना इसका खास लक्षण है।

इस ज्वाला के साथ उत्ताप न भी रह सकता है। मालुम होता है कि निहायत तेज गर्मी रौद्र के बराबर चल रहा है।

स्नायुविधान के ऊपर भी फसफोरस की अति सुन्दर क्रिया होती है। फसफोरस एक दम स्नायुविधान के मूल में यानी दिमाग और मेरुदण्ड में आघात करता है। पहले पहल स्नायुविधान इतना उत्तेजित होता है कि रोशनी, गन्ध, शब्द, स्पर्श कुछ भी सह नहीं सकता है यानी सर्व प्रकार इन्द्रिय में ही हलचल देखा जाता है। ज्वाला के बारे में तो पहले ब्यान किआ जा चुका है, अलावे उस के शरीर में कंपना, झिनझिनी होना इत्यादि प्रकट हो कर एकदम लकवा तक हो सकता है। इस प्रकार की अवस्था नयी वो पुरानी दोनों प्रकार की बिमारी में देखी जाती है। रोगी लगातार हिलना डोलना पसन्द करता है, एक पल भी स्थिर हो कर खड़ा रह या बैठ नहीं सकता है। रोगी अकेले रहने में डरता है, बहुत डरपोक होता है, अन्धेरा में जाने में डरता है, वज्रपातकाल में डरता है। नीचे फसफोरस की मानसिक पीड़ा के और चन्द लक्षण दिया जाता है। रोगी उत्सांहशून्य होता है, मानसिक वो शारीरिक परिश्रम करनेमें एकदम नाराज़ होता है, सर्व विषय

में ही उदास होता है। कोई विषय आसानी से समझ नहीं सकता है। कोई काम या पाठ में मन लगा नहीं सकता है। किसी विषय में चिन्ता नहीं कर सकता है। बहुत धीरे २ अथवा उदास भाव से बात करता है। या बिलकुल चुप रहता है। कोई २ रोगी कामोन्मत्त हो जाता है, ऐसा की पेलाज की तरह काम कर बैठता है।

टाइफायेड ज्वर में विशेषतः उसके साथ निउमोनिया इत्यादि हो कर घोर अचेतनावस्था और बरबराना के साथ डिलिरिअम होने से फसफोरस उत्तम है। यह लक्षण लैकेसिस में भी है लेकिन लैकेसिस में निद्रा के बाद वृद्धि वो फसफोरस में निद्रा के बाद आफियत होता है।

सिरचकराना Vertigo—फसफोरस सिरचकराना के लिये उत्तम औषध है विशेषतः वृद्ध मनुष्यों के सिर, चकराने के लिये। सिर के अन्दर याने दिमाग में ज्वाला रोगी ख्याल करता है कि मेरुदण्ड के भीतर हो कर गर्मी दिमाग में पहुंच रही है।

रक्तहीनता फसफोरस का एक खास लक्षण है। रक्तहीनता के कारण चेहरा मलिन अथवा मोम की तरह फीका हो जाता है। चेहरा शोथयुक्त हो जाता है।

केलि-कार्ब के रोगी के आंख के ऊपर वाला पपुटे में पानी भरा हुआ बटुये की तरह दिखाता है **एपिस** में नीचला पपुटे की वैसी हालत होती है लेकिन फसफोरस के रोगी के आंख के चारो ओर फूल जाता है, चेहरा भी फूला फूला दिखाता है। फसफोरस के रोगी का रक्त इतना हीनावस्था प्राप्त होता है कि रक्त, शरीर से निकल कर जमता नहीं।

रक्तस्राव के लिये फसफोरस एक अति उत्कृष्ट दवा है। रक्त की अति हीनावस्था के हेतु रक्तस्राव होता है। चर्म्म का नीचे रक्तस्राव होकर धव्वा २ सा दिखाई पड़ता है। अकसर अति छोटा वो सामान्य जखम से वहुत परिमान से रक्तस्राव होता है (क्रियोजोट, लैकेसिस)। शरीर का हर जगह से रक्तस्राव हो सकता है। किसी प्रकार क्षत, कैन्सर टिउमर इत्यादि से वहुत परिमान से रक्तस्राव होकर रोगी का जीवन तक नष्ट हो सकता है।

ऋतुस्रावके समय ऋतु न हो कर उस का बदले में नाक, फेफड़ा, पाकस्थली, मलद्वार, मूत्रद्वार, किसी जखम इत्यादि किसी स्थान से रक्तस्राव (प्रतिनिधि स्राव Vicarious Menstruation) होने से अवश्य फसफोरस को स्मरण करना चाहिये।

अस्थि Bone—निक्रोसिस वा अस्थि के क्षय रोग में फसफोरस अति उपयोगी औषध है।

अत्यन्त क्षुधा राक्षस की तरह भुख, रोगी मालुम करता है कि उस का उदर एकदम खाली हो गया है। रोगी न खाकर स्थिर नहीं रहसकता है, ऐसा कि खाना न मिलने से मूर्च्छा की तरह होता है। उस को रात में भी उठ २ कर खाना पड़ता है। उदर में शून्यता बोध फसफोरस का एक अति प्रिय लक्षण है।

प्यास बहुत होता है किन्तु शीतल जल मेदा में कुछ देर तक रह कर गरम होते ही कै हो जाता यह फसफोरस का एक प्रधान लक्षण है। ऐसा कि वर्फ खाने से भी वह गरम होते ही गरम पानी के रूप से कै हो जाता है। इस प्रकार का वमन के साथ, अत्यन्त प्यास और पेट में ज्वाला, बहुत हैजा के रोगी में देखा जाता है।

अतिसार वो हैजा में फसफोरस अत्ति उत्तम औषध है। पतला पानी की तरह मल बहुत परिमान से जल का कल से पानी की तरह निकलता रहता है।

विना दर्द के पतला सफेद मल में चर्वी के टुकड़े या सावुदाने की तरह बहुत सा फुटका २ दिखाई पड़ता है। मलद्वार खुला रहता है। और उससे मल लगातार चुता रहता है।

फसफोरस में नाना प्रकार का मल देखा जाता है। वृद्धों का प्रातःकालीन उदरामय। मल सब्ज आंवदार Mucous होता है; सब्जापन मल कुछ देर तक रहने से नील-वर्ण हो जाता है। मल सफेद, सब्ज या पीला। अजीर्ण मल: रक्त वो पीवदार मल; मांस धोअन के ऐसा मल (रस); गर्म मल; मल बहुत जोर से निकलता है।

कब्ज में भी फसफोरस व्यवहार होता है। मल सूखा लम्बा लेंड़—कुत्ता के मल को तरह; बहुत कुंथना पड़ता है।

जननेन्द्रिय के ऊपर फसफोरस को अति उत्तम क्रिया है। रतिक्रिया की इच्छा इतनी प्रबल होती है कि रोगी पागल की तरह हो जाता है: हस्तमैथुन करता है, नाना प्रकार व्याभिचार करता है। कुछ दिन ऐसा होने के बाद ध्वजभंग हो जाता है। रतिक्रिया की इच्छा बहुत होने

पर भी उसका पूरा करने की शक्ति नहीं रहती है। इस हालत में फसफोरस के १००० शक्ति का प्रयोग से विशेष उपकार मिला है।

बधिरता—फसफोरस में एक प्रकार आश्चर्य बधिरता देखी जाती है—मनुष्य की आवाज नहीं सुन सकता है या कम सुनता है।

शक्ति ३—६—३०—२०० ।

फसफोरिक एसिड ।

PHOSPHORIC ACID

शोक, दुःख, द्वेष, प्रणय में नैराश्य इत्यादि जनित रोग में फसफोरिक-एसिड की अति उत्तम क्रिया है।

फसफोरिक-एसिड का रोगी अति शीघ्र २ अत्यन्त पतला तथा लम्बा हो जाता है। शिशु तथा युवक के शरीर उम्र के मोताविक ज्यादा लम्बा व पतला होता है और इस से शरीर कुछ कुब्ज हो जाता है। जिस बालक

के शरीर में इस प्रकार की अवस्था देखि जाती है। उसको अधिक मानसिक परिश्रम करने नहीं देना चाहिये।

उक्त प्रकार स्कुल के **छात्रों का सिरदर्द** में यह अति उपकारी दवा है। शोक दुःखादि जनित अथवा हस्त-मैथुनादि जनित अवसन्नता के हेतु ऐसा सिर दर्द होता है। कि मालुम पड़ता है किसी भारी बोझ द्वारा सिर का छत टुटा जा रहा है। सिर के पश्चात् भाग में दर्द, वह दर्द गर्दन तक फैल जाता है।

हस्तमैथुन, अत्याधिक स्त्री-सहवास इत्यादि के कारण मानसिक पीड़ा: सामान्य कारण से ही जीवन में हताश: कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। रोगी सदा ही ऐसा दुःखित, रहता है जैसा उसका सर्वनाश हो गया है, सर्व्व शरीर में दुर्व्वलता। आंख और चेहरा में निराशा के निशान साफ जाहिर होता है। सिर का बाल जल्दी २ सफेद हो जाता है। इस प्रकार के बहुत रोगी इस दवा से आरोग्य लाभ किये हैं।

स्नायुमन्डल की दुर्वलता में फसफोरिक-एसिड एक उत्कृष्ट औषध है। टाइफाएड इत्यादि पीड़ा में रोगी घोर अचेतन अवस्था में या घोर निद्रा में पड़ा रहता है, उसको चारो तरफ में क्या हो रहा है, उस को कुछ भी

मालूम नहीं पड़ता है। किन्तु उस को जगाने से सम्पूर्ण ज्ञान के साथ बात चित करता है। यहां कई एक दवाइयों के साथ इस दवाई को तुलना करना चाहिये।

आर्निका तथा वैप्टिशिया में भी अज्ञानता देखि जाती है। आर्निका वो वैप्टिशिया का रोगी को जागने से बात करते २ बात शेष होने के पहले ही फिर बेहोश हो जाता है। आर्निका वो वैप्टिशिया की आज्ञनत प्रायः एक सी है लेकिन वैप्टिशिया की तरह आर्निका के रोगी का शरीर से निकली हुई चीजें सड़ा वो बदबूदार नहीं होती है यानी मल, मूत्र, पसीना इत्यादि सड़ा दुर्गन्धी नहीं होती है, किन्तु फसफोरिक एसिड में ऊपर के लिखित दोनों लक्षण का अभाव है।

ओपिअम की अज्ञानता उन सब दवाई से अधिक है। ओपिअम के रोगी को किसी तरह से भी जगाया नहीं जाता है। ओपिअम के स्वांस प्रश्वांस और मुखमण्डल की अवस्थादि द्वारा भी इस को फसफोरिक-एसिड से फर्क कर लिया जाता है। हाइयोसायेमस और नक्स-मस्केटा की अचेतनावस्था यथास्थान में देखिये।

कम उम्र में हस्तमैथुन से कैसा खराबी होती है यह कहना फजूल है। इससे नाना प्रकार की दुर्ब्बलता देखी जाती है। ऐसी दुर्बलता में चायना से फसफोरिक-एसिड अधिक

फलप्रद होता है विशेषतः शुक्र पतला, स्वप्न दोष, तथा रोगी ना उमेद होने से।

हस्तमैथुन के हेतु रोगी बात करने के समय छाती में दुर्बलता बोध करता है। यह लक्षण ष्टैनम नामक औषध में भी है। यदि लम्बा, पतला किशोर अथवा युवक में नितान्त मानसिक दुर्बलता, सहानुभूति-शून्यता, उदासभाव तथा दुःखितभाव देखो तो अवश्य फसफोरिक-एसिड का प्रयोग करना चाहिये। यदि इस प्रकार के रोगी में खांसी हो और बहुत परिमाण से पीव की तरह या दुर्गन्धी बलगम निकले तो फसफोरिक-एसिड के सिवाय अन्य गति नहीं है (ष्टैनम के श्लेष्मा गाढ़ा, भारी वो मिठा स्वाद का है)।

मूत्र—फसफोरिक-एसिड में साधारणतः दो प्रकार का मूत्र देखा जाता है। बहुत परिमाण से साफ पानी की तरह अथवा दूध की तरह सफेद पेशाब होता है। स्नायु-मण्डली की अवसन्नता के हेतु इस प्रकार का पेशाब होता है। दूध की तरह पेसाब में लेई की तरह चीज अथवा खुन के टुकड़े रहने से इस से फल मिलेगा। रात में बहुत परिमाण से पानी की तरह पेसाब होना; वह मूत्र थोड़े हो

देर में गदला हो जाता है। जेलसिमियम की तरह बहुत परिमाण से पेशाब होने से फसफोरिक-ऐसिड का सिरपीड़ा की कमी होती है।

अतिसार—फसफोरिक-एसिड पुराना व नया उभय प्रकार उदरामय में ही फलप्रद है। इस में इस का विशेष लक्षण यह है कि बहुत परिमाण से दस्त होते रहने से भी रोगी विशेष दुर्बलता वा पेट में किसी प्रकार का दर्द मालूम नहीं करता है, परन्तु मोटा होता रहता है। मल हल्दी रंग का पानी की तरह या घोल की तरह सफेद होता है।

शक्ति ३०—२००—१००० ।

फाइटोलैक्का डिकैन्ड्रा ।

PHYTOLACCA DECANDRA.

यह औषध गिल्टियों की पीड़ा, वातरोग, उपदंश-जनित हड्डी का दर्द, गले के जखम, डिफ्थिरिया इत्यादि में अति फलदायक है।

यह गले के जखम (sore throat) का एक

महौषध है। पहले गले में प्रदाह हो कर दोनों तरफ का टौन्सिल फूल जाता है, लालवर्ण होता है; इस के बाद उस में सफेद २ विन्दु २ दाग पड़ता है और क्रमशः वह दागसमूह एक दूसरे के साथ मिल कर एक बड़ा जखम बन जाता है। एक प्रकार के तेज दर्द कान तक फैल जाता है। कभी २ उस स्थान में इतना ज्वाला होता है कि मालूम होता है उस में जलन्त अंगार रक्खा है। गले के भीतर शुष्कता बोध। कोई चीज निगलने के समय मालूम होता है कि गले के भीतर गोली सी कोई चीज रही है। टौन्सिल, इउभुला (घन्टी) और गले के पश्चात् भाग धुमैला रंग का पर्दाहयुक्त होता है। गरम जल वा तरल पदार्थ निगल नहीं सकता है (लैकेसिस)।

ये सब गले के भीतर का लक्षण टौन्सिलाइटिस, डिफथिरिया, फैरिंजाइटिस इत्यादि जो किसी प्रकार गले की पीड़ा में मिलेगा उसी में यह दवाई फायदा करेगी। घन्टी का बढ़ना, फूलना और शोथयुक्त होना।

अत्यन्त सिरपीड़ा वो कमर दर्द। समस्त शरीर में आघात लगने की तरह दर्द, उक्त दर्द इतना कष्टदायक होता है कि रोगी तकलीफ से कहरता रहता है। रसटक्स की तरह रोगी लगातार करवट बदलना चाहता है लेकिन

करवट लेने से तकलीफ की बृद्धि होती है, इस लिये करवट नहीं ले सकता है। उक्त प्रकार के लक्षणों के साथ अत्यन्त ज्वर। नाड़ी तेज किन्तु उत्ताप केवलमात्र मुखमन्डल वा सिर में अत्यन्त अधिक परिमाण से देखा जाता है। अंग-प्रत्यंग में कुछ कदर शीतलता देखी जाती है।

किसी किस्म की विमारी में उक्त प्रकार के लक्षण मिलने से इस दवाई से फायदा होता है।

स्त्रियों के स्तन के प्रदाह वा **थनैल** में भी यह दवा विशेष उपकारी है। स्तन अत्यन्त कठिन, फुला, गरम वो तकलीफदार होता है दूध पिलाते समय स्तन का दर्द सर्व्व अंग में फैल जाता है। प्रसव के बाद स्तन में दूध उत्पन्न हो कर स्तन स्फीत वो पूर्ण होता है और उस के साथ दूध ज्वर होने से फाइटोलैका अति उत्तम है। ब्राइयोनिया भी इस में अति उत्कृष्ट है। क्रोटन-टिग नाम के औषध में शिशु स्तनपान करने के समय स्तन का दर्द पीठ में धावा करता है। लैक कैनाइनम में स्तन दूध से पूर्ण रहता है और इस से स्तन में एक प्रकार जखम सा दर्द होता है जिस से रोगोणी लगातार स्तन को हाथ से पकड़ कर रखती है, कारण स्तन लटका रहने से वहुत तकलीफ होती है।

स्तन के टिउमर रोग (गिल्टियों में भी यह दवाई व्यवहार होती है। गिल्टियां कटान व दर्द के साथ होती है। यदि स्तन के प्रदाह कम न हो कर पक जावे और उस में बहुत लालवर्ण जखम अथवा सैन (Sinus) हो और उस से पतला, बदबूदार, लालपन पीव निकले तो फाइटोलैका उत्तम है (हिपर, साइलिसिया)। स्तन फूला, कठिन, न पकता है, न आराम हि होता है; स्तन के रंग बेगनी होता है (ब्राइ, लैककेन, फिलान्ड्रि)। ऐसा कि स्तन के कैन्सर तक इस दवाई से आराम हो सकती है। डा० नैश कहते हैं "इस दवाई की सि० एम० शक्ति का एक खुराक प्रति महिना में पूर्णिमा के बाद २ प्रयोग कर के बहुत पुराना टिउमर आराम किया है।"

सायाटिका (Sciatica), वात रोग इत्यादि में भी इस दवाई का व्यवहार होता है। दर्द का, शाखाओं के बाहर के तरफ से नीचे के तरफ धावा करना इस का खास लक्षण है। जो वात रोग में वर्षाकाल में तकलीफ की वृद्धि होती है उस में फाइटोलैक्का उत्तम है। गर्मी, सुजाक पारा के अपव्यवहार वा डिफथिरिया रोग के बाद वात रोग वा निउरैलजिया (स्नायुशूल) होने से इस से फल होता है।

जरासा चिन्ता कर के देखने से ही इन दोनों का फर्क मालुम हो जायगा।

जनेनन्द्रिय के ऊपर प्लैटिना की विशेष क्रिया देखी जाती है। स्त्रियों के निम्फोमैनिया (Nymphomania) या कामोन्मत्तता; प्रसव के बाद उसकी वृद्धि उस स्थान में सुड़सुड़ी पैदा हो कर पेड़ू तक पहुंचता है। अत्यन्त सहवास की इच्छा विशेषतः कुमारी स्त्रियों को अतिशय सहवास की इच्छा होती है। यौवन के पहले ही स्त्रियों को अत्यधिक कामेच्छा तथा योनि में स्पर्शासहिश्णुता; ऐसाकी वहां कपड़े के स्पर्श भी सह नहीं सकती है। स्पर्शासहिष्णुता इतनी अधिक होती है कि रतिक्रिया के समय एकदम बेहोश हो जाती है। स्त्रियों के अत्यधिक परिमाण से ऋतुस्राव, रक्त काला, ढेला २ होता है।

ऋतुस्राव के साथ योनिपथ का बाहर निकल पड़ना तथा योनि में स्पर्शासहिष्णुता, एकदम स्वामिसहवास कर नहीं सकती है। ये दो लक्षण प्लैटिना के विशेष प्रधान लक्षण है। हिष्टिरिया इत्यादि रोगो में ऊपर लिखित दो लक्षण देख पाने से अवश्य प्लैटिना को प्रयोग करना चाहिये।

कब्ज गैर जगह में भ्रमण के हेतुः लेड-पोआयजन यानी सीसा के विष इत्यादि हेतु कब्ज। शक्तिहीन अतरी का वार वार निष्फल वेग, कादो की तरह मल, मलद्वार में और उसके चारो ओरमें लिपटा हुआ रहता है। प्रवासी मनुष्य तथा गर्भ-वती स्त्रीके कब्ज में नक्स-भोमिका द्वारा फल न हो तो अवश्य प्लैटिना देना चाहिये।

शक्ति ३०—२०० ।

——:0:——

टिलिया ट्राइफोलिएटा।

PTELEA TRIFOLIATA.

यह यकृत् रोग का एक महोषध है। यकृतस्थान में धीमा दर्द (Dull pain), भारी बोध और बांया कर लेटने से इस दर्द की अत्यन्त वृद्धि होती है। बांया करवट लेने के समय खींच कर रखने की तरह दर्द मालुम होता है। कब्ज अथवा अतिसार या कब्ज और अतिसार बदल बदल कर होता है।

शक्ति ६x, १२—३० ।

प्लम्बम।

PLUMBUM.

यह सीसा नाम के धातु से बनता है।

यह उदरशूल (Colic) का एक महौषध है। तलपेट, भितर के तरफ इतना घुस जाता है कि मालुम होता है वह मेरुदण्ड की हड्डी के साथ सट गई हैं। यह लक्षण प्रत्यक्ष अथवा अनुबोध्य उभय प्रकार के ही हो सकता है। उदर में इतना दर्द होता कि मालुम पड़ता है वह दर्द सर्व शरीर में फैला जा रहा है। शुल के सिवाय अन्नान्य बिमारी जैसा कब्ज, जरायु के रोग इत्यादि के साथ भी यह लक्षण देखा जा सकता है।

इन्टास-ससेप्शन (Intussuception) अर्थात् अतरी ही के खोल में उसी का कोई हिस्सा का घूस जाना रोग में भयानक शूल तथा वमन। यह हार्णियारोग में भी अति उपकारी औषध है।

जरायु Uterus—ऋतुस्राव इत्यादि के समय में जरायु के शूल के लिये यह अति उपकारी औषध है, जरायु

ऐसा संकुचित मालूम पड़ता है कि बोध होता है उसके भीतर के भ्रूण उस में नहीं अंट सकता है। जरायु फैल नहीं सकता है। गर्भस्राव का डर।

कब्ज के लिये यह अति उत्तम औषध है। मल कठिन गोली की तरह, भेंड़ारी की तरह काला। मलत्याग के वेग के साथ मलद्वार में भयानक एंठन के साथ असहनीय कष्ट। मल की कठिनता, अतरी की शुष्कावस्था अथवा पक्षाघात या मांसपेशी की शिथिलता इत्यादि के हेतु मल का रुका रहना। गर्भावस्था में कब्ज।

पान्डु रोग (jaundice) में भी यह औषध महोपकारी है। आंख के सफेद भाग, गात्रचर्म्म, मलमूत्र इत्यादि गाढ़ा पीला रंग होने से इस से विशेष फल मिलेगा। चर्म्म में काला वा भूरा रंग का दाग (लिभार-स्पट)।

पक्षाघात (Paralysis) वा लकवा में भी यह औषध व्यवहार होता है। पक्षाघात के साथ गात्र चर्म्म में अत्यन्त स्पर्शासहिष्णुता इस का विशेष लक्षण है। इस में इस की उच्च शक्ति अधिक फलप्रद होती है। कलाई के पेशियों के पक्षाघात तथा शीर्णता के हेतु हाथ का टेढ़ा हो जाना।

शीघ्र २ शरीर सूख जाना। सर्वांग के अथवा कोई एक अंग के पक्षाघात। अतिशय दुर्बलता तथा रक्तहीनता। मुखमन्डल के चर्म्म फीका, धुमैला या पीला हो जाना, अथवा मृतक के समान गालों का धस जाना, देखने से मालूम होता है कि रोगी निहायत व्याकुल तथा अस्थिर है।

मुखमण्डल के चर्म्म तेल लगाया हुआ ऐसा और चिकणा। दांत के मसुढ़े में साफ नीला रंग का दाग पड़ना; मसूढ़ा फूला हुआ।

नाना प्रकार के स्पैजम या ऐंठन में भी इस दवा का व्यवहार होता है। मृगी अथवा इसी तरह का कनभलशन वा आक्षेप, स्मृतिशक्ति की दुर्ब्बलता, बोलने के समय ठिक बात से मन का भाव प्रकाश कर न सकना, बुद्धि की जड़ता; बातों के समझने में देर होना; क्रमशः उदासी की बृद्धी होना।

शक्ति ३०—२००—१,००० ।

———:o:———

पोडोफाइलम।

PODOPHYLLUM.

अतिसार ऐसा कि कालेरा के लिए भी यह एक

उतकृष्ट औषध है; बहुत परिमाण से पतला, पानी की तरह तथा अतिशय दुर्गन्धी मल, के अतिशय वेग के साथ निकलना इस का विशेष लक्षण है। यह पतला मल नाना रंग के हो सकते हैं, जैसा पिला, भूरा, सब्ज इत्यादि। कभी २ इस पतला मल के नीचे आंटा की बुकनी कि तरह गाद पड़ता है। कभी २ निद्रितावस्था में तथा वायु निकलने के साथ बेखबरी से मल निकल पड़ता है। मल गर्म होता है।

उक्त प्रकार के मल के साथ प्रायः निम्न लिखित लक्षण समूह देखा जाता है। मलपथ वा कांच निकलना। इस दस्त के साथ पेट में दर्द रह भी सकता है, न भी रह सकता है। रोगी आधी खुली हुइ आंख में सो रहता है और सर्वदा सिर को इधर उधर करता है; वारबार ढेकार आता रहता है; जम्हाइ लेता है; कहंरता है। इस प्रकार का लक्षण समूह प्रायः शिशुओं के दन्त निकलने के समय के दस्त दिमाग में जल संचय होने के कबल में तथा शिशु कोलेरा में देखा जाता है। ऐसी खतरे नाक हालत में उत्तम रुप से सोच कर के पोडोफाइलम के व्यवहार करने से आशातिरिक्त फल मिलता है। सिर में पसीना; शरीर ठन्ढा; अत्यन्त प्यास या प्यास का न होना; वमन, मतली; मूत्र का वन्द रहना; ऐंठन इत्यादि नाना प्रकार के लक्षण उपरोक्त लक्षणों के साथ वर्त्तमान रह सकता है;

आमाशय रोग में भी यह विशेष उपकारी है। सब्ज आंवदार मल खून के साथ सब्ज रंग का आंव गिरता है और कांच निकलता है।

पहले ही कहा है कि शिशुओं के दांत निकलने के समय का दस्त में पोडोफाइलम अति उपकारी है। दांत निकलने के समय शिशु सर्वदा मसूढे के ऊपर मसूढा को जोर से दबाता रहता है। (फाइटोलैका): यह भी पोडोफाइलम का प्रिय लक्षण है।

प्रातः काल से दो पहर तक समय में उदरामय की वृद्धि तथा उदरामय में पेट में "गों गों" "गड़गड़" बोलना इस दवा का प्रिय लक्षण है। खासकर गर्मी के दिनों के दस्त में यह उपकारी है।

स्त्रीजननेन्द्रिय के ऊपर इस दवा की विशेष क्रिया देखी जाती है। कुंथने के हेतु या कोई भारी चीज उठाने के हेतु या कब्ज अथवा कष्ट दायक प्रसव के कारण जरायु के प्रोलैप्सस (Prolapsus) वा स्थानभ्रंश हो तो पोडोफाइलम उपकारी होता है। दहिना ओभारी में दर्द: दहिना ओभारी में दर्द शुरू हो कर दहिना जांघ तक फैल जाता है:

कभी २ उक्तप्रकार के दर्द के साथ झिनझिनी होना भी देखा जाता है। यह लक्षण पोडोफाइलम के इतना प्रिय है कि सिर्फ इसी लक्षण पर पोडोफाइलम के प्रयोग से ओभारी का टिउमर तक आराम हो चुका है। युवतियों का ऋतुस्राव बन्द हो जाना (टिब्राकुंलाइन)।

यकृत—यकृतमें दर्द; यकृतस्थान में लगातार हाथ फिराते रहना। पान्डु राग पेशाब गाढ़ा भूरा रंग का।

ज्वर साधारणतः सुवह ७ बजे; अतिशय शीत हो कर ज्वर होता है और उसके बाद अत्यन्त उत्ताप होता है और रोगी लगातार बकवास करता है। इसके साथ पान्डुरोग jaundice देखा जाता है। ज्वरान्त में रोगी सो जाता है।

सिरपीड़ा—उदरामय के साथ सिरपीड़ा, पर्य्यायक्रम से देखा जाता है। जाड़े में सिरपीड़ा, गर्म्मी में अतिसार होता है।

शक्ति ३—६—३०—२०० ।

सोरिनम ।

PSORINUM.

सोरा—वीज (खाज खुजली का रस विशेष) से यह दवाई बनती है। सलफर की तरह यह भी खाज खुजली के विष को दूर करने वाला (antipsoric) औषध है। सलफर की तरह यह भी शरीर के अन्दर के सोरा विष को दमन कर रोगारोग्य की बाधा दूर कर देती है। जब किसी पुरानी बिमारी में उत्तमरूप से निर्णित औषध से भी फल नहीं मिलता है या जब सलफर निर्वाचित हो कर भी फायदा नहीं कर सकता है। तब सोरिनम द्वारा विशेष फल मिलता है।

किसी नयी बिमारी के बाद कोई कारण न मालुम होने पर भी यदि देखा जाय कि शरीर ठीक तरह सुधर नहीं रहा है तो एक खुराक सोरिनम २०० के प्रयोग से विशेष उपकार होता है।

शिशु मलिन, पतला दुबला, अस्वस्थ; शिशु दिन रात किसी समय भी नहीं सोता है, सर्वदा खिन्न २ करता है अथवा सारा दिन खेलता है लेकिन रात में सो नहीं सकता है,

बहुत दीकदार हो जाता है । लगातार रोता रहता है।

ऋतु-बदलना वा शीतल वायु बरदास्त नहीं होता है।

ग्रीष्मकाल में भी कपड़ा व्यवहार करता है । वज्रपात इत्यादि के समय में, उसके पहले अथवा उसके कई दिन बाद तक अस्थिर रहता है। रोग के आरम्भ के पूर्वदिवस अतिशय स्वस्थ बोध करता है: तरुण व्याधि के बाद ज्यादा पसीना के साथ सब तकलीफ दूर हो जाती है ।

सब स्रावादि में हो नितान्त दुर्गन्ध-मल, मूत्र, कान के पीब, प्रदर स्राव, पसीना इत्यादि अतिशय दुर्गन्धी होना भी इसका उत्तम लक्षण है।

बार बार आंख में प्रदाह होता है: किसी तरह से आराम नहीं होता है ।

कान के प्रदाह तथा कान से दुर्गन्धी पीप निकलना। कान के चारो तरफ में एक्जिमा और उस से बदबूदार रस निकलना ।

अत्यन्त भूख लगता ऐसा कि मध्य रात में उठ कर खाना चाहता है: बिना खाये हुये रह नहीं सकता है।

डेकार में सड़े अण्डे की बू आती है।

सिरपीड़ा के पहले आंख के सामने जुगनु की तरह घुमते दिखाई पड़ता है अथवा नजर धुन्धली हो जाती है। आंख के सामने काला काला विन्दु दिखाई पड़ना। सिर पीड़ा के समय भूख लगना, कुछ खाने से उसकी कमी होना। किसी प्रकार इरपशान अथवा ऋतुस्राव दब जाने से सिर-पीड़ा; नाक से रक्तस्राव होने से उसको कमी होती है।

यह बार बार **टौन्सिल** के प्रदाह होने की आदत को दूर करता है।

खखारने से गले के भीतर से छोटे २ पनीर (छेना) के टुकड़े के ऐसा, निहायत, सड़ा, खराब स्वाद की बदबूदार चीज निकलना।

चर्म-रोग में भयानक खुजली होता है - किसी तरह से खुजली बन्द नहीं होता है; इतना खुजली होता है कि रात में नीन्द नहीं आती है। बिछावन की गर्म्मी से खुजली की वृद्धि होती है। खुजलाते २ खून निकलने पर भी उसकी कमी नहीं होती है सोरिनम के रोगी के चर्म निहायत गन्दा और तेल मला हुआ ऐसा होता है। चर्म्म दुर्गन्धी—स्नान करने से भी शरीर की बू नहीं छुटती है। शुष्क,

चांइटादार चर्म्मरोग, गर्मों में कम होता और जाड़े में बढ़ जाता है।

उदरामय में पानी कि तरह पतला तथा काला वो अतिशय बदबूदार मल होना सोरिनम का अति प्रिय लक्षण है। रात १ बजे से ४ बजे के अन्दर दस्त की वृद्धि होता है शिशुओं का दस्त और कालेरा में सिर्फ ऊपर के लिखित लक्षण के ऊपर सोरिनम के प्रयोग से बहुत बालक अकाल मृत्यु का हाथ से बच गया है।

इस दवाइ को विशेष सावधान के साथ व्यवहार करना चाहिये। इस का ३० या उच्च शक्ति के एक ही खुराक का प्रयोग से फल मिलेगा: बार बार इस का व्यवहार से नुकसान होता है।

शक्ति—३०—२००—उच्च शक्ति।

पलसेटिला।

PULSATILLA.

पलसेटिला में नक्स-भोमिका के स्वभाव के विपरीत अवस्था देखी जाती है। इस में स्त्री-लक्षण इतना अधिक

वर्त्तमान है जिस से ख्याल होता है यह स्त्रियों ही के लिये बना हुआ है और इसका विपरीत नक्स-भोमिका पुरुष ही के लिये बना है।

मानसिक वो शारीरिक अवस्था—पलसेटिला का रोगी नम्र, शान्त, सुशील तथा रोनेवाला ऐसा कि अपने रोग के विषय बोलते २ ही रो पड़ता है। शरीर पतला, दुबला: केश भूरा रंग का; आंख नीला, चेहरा फीका: सर्वदा चुपचाप दुःख सहने के स्वभाव इत्यादि पलसेटिला का खास पहचान है।

ऋतुस्राव बहुत देर में तथा अति अल्प परिमान से होता है। पांव भींगने के हेतु या पांव में ठन्ढ लगने के हेतु ऋतुस्राव बन्द हो जाय तो पलसेटिला उत्तम है। अचानक ऋतुस्राव बन्द हो कर अतिशय दर्द, ऐसा कि दर्द से छटपटाता है। शीतल बायु, जल अथवा शीतल वस्तु के प्रयोग से कुछ आराम होता है। प्रथम ऋतुस्राव देर में होना इत्यादि में यह बहुत उपकारी है।

यौवन के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य खराब हो जाय और उसी समय से एक दिन के लिये भी स्वस्थ न रहे; उस से रक्ताल्पता; सब्ज बिमारी (Chlorosis) यक्ष्मा इत्यादि

बिमारी की उत्पत्ति हो तो पलसेटिला को याद करना चाहिये।

लक्षणों का हमेशा बदलता रहना—पलसेटिला का विशेश चरित्र है। यह पलसेटिला का इतना विशेषत्व है कि सिर्फ इसी लक्षण के ऊपर निर्भर करके पलसेटिला का प्रयोगसे बहुत रोगी को आराम किया गया है। उदाहरण, यथा-दर्द परिवर्तन शील यानी किसी किस्म का दर्द हो वह हमेशा एक जगह पर कायम नहीं रहता है—कभी हाथ, कभी पांव, कभी कन्धा, कभी पेट में चलता फिरता रहता है। मल परिवर्तनशील यानी बार बार मल का रंग बदलता जाता है—कभी, सफेद, कभी हरा, कभी पीला, कभी पतला, कभी गाढ़ा होता है; दो बार का मल एक किस्म का नहीं होता है। पलसेटिला के रोगी का स्वभाव में भी इस किस्म की परिवर्त्तनशीलता देखी जाती है। 'रोगी कभी तो निहायत चिड़चिड़ाहा होता है फिर उस के बाद ही रो पड़ता है।

रक्तस्राव में भी यही परिवर्त्तनशील अवस्था देखा जाता है रक्तस्राव होते २ रुक जाता है; फिर थोड़े ही देर में स्राव शुरू होता है। रक्तस्राव कभी काला, कभी लाल, कभी थोड़ा, कभी ज्यादा होता है।

ज्वर परिवर्त्तनशील यानी ज्वर में सर्दी गर्मी तथा पसीना होने का कोई कायदा या समय ठिक नहीं है, अचानक ज्वर की हालत बदलती रहती है।

मम्पस् रोग (Mumps) वा कर्ण मूल-प्रदाह वहां से आराम होकर स्तन में अथवा पोथा में प्रदाह पैदा करता है।

मुंह सुखा लेकिन प्यास नहीं होता है—यह पलसेटिला का एक सिद्धप्रद लक्षण है। प्रातःकाल में मुंह का सवाद खराव रहता है अथवा किसी चीज का स्वाद अच्छा नहीं लगता है या किसी चीज का स्वाद नहीं मिलता है: स्वाद के तरह गन्ध भी नहीं मोलूम पड़ता है। स्वाद कड़ुया होता है।

म्युकस (वलगमी) झिल्लीके स्राव गाढ़ा, पीला-पन सब्ज लेकिन तेज नहीं: प्रमेह, प्रदर, जखम के पीप नाक के सर्दी, कान के पीव, वलगम इत्यादि किसी प्रकार के स्राव में उक्त प्रकार के लक्षण देख पाने से पलसेटिला द्वारा अति उत्तम फल मिलेगा।

चर्बी, घी, मक्खन, तेल इत्यादि युक्त खाद्य आहार

करने से पेट में किसी प्रकार की तकलीफ हो तो पलसेटिला अति उत्तम है। अतिसार, सब्ज पित्त मिला हुआ पतला मल होता है। रात में उसकी वृद्धि होती है। रात्रिकाल के बिना दर्द के दस्त में पलसेटिला-निहायत उपकारी है। दस्त की हालत बार २ बदलती है।

दन्तशूल—मुंह में ठंढा पानी रखने से कम होता है।

खुली हवा में तथा शीतल वस्तु के प्रयोग से रोग के कमी होना पलसेटिला का विशेष चरित्र है। गर्म कमरे में तथा गर्म प्रयोग से बिमारी की वृद्धि होती है। ज्वर में शीत बोध होता है किन्तु फिर भी ठन्ढी जगह में रहना चाहता है।

लोहाघटित औषध के अपव्यवहार के कारण वा कोदवा के दाने दब जाने से कोई पीड़ा हो तो पलसेटिला उपकारी होता है।

कोदवा के फैलने के समय में स्वस्थ बच्चों को पलसेटिला खिलाने से उस को यह रोग नहीं होता है।

दर्द; दर्द बार २ जगह बदलता है दर्द के साथ सर्व्वदा शीत बोध होता है; दर्द जितना अधिक होता है शीत भी

उतना ही अधिक होता है। दर्द अचानक शुरु होकर धीरे धीरे कम होता है।

गर्भस्राव के डर— जरायु से रक्तस्राव एक वार वन्द हो कर फिर दूने वेग से आरम्भ होता है। उस से आक्षेपयुक्त दर्द से दम वन्द तथा मूर्च्छा होता है; उस समय में खुली हवा से आराम मालुम होती है।

अक्षिजनि (गुहेरी): ऊपर वाले पपुटे में अक्षिजनि; चर्वीयुक्त आहार वा सुअर के मांस खाने के हेतु गुहरी होना।

शक्ति: ६—३०—२०० उच्चशक्ति

—:o:—

पाइरोजेन।

PYROGEN.

सड़ागला गौ मांस के रस से यह दवाई बनती है।

शरीर का प्रखर उत्ताप को कम करने के विषय में इस दवाई की विशेष शक्ति है। इस कारण प्लेग के रोगों में जब

शरीर के ताप अत्यन्त वृद्धि पा कर रोगी की मृत्यु होने का डर होता है तब पाइरोजेन के प्रयोग से विशेष फल मिलता है। हर किस्म का जहरीला रोग में पाइरोजेन अति उपकारी औषध है। प्रसव अथवा अस्त्र-चिकित्सा के बाद अथवा। किसी प्रकार गलित वाष्प के सुंघने से शरीर के रक्त दूषित होने में यह अति उत्कृष्ट औषध है। रोगी को बिछावन निहायत कठिन बोध होता है, रोगी जिस करवट में लेटता है उसी में जखम सा दर्द होता है। रोगी अत्यन्त अस्थिरता के साथ सर्वदा करवट बदलता रहता है। जीभ बड़ा, मोटा, साफ चिकना, लाल सूखा वा फटा फटा होता है और बात करने में तकलीफ होती है।

उदरामय में काला अथवा भूरा रंग के मल, और उसमें अतिशय दुर्गन्ध: बेखबरी में बिना दर्द के मलत्याग होता है। वायु त्याग के साथ मलत्याग कर डालना।

टाइफायेडादि सांघातिक पीड़ा में उक्त प्रकार के लक्षण समूह देख पाने से इस के प्रयोग से अति उत्तम फल मिलेगा।

गर्भ में भ्रून अथवा पुरैन सड़ जा कर ज्वर हो और

जरायु से दुर्गन्ध स्राव हो तो पाइरोजिन अवश्य देना चाहिये ।

लोकिया वा प्रसवान्तिक क्लेदस्राव पतला, अत्यन्त तेज़ और दुर्गन्ध होता है; लोकिया के स्राव वन्द होने के हेतु कम्प, ज्वर तथा वहुत परिमाण से दुर्गन्ध पसीना हो तो इस से फायदा मिलेगा ।

शक्ति ३०—२०० ।

——:※——:

रटानिया ।

RATANHIA.

दन्तशूल गर्भावस्था के प्रथम भाग में भयानक दन्त शूल; मालूम होता है कि सब दांत वहुत लम्बा हो गया है। दांत के दर्द लेटने से ज्यादा होता है; इसलिये रोगी टहलता फिरता रहता है ।

कब्ज के लिये यह अति उत्तम औषध है अत्यन्त कुथने के साथ कठिन मल निकलता है। कुथने से अर्श के मस्से निकल पड़ते हैं और उस के लिये वहुत देर तक दर्द होता

रहता है और मलद्वार में जलन्त अंगार की तरह जलता रहता है। मलत्याग के बाद बहुत देर तक दर्द; मलनली में कांच भोकने की तरह दर्द (थुजा)। मल नरम होने पर भी मलद्वार में ज्वाला।

मलद्वार के फिशार या फट जाना; मलद्वार में जरासा भी छूना बर्दास्त नहीं होता है। स्तन पीलाने वाली स्त्रियों के घुन्डियों के फट जाना (ग्राफइटिस, सिपिया)।

शक्ति ३—६—३०—२०० ।

——:o:——

रैनंकुलस बल्बोसस।

RANUNCULUS BULBOSUS.

मद्यादि-सेवन-जनित कुफल दूर करने में यह औषध उत्तम है। आक्षेपयुक्त डिलिरियम; आक्षेपयुक्त हिचकी।

भी यह उपकारी है। दिवान्धता, धुंधली दृष्टि; आंख के गोला में दबाव बोध तथा टीस मारना ऐसा तकलीफ। इन्टर-कष्टैल यानी पंजरे की हड्डियों के

मध्यवर्ती मांसपेशियों के वात रोग में यह निहायत उपयोगी औषध है। छाती में आघात सा दर्द; स्पर्श या संचालनसे उसकी वृद्धि; स्कैपुला वा पखुरे के किनारे के मांसपेशियों में दर्द विशेषतः अधिक देर तक बैठे २ काम करने वालों को। सूई के काम, टाइपराइटिंग, पियानो बजाना इत्यादि से दर्द हो तो रैनंकुलस अति उत्तम है। न्युरैलजिक पेन–तीर भोकना सा दर्द।

शरीर के बिन्दु २ परिमान स्थानों में ज्वाला बोध (एगारिकस, फस)।

शिशुओं के मुखमण्डल और गात्र में बरें या छोटे २ फोड़े के ऐसा इरप्शन निकलता हो तो दवाई से विशेष उपकार मिलेगा।

खुरांटी (Corns) स्पर्शासहिष्णु और सुई भोकने की तरह ज्वलायुक्त दर्द के साथ होता है।

शक्ति २–६–३०–२००।

——:o:——

रिउम।

RHEUM.

शिशुओं का दांत निकलने के समय का **दस्त तथा शिशुकालरा** में यह अति उत्तम औषध है निहायत खट्टा बूदार मल होना इस का विशिष्ट लक्षण है। सिर्फ मल ही खट्टा नहीं बल्कि शिशु का सारा शरीर में खट्टा बू—ऐसा कि रोगी को उत्तम रूप से धोने से भी वह खट्टा बू नहीं छुटता है। मलत्याग करने के पहले पेट में दर्द और मलत्याग करने के अन्त में कुन्थना होता है, मल भूरा रंग के और आंव मिला हुआ होता है। बालकों के दांत निकलने के समय का दस्त वो पेट के दर्द में मैगनेशिया-कार्ब के साथ रिउम को तुलना करना चाहिये।

शक्ति ६—३०—२००

रोडोडेन्ड्रन।

RHODODENDRON.

नाजुक मिजाज के (Nervous) लोग, झड़तुफान

से विशेषतः वज्रपात से डरता है, कारण वज्रपात के पहले उसकी तबीयत खराब हो जाती है परन्तु झड़तुफानवो वज्रपात आरम्भ होने से कुछ आराम मालुम होता है (फस, नेट्रम-कार्ब, साइलिसिया, सोराइनम)।

रस-टक्स की तरह सजल वायु वा गीली हवा से रोग की वृद्धि होना इस दवा का विशेष लक्षण है।

वातरोग इत्यादि में रस-टक्स की तरह इस में भी विश्राम से वृद्धि तथा संचालन से रोग की कमी होती है किन्तु रोडोडेन्ड्रन के दर्द शरीर के गहरा स्थान में और हड्डी को गिलाफ झिल्ली में मालुम होता है—जैसे टिबिया हड्डी तथा बाहु की हड्डियां, दांत इत्यादि में दर्द होता है यह पट्ठों में भी होता है।

अन्डकोष के ऊपर इस दवा की अति उत्तम क्रिया देखी जाती है। अन्डकोष फूला, कठिन, उसमें आघात सा दर्द: वह दर्द कभी २ पेट के भितर और जांघ तक फैलता है और स्पर्श से वृद्धि पाता है। अन्डकोष के प्रदाह और दर्द में इसको औरम-मेट, क्लिमेटीश और पलसेटिला के साथ तुलना करना चाहिये। यदि गर्मीरोग से ऐसा हो

विशेषतः पारा के अपव्यवहार से हा तो ओरम सर्वोत्कृष्ट है। सुजाक के स्राव बन्द हाने के हेतु ऐसा होने से क्लिमेटिस अथवा पलस अच्छा है। यदि ऐसी हालत वातरोग के हेतु हो तो रोडोडेन्ड्रन सर्वोत्तम है।

जोड़ों का वात रोग में जोड़ों का फूलना और उस प्रदाह का एक स्थान से अन्य जोड़ में चलना फिड़ना। अंगुठे के गठिया।

३०—२००

रस-टक्स।

RHUS TOX.

अस्थिरता रसटक्स का एक प्रधान लक्षण है। रोगी जितना छटपटाता है, जितना इधर उधर करता है उतना ही उसको आराम बोध होता है। इस कारण रोगी जरासा भी स्थिर रह नहीं सकता है लगातार इधर उधर करता रहता है। एकोनाइट और आर्सेनिक में भी अत्यन्त अस्थिरता है। जरा सा चिन्ता करने से ही इन दोनों के साथ रसटक्स के निर्वाचन में भूल नहीं करेंगे। एकोनाइट में अत्यन्त अस्थिरता के साथ बहुत प्यास रहता है और इधर

उधर करने से रोगी को कुछ भी आराम बोध नहीं होता है। आर्सेनिक में भी अत्यन्त अस्थिरता के साथ बहुत प्यास है किन्तु बहुत थोड़ा २ पानी पीता है और इस में निहायत कमजोरि देखी जाती है और इधर उधर करने से कुछ आराम भी नहीं मालूम होता है।

नया या पुराना **वातादि रोग में** जोंड़ो के दर्द में पहला हरकत से कुछ तकलीफ होती है लेकिन उसके बाद आफियत मालूम होती है। रोगी जितना हरकत करता है उसको उतना ही आराम मालूम होता है।

अचेतनावस्था के साथ डिलिरियम में रोगी बड़बड़ाता रहता है। किन्तु इस की अचेतनावस्था ओपिअम वो हाइयो-सायेमस की तरह उतना अधिक नहीं होती है यानी रस-टक्स के रोगी डिलिरियम में कोइ बात पुछने से जवाब देता है। गौ-मांस के ऐसा लाल व सुखा जीभ, अथवा जीभ के त्रिभू-

---

जाकार अग्रभाग लाल। यह रस-टक्स के एक सिद्धिप्रद लक्षण है। रोग कोई हो अगर यह लक्षण मिले तो रस-टक्स देने में जरासा भी देर न करना चाहिये।

पेशियों (पट्ठों) के ऊपर रस-टक्स को अति सुन्दर

क्रिया है। पेशी दर्द के साथ और अंकड़ा हुआ होता है। स्थिर भाव से रहने से या संचालन में तकलीफ मालूम होती है किन्तु लगातार हरकत से आफियत होती है। गिली ठन्ढा हवा से वातरोग की तरह दर्द। मोच आना, व्याम से या किसी भारी चीज उठाने से पेशियों में दर्द हो तो रस-टक्स अति उत्तम है। दर्द के साथ झिनझिनी मालूम होना रस टक्स का एक प्रिय लक्षण है।

कनसुहा के लिए व गर्दन और ठुड्ढी के गिलटियों के फुलन व दर्द के लिए निहायत उमदा है।

चर्म्म रोग; रस-टक्स चर्म्म-रोग के भी अति उत्कृष्ट औषध है। दानें वा इरप्शनस फफोले की तरह या पंसाहा की तरह होता है। उक्त प्रकार के इरपशन के साथ अस्थिरता वर्त्तमान रहने से खुजली, जहरबाद इत्यादि बहुत प्रकार के चर्म्मरोग में यह उपकारी होता है। चर्म्म का फूलन, प्रदाह; ज्वाला, खुजली। इरिसिपेलस (जहरबाद) बांया तरफ से शुरू हो कर दाहिना तरफ जाता है।

वसन्त रोग में गोटियां बहुत लाल होने के साथ टाइफयेड का लक्षण रहने से रस-टक्स द्वारा विशेष फल

मिलेगा। **उदरामय**—टाइफयेड ज्वर के प्रारम्भ में नितान्त निस्तेजता के साथ बेखबरी से मलत्याग: मांस के धोअन ऐसा मल में रस टक्स अमृत सदृश है।

रस-टक्स के प्रायः सर्वप्रकार पीड़ा में शरीर में वात रोग की तरह दर्द देखा जाता है।

ठन्डी गिली हवा में रस-टक्स की तकलीफ की वृद्धि होती है। इस लिये वर्षा के दिनों के ज्वरादि बिमारी में प्रायः रस-टक्स द्वारा ही उपकार मिलता है।

रोग की वृद्धि—रात में विशेषतः दोपहर रात में स्थिर भाव से रहने से: गिली ठन्ढी हवा से, वर्षा के दिन में।

रोग की आफियत—गर्म सूखी हवा में गात्रावृत करने से; गर्म प्रयोग से: हरकत से।

किसी स्थान में मोच आने से रस-टक्स के बाहर प्रयोग से विशेष फल होता है। कोई भारी चीज उठाने से

रोग जैसा रक्तस्राव, गर्भपात का डर, इत्यादि में रस-टक्स महौषध है।

शक्ति ६—३०—२००।

रिसिनस।

RICINUS.

यह दवा अन्डी वा अडन्ड के बीज से बनती है। डाए-रिक वा अतिसारिक कालेरा में भींगा भात के पानी की तरह और बिना दर्द के दस्त होने से यह विशेष उपकारी होता है। कालेरा के कोलैप्स वा पतनावस्था में भी यदि दस्त और वर्त्तमान रहे, प्यास व अस्थिरता के साथ नाड़ी जल्द वो क्षुद्र हो तो इस को प्रयोग किया जा सकता है। उपरोक्त लक्षणों के साथ ऐंठन भी रह सकता है।

प्रसव के बाद दस्त में दूध आने में देर हो तो अड़न्ड के पत्ते को पानी में उबाल कर उस पानी से स्तन में सेंक करने से उपकार होता है। स्तन में दूध अल्प हो, दूध न हो या दूध खराब हो तो रिसिनस के प्रयोग से विशेष फल मिलता है।

शक्ति ३—६—३०

रोबिनिया।

ROBINIA.

यह अम्लरोग केसाथ अजीर्ण रोग (Acid Dyspepsia में एक महौषध है। ढेकार के साथ खट्टा पानी निकलना; खट्टा कै होना; पेट और छाती में ज्वाला; पेट में ममोड़ा; पेट-फूलना, पेट बोलना इत्यादि में यह अति उत्तम है। अम्ल पीड़ा के हेतु हिचकी होना।

शक्ति १—३—६।

रिउमेक्स।

RUMEX.

स्वांस यन्त्रों के उपर इस दवाइ की विशेष क्रिया है। गले में, कण्ठ में या ष्टारनम के नीचे लगातार सुरसुराहट या खुसखुसाहट होकर सूखा खांसी होता रहता है। ठन्ढी हवा के स्वांस लेने से, रात में और बायां कर लेटने से खांसी की वृद्धि होती है। खांसी के समय गले में ज़खम सा दर्द होता

है। बायां स्तन के घुन्डी के निम्नभाग में सुई भोकने के सदृश दर्द होना—रिउमेक्स का एक प्रिय लक्षण है। गले के भितर ऐसा मालूम पड़ता है कि वहां पर गोला सा बलगम अटका हुआ है, घोंट लेने से वह नीचे उतर जाता है लेकिन थोड़े ही देर में फिर आ जाता है। खाँसी के साथ कभी कभी पेशाब निकल जाता है।

प्रातःकाल के दस्त में रिउमेक्स उपकारी है। भोर ५ बजे से सुबह १० बजे तक दस्त होता है। भोर में बिछावन से उठते २ ही दौड़ कर पैखाना में जाना पड़ता है (नेट्रम-सल्फ पोड़ो, एलो)। मल भुरा रंग का, बहुत परिमाण, दुर्गन्धी और बिना दर्द के होता है।

चर्म रोग में भी रिउमेक्स उपकारी है। लेटने के समय में बदन का कपड़ा खोलने के साथ ही खुजली शुरु होता है। खुजली ठन्ढी हवा से ज्यादा होता है। इरपशन वा दानें रसदार होता है।

यह यक्ष्माधातु के शरीर में विशेष उपयोगी औषध है। उदरामय के साथ यक्ष्मारोग में यह विसेश फायदा देता है। स्वरभंग; ठन्ढ से और सन्ध्या के समय उसकी वृद्धि

शक्ति ६—३०—२००।

है। प्रसव के वाद कांच-निकलना (इग्नेसिया, पोडो, म्युरियेटिक-एसिड-म्युर) मस्से (Warts) दर्द वाला।

शक्ति ६—३०—२००।

सैवाइना।

SABINA.

जरायु से रक्तस्राव के लिये यह विशेष उपकारी है। ऋतु की गड़बड़ी, प्रसव के वाद या गर्भस्राव होने से या गर्भस्राव होने के उपक्रम होने से बहुत परिमाण से रक्तस्राव हो तो यह निहायत उपकार करता है। सैवाइना का रक्तस्राव ठहर ठहर कर होता है और हिलने डोलने से वृद्धि होती है। स्रावित रक्त काला, ढेला २ अथवा तरल और काला ढेला मिश्रित होता है। जरायु के शिथिलता के हेतु रक्तस्राव होना।

कमर के पश्चात् भाग से तलपेट के दोनों पार्श्व के हड्डियों संयोगस्थान (पिउबिस) तक दर्द होना इस का एक अति प्रधान लक्षण है। ऋतु की गड़बड़ी, रक्तस्राव

अथवा गर्भस्राव का उपक्रम में इस प्रकार का दर्द हो तो अवश्य सैवाइना प्रयोग करना चाहिये।

पलसेटिला की तरह गरम हवा वो गरम गृह में रोग की वृद्धि और खुली हवा तथा ठंढ से रोग की आफियत होना सेवाइना में भी देखा जाता है किन्तु इन दोनों की विशेषता यह है कि पलसेटिला रक्तस्राव की वृद्धि और सैवाइना कमी करता है अर्थात् रक्तस्राव निहायत कम होने से पलसेटिला वा ज्यादा होने से सैवाइना दिया जाता है।

गर्भ के तृतीय महीना में गर्भस्राव के डर और उस में उपरोक्त प्रकार के कमर-दर्द होने से सेवाइना द्वारा विशेश फल मिलेगा। किन्तु यदि दर्द कमर के दोनों तरफ से घूम कर जरायु के भीतर आकर, शेष हो तो भाइवरनम ओपुलस द्वारा उपकार मिलेगा। गर्भपात की आदत पड़ जाने से सैवाइना उपकारी होता है।

वात रोग के कारण कलाई का और पैर के अंगुलिया के जोड़ों के फूलने के साथ अगर योनि द्वार से वहुत परिमाण से रक्तस्राव हो तो सैवाइना उत्तम (कलोफाइलम) है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

——:०:——

सेलीसीलिक एसिड ।

SALECYLIC ACID.

अजीर्ण और अम्बल रोग पेट में बहुत सी वायु अत्यन्त अम्बल जमा होता है रोगी बार २ ढेकार करता है ऐसे हालत में इस दवा का प्रयोग होना अति अवश्यक है ।

एपथी मुख में घाव (Apthoe) मुख के भीतर में कांटेदार घाव, कि जिस्से ज्वाला दर्द और मुख से दुर्गन्ध बाहर होता है उसके साथ २ पाकस्थली अत्यन्त अम्बल की वृद्धि और खट्टा ढेकार आता रहता है ।

शक्ति ६—१२—३०

सैम्बुकस ।

SAMBUCUS.

स्वांस प्रस्वांस के यन्त्रों के ऊपर ही इस की प्रधान क्रिया प्रकाश पाती है । दम्मा, हूपिंग कफ, क्रूप इत्यादि में यह महोपकारी औषध है। इन में इसका विशेष लक्षण यह है कि दो पहर रात के बाद अचानक दम बन्द होने के ऐसा होकर बिमारी शुरू होती है। रोगी उठ कर बैठा रहता है स्वांस लेने के लिये बेचैन हो जाता है, उसका चेहरा नीला हो जाता है। * चिल्लाने के साथ साथ खांसते २ बच्चों के दम बन्द होने का भाव हो जाता है; सां सां शब्द के साथ स्वांस प्रस्वांस बहुत जल्द चलता है।

स्वर भंग—गला में बहुत सा लस्सादार गुंद के ऐसा बलगम जमा रहने के साथ स्वरभंग ।

ज्वर—यदि ज्वर में, जागने की हालत में बहुत परिमाण से दुर्बल कारक पसीना होता रहे और सोने से ही पसीना

बन्द हो जाय तो अवश्य सैम्बुकस से आरोग्य होगा। (इसका विपरीत लक्षण में कोनायम व थुजा व्यवहार होता है)।

शक्ति ६—३०—२०० ।

सैंगुइनेरियां ।

SANGUINARIA.

सैंगुइनेरिया **सिरपीड़ा** का महौषध है। इस के दर्द स्पाइजिलिया की तरह सिर के पश्चात् भाग से आरम्भ होता है, और क्रमशः आंख के ऊपरी भाग में आकर पीड़ा देता रहता है। इन दोनों की विशेषता यह है—यदि बांया पार्श्व में दर्द हो तो स्पाइजिलिया और दाहिना पार्श्व में हो तो सैंगुइनेरिया व्यवहार करना चाहिये। दर्द के समय सैंगुइनेरिया के रोगी अन्धेरा गृह में तथा अकेले रहना पसन्द करता है मतली और वमन होता है।

सैंगुइनेरिया में एक प्रकार का सामयिक (Periodical) सिरपीड़ा देखा जाता है; सिर पीड़ा सूर्य्य के उदय के साथ शुरु होता है और बढ़ते २ दोपहर को बहुत तेज़ होता है; उसके बाद फिर कम होते २ साम को आराम हो जाता है (स्पाइजिलिया) स्त्रियों को तीसरी उम्र में सिर पीड़ा, प्रति सप्तम दिवस में सिरपीड़ा (सेवाडि: साइलिसिया) ।

यदि देखो कि ब्रोंकाइटिस या निउमोनिया के बाद किसी तौर से भी खांसी की कमी नहीं हो रही है—मालुम हो रहा है कि रोगी को शीघ्र ही यक्ष्मारोग हो जायगा—हर रोज थोड़ा थोड़ा ज्वर होता है और गाल लाल हो जाता है—श्वांस के साथ नितान्त दुर्गन्धी बलगम निकलता है तब इस हालत में सैंगुइनेरिया से अति उत्तम फल मिलेगा। दहिना फेफड़ा सैंगुइनेरिया के प्रिय स्थान है। विमारी पुराना हो या नया हो यदि दहिना फेफड़े में हो तो सैंगुइनेरिया को अवश्य स्मरन करो। टाइफायेड ज्वर के साथ निउमोनिया, मुखमण्डल रक्तवर्ण और स्वांसप्रस्वांस में अत्यन्त कष्ट होने से सैंगुइनेरिया का प्रयोग होता है।

दहिना कन्धा तथा बाहु में वात के दर्द, हाथ उठा नहीं सकता है, रात में कष्ट की वृद्धि होती है—यह भी सैंगुइने रिया का एक अति प्रधान लक्षण है ।

स्त्रियों के ऋतु के समय (विशेषतः तीसरी उम्र में) रोगिणी के शरीर में आग सा लहर (flusshes of heat) मालुम पड़ना, हाथ पैर में ज्वाला । यदि इस में सलफर अथवा लैकेसिस से उपकार न हो तो सैंगुइनेरिया द्वारा उपकार मिलेगा, विशेषतः यदि गाल लाल हो तो ।

नकड़ा— (Nasal polypus) में यह दवाई उपकारी है ।

इरपशन—युवती स्त्रियों के मुखमण्डल में इरपशन—विशेषतः ऋतुबन्द होने से इरपशन हो तो सैंगुइनेरिया अति फलप्रद होता है ।

तीसरी उम्र में दर्द के साथ स्तन का फूलना ।

शक्ति ६—३०—२००—c. m.

सिकेलि करनिउटम

SECALE CORNUTUM.

सिकेलि के मूल-अर्क अधिक मात्र से प्रयोग करने से जरायु के संकोचन होता है। इस कारण अनेक मूर्ख होमियोपैथिक चिकित्सक भी जरायु से रक्तस्राव वन्द करने के लिये अथवा शिघ्र प्रसव कराने के लिये अधिक मात्रा से इसका मदर टींचर प्रयोग कर के विपद घटाते है। इस से जरायु के दवाव से उसके भीतर के भ्रूण मर जा सकता है और जरायु भी फट जा सकता है। होमियोपैथिक में ऐसी वहुत दवा है जिन के हर एक दवा लक्षणानुसार प्रयुक्त होने से सिकेलि की तरह कार्य्य कर सकता है।

रोगिणी के गढ़न, वयस और स्वभाव के ऊपर ख्याल रख कर सिकेलि के प्रयोग करने से सन्तोषजनक फल लाभ होता है। सिकेली की रोगिणी के शरीर अतिशय जीर्ण शीर्ण होता है, शरीरके पेसियां ढीला होता है, इस प्रकार अवस्था में यदि पतला काला रक्तस्राव (Passive haemorrhage) हो तो सिकेलि अमृत सदृश है। इस रक्तस्राव का और एक विशेष लक्षण यह है कि हिलने डोलने से रक्तस्राव कि वृद्धि

होती है। यह रक्तस्राव सिर्फ जरायु से होता है ऐसा नहीं—शरीर का किसी द्वारा से हो सकता है।

प्रसव—उस प्रकार की शरीरिक अवस्था की स्त्रियों के प्रसवकाल में यदि दर्द अच्छी तरह से न हो या दर्द धीरे २ होता रहे तो २०० सक्ति का सिकेली की एक मात्रा से ही अति शीघ्र सुप्रसव हो जायगा।

ऋतुस्राव अनियमित होता है; बहुत परिमाण से पतला काला रक्तस्राव। आगामी ऋतु के समय तक पतला, पानी की तरह रक्तस्राव होता रहता है।

प्रसवान्तिक दर्द (After pains) अत्यन्त कष्टदायक और दीर्घकालस्थाई होने से और जरायु के डमरू की तरह संकोचन (Hour-glass contraction) होने से सिकेली अति उत्तम है।

गर्भस्राव—गर्भ के तृतय महिना में गर्भस्राव के डर: प्रसव दर्द की तरह दर्द खुब जोर से होता है और बहुत देर तक रहता है।

स्तन के दूध सूख जाने से विशेषतः पतलीदुबली रोगिणी स्त्रियों के स्तन के दूध सूख जाने से सिकेलि अति उपकारी है।

कोलैप्स तथा हिमांग—कालेरा रोग की कोलैप्स अवस्था में सर्वांग बरफ की तरह शीतल, तथापि शरीर के भितर अत्यन्त ज्वाला होता है; गात्र में कपड़ा नहीं रख सकता है। यह सिकेलि का अति प्रिय लक्षण है। वृद्ध व्यक्तियों का गैंग्रीन (गलित जखम) में यदि हाथ पैर बरफ की तरह शीतल रहे और सर्वांग में आग सा ज्वाला हो तो सिकेलि के प्रयोग से आशातीत फल मिलेगा।

कालेरा में, कैम्फर में भी सिकेलि की तरह बदन ठंढा व शरीर के भितर ज्वाला होता है। बिमारी के शुरू होते ही कोलैप्स हो जाने से और रोगी के मल काला और दुर्गन्धी होने से कैम्फर उत्तम है; सिकेलि के कोलैप्स देर में होता है। सिकेलि के चरणों में ज्वाला और हाथ पैर के अंगुलियों में ऐंठन होता है। इस से अंगुलियां अलग २ हो कर पीछे के तरफ टेढ़ा हो जाते है।

शरीर के शाखायों में झिनझिनी होना; पक्षाघात; रोगी को मालुम होता है कि उस के हाथ पैर के ऊपर से कोइ कीड़ा चल फिर रहा है।

यदि शरीर में ज्यादा दर्दवाला छोटे २ फोड़े हो तो सिकेलि विशेष उपकार करता है। वे फोड़े धीरे २ और देर में पकता है; जल्दी आरोग्य नहीं होता है।

कालेरा में पूर्वोक्त लक्षणों के सिवाय नीचे लिखित लक्षणों भी देखा जाता हैं, यथा—मुखमंडल फीका, कुंचित; आंख और चेहरा का धस जाना; आँख के चारो ओर नीला। हाथ पैर के अंगुलियो के चमड़े का सिकुड़ जाना। पेट में अत्यन्त ज्वाला, कोई चीज भोजन करना मात्र ही कै हो जाना पानी की तरह पतला, हरा रंग के दुर्गन्धी कै; अत्यन्त श्वास। मूत्र वन्द।

शक्ति ६—३०—२००।

सेलिनियम।

SELENIUM.

सर्वांगिक दुर्वलता इस दवाइ का एक प्रधान लक्षण

है रोगी इतना दुर्बल होता है कि किसी प्रकार का शारीरिक अथवा मानसिक परिश्रम नहीं कर सकता है। इस प्रकार की दुर्बलता टाइफायेड ज्वर के बाद अथवा अत्यन्त शुक्रपात के हेतु हो सकती है।

यह **धातु-दुर्बलता** का महौषध है। लिंग अतिशय दुर्बल और धीरे २ खड़ा होता है; सहवास के समय निहायत जल्दी शुक्रपात हो जाता है और उसके साथ शरीर में एक प्रकार कम्पनभाव देखा जाता है। सहवास के अन्त में रोगी अतिशय चिरचिराहा और दुर्बल हो जाता है।

ध्वजभंग—संगम की प्रबल इच्छा होती है किन्तु सहवास करने की शक्ति नहीं रहती है; स्वप्नदोष जल्दी २ होता है; इस से रोगी क्रमशः दुर्बल होता जाता है और उसके कमर बलहीन हो जाता है। अकसर शुक्र चुता रहता है; बैठि हुई हालत में, निद्रित अवस्था में, चल फिर करने के समय में अथवा मलत्याग काल में प्रस्टेटिक रस (पतला वीर्य की तरह चीज) चूकर निकलता रहता है।

टाइफायेड ज्वर के बाद मेरुदंड में अत्यन्त दुर्बलता हो

और पक्षाघात का डर हो तो सेलिनियम से उपकार होता है। पीड़ित स्थान शीर्ण, शुष्क।

कब्ज—मलके लेंड़ी इतना मोटा होता है कि बहुत कुंथने पर भी नहीं निकलता है, अंगुली से निकालना पड़ता है।

सिर पीड़ा—मतवालों की सिरपीड़ा; बदमासी से सिर-पीड़ा, चाय या शराब पीने से सिर पीड़ा।

बाल का गिरना—सिर, भौंह, दाढ़ी, लिंग-देश के बाल का गिरना।

स्मरणशक्ति की दुर्बलता; विषय कार्य्य का बहुत बात भूल जाना।

स्वरभंग—कत्थकों तथा वक्तृता कर्त्ताओं का स्वरभंग। संगीत के आरम्भ में स्वरभंग, खखार २ कर गला साफ करना पड़ता है।

शक्ति ३०—२००—१००० ।

सिपिया।

SEPIA.

सिपिया नामके मछली के मुंह से निकला हुआ रस से इस दवा की मादर टिंचर बनता है ।

पेडु वा तलपेट में सिपिया के सर्वप्रधान लक्षण प्रकट होता है। रोगिणी मालुम करती है कि उस के पेडू के भीतर की तमाम चीज योनिद्वार से बाहर निकल पड़ेगी। यह सिपिया का अति प्रिय लक्षण है। पेड़ू में प्रसव की तरह दर्द; पेट को तमाम चीज योनिद्वार से बाहर निकल पड़ने के डर से एक जांघ को दूसरा जांघ पर दबा कर बैठी रहती है । रोगिणी को मालुम पड़ता है कि उस के पेड़ू में से गर्मी उठ कर समस्त शरीर में फैल रही है। हाथ और पैर पर्य्यायक्रम से ठन्ढा और गरम यानी जब हाथ गरम तब पांव ठन्डा और जब पांव गरम तब हाथ ठन्डा होता है ।

जरायुमें रक्ताधिक्य हेतु यदि ऐसा दर्द हो कि तलपेट से सब चीज ठेल कर बाहर निकल जायगी तो सिपिया उतकृष्ट है। नाभी से जरायु तक सुई चुभनी सा दर्द।

यानि से ऊपर के तरफ सुई भाकना सा दर्द। जरायु के प्रोलैप्सस वा टलजाने में यदि ऊपर के लिखित लक्षण मिले तो सिपिया अद्वितीय औषथ है। जरायु में बहुत दिन तक प्रदाह वर्त्तमान रहने से उस प्रदाह से उसमें नाना प्रकार के कठिन रोग हो सकता है, ऐसा कि प्रदरस्राव वो सामान्य जखम इत्यादि से लेकर टिउमर (रसौली), कैन्सर (दुष्ट जखम) तक हो सकता है।

जरायु के उक्त प्रकार के लक्षण के साथ मलपथ वा कांच निकल पड़ना। मलपथ में बोझ मालुम पड़ना, रोगी को ख्याल होता है कि उस के मलद्वार में एक गोला सा पदार्थ रखा है। ये सब लक्षण भी जरायु के लक्षण की तरह ही तकलीफदार है।

मूत्रयन्त्रों के ऊपर भी सिपिया का अति उत्तम क्रिया देखी जाती है। मूत्रस्थली में दबाव बोध तथा बार २ पेशाब करने की इच्छा। पेशाब खून मिला हुआ वा लालपन होता है। मूत्र में इतना दुर्गन्ध होता है कि उस को गृह में रक्खा नहीं जाता है। मूत्र में जली हुई मिट्टी की तरह गाद पड़ता है। उपरोक्त लक्षण प्रायः स्त्रियों के रोगों में देखा जाता है। बच्चों के प्रथम निद्रा में ही बिछावन में पेशाब करने की आदत के लिये सिपिया अति उत्तम है।

ऋतुस्राव—सिपिया में बहुत प्रकार का ऋतुस्राव देखा जाता है, यथा—ऋतुस्राव का निर्दिष्ट समय के पहले, अल्प परिमाण या बहुत परिमाण से होता है। स्रावकाल में बहुत कष्ट और उसके साथ पूर्वोक्त प्रकार के प्रसव की तरह दर्द वर्तमान रहता है।

गर्भावस्था में प्रातः वमन, खाद्यवस्तु के रसोंई की बू से ऐसा कि खाद्यवस्तु की दृष्टि अथवा स्मृति से ही भयानक मतली उपस्थित होती है (आर्स, कलचिकम)।

पुरुष के जननेन्द्रिय के ऊपर भी सिपिया का अति सुन्दर क्रिया है। **गणोरिया** (सुजाक) रोग में विशेषतः पुराना सुजाक में कोई तकलीफ न रहे, पीप गाढ़ा हो, पीप निहायत अल्प हो, प्रातःकाल में लिंग के मुखभाग में सिर्फ दो एक बुन्द पीप गोंद की तरह लगा रहे, अथवा लिंग के अग्रभाग को दबाने से दो एक बुन्द पीप निकले; ऐसी हालत में सिपिया की उच्चशक्ति के दो एक खुराक ही से विशेष उपकार होता है। यदि सिपिया से फल न मिले तो ऐसी हालत में केलि-आयोड के प्रयोग से उपकार मिलेगा। ऐसी हालत में जब पेशाब में ज्वाला हो तो कैपसिकम प्रयोग होता है।

सिपिया में मानसिक लक्षण कुछकदर पलसेटिला की तरह है। रोगिणी गमगीन रहती है, रोती रहती है। लेकिन रोने का कोई कारण बता नहीं सकती है। इस कारण उक्त प्रकार का मानसिक लक्षण के साथ जरायु के कोई पीड़ा में पलसेटिला द्वारा उपकार न मिले तो सिपिया का प्रयोग हो सकता है। इसके अलावे सिपिया में और एक मानसिक लक्षण देखा जाता है। यह लक्षण पलसेटिला में नहीं है। नितान्त उदासभाव, किसी काम अथवा लोग के प्रति ख्याल या हमदर्दी नहीं रहती है। ऐसा कि अपने स्वामी, अथवा सन्तान के प्रति भी पहले की तरह माया, ममता नहीं रहती है। अगर संसार बह भी जावें तो भी कोई ख्याल नहीं करती है।

आधकपाड़ी—जरायु की गड़बड़ी के साथ आधकपाड़ी में सिपिया उत्तम है। सिपिया में और एक प्रकार का सिड़ पीड़ा देखा जाता है—न मालुम कहां से वह दर्द आकर सिर में धक्का मारता रहता है। ऋतु के प्रारम्भ में और कम ऋतु होने वाली दुबली तथा हिष्टिरियावाली स्त्रियों में इस प्रकार का सिरदर्द देखा जाता है। दबाने का या फट जाने की तरह दर्द; टहलने फिरने से, सामने झुकने से, मानसिक परिश्रम से पीड़ा की वृद्धि, सिर को दबाने से

या कस कर बांधने से और हिलने डोलने से आफियत होती है।

आंख का ऊपर वाले पपुटे के लटक जाने में सिपिया उत्तम है (कष्टिकम, जेल्स)

नाक के पुराना सर्दि में यह उत्कृष्ट औषध है। सर्दि बहुत परिमाण और गाढ़ा होता है लेकिन तेज नहीं होता है। पलसेटिला में भी इस प्रकार का सर्दी आरोग्य होता है किन्तु यदि स्वभावतः हो अथवा पलसेटिला के प्रयोग से ऋतुस्राव ज्यादा हो तो सिपिया देना चाहिये।

जर्द रंग-पाण्डु रोग की तरह समस्त शरीर जर्द होना; तल पेट अधिकतर जर्द; दोनों गालों के ऊपरी भाग में पीला रंग के दाग; वह दाग नाक के ऊपर आकर मिलित होकर घोड़े के जिन की तरह दिखाई पड़ता है। यह सिपिया का एक सिद्धिप्रद लक्षण है। इस लक्षण के साथ स्त्रियों में जरायु की कोई पीड़ा या ऋतु की गड़बड़ी अवश्य देखी जाती है।

पाकस्थली में शून्यता बोध—मालुम होता है कि पेट में कुछ भी नहीं है। यह सिपिया का एक प्रधान लक्षण है। इग्नेशिया, हाइड्रासट्रिस, फस इत्यादि बहुत औषधों में यह लक्षण है किन्तु यदि इसके साथ जरायु की कोई गड़बड़ी रहे तो सिपिया ही सब से उत्तम है।

कब्ज इत्यादि में रोगी ख्याल करता है कि उस का मलद्वार में गोलो सी कोई चीज भरी हुई है: मलत्याग करने से भी वह भाव नहीं जाता है। बहुत कुथने से भी मल नहीं निकलता है विशेषतः बच्चों के कब्ज में अङ्गुली से मल को तोड़ २ कर निकालना पड़ता है।

अतिसार--मल सब्जरंग, लगातार मलद्वार से निकलता रहता है। दूध पीने के हेतु बच्चों को दस्त अथवा दूध पीने से ही दस्त की वृद्धि हो, तो सिपिया उत्तम है।

दुर्बलता: सिपिया का रोगी निहायत दुर्बल होता है। सामान्य परिश्रम से ही अतिशय थक जाता है। सामान्य चल फिर करने से, गाड़ी में चढ़ने से अथवा घुटनों के भार बैठने से ही उसको मूर्च्छा का भाव होता है। पानी में रह कर काम करने के हेतु इस प्रकार के कष्ट हो तो सिपिया

उत्तम है। इस कारण सिपिया को धोबीन की दवाई (Washer womans's remedy) भी कहा जाता है।

चर्म्मरोग—नाना प्रकार के चर्म्म रोग में सिपिया उत्तम औषध है; खुजलाने से उस में ज्वाला होता है। नाना अंग में खुजली विशेषतः जननेन्द्रिय का बाहरी भाग में। चेहरे, छाती और पेट का ऊपर भूरा रंग के दाग पड़ना। शरीर में बड़े बड़े पीवपुर्ण फून्सियां बार २ होते रहे तो सिपिया उत्तम है।

केश——बहुत परिमाण से बाल गिरना विशेषतः तीसरी उम्र में और पुराना सिरपीड़ा के बाद।

दर्द——यदि अन्यान्य स्थान का दर्द कमर के पश्चात् भाग में फैल जाय तो सिपिया उपकारी होता है।

शक्ति ३०—२०० और उच्च शक्ति।

साइलिसिया।

SILICEA.

स्कफुला (कण्ठमाला), रैकाइटिस Rachitis (अपुष्टा-

स्थि), सोरा Psora (खाज खुजली के विष) वाला शरीर को सुधारने के लिये यह एक महौषध है।

शरीर में उपयुक्त पोषन क्रिया के अभाव के कारण शिशुओं का देह पुष्ट नहीं हो सकता है शिशु का पेट बड़ा लेकिन अंगप्रत्यंग शीर्ण होता है। हाथ पांव पतला २ आंख धसी हुई; मुखमण्डल का चमड़ा वृद्ध मनुष्य की तरह सिकुड़ा हुआ। शिशु निहायत दुर्बल होता है। शिशु आकार में भी बढ़ता नहीं। शिशु का हड्डियां कमजोर और टेढ़ा बेढ़ा होती है। बच्चों देर में चलना शिखता है। बच्चों का चांदी (Fontauells) और सिर की हड्डियों के जोड़ें (Sutures) खुले रहते हैं। बच्चों की बुद्धि भी निहायत कम होती है। सिर में बहुत पसीना होता है। कैल-केरिया—कार्ब के साथ साइलिसिया का शारीरिक लक्षण का बहुत सादृश्य है। लेकिन ख्याल रखना चाहिए कि कैल-केरिया के रोगी साइलिसिया की तरह पतला व सूखा नहीं होता है बलकि ढीला, मोटा बलगमी मिजाज का होता है। साइलिसिया के रोगी बेशी आहार करता है लेकिन फिर भी सूखता जाता है।

कब्ज——साइलिशिया के रोगो में एक आश्चर्य्य प्रकार का

कब्ज देखा जाता है। कुंथते २ कुछ मल मलद्वार में आकर फिर भीतर चला जाता है (थुजा)।

बच्चों का दांत निकलने के समय के दस्त में भी यह उत्तम औषध है। मल में नाना प्रकार के रंग देखा जाता है। उक्त प्रकार के दस्त पलसेटिला से आरोग्य न हो तो साइलिशिया को प्रयोग करना चाहिये।

शरीर की किसी जगह में गिल्टी फोड़ा या और किसी प्रकार के प्रदाह होकर उसमें पीप पैदा होने से साइलिशिया का व्यवहार होता है। प्रदाहयुक्त स्थान में पीप हो कर जखम हो जाय तो साइलिशिया अति उत्तम क्रिया करता है। किसी प्रदाह में पीप होने से हिपर-सल्फ वा कैलकेरिया-सल्फ के प्रयोग से पीप निकल जाने पर जखम को जल्दी सुखाने के निमित्त साइलिशिया का प्रयोग होता है। यकृत, प्लीहा, हड्डी, ग्लैण्ड (गिल्टी) इत्यादि शरीर के भितर या बाहर किसी स्थान में पीप, जख्म अथवा सैन (Sinus) हो तो साइलिशिया द्वारा उपकार मिलेगा।

साइलिशिया के रोगी के शरीर स्वाभाविक उत्तापरहित होता है। ऐसा की व्याम करने पर भी शरीर में गरमी

नहीं आती है। रोगी सर्वदा शीत बोध करता है, ऐसा कि कमरे में रह कर भी बाहर की हवा लगने के डर से खिड़की व के वार बन्द कर रखता है, सर्वांग ढाक कर रखता है।

रोगी की मिजाज नाजुक; चिड़चिड़ाहा होता है। साइलिशिया के रोगी (Mesmerised) मेसमेराइसड होना पसन्द करता है और उस से आराम बोध करता है।

साइलिसिया के रोगीका चमड़ा खुष्क और कोमल होता है। जरासा खंसोट लगने से या छिल जाने से चर्म्म पक जाता है (हिपर)।

अमावस्या या पूर्णिमा में रोग की वृद्धि होना साइलिसिया का सिद्धिप्रद लक्षण है (किसी किस्म का रोग हो)।

चरण में दुर्गन्धी पसीना होना साइलिसिया का और एक विशेष लक्षण है। इस प्रकार के पैर का पसीना सामान्य ठन्ढ लगने से ही दब जाकर और कोई कठीन पीड़ा हो तो साइलिशिया उत्तम है।

सिरपीड़ा जो सिर पीड़ा गर्दन से शुरु होकर मस्तक के ऊपर होकर आंख के ऊपरी भाग में आकर स्थिर होता

है उस में साइलिसिया अत्यन्त फलप्रद है। ठंढ लगने से वृद्धि और ढका रखने से आफियत।

शरीर के भीतर कोई गैर चीज जैसे— मछली के कांटा, हड्डी का टुकड़ा इत्यादि कोई चीज चुभा रहे तो साइलिसिया सेवन से बाहर निकल जाता है।

टीका देने से शरीर में कोई हानि पहुंचे विशेषतः फोड़ा और कनभलशान हो तो साइलिसिया उत्तम है (थुजा)।

फिर कहते हैं कि भगन्दर, सेन प्रभृति किसी प्रकार का जखम सुखने में देर हो तो साइलिसिया को अवश्य स्मरण करें।

साइलिसिया शरीर में गम्भीर भाव से कार्य्य करता है और इस की क्रिया बहुत दिन तक स्थायी रहती है। इस लिये इस को बार बार प्रयोग करना नहीं चाहिये। निम्न शक्ति से उच्चशक्ति के साइलिसिया अधिक फलप्रद है। उच्च शक्ति के साइलिसिया एक अथवा दो खुराक प्रयोग करके धीरता के साथ इन्तजार करने से अति सन्तोषजनक फल मिलेगा।

शक्ति ६—३०-२००।

स्पाइजिलिया।

SPIGELIA ANTHELMENTICA.

यह हृद्रोग का एक महौषध है। विशेषतः दिल की पुरानी विमारी में यह अति सुन्दर क्रिया करता है। दिल के भल्भ (Valve) की पीड़ा। ष्टेथीस्कोप द्वारा श्रवन करने से दिल के धुकधुकुनी के साथ "हूस हूस" शब्द सुनाई पड़ता है। दिल का धड़कन (Palpitation) इतना जोर से होता है कि छाती का कम्पन आंख से देखा जाता है और दिल के शब्द कइ एक इंच दूर से सुना जाता है। रोगी बायां कर लेट नहीं सकता है; बायां कर लेटने से दिल-धड़कन अत्यन्त बढ़ जाता है। इस प्रकार के लक्षण-युक्त पीड़ा में स्पाइजिलिया के प्रयोग से आश्चर्य्य फल मिलता है।

शरीर के बायां हिस्सा स्पाइजिलिया के प्रियस्थान है। सिर के बायां पार्श्व के **आधकपाड़ी** के लिये यह एक प्रधान औषध है (दहिना तर्फ के अधकपाड़ी-सैंगुइनेरिया) दर्द सिर के पश्चात् भाग में गर्दन के ऊपरी भाग से शुरु हो कर आँख के भौंह के निकट आकर स्थिर होता है। सिर

दर्द सूर्य्य के उदय के साथ २ आरम्भ होता है और सूर्य्य की वृद्धि के साथ सिर दर्द की भी वृद्धि होकर सूर्य्य के अस्त के साथ २ क्रमशः कम हो जाता है। सामान्य हिलने डोलने से भी तकलीफ की वृद्धि होती है। आंख से स्वच्छ पानी निकलता है। उक्त प्रकार के स्नायवीय दर्द (Neuralgic pain) मुखमन्डल, आँख और दांत में भी हो सकता है। आंख में और एक किस्म का स्नायवीय दर्द देखा जाता है। आंख के गोला में दबाने की तरह दर्द। रोगी को मालुम होता है कि आंख का गोला इतना बढ़ गया कि उसकी जगह में वह नहीं अटेगा। स्पर्श शक्ति की अत्यन्त वृद्धि होती है। सिर कसा हुआ मालुम पड़ता है आँख का गोला के भितर से सिर तक छुरी भोंकने की तरह दर्द होता है।

स्पाइजिलिया की तकलीफ शोरगूल, हिलना डोलना, स्वांस लेना इत्यादि से बढ़ता है। वर्षाकाल में और ठन्ड से वृद्धि होना भी इसका विशेष लक्षण है।

दन्तशूल -तम्बाकू पीने से ज्यादा होना। लेटने से तथा भोजन से आराम मालुम। ठंढा पानी और हवा से और रोग की विषय में चिन्ता करने से वृद्धि होती है।

नासिका--नाक के पश्चात् भाग से बहुत सा दुर्गन्धी

बलगम निकल कर गला के भितर गिरने के कारण रात में दम बन्द होने का भाव होता है।

तोतलापन—शब्द के प्रथम अंश को दो तीन बार उच्चारण करता है; इस के साथ पेट की गड़बड़ी और कृमी की शिकायत वर्त्तमान देखा जाता है।

स्पन्जिया टोष्टा।

SPONGIA TOSTA.

श्वांस-यन्त्रों के ऊपर इस की प्रधान क्रिया होती है। यह खांसी के लिये एक प्रधान औषध है। इसकी सर्व प्रकार खांसी ही सूखा होता है। खाँसी और श्वांस प्रश्वांस के साथ "खन" "खन", "सां सां", "सुंई सुंई", आवाज होती है। आड़ी से लकड़ी चिड़ने की तरह आवाज खांसी के साथ होना इसका सिद्धोप्रद लक्षण है। ठंढी हवा से, सिर नीचा करके लेटने से, ठन्ढी चीज पीने से, तम्बाकू सेवन से, बात करने से खांसी की वृद्धि होती है।

बच्चों के क्रुप नाम के खांसी प्रायः ठन्ढी हवा से पैदा और वृद्धि होती है। प्रायः सन्ध्या के समय ज्वर के साथ इस प्रकार के रोग उपस्थित होता है। ठन्ढी हवा लग कर खांसी होने से प्रायः एकोनाइट ३० या २०० शक्ति के २।३ खुराक प्रयोग से ही रोग आरोग्य हो जाता है। यदि देखो कि एकोनाइट के प्रयोग से कोई फल न हुआ है और रोगी की हालत क्रमशः खराब हो जा रहा है तब देर न करके स्पंजिया का प्रयोग करना चाहिये। ऐसी हालत में स्पंजिया की २०० शक्ति को एक या दो मात्रा से ही अति उत्तम फल मिलता है। खांसी तरल और शेष रात में वृद्धि होने से हिपर-सलफ का प्रयोग होता है। खांसी पुनः २ आक्रमण करके सन्ध्या काल में वृद्धि होने से फसफोरस देना चाहिये।

स्वरभंग--स्वरभंग के साथ गला में जखम सा दर्द और ज्वाला। बात करने के समय, गीत गाने के समय, निगलने के समय खांसी की वृद्धि। ऐसी हालत में पहले बेलेडोना के प्रयोग से गला का दर्द इत्यादि कम होने पर स्पंजिया द्वारा अति उत्तम फल मिलता है।

स्वाँस प्रस्वांस यंत्रों के प्राचीन रोग में स्पंजिया, फसफोरस: सैंगुइनेरिया, और सलफर की तरह फलप्रद है। छाती में जखम सा दर्द: ज्वाला और भार बोध।

दिल का भल्भ की पीड़ा के हेतु रोगी निंद से दम बन्द होने के भाव हो कर जाग पड़ता है; और इस के साथ डर, घबराहट और अस्थिरता देखा जाता है और बहुत जोर २ से खांसी होता रहता है। इस प्रकार की अवस्था में स्पंजिया के ऐसी उपकारी दूसरी दवा नहीं है। ऐंजाइना पेक्टोरिस वा हृदशूल रोग मे ऊपरोक्त के साथ रात दो पहर में रोग की वृद्धि देखी जाती है।

यह घेघा (Goitre) में भी उत्तम है विशेषतः इस रोग में यदि निद्रा के बाद दम बन्द होने का भाव हो। घेघा फूला और कठिन (ब्रोमियम) होता है।

अन्डकोष के प्रदाह-अंडकोष फूला हुआ, उसमें दर्द स्पार्मेटिक कौर्ड (अण्डकोष जिस नस के साथ लटका रहता है) फूला और उसमें दर्द। सुजाक दब जाने के हेतु या अंडकोष के प्रदाह में कुचिकित्सा होने के हेतु [illegible] प्रकार की अवस्था हो।

शक्ति ६—३०—२००—१००० ।

——०——

ष्टैनम मेटालिकम।

STANNUM METALICUM.

यह टिन से बनता है।

छाती में दुर्बलता बोध—ष्टैनम के अति प्रधान लक्षण है। छाती में इस प्रकार की दुर्बलता और किसी दवा में नहीं है। केवल मात्र फेफड़ा इत्यादि की पीड़ा में ही छाती में इस प्रकार की दुर्बलता देखी जाने से ष्टैनम के व्यवहार होता है ऐसा नहीं; पतली दुबली स्त्रियों के जरायु टल जाने के साथ अथवा लिउकोरिया वा श्वेतप्रदर के साथ छाती में इस प्रकार की दुर्बलता बोध होने से भी ष्टैनम द्वारा सुन्दर उपकार होता है। रोगिणी इतनी दुबली होती है कि चौकी पर बैठने के समय स्वभाविक भाव से न बैठ कर थपकर बैठ पड़ती है। सिढ़ी से नीचे उतरने के समय दुर्बलता अत्यन्त ज्यादा होती है।

फेफड़े की बिमारी में ष्टैनम अति उत्तम औषध है। इस में छाती की दुर्बलता ही प्रधान लक्षण है। खांसी के साथ बहुत परिमाण से अत्यन्त मिठा या नमकीन बलगम निकलता है। बलगम गाढ़ा भारी और हरा या पीला होता

है। सिपिया और केलि-आयोड में भी ष्टैनम की तरह नमकीन तथा गाढ़ा, भारी तथा हरा या पीला बलगम निकलता है। इन तीनों की विशेषतः यह है—ष्टैनम और केलि-आयोड में रात में पसीना होता है लेकिन सिपिया में यह नहीं है। और केलि-आयोड में ष्टैनम की तरह छाती में दुर्बलता नहीं है।

दर्द धीरे २ अत्यन्त वृद्धि हो कर धीरे २ कम हो जाता है इस प्रकार का दर्द निउरेलिजिया वा स्नायुशूल के किस्म का होता है। यह दर्द प्रायः मुखमण्डल के स्नायुशूल अथवा उदरशूल का भाव से देखा जाता है। यह दर्द दवाव से अर्थात् पेट के ऊपर किसी प्रकार दवाव पड़ने से कम होता है। दवाने से दर्द की कमी होना कलोसिन्थ में भी है। नयी बिमारी में पहले कलोसिन्थ देना चाहिये। उससे फायदा न हो तो ष्टैनम देने से फायदा होगा। पुरानी बिमारी में ष्टैनम कलोसिन्थ से अच्छा है।

ष्टैनम के रोगीकी मानसिक अवस्था अति शोचनीय होती है। रोगिणी सर्वदा निहायत दुःखित और आशाशून्य होती रहती है। सर्वदा रोना चाहती है।

बच्चों के पेट-दर्द में यदि देखो कि वह अपना ठेहुना को

पेट पर दबा रहा है या उसके पेट को मां या धाई के कन्धे पर रखने से आराम मालूम कर रहा है यानी किसी तौर से पेट पर दबाव पड़ने से आराम मालूम कर रहा है तब ष्टैनम प्रयोग करो (कलोसिन्थ) ।

शक्ति ३० और उच्च शक्ति ।

स्टैफिसेग्रिया ।

STAPHYSAGRIA.

इस दवा के चन्द आश्चर्य्य मानसिक लक्षण है । अपनेकृत अथवा अन्यकृत कोई काम हो सब को ही घृणा की आंख से देखता है । बीते हुए काम के ऊपर अनुताप करता है । जो कोई चीज सामने पाता हैं उसी को घृणा के साथ फेंक देता है । अथवा दूर में हटा रखता है । शिशु अतिशय दुष्ट स्वभाव का होता है— जो चिज के लिये रोता है वह चीज देने से गुस्सा के साथ दूर कर देता है । यह अवस्था प्रातःकाल में अधिक देखी जाती है । अति सामान्य विषय से ही रोगी के मन में दुःख आ जाता है ।

अन्यायरूप से अपमानित होने से, अत्यन्त हस्तमैथुन

था स्त्री-सहवास करने के हेतु अथवा क्रोध और घृणा को जाहिर न करके अपने दिल में दवा रखने के हेतु स्मृति-शक्ति की हीनता; निद्राहीनता अथवा और किसी प्रकार की मानसिक पीड़ा हो तो स्टैफिसेग्रिया अति उत्तम है।

स्टैफिसेग्रिया का मानसिक लक्षण के साथ कैमोमिला, सिना और नक्स-भोमिका के मानसिक लक्षण के सादृश्य है। इस कारण अकसर डाक्टर लोग भुल से बच्चों की बिमारी में स्टैफिसेग्रिया की जगह पर कैमोमिला और सेयाना आदमी की बिमारी में नक्सभोमिका व्यवहार करते हैं; वैसा ही हस्तमैथुनादि के कुफल के निमित जहां स्टैफिसेग्रिया देना चाहिये वहां एसिड-फस दे डालते हैं।

अत्यन्त हस्तमैथुन अथवा स्त्री- सहवास के हेतु धातु दुर्व्बलता और स्वप्नदोष। इस में उपरोक्त मानसिक लक्षण के साथ आंख और चेहरे का धस जाना; लाजयुक्त भाव, शुक्रपात के बाद कमर में दर्द और दुर्बलता बोध; पुरुषांग दुर्बल, शुष्क और ढीला हो जाना इत्यादि देखा जाता है।

पाकस्थली में एक आश्चर्य्य लक्षण देखा जाता है। रोगी ख्याल करता है कि उसकी पाकस्थली ढीला

हो कर नीचे के तरफ लटका जा रहा है या झुका जा रहा है (इपिकाक, टेबेकम)। पाकस्थली का वह भाव कभी २ खाली पेट में भी देखा जाता है। कभी २ वह लटक जाने का भाव इतना अधिक होता है कि रोगी हाथ से उस को रोकने का चेष्टा करता है। पेट भरा रहने पर भी भूख मालूम होना।

यह बिमारी, पतला दुबला "खिनखिना" पेटफूलना बच्चों के प्राचिन उदर-शूल में उपकारी विशेषतः जो बच्चा हमेशा दांत की पिड़ा से कष्ट पाता है; दांत में किड़ा पड जाता है; दांत में काला २ दाग पड़ जाता है मसुढे से सहज से ही खून निकलता है। सामान्य कुछ खाने से ही उदर की पीड़ा की वृद्धि होती है।

यह दन्तशूल में निहायत अच्छी दवा है। ऋतुस्राव के समय दन्तशूल। अच्छा या कीड़ा पड़ा हुआ दांत में दर्द; खाद्य वो पानीय के स्पर्श से दर्द होता है लेकिन चिबाते और काटते समय दर्द मालुम नहीं होता है। ठन्ढी हवा तथा ठन्ढा पानीय से और आहारान्त में दर्द की वृद्धि; दांत के ऊपर काला २ दाग पड़ जाता है; दांतो का अग्रभाग खिया जाता है।

मूत्रनली में एक विशेष लक्षण देखा जाता है। अन्य समय में मूत्रनली में ज्वाला होता है लेकिन पेशाब करने के समय ज्वाला मालुम नहीं पड़ता है।

संगम के बाद अथवा कष्टदायक प्रसव के बाद स्त्रियों के मूत्र-कष्ट। मूत्रत्याग करने के लिये कुथना पड़ता है। वृद्ध व्यक्तियों के प्रोष्टेट ग्लैंड की वृद्धि अथवा और कोई पीड़ा के हेतु बार बार पेसाब होना और पेशाब का चूता रहना।

स्टैफिसेग्रिया में एक प्रकार का कमर-दर्द देखा जात है रोगी केवल मात्र रात में बिछावन में और प्रातःकाल में उठने के समय दर्द मालुम होता है।

स्टैफिसेग्रिया **चर्म्मरोग** का एक अति उत्तम दवा है। सूखा (dry) और गीला (moist) दोनों प्रकार के चर्म्म-रोग में यह व्यवहार होता है। एकजिमा (उकौता) रोग के सुखा खुरंट के नीचे से तेज, जखम पैदा करने वाली रस निकलता है; और वह रस शरीर के जहां लगता है वहीं पर नया इरपशन निकलता है, उस में स्टैफिसेग्रिया विशेष औषध है। स्टैफिसेग्रिया के चर्म्म रोग में बहुत खुजली होती

है। इस की खुजली की विशेषता यह है—रोगी एक स्थान में खुजलाते २ ही खुजली वहाँ से हट कर दूसरे स्थान में शुरु होता है। यह एकजिमा सिर में, कान के चारो ओर, और आँख के पपुटे में होता है।

अंजीर की तरह मस्से (Warts) विशेषतः पारा के अपव्यवहार के हेतु हो तो यह उत्तम है (थुजा, एसिड-नाइट्रिक)। कन्डाइलोमेटा।

आँख के पपुटे में अक्षिजनि वा गुहेरी समूह कठिन गांठ २ सा हो तो इस दवाई से आराम होता है।

तेज छुरी द्वारा कट कर जखम होने से इस दवाई से उपकार मिलेगा।

शक्ति ३०—२००—१०००।

ष्टिकटा पालमोनेरिया।

STICTA PULMONARIA.

नाक के मूलदेश और ललाट में बोझ और दबाव सा दर्द—ष्टिकटा के अति प्रधान लक्षण है। ठन्ढ लग कर सर्दि होने के पहले यह लक्षण प्रकट होता है। इस के बाद ही

बहुत परिमाण से सर्दि निकल जाने से इस दर्द की कमी हो जाती है। उक्त सर्दि सूख जाने के बाद भी नाक के मूलदेश और ललाट में उक्त प्रकार का दर्द रहने से यह दवाई उपकार करता है। इस प्रकार रोगी का सर्दि एकदम सूख जाता है लेकिन नाक की उत्तेजना वर्त्तमान रहती है; इस लिये बारबार नाक छिड़कता और छिंकता रहता है किन्तु जरा-सा भी नेटा नहीं निकलता है। नेटा सूख कर कठिन हो कर नाक के भितर चोंइयां की तरह जमा रहता है। इस प्रकार के बहुत काल का पुराना सर्दि भी इससे आराम हो जाता है। यहाँ केलि-वाइक्रम ष्टिकटा के साथ का सदृश्य देखा जाता है। केलि-बाइक्रम में भी ललाट और नाक के मूलदेश में दर्द देखा जाता है। सर्दि बैठ जा कर उस प्रकार का दर्द होता है।

ष्टिकटा की खांसी रात में लेटने से बढ़ता है, रोगी रात में सो नहीं सकता है—सिर्फ खाँसी के कारण सो नहीं सकता है ऐसा नहीं, रोगी का निंद न होने का प्रधान कारण उसकी शारीरिक अस्वस्थता है।

कोदवा तथा इनफ्लुयेंजा रोग में खांसी वो अनिद्रा में यह विशेष उपकारी है। ख्याल रखना कि ष्टिकटा की खांसी पहले निहायत सूखा और पीछे तरल हो जाता है।

ठेहुना में प्रदाहयुक्त वात रोग के आरम्भ में ही ष्टिकटा प्रयोग कर सकने से विशेष उपकार होता है। ष्टिकटा के वात के दर्द अचानक आरम्भ होकर अत्यन्त कष्ठ दायक हो जाता है।

शक्ति ६—३०।

——:*:——

ष्ट्रैमोनियम।

STRAMONIUM

यह दवाई धतुरा नामक पेड़ और उसके फल के समस्त भाग द्वारा बनती है।

ष्ट्रैमोनियम **डिलिरियम** वा विकार में वेलाडोना और हाइयोसायमस की तरह उपयोगी है। इस लिये इन तीनों को डिलिरियम की त्रिमूर्त्ति (Trio) कहा जाता है।

ष्ट्रैमोनियम, वेलाडोना और हाइयोसायेमस के मध्यवर्ती अवस्थायुक्त डिलिरियम में व्यवहार होता है यानी ष्ट्रैमोनियम का डिलिरियम न तो वेलाडोना की तरह उतना उग्र और न हाइयोसायेमस की तरह उतना निस्तेज होता है।

डिलिरियम में रोगी बार बार अचानक सिर को झटका देकर तकिया से उठता है। रोगी कभी लम्बित और कभी तिरछा होकर पड़ा रहता है, फिर कभी हाथ पांव सब को इकट्ठा करके लड्डु सा होकर पड़ा रहता है। रोगी कभी हंसता है, कभी रोता है, कभी सुसकारी देता है, कभी चिल्लाता है, कभी प्रार्थना करता है; फिर कभी बकवास करता है और गाली देता है; फलतः ष्ट्रैमोनियम के रोगी का मुंह जरासा भी बन्द नहीं रहता है, हरदम बकता रहता है।

ष्ट्रैमोनियम के रोगी को उक्त प्रकार का तेज डिलिरियम के बाद क्रमशः निस्तेजता उपस्थित होती है। इस समय में रोगी की दृष्टिशक्ति, श्रवणशक्ति, वाक्यशक्ति सबही लोप हो जाती है। आंख की पुतली फैली हुई और स्थिर रहती है और लगातार पसीना होता रहता है; किन्तु रोगी की कमी नहीं होती है; प्रायः मलमूत्र एकदम बन्द रहता है, कभी कभी काला और निहायत दुर्गन्धी मल बेहोशी से निकल जाता है। ऐसी हालत में ष्ट्रैमोनियम अमूल्य औषध है।

प्राचीन उन्मादरोग में भी यदि देखो कि रोगी हमेशा बकवास करता है ष्ट्रैमोनियम द्वारा विशेष फल मिलेगा।

ष्ट्रैमोनियम का रोगी सर्वदा रोशनी और साथी चाहता है; अकेले और अंधेरा में रहने से पीड़ा की वृद्धि होती है। अंधेरा में चल नहीं सकता है।

रोगी निंद से डर कर जाग पड़ता है, और पहले सामने जो कुछ देखता है उसी से डरता है। नाना प्रकार कल्पित भयजनक वस्तु देखता है।

डिलिरियम में रोगी भाग जाना चाहता है: रोगिणी ख्याल करती है उसकी और एक अलग मूर्त्ति है, जो तिरछी हो कर पड़ी रही है।

ष्ट्रैमोनियम के रोगी का चेहरा गर्म और लाल व हाथ पैर शीतल रहता है।

तोतलापन (Stammering) के लिये यह एक उत्तम औषध है। रोगी कोई बात बोलने के पहले बहुत देर तक तोतला कर तब बोल सकता है। बोलने के निमित्त बहुत चेष्टा करना पड़ता है और इस लिये मुख के नानाप्रकार भंगी होता है।

कनभलशन (Convulsion) —कनभलशन में ज्ञान वर्त्तमान रहता है (नक्स); तेज रोशनी अथवा दर्पन अथवा

जल के उपर दृष्टि पड़ने ही से कनभल्शन शुरू होता है। मांस पेशियों काममोड़ना।

जलांतक वा हाइड्रोफोबिया (Hydrophobia)

अर्थात् पानी देख कर या जल स्पर्श करने में डरना इस दवाई का एक प्रधान लक्षण है। जल पीते समय गला के भितर ऐंठन होता है।

बिमारी के कष्ट की बोध-शून्यता इस का और एक प्रिय लक्षण है (ओपिअम)।

शक्ति ६—१२—३०—२००।

सल्फर।

SULPHUR.

यह गन्धक है।

सल्फर एन्टिसोरिक औषध समूह में अर्थात् खाजखुजली इत्यादि चर्म्मरोग का विष को दूर करने वाली दवाइयों में सर्व्वप्रधान है। जब उपयुक्त तथा सुनिर्व्वाचित औषध का प्रयोग से फल नहीं मिलता है, अथवा उपकार होने में देर

होता है किम्वा आरोग्य हो कर भी बारबार बिमारी वापस आ जाती है तब सल्फर के प्रयोग से फल लाभ होता है। कारण शरीर में सोराधर्म्म (खाजखुजली के विष) वर्त्तमान रहनेसे रोग आरोग्य होनेमें बाधा देता है। सल्फर उस बाधा को संशोधन करके आरोग्य साधन करता है। सल्फर ही एक मात्र एन्टिसोरिक औषध नहीं है; सोरिनम, साइलिशिया ग्राफाइटिस इत्यादि और बहुत एन्टिसोरिक औषध है। इस लिये ध्यान रखना चाहिये कि प्रत्येक दवाइ को ही अपने २ लक्षण के अनुसार व्यवहार करना चाहिये। अन्दाज से कोई काम नहीं करना चाहिये।

ज्वाला—ज्वाला ही सल्फर के सर्व्व प्रधान लक्षण है। हाथ, पैर में ज्वाला; हाथ पैरको बिछावन के बाहर ठंढी जगह पर रखना चाहता है, चान्दी में ऐसा ज्वाला होता है कि मालुम होता है वहां से आग का लहर निकल रहा है। आंख, मुह, नाक, योनि, मलद्वार इत्यादि किसी एक स्थान में अथवा सर्व्वशरीर में ज्वाला। आंख से ज्वाला के साथ तेज पानी निकलता है। ज्वालाके साथ सर्दी, ज्वालायुक्त लार, ज्वालायुक्त मल; ज्वालायुक्त पेशाब इत्यादि शरीर के सर्व्व-स्थान से या किसी एक स्थान से निर्गत स्राव ज्वालायुक्त और छाले पैदा करने वाला, अर्श में खुजली और ज्वाला।

चर्मसमूह में खुजलाने से आग की तरह ज्वाला होता है।

सल्फर की तरह आर्सेनिक और फसफोरस भी ज्वाला के लिये प्रधान औषध है। एकोनाइट, एपिस, एगारिकस, कैन्थारिस प्रभृति और वहुत दवा में ज्वाला है। ख्याल रखना चाहिये कि बिमार आदमी में जिस दवा का पूर्ण लक्षण मिलेगा उसी दवा को प्रयोग करना चाहिये। स्मरण रखना—यदि सल्फर से उपकार होने का हो तो उसकी एक ही मात्रा काफी है अधिक मात्रा के प्रयोग अनिष्टदायक है।

चर्म्म के ऊपर सल्फर की अति उत्तम क्रिया होती है। नाना प्रकार के चर्म्मरोग में सल्फर का व्यवहार होता है: जैसे—खाजखुजली, एकजिमा, कोद्वा, वसन्त, दद्रु इत्यादि। उन सवमें यदि ज्वाला वर्त्तमान रहे; खुजलाने के बाद अत्यन्त ज्वाला हो तो सल्फर का प्रयोग करना चाहिये।

चर्म्म रोग दब जाने से कोई हानि हो तो सल्फर द्वारा उत्तम फल मिलता है। सल्फर के रोगी के चर्म्म निहायत गन्दा—ऐसा कि देखने से घृणा होता है; सर्वदा खाज खुजली होने के आदत। शरीर में दल के दल फोड़ा होता रहे तो सल्फर उत्तम है। सल्फर के रोगी खड़ा रह

नहीं सकता है। हर हालत में खड़ा रहना नितान्त कष्ट-दायक होता है।

सल्फर के रोगी स्नान करना या गात्र धोना नहीं चाहता है। स्नान के बाद रोग की वृद्धि होती है।

शरीर के **द्वारों को रक्तवर्णता** (Bedness of the orifices of the body)--सलफर का एक विशिष्ट लक्षण है। ओष्ठ सिन्दुर की तरह लाल। मलद्वार, मुत्रद्वार, कान के द्वार, आंख के पपुटे रक्तवर्ण। इस प्रकार की रक्तवर्ण लक्षण देखकर सलफर के प्रयोग से विशेष फायदा उठाया गया है।

सुबह, १० या ११ बजे बेहद भूख लगना—ऐसा कि मालुम होता है पेट एकदम खाली हो गया, कुछ भोजन करनेसे तब आराम होता है। यह भी सल्फर का एक प्रिय लक्षण है।

उदरामय—रात दो पहर के बाद बिना दर्द के उदरामय। अति प्रातःकाल में, नीद टुटने पर ही पैखाना का इतना अधिक वेग होता है कि दौड़ कर पैखाना में जाना पड़ता है (नेट्रम-सल्फ)। मलत्याग के बाद रोगी सो जाता है। मल पीप

की तरह। मल में दुर्गन्ध या खट्टा गन्ध,—रोगी शौचादि कर के आने पर भी गात्र से बू नहीं छुटती है मालूम होता है कि रोगी कपड़ा में ही मल त्याग किया है। मल ज्वाला के साथ और जख्म पैदा करने वाला (Excoriating)।

कब्ज; मल सूखा, कठिन गुठली २। अत्यन्त वृहत और कष्टदायक। बच्चा दर्द के डर से पैखाना फिरना नहीं चाहता है। अथवा प्रथम कुथने के साथही साथ इतनी तकलीफ होती है कि और चेष्टा नहीं कर सकता है। दस्त और कब्ज पर्य्यायक्रम से होता है। मलद्वार के मुंह रक्तवर्ण और छालेयुक्त (Excoriated)।

सलफर के रोगी में एक आश्चर्य्य मानसिक लक्षण देखा जाता है। रोगी के पास अति तुच्छ, सामान्य पदार्थ भी अति सुन्दर मालुम होता है।

जीभ के दोनों पार्श्व सफेद और अग्रभाग लाल होता है।

सलफर का क्रिया अति गम्भीर और बहुत दिन स्थाई होती है। इस लिये इसकी एक मात्रा से अधिक प्रयोग नहीं

करना चाहिये। यदि द्वितीय मात्रा के प्रयोग की आवश्यकता हो तो दीर्घ दिन के बाद करना चाहिये।

शक्ति ३० और उच्चशक्ति।

सलफ्युरिक एसिड।

SULPHURIC ACID.

ऐफ्थि (Aphthae) वा निनावां नामक मुख के जखम के लिये यह उत्तम औषध है (बोरैक्स), विशेषतः दुर्बल-जीर्ण शीर्ण शिशु के मुंह में इस प्रकार के जखम होने से; जखम में अत्यन्त दर्द; मुंह में दुर्गन्ध, मसुड़े से रक्त निकलना।

अम्लपीड़ा Acidity के लिये यह दवाई अति उपकारी है। मेदा में खट्टा रस उत्पन्न होता है, इस लिये खट्टा खट्टा ढेकार आता है; छाती में ज्वाला होता है, अकसर दांत तक खट्टा हो जाता है (रोबिनिया)। सल्फियुरिक एसिड के बच्चा रोगी के गात्र में इतनी खट्टी बू होती है कि उस का बदन अच्छी तरह से धोने पर भी वह खट्टी बू नहीं छुटती है (हिपर, मैगनेशिया कार्ब, रिउम)

सिर्फ शरीर के भीतर भाग में कम्पन—यह सल्फिउरिक-एसिड का एक प्रिय लक्षण है । यह कम्पन सिर्फ रोगी ही मालूम कर सकता है अन्य किसी को मालुम नहीं हो सकता है । अत्यन्त शराव पीना, बदमाशी करना इत्यादि से या और किसी कारण से अत्यन्त दुर्बलता के कारण इस प्रकार के भीतरी कम्पन देखा जाता है और सल्फिउरिक—एसिड इसके लिये नितान्त उपकारी है ।

रक्तस्राव में भी सल्फिउरिक एसिड का व्यवहार होता है । क्रोटेलस की तरह शरीर के हर सुराख से रक्तस्राव हो सकता है । चर्म्म के नीचे रक्तस्राव हो कर काला धब्बा पड़ने से सल्फिउरिक—एसिड का प्रयोग होता है । किसी स्थान में आघात लगने से वहां पर नीला धब्बा पड़े तो इस दवा से उपकार होता है—ऐसी हालत में आर्निका और लिडम के बाद सल्फिउरिक—एसिड के प्रयोग से अति सन्तोषजनक फल मिलता है ।

आंख में आघात लगकर काला धब्बा पड़ने से लिडम उत्तम है ।

दर्द—दर्द धीरगति से क्रमसः अत्यन्त प्रबल हो कर अचा-

PUBLISHING CO.

नक आराम हो जाता है; बार बार ऐसा होने से सल्फिउरिक एसिड विशेष फल देता है। (पल्स)।

आघातादि जनित जखम के ग्रैंग्रीन होने (सड़गल जाने) के आदृत विशेषतः वृद्ध व्यक्ति में।

दिमाग—ऐसा मालूम पड़ता है कि दिमाग के अगला हिस्सा लुढ़का जा रहा है।

दिमाग में चोट लगने के हेतु समस्त शरीर में पसीना और शीतलांग होने से यह उपकारी है (कैम्फर)।

ब्रांडि पीने के हेतु पीड़ा में यह अति उत्तम है।

डाइलिउट सल्फिउरिक-एसिड का एक भाग और ३ भाग अलकोहल मिलाकर उसका १० या १५ बुन्द करके प्रति दिन तीन बार सेवन करने से तीन या चार सप्ताह में शराब पीने की इच्छा दूर हो जाती है।

शक्ति ६—३०—२००।

सिम्फाइटम । SYMPHYTOM.

टूटी हुई हड्डी जोड़ने में यह दवाई कैलकेरिया-फस को

तरह उपकारी है। आघातादि से किसी स्थान को टुटना, कट जाना, कुचल जाना, दर्द होना इत्यादि में भी यह दवाइ फलदायक है। आँख के गोले में चोट लगने से यह अति उत्तम है। इस की तृतीय शक्ति प्रति दिन ३।४ वार सेवन करना चाहिये।

इस दवाई के वाहर प्रयोग भी फलप्रद है।

——:※:——

सल्फ कैडमियम ।

(CADMIUM SULPH.)

दम्मा (Asthma) सर्दी के साथ दम्मा, सूखी खांसी वलगम का नहीं गिरना, दम फूलना और छाती में खिचाव वलगम गिरजाने के वाद आफियत मालूम होना।

अजीर्ण जी का मिचलाना, पीले या काले रंगका कै, डेकार में नीमकीन स्वाद, मुख और कपाल में ठंढा पसीना, पेट में दर्द, पेट के निचे भाग में इतनी दर्द कि जिस्से रोगी पेट पर हांथ नहीं रख सकता पेट के नाना स्थान में ज्वाला, मरोड़ कर दर्द, और दुर्गन्ध के साथ खून का पाखाना और चकलेट (Chocolate) रंग का पाखाना।

आमाशय खून मिला हुआ पायखाना के साथ मलद्वार या पेट में छुरी से काटने के सरीखे दर्द आर्सेनिक का रोगी पेट के दर्द से रोता है छट पट करता है और दर्द सह नहीं सकता और नाउम्मीद हो जाता। इस तरह का मानसिक उद्वेग कैडमियम में नहीं है, कैडमियम में ब्राइओनिया के तरह रोगी चुप चाप रहना चाहता है।

शक्ति ६—१२ और ३०।

सिफिलाइनम ।

SYPHILINUM.

गर्मीरोग के विष से इस दवाई का टिंचर बनता है।

यदि गर्मी पीड़ा के रोगी अति सुनिर्व्वाचित औषध से भी आरोग्य लाभ न करे तो सिफिलाइनम के प्रयोग से उपकार होता है। गर्मी रोग के जखम, बाहर प्रयोग द्वारा चिकित्सित होने के हेतु शरीर में बहुत दिन तक चर्मरोग, गला में जखम और रक्ताधिक्य इत्यादि में इसके द्वारा विशेष उपकार मिलेगा।

गर्मी पीड़ा के इतिहासयुक्त व्यक्ति की किसी पीड़ा में यदि सुनिर्व्वाचित औषध द्वारा फल न हो तो सिफिलाइनम की उच्च शक्ति की एक मात्रा के प्रयोग से रोगी के आरोग्य के बाधा दूर हो जाता है। वातरोग; हड्डी के केरिज (जखम) रोग। वाल का गिरना।

गर्मी पीड़ायुक्त माता पिता के नवजात शिशु के आंख के प्रदाह; आंख के पपुटे फूला और सटा रहता है; रात में भयानक दर्द; वहुत पीप गिरना।

आंख के ऊपरवाले पपुटे का लटक जाना (कष्टिकम, सिपिया)

दो-दृष्टि—किसी एक वस्तु के नीचे उसी वस्तु का और एक प्रतिमूर्त्ति दिखाई पड़ना।

इरप्शन—तामा के रंग का इरशन' ठंढ लगने से नीलापन हो जाता है।

रोगी के शरीर नितान्त सूखा, जीर्णशीर्ण होता है।

दर्द—सिफिलाइनम के दर्द के खास लक्षण यह है कि वह सन्ध्याकाल से भोर तक समय में होता है। वार वार दर्द का स्थान परिवर्त्तन के साथ रोगी की हालत भी वदलती रहती है।

दिल के मूलदेश से अग्रभाग तक छूरी भोंकने की तरह दर्द, विशेषतः रात में होने से सिफिलाइन द्वारा उपकार होता है।

सिरपीड़ा स्नायविक (Neuralgic) स्वभाव के सिर दर्द में अनिद्रा और रात में डिलिरियम; सिर दर्द साम को ४ बजे से १० । ११ बजे तक बहुत तेज रहता है।

श्वेत-प्रदर (Leuchorrhoea) बहुत परिमाण पतला प्रदर स्राव, पांव तक बहता है (ऐलुमिना)।

स्मृतिहीनता व्यक्ति, स्थान, पुस्तक का नाम इत्यादि याद नहीं रख सकता है। हिसाब करना कठिन होता है।

बोधशक्ति रोगी को ऐसा मालुम पड़ता है कि वह पागल हो जायेगा या उसको लकवा हो जायेगा।

रात में वृद्धि सर्व्व प्रकार तकलीफ ही रात में बढ़ती है या आरम्भ होती है; सूर्यास्त से सूर्योदय तक समय में वृद्धि: इस लिये रोगी रात में बहुत डरता है।

शक्ति ३०, २०० और उच्च शक्ति।

टेबेकम ।

TABACUM

तम्बाकु से टींचर बनता है ।

यह कालेरा; उदरामय, आमाशय और बहुत प्रकार के ज्वर के कोलैप्स अवस्था में महोपकारी औषध है । हाथ पैर में ठंढा पसीना ; हाथ पैर बरफ की तरह शीतल किन्तु शरीर का धड़ गरम ; अत्यन्त कष्टदायक मतली या हिलने डोलने से वमन, दिल की जगह पर अत्यन्त कष्ट; नाड़ी मृदु और बेकायदा । ये इसका शिद्धिप्रद लक्षण है । ऐसी अवस्था में टेबेकम द्वारा उपकार न होने से **निकोटीन** व्यवहार कर सकते हैं ।

सिरचक्कराना (vertigo) खुली हवा में और वमन से आराम: आंख खोल कर ताकने से अथवा ऊपर की ओर ताकने से वृद्धि । भयानक मतली; दोपहर में अत्यन्त बढ़ता है, कै भी होता है । कभी २ इस प्रकार की अवस्था एकबार होकर २।३ दिन तक रहता है ।

सिर-दर्द—सिर के दहिना तर्फ में हथौड़ी के आघात का तरह दर्द ।

वमन—भयानक वमन के साथ ठंढा पसीना; हिलने से

वमन की वृद्धि। गर्भावस्था के वमन में लैकटिक-एसिड द्वारा उपकार न मिले तो इसका प्रयोग किया जाता है।

मूर्च्छा—भयानक मूर्च्छा के साथ मालुम होना कि पाकस्थली डुब जा रहा है।

प्लैन्टागो नामक औषध सेवन से तम्बाकु पीने की इच्छा दूर हो जाती है। अगर उससे फायदा न हो तो टैबेकम की उच्चशक्ति के सेवन से फल होता है।

तम्बाकु सेवन हेतु कुफलादी जैसे हिचकी हो तो— इग्नेशिया; दन्तपीड़ा हो तो क्लिमेटिस; प्लाटिना; मुखमण्डल के दहिना तर्फ के निउरलजिया हो तो सिपिया; ध्वजभंग हो तो लाइकोपोडियम; सिर चक्कराना में जेलस दिया जाता है।

शक्ति ३—६—३०—२०० ।

——:o:——

टैरेन्टुला-किउवेन्सिस ।

TARANTULA CUBENSIS.

यह दवाई एक प्रकार का मकड़ा से बनती है।

विषैला फोड़ा, कार्बंकल, ऐब्सेस, अंगुलबेढ़ा

टिउक्रियम।

TEUCRIUM.

यह कृमि रोग का एक उत्तम औषध है।

यदि कृमि के हेतु नाक के भीतर व मलद्वार में सुरसुराहट हो, खुजली हो तो यह विशेष कार्य्यकारी होता है।

इस दवाई के प्रयोग से नाक के पलिपस वा नकड़ा रोग (Nasal polypus) आरोग्य हुआ है।

शक्ति ३—६—३०—२००—१००० ।

थेरिडियन।

THERIDION

यह सिर-घुमना और जी मिचलना का एक उत्कृष्ट औषध है। आंख बन्द करने से उसकी वृद्धि होती है (लेकेसिस, थुजा) आंख खोलने से सिर-घुमना तथा मतली की वृद्धि होती है।

सिरदर्द—सिर के भीतर भाग में दर्द होता है; हिलने डोलने से वृद्धि।

मेरुदन्ड मेरूदन्ड में दवाव पड़ने के डर से कुर्सी पर

पीठ नहीं रखता है। सामान्य शब्द से अथवा ज़मीन पर पैर रखनेके झटके से मेरूदन्ड में दर्द होता है।

दांतदर्द—मालुम होता है कि प्रत्येक कड़ी आवाज़ ही दांत के भीतर भाग को भेद करके जाती है।

रिकेट रोग (अपुष्टास्थि), केरिज, निक्रोसिस (हड्डियों के जखम, क्षय) रोग इत्यादि में थेरिडिन द्वारा अकसर फायदा होता है। समस्त शरीर की हड्डियों में टुटने के ऐसा दर्द।

स्क्रफुला रोग (कण्ठमाला) में यह वहुत उपकारी औषध है। यक्ष्मा रोग (phthisis) की प्रथमावस्था में इस से विशेष फल मिलता है।

छाती के निम्न भागसे ऊपरके तर्फ गर्दन तक टिस मारने वाला दर्द हो तो इससे फायदा होता है।

नाक के प्राचिन सर्दी: नेटा गाढ़ा, हल्दी रंग का अथवा हरा और दुर्गन्ध (पलस, थुजा)।

शक्ति ३० — २०० — १००० ।

———:o:———

(whitlow); नाना प्रकार के प्रदाह इत्यादि में नीलापन रंग और अत्यन्त ज्वालायुक्त दर्द रहने से इस दवाई से बहुत उपकार होता है।

शक्ति ६—३० ।

—:0:—

टेलुरियम ।

TELLURIUM.

इस दवाई से बहुत दिन का पुराना कान बहना भी आराम हुआ है। कान के भीतर खुजली, ज्वाला, फूलना, दर्द इत्यादि और इस के साथ बहुत परिमाण से पतला और मछली की तरह बूदार पीप निकलता है। कान के प्रदाह यदि नीलापन लालवर्ण का हो तो इससे उपकार होता है।

शक्ति ३—६—३० ।

टेरिविन्थिना ।

TEREBINTHINA.

यह तार्पिन तेल है।

मूत्रयन्त्रों के ऊपर इसकी विशेष क्रिया है। वार्वेरिस की तरह टेरिविन्थ में भी मूत्रपीड़ा के साथ कमर में दर्द देखा

जाता है। वार्बेरिससे टेरिबिन्थ में मूत्रयन्त्रों के लक्षण समूह अधिक तेज होता है। पेशाब ईंट के रंगके अथवा काला अथवा धूमैला रंग होता है और इसके साथ अल्पाधिक परिमाण रक्त-मिश्रित रहता है। मुत्रत्याग काल के ज्वाला में टेरिबिन्थ प्रायः कैन्थारिस के समतुल्य है किन्तु बार्बेरिस में इस प्रकार का ज्वाला नहीं देखा जाता है।

अनुत्पादित मूत्र वा पेशाब का पैदा न होना। कालरा रोग में पेशाब न होने से इस की ३ या ६ शक्ति के प्रयोग से उपकार होता है। शिशु-कालरा में कैन्थरिस से टेरिबिन्थ द्वारा ही विशेष फल मिलता है।

टाइफायेड इत्यादि बिमारी में यदि चिकना, चमकीला रक्तवर्ण जीभ और उसके साथ पेट फूलता रहे तो टेरिबिन्थ अति उत्तम है।

यदि शोथरोग में पेशाब काला अथवा धूमैला हो विशेषतः यदि शोथ रोग लालज्वर के बाद हो तो टेरिबिन्थ द्वारा विशेष उपकार होगा (लैकेसिस, एपिस, हैलिबोरस, कलचिकम)।

यह कृमि रोग में भी उपकारी है।

शक्ति ३—६——३०।

:——*:——

थ्लैप्साइ-बर्सा-पैस्टोरिस ।

THLAPSI-BURSA-PASTORIS.

रेनल कलिक (Renal colic) में यानी किडनी (गुर्दा) से ग्रैभेल (पत्थर) निकलने के समय भयानक दर्द के साथ अस्थिरता, पसीना और वमन होता है । ऐसा अवस्था में दर्द के तेजी के अनुसार प्रति आधा घन्टा, एक घन्टा अथवा डेढ़ घन्टा अन्तर इस दवाई के प्रयोग से बहुत जल्दी दर्द आराम हो जाता है । रेनल कलिक का रोगी मिलने से सर्व्वप्रथम में इस दवा को प्रयोग करके देखना चाहिये । इसका मदर टींचर का एक या दो बुन्द एक मात्रा में व्यवहार किया जाता है ।

बिलियारी कलिक वा पित्त पथरी के दर्द में भी यह काइंअस की तरह फल देता है ।

रक्तस्राव—शरीर के किसी स्थान से काला, ढेलापन रक्तस्राव होने से इस दवाइ का प्रयोग होता है ।

जरायु से उक्तप्रकार रक्तस्राव होने से यह अति उत्कृष्ट किया करता है । शूल दर्द के साथ जरायु से रक्तस्राव; क्लोरोसिस; गर्भस्राव, प्रसव-दर्द, स्त्रियों के तीसरी उम्र की

पीड़ा में: जरायु के केन्सर इत्यादि रोग में भी उस प्रकार के रक्तस्राव होने से इस से फल मिलता है ।

ऋतुस्राव—अपूर्णकाल में, बहुत परिमाण से, बहुकाल स्थाई ऐसा कि एक बार के ऋतुस्राव बन्द होते न होते द्वितीय बार के स्राव शुरू होता है । ऋतुस्राव के प्रारम्भ में कपड़ा में सामान्य दाग मात्र लगता है; द्वितीय दिन में जरायु में दर्द, वमन और बहुत परिमाण से रक्तस्राव होता है और उस में बड़े बड़े ढेले रहते हैं । प्रति द्वितीय ऋतुस्राव अधिक होता है ।

लिउकोरिया—प्रदरस्राव रक्तमिश्रित, काला, दुर्गन्धी; ऋतुस्राव के चंदरोज पहले या पीछे देखा जाता है ।

शक्ति—मदर टींचर – १—३ ।

थुजा ।

THUJA OCCIDENTALIS

गणोरिया (सुजाग) द्वारा आक्रान्त शरीर में विशेषतः गणोरिया प्रकृतरूप से आरोग्य न हो कर शरीर में लुप्तभाव से रहने

से साइकोसिस दोष (Sycosis) की उत्पत्ती होती है। गणोरिया का इतिहास और शरीर में मस्से (Warts), कन्डाइलोमेटा (बड़ा बड़ा मस्से), ये साइकोसिस का निशान है। सोरा और सिफिलिस दोष की तरह यह साइकोसिस के विष शरीर में रहने से भी सुनिर्व्वाचित औषध से फल नहीं होता है। इस प्रकार के दोष को दूर करने के लिये थुजा सर्व्वं प्रधान ऐन्टिसाइकोटिक औषध है। उक्त प्रकार अवस्था में थुजा के प्रयोग से वह शारीरिक दुष्ट धर्म्म को संशोधन करके स्वयं ही रोग आराम कर सकता है और न तो अन्य सुनिर्वाचित औषध के प्रयोग द्वारा आरोग्य होने की रास्ता साफ कर देता है।

अन्याय चिकित्सा द्वारा गणोरिया के पीप बन्द होने के हेतु वात रोग इत्यादि किसी प्रकार की पीड़ा होने से थुजा के प्रयोग द्वारा उपकार होता है।

वसन्त के टिका देने के हेतु उदरामय, चर्म्म रोग, ज्वर इत्यादि होने से थुजा द्वारा आरोग्य होता है।

थुजा में चन्द मानसिक लक्षण देखा जाता है। रोगी ख्याल करता है कि उस के पास कोई अपरिचित व्यक्ति है; मालूम करता है कि उसका आत्मा और शरीर अलग २ हो

यथाः रोगी ख्याल करता है कि उस के शरीर विशेषतः हाथ पांव शोशा द्वारा बना है और सामान्य आघात से ही टूट जायगा। वह ख्याल करता है कि उस के पेट में कोई जीवित जानवर चलफिर रहा है। सर्वदा कहता है कि वह कोई उच्चशक्ति (देव, दानव या भूत) द्वारा चालित होता है। उन्माद रोग वाली स्त्री, किसी को उसके पास जाने नहीं देती है।

नीचे थुजा का चन्द साधारण लक्षण लिखता हूं:—

साइकोसिस के दोष हेतु सिरपीड़ा, उक्त प्रकार सिर पीड़ा के साथ सिर के बाल का गिरना; बाल अति धीरे धीरे बढ़ता है, बाल फट जाता है। सिर में सफेद २ रुस्सी होती है।

साइकोसिस वा सिफिलिस के दोष के हेतु बच्चों के आँख के पपुटे के निम्नांश में ग्रैनुलेशन (रोहा), पपुटे के ऊपर छोटे २ मस्से की तरह इरप्शान। पपुटे के किनारे में चुइयांदार इरपशन; छोटी छोटी गिल्टियां इत्यादि में थुजा विशेष उपकारी है।

कान कान बार बार प्रदाह होने के स्वभाव और कान में उक्त प्रकार के इरप्शन।

नाक के पोलिपस (नकड़ा); नाक का पुराना सर्दि नेटा गाढ़ा और हरापन (पलस)।

दांत निकलते २ हीं उस के मूलदेश खिया जाता है किन्तु अग्रभाग ठीक रहता है (मेजिरिअम)। (अग्रभाग खिया जाने से ष्टेफिसेग्रिया)।

जीभ में नीलापन रेखा या भेरिकोज भेइन्स। बहुत दिन का कब्ज; मल के कुछ अंश बाहर निकल कर फिर ऊपर चढ़ जाता है (साइलिसिया)। बवासीर के मस्से फूला और दर्द के साथ।

मलद्वार का फट जाना; मलद्वार के चारो ओर चीप्टा मस्से या रस निकलने वाले कन्डाइलोमेटा।

उदरामय—पेट में "गला गल" आवाज होना पेट के जगह २ पर फूल उठना; मल तरल, फांसीला; मल पीचकारी की तरह वेग से निकलता है। टीका देने के हेतु पीड़ा।

चर्म्म——मैला; चर्म्म में भूरा अथवा सफेद २ दाग समूह मस्से के ऊपरी भाग बहुत चौड़ा और मूलदेश बहुत पतला नोखीला।

योनिपथ Vagina में स्पर्श न सहना रति क्रिया नहीं कर सकती है ।

पसीना—सिर्फ शरीर के अनावृत भाग में, अथवा सिर के सिवाय सर्व्व शरीर में पसीना । निद्रा के समय पसीना जागरित होने से ही पसीना बन्द हो जाता है; रात में खट्टा और बदबूदार पसीना । जननेन्द्रिय-स्थान में शहद की तरह मिठी बू ।

मूत्र—पेशाब करने के बाद मूत्रनली में दर्द और खुजलाहट (सार्सापेरिला) ।

गर्भस्राव—गर्भ के तृतीय महिना में गर्भस्राव के सम्भावना; उसके चन्द रोज पहले से धीरे २ थोड़ा २ रक्तस्राव होता रहता है और क्रमशः रक्तस्राव की वृद्धि होती है ।

स्वप्न---निद्रा में मृत व्यक्ति का स्वप्न देखता है ।

गणोरिया—जब देखा जाय कि प्राचीन गणोरिया किसी तरह से भी आराम नहीं हो रहा तब थुजा विशेष उपकारी होता है

शक्ति ३०—२००—१००० ।

———: ※ :———

ट्रिलियम पेन्डुलम ।

TRILLIUM PENDULUM.

यह शरीर का नानास्थान से चमकीला लाल रक्तस्राव के लिये उत्तम औषध है। नाक, फेफड़ा, किडनी, दांत इत्यादि से रक्तस्राव।

ऋतु की गड़बड़ी में यदि प्रति दो सप्ताह में यानी महिना में दो बार करके चमकीला लाल रंग का रक्त बहुत परिमाण से और जोर के साथ निकले तो ट्रिलियम द्वारा आरोग्य होगा।

ट्रिलियम में चायना की तरह फेइन्ट (मूर्च्छाभाव) होना दृष्टि की धुंधली होना, कान में भन भन शब्द इत्यादि देखा जाता है किन्तु यदि रक्तस्राव के बाद इस प्रकार का दुर्बलताज्ञापक लक्षण देखा जाय तब चायना उत्तम है। उक्त प्रकार का रक्तस्राव के साथ रोगिणी का हिप-सन्धि कुल्हा) और सेक्राम (डांड़) में दर्द होता है। दर्द से मालूम होता है कि कमर की हड्डियां सब अलग हो जा रही है। रोगिणी उक्त स्थान को कस कर बांध रखना चाहती है।

शक्ति ३—६—३०—२०० ।

——※——

टिउबरकुलाइनम-बैसिलाइनम ।

TUBERCULINUM BACILLINUM.

यह दवा यक्ष्मारोग का जखम के बैसिलाइ वा बीजानु युक्त पीप से बनती है।

यदि किसी रोगी तुम्हारे सुनिर्व्वाचित औषध से भी आरोग्य न हो और यह मालूम पड़े कि उस रोगी का खान-दान में किसी को टिउवरकुलार रोग हुआ था टिउवरकुला-इनम का प्रयोग करना चाहिये। टिउवरकुलाइनम शरीर का दुष्टधर्म्म का सुधार कर स्वयं रोग आरोग्य कर सकता है और नहीं तो अन्य सुनिर्व्वाचित औषध से फायदा होने का रास्ता साफ कर देता है ध्यान रखना कि ऐसी हालत में विशेष कोई लक्षण देखने की जरूरत नहीं है।

टिउवरकुलाइनम के चंद साधारण लक्षण नीचे लिखता हूं।

लक्षण समूह प्रायः परिवर्त्तनशील: अति सहज से ही ठन्ढ लगने का स्वभाव, अति सावधानता के साथ रहने पर भी कहां किस प्रकार से ठन्ढ लग जाता है मालूम नहीं पड़ता है। शीघ्र शरीर जीर्ण शीर्ण हो जाता, रोगी को भूख

बहुत लगता है और अच्छातरह से खातापीता है, लेकिन फिर भी सूखता जाता है। (एब्राट, आयोड, नेट्रम-म्युर)।

मानसिक अवस्था—रोगी गमगीन, दुःखी, चिरचिराहा, मौनी: किन्तु स्वाभाविक अवस्था में अति मिठा स्वभाव का होता है।

रोगी को ख्याल होता है कि घर की कोई भी चीज उस की परिचित नहीं है—या वह कोई अपरिचित स्थान में है।

यक्ष्मारोग के इतिहासयुक्त व्यक्तियों का सिरदर्द में यह अति उपकारी है।

हाइड्रोकेफेलस वा दिमाग में जल संचय रोग में रोगी रात में नाना प्रकार के कल्पित भयजनक चीज देखता है। रोगी डर जा कर निंद से जाग पड़ता है और चिल्लाता है। ऐसी अवस्था में यदि एपिस: हेलिबोरस, लल्फर प्रभृति औषध से फल न हो तब अवश्य टिउवरकुलीन देना चाहिये।

वाल का जटा बाँधना, यदि बोरैक्स और सोरिनम से आरोग्य न हो तो टिउवरकुलीन द्वारा फल मिलेगा।

फोड़ा—नाक के ऊपर अति छोटे २ फोड़े होते रहते हैं। उन फोड़े में हरा दुर्गन्धी पीप होता है (सिकेलि)।

उदरामय—अति प्रातःकाल में आचानक पैखाना का वेग होता है । रोगी एक मिनट भी ठहर नहीं सकता है (सल्फ) उत्तम भोजन करने पर भी रोगी सूखता जाता है (आयोड, नेट्रम) । मल मैला रंग के, भूरा रंग पतला पानी की तरह, दुर्गन्धी और अति वेग से निकलता है । अत्यन्त दुर्बलता और रात में बहुत परिमाण से पसीना ।

ऋतु की गड़बड़ी ।

एकजिमा रोग; आग की तरह लाल दाद रोग ।

फलतः किसी प्रकार के रोग हो यदि उसमें सुनिर्व्वाचित औषध से फल न हो और उसमें यक्ष्मारोग का इतिहास अथवा यक्ष्मारोग का लक्षण मिले तो अवश्य टिउवरकुलाइनम को स्मरण करना चाहिये । यक्ष्मारोग की प्रथमावस्था में इस दवाई की उच्चशक्ति के प्रयोग से विशेष उपकार होने की सम्भावना है । स्मरण रखना कि इस दवाई का पुनः २ प्रयोग अनिष्टकारक है ।

शक्ति २००—१०००—C.M.

——:o:——

और खुजलाहट हो तो इस दवा से बहुत उपकार होता है। जुरपित्त के साथ दस्त।

स्तन में दूध न रहने से इस दवा का व्यवहार से दूध उत्पन्न होता है।

खुजली स्त्रीजननेन्द्रिय के बाहरी भाग में व पोते में खुजली होने से यह विशेष फायदा करता है।

हुपींग कफ में भी यह बहुत फायदा करता है।

शक्ति ३—६—३०।

—:※:—

अष्टिलैगोमेडिस।

USTILAGOMAYDIS.

यह जरायु से रक्तस्राव (मेट्रोरेजिया) और बहुत परिमाण से ऋतुस्राव (मेनोरेजिया) के लिये अति उत्तम औषध है। यह रक्त काला होता है और इसके साथ दोनों ओभारी में अल्प या अधिक दर्द रहे तो इस से फल मिलेगा।

तीसरी उम्र की स्त्रियों का आखरी ऋतु बन्द होने

के समय में यह दवा विशेष कार्य्यकारी होती है।

शक्ति ६—३०—२०० ।

इउभा असाई ।

UVA URSI.

यह सिष्टाइटीस वा मूत्रस्थली के प्रदाह में पेशाब के साथ म्युकस (श्लेष्मा) अथवा रक्तमिश्रित म्युकस निकलने से अति उत्तम है।

शक्ति १—६ ।

भेलेरियाना ।

VALERIANA.

यह हिष्टिरिया रोग का एक उत्तम औषध है। अत्यन्त स्नायवीय उत्तेजना; रोगिणी स्थिर नहीं रह सकती है; हिष्टिरियावाला स्वभाव; शरीर का भिन्न २ स्थान में दर्द और ऐंठन, परिवर्त्तनशील स्वभाव; बुद्धि बहुत तेज; दर्शन स्पर्शन इत्यादि ज्ञानेन्द्रिय का शक्ति का आधिक्य; ऐसा मालूम होता है कि गले में एक सूत लटक रहा है; इत्यादि इस का लक्षण है।

रोगिणी का शरीर इतना हलका कि मालूम होता है शरीर हवा में उड़ रहा है। यह इस दवाई का अति प्रधान लक्षण है।

यह सायेटिका रोग के एक महौषध है। रोगी खड़ा हाने से या पांव के ऊपर भार देकर बैठने से दर्द की अत्यन्त वृद्धि होती है। किन्तु चौकी पर खड़ा होने से कष्ट नहीं होता है और चलने फिरने से आराम मालूम होता है।

बच्चों को दूध हजम नहीं होता है। दूध जम कर दही की तरह बड़ा ढेला होकर कै और दस्त हो जाता है (इथुजा)।

शक्ति ३—६—३०—२०० ।

भेरिओलाइनम ।

VARIOLINUM.

यह वसन्त रोग का वीजानु से वनता है।

यह वसन्त रोग का प्रतिषेधक और आरोग्य कारक है। वसन्त रोग के प्रादुर्भाव का समय इस की २०० शक्ति, कभी कभी सेवन करने से यह रोग होने का आशंका कम रहती है

विमारी होने पर भी इसका व्यवहार से विमारी की तेजी नष्ट हो कर आरोग्य होता है। इस कि निम्नशक्ति व्यवहार करना नहीं चाहिये।

शक्ति ३०—२०० ।

——:o:——

भेक्सिनाइनम ।

VACCININUM.

यह गो-वसन्त के वीज से वनती है। इसकी ३० शक्ति वसन्त रोग के प्रादुर्भाव के समय प्रतिदिन एक वार या २०० शक्ति हफ्ते में एकवार खाने से वसन्त रोग नहीं होता है।

भारबेस्कम ।

VERBASCUM.

यह अर्श, मलद्वार में खुजली, कठिन मल के हेतु कब्ज खांसी; पेशाब का वेग रुक न सकना इत्यादि में उपकारी है।

शक्ति १—३—६ ।

भेस्पा ।

VESPA.

यह दवा ओभारी के सर्वप्रकार रोग में ही फलप्रद है। आंख के सफेद भाग में किमोसिस या रक्त जम कर काला २ धब्बा होना।

शक्ति १–३—६।

भाइवर्नम ओपुलस ।

VIBURNUM OPULUS.

यह कष्टदायक रजःस्राव के लिये और जरायु के ऐंठने वाला दर्द में उत्कृष्ट औषध है। पीड़ाक्रान्त करवट में लेट नहीं सकती है। मलद्वार के शून्य अवस्था के हेतु मलत्याग का वेग नहीं होता है। पेशाव का ज्यादा होना।

शक्ति १–३—६।

——:o:——

भाइवर्नम-प्रुन ।

VIBURNUM PRUN.

गर्भपात की आशंका होने से यह एक मूल्यवान

औषध है । स्राव आरम्भ होने पर भी इस से वन्द हो जाता है । यह जरायु का टौनिक वा वलकारी औषध है ।

शक्ति ३—६ ।

भिंका-माइनर ।

VINCA MINOR.

यह तीसरी उम्र की स्त्रियों के लगातार रक्तस्राव में विशेष उपकारी है। मस्तक और मुखमण्डल के वदवूदार एकजिमा रोग, और उससे वाल का गिर जाना। यह जरायु के सूत्रमय (Fibroid) टिउमर में भी उपकारी है।

—०—

भायोला ओडोरेटा ।

VIOLA ODORETA.

यह वायां कान के वहुत प्रकार विमारी, यथा—कान से पीव निकलना इत्यादि में उपकारी है।

भायोला ट्राइकोलर ।

VIOLA TRICOLAR.

यह स्वप्नदोष का एक महौषध है । औरत और रति

विषय में स्वप्न दर्शन । मलमूत्र के साथ शुक्रपात ।

शक्ति ३—६—३० ।

—— ० ——

भाइपेरा ।

VIPERA.

यह नाना प्रकार रक्तस्राव, नाना प्रकार टिउमर और नाक से रक्तस्राव का अति उत्तम औषध है ।

शक्ति ६—३०—२०० ।

——:०:——

भिसकम ।

VISCUM.

यह बायां कान की बधिरता और सायेटिका रोग में अति कार्य्यकारी औषध है ।

भेरेट्रम ऐलबम ।

VERATRUM ALBUM.

ललाट में शीतल पसीना——यह भेरेट्रम ऐलबम का अति प्रधान लक्षण है । कौलेरा, शिशु-कौलेरा, निउमोनिया,

दम्मा, टाइफायेड ज्वर, कब्ज इत्यादि कोई रोग हो यदि उस में ललाट में ठन्ढा पसीना और कोलैप्स अवस्था देखी जाय तो इस के प्रयोग से आशातीत फल लाभ होगा।

कोलैप्स—मूर्छा—निढाल हालत, शरीर बहुत जल्दी से निस्तेज हो जाता है: चर्म्म बैगनी, शीतल और सिकुड़ा हुआ: चेहरा विकृत: नाक नोखीला; सर्वांग बरफ की तरह शीतल: टाँगके पीछला भाग में ऐंठन; हाथ पैर शीतल इत्यादि। ये लक्षण समूह कौलेरा, निउमोनिया, टाइफायेड इत्यादि जो किसी प्रकार बिमारी में मिले उसी में भेरेट्रम का प्रयोग से फायदा होगा।

यह कौलेरा रोग का सर्व्वप्रधान औषध है। दस्त और कै साथ २ होता है। बहुत परिमाण से भींगा भात के पानी की तरह दस्त; ज्यादा प्यास: पेट में अत्यन्त दर्द ललाट में शीतल पसीना: और बहुत जल्दी २ रोगी का निस्तेज हो जाना इत्यादि इसके सिद्धिप्रद लक्षण हैं। ये लक्षणों के साथ कोलैप्स अवस्था के लक्षण समूह भी आ जा सकता है।

कौलेरा रोग में कैम्फर के लक्षण प्रायः भेरेट्रम के सदृश्य है किन्तु इन दोनों की विशेषता यह है कि भेरेट्रम में बहुत परिमाण से चावल धोअन सा दस्त होता है किन्तु कैम्फर में दस्त अति अल्प परिमाण से होता है अथवा एकदम ही नहीं होता है। भेरेट्रम में अतिशय पेट-दर्द होता है।

उन्माद रोग में भेरेट्रम अति उपकारी है। कपड़ा फाड़ने को, हर चीज को काट डालने को, तोड़ने को, नाना प्रकार अश्लील अथवा धर्म्म अथवा प्रेम की बात करने की अतिशय प्रबल इच्छा होती है (ष्ट्रैमो)। कभी कभी रोगी इस प्रकार की उन्मत्तता के बाद एकदम चुपचाप रहता है लेकिन उसको ठीक करने से गुस्सा हो जाता है, गाली देता है, बकता है, दूसरे की निन्दा करता है। उक्त प्रकार की मानसिक अवस्था प्रायः ऋतु बन्द होकर अथवा प्रसव के अन्त में होती है। इस प्रकार पुरानी और नई दोनों प्रकार की अवस्था में भेरेट्रम उत्तम है।

शक्ति ६—३०—२००—१००० ।

भेरेट्रम भिरिड।

VERATRUM VIRIDE.

फेफड़ा, दिमाग और मेदा के कंजेश्चन या रक्ताधिक्य निवारण करने के लिये यह अति उत्तम औषध है। खुन को ज्यादती के कारण आंख और चेहरा लाल, सीर गर्म्म, नाड़ी पूर्ण और कठिन होने पर इस दवाई को व्यवहार की जाती है।

उपरोक्त लक्षणयुक्त कनभलशन, सिरपिड़ा: सानष्ट्रोक (सूर्य्याभिघात वा लू लगना) इत्यादि विमारी में यह महौषध है।

इरिसिपेलस रोग में डिलिरियम वर्त्तमान रहने से इससे फल लाभ होता है।

मतली और वमन खड़ा होने से ही ज्यादा होतो इसके प्रयोग से उपकार होता है।

इस दवाई की जीभ सफेद वा पीला मैंलयुक्त होता है। लेकिन जीभ के ठिक मध्य भाग में एक लम्बा रक्तवर्ण लकीड़ देखा जाता है। जीभ जला हुआ ऐसा दिखता है।

शक्ति ३—६—३०—२००।

—— ※ ——

जैन्थक्साइलम ।

XANTHOXILUM.

दर्द के साथ ऋतुस्राव का यह एक उत्कृष्ट औषध है कान का दर्द सायेटिका, ओसारी के निउरैलजिया दर्द वा शूल और इसके साथ कमर और उदर में भयानक दर्द; प्रसवान्त दर्द में भी उपकारी है। पानी में पाँव भींगाने के हेतु ऋतु बन्द होने से यह उत्तम है।

शक्ति ३—६—३० ।

— ※ —

जिकंम मेटालिकम ।

ZINCUM METALICUM.

स्नायुशक्ति की दुर्बलता—जिकम का अति प्रिय लक्षण है। स्नायुमण्डल के ऊपर इसकी अद्भुत क्रिया देखी जाती है। कोदवा, वसन्त, स्कार्लेटिना इत्यादि रोग के दाने यादि रोगी की दुर्बलता के हेतु न निकल सके या निकलकर फिर दब जाय तो जिकम के प्रयोग से फल लाभ-होता है। दुर्बलता के प्रयुक्त ऋतुस्राव बकायदा नहीं होता है। किन्तु ऋतुस्राव हो जानेसे कोई कष्ट नहीं रहता है।

दुर्बलता के हेतु बलगम निकाल नहीं सकता है लेकिन बलगम निकल जाने से रोगी बहुत आराम मालूम करता है। दुर्बलता के हेतु रीतिमत वेग से पेशाब नहीं निकलता है। फलतः स्नायवीय दुर्बलता के हेतु यदि रोग की स्वाभाविक क्रिया की बाधा होकर रोगी के जीवन विपदापन्न हो तब जिकम के प्रयोग से अति उत्तम फल लाभ होता है।

शराब अथवा और किसी प्रकार के उत्तेजक पदार्थ सेवन करने से कष्ट की वृद्धि होती है—यह जिकम के रोगी के स्नायविक दुर्बलता का एक विशेष स्वधर्म्म है। सामान्य शराब पीने से पहले जरासा आराम मलूम होता है लेकिन अति शीघ्र ही पहले से भी अधिक दुर्बलता और कष्ट की वृद्धि होती है। ग्लोनइन, लिडम, एन्टिम-क्रुड, कोनायम इत्यादि औषध में भी यह लक्षण है लेकिन जिकम सब से प्रधान है।

बहुत देर तक गर्दन को एक भाव से अथवा उन्चीं तकिया पर रखने से जिस प्रकार का दर्द होता है गर्दन में उक्त प्रकार

का दर्द। लगातार लिखने से या कोई काम करने से रोग की वृद्धि। कमर दर्द की बैठे रहने से वृद्धि और चल फिर करने से आफियत होती है। रस-टक्स में भी यह लक्षण है। जिकम की विशेशता यह है कि रस-टक्स की तरह सार्वांगिक कष्ट कर बदलने से कम नहीं होता है। पल्सेटिला में भी उक्त प्रकार का कमर दर्द चल फिर करने से कम होता है किन्तु पल्सेटिला में ऋतु की गड़बड़ी देखि जाती है। अत्यन्त स्त्री-सहवास हेतु धातुदौर्बल्य के साथ कमर दर्द होना जिकम का और एक विशेष लक्षण है। कोबैलटम नामक औषध का और जिकम के कमर दर्द एक साही है लेकिन जिकम के कमर दर्द शुक्र पात होने से या ऋतुस्राव होने से कम होता है, कोबैलटम में ऐसा नहीं होता है।

निम्नशाखा के कम्पन—यह जिकम का एक सिद्धिप्रद लक्षण है। यह स्नायवीय दुर्बलताज्ञापक लक्षण है। यह लक्षण जिकम के प्रायः सर्व प्रकार बिमारी में देखा जाता है। लेटना या बैठना किसी हालत में भी पैर का कंपना बन्द नहीं रहता है: रोगी लगातार पैर को हिलाता रहता है।

पैर में अत्यन्त दुर्गन्धी पसीना और उस से अंगुलियों के बीच २ में जखम होने से जिंकम फायदा करता है।

शाखाशमूह की दुर्बलता और कम्पन, लिखने के समय हाथ कंपता है।

सर्वशरीर के कम्पमान अवस्था में भी जिंकम एक महौषध है। यह भी दुर्बलता हेतु होता है। इस लक्षण के साथ रोगी प्रायः निढाल हो जाता है। यद्यपि पैरालिसिस नहीं हुआ है तथापि हाथ पैर या और कोई अंग के स्वभाविक या अस्वभाविक किसी प्रकार की गति के ऊपर ही रोगी का अखतियार नहीं रहता है। इस प्रकार की अवस्था जल्द दूर न होने से पक्षाघात होने की सम्भावना है।

समस्त **रीढ़ के बराबर ज्वाला** भी इस का एक उत्तम लक्षण है। जिंकम में शरीर के नानास्थान का पेशियों का ऐंठन व फड़कना भी देखा जाता है।

कोढ़वा, वसन्तादि पीड़ा के अथवा और कोई चर्म्म रोग के इरप्शन वा दानें का दब जाना, दांत निकलना अथवा टाइफस अथवा टाइफयेड इत्यादि में यदि कम्पन और दिमाग की पक्षाघातिक अवस्था देखी जावे तो जिंकम प्रयोग करना चाहिये।

उदरामय——उदरामय अथवा आमाशय रोग की प्रथमा वस्था में प्रायः जिंकम व्यवहार नहीं होता है। रोगी क्रमशः कठिन आकार धारण कर के दिमाग की दुर्बलता उत्पन्न करने से अथवा दिमाग में जल-संचय होने से जिंकम का प्रयोग होता है। शरीर में किसी प्रकार के गर्म्मी नहीं है फिर भी सर्वाङ्ग में कम्पन अथवा कनभलशन होना; यह लक्षण जिंकम को निर्देश करता है।

बच्चों के दांत निकलने में बाधा होकर यदि निम्नलिखित लक्षण प्रकट हो तो जिंकम अति उत्तम क्रिया करता है। मुखमण्डल मलिन, उत्तापहीन; निम्नशाखा का लगातार कम्पन; जोर से चिल्लाना, शरीर के पेशियों का ऐंठन व फड़कना; बेहोशी में पड़ा रहना; निद्रावस्था से डर-कर चिल्ला उठना; हरदम सिर को इधर उधर करता रहना इत्यादि।

ऋतुस्राव ऋतुस्राव होना शुरू होने से ही रोगिणी सर्वप्रकार से आराम मालूम करती है किन्तु स्राव बन्द होना मात्र ही फिर तकलीफ देखाई देती है।

शक्ति ३० से C. M. तक।

——:o:——

बैलसम आफ पेरू ।

BALSAM OF PERU.

पुरातन "श्लेष्मा रोग नाक से थोका २ नेटा सर्वदा गिरता रहता है और साथ २ उसके नाक में किसी २ का घाव भी हो जाता है।

पुराना या नया खांसी की बिमारी इस खांसी के बिमारी में गाढ़ा पीला या सबुज रङ्ग का दुर्गन्ध युक्त पीप के ऐसा बलगम गिरता है। वृद्धावस्था में इसी तरह का बलगम संयुक्त खांसी रोग हुआ करता है।

यस्क्राफुला (गन्डमाला) धातु वाला लोगों को विशेषतः ब्रोंकाइटिज रोग होने से यदि उसकी इलाज पूर्ण रूप से न हो तो उपरोक्त प्रकार का बलगम खांसी के साथ गिरते देखा जाता है। डाक्टर हेल कह गये हैं कि यक्ष्मा रोग में इस औषध के प्रयोग से आरोग होने का संभव नहीं किन्तु यक्ष्मा में दुर्गन्ध युक्त थोका २ बलगम खांसी के साथ गिरने से उपकार होने का संभावना होता है इस बिमारी में १× और २×शक्ती इस्तमाल कर के फायदा उठाया गया है। यक्ष्मा रोग में दुर्गन्ध युक्त थोका २ बलगम के गिरने में इस औषध

का सेवन करने से कमी और साथ २ उसके यक्ष्मा भी कम हो जाता है।

किसी २ की मति है कि पुराने अमासा (पेचिस) में थोका २ आंव गिरने से इस औषध के प्रयोग करने से उपकार मिला है।

कलकल (खोस) में इस दवा का लेप करने से विशेष उपकार मिला हं।

इस औषध का २० वुन्द मदर टिन्चर एक आउन्स ओलिव आयल के साथ मिला कर इस्तमाल करना चाहिये।

शक्ति ३०—२०० ।

ब्रोमाइड औफ् अमोनिया

AMMON BROMIDE

चक्षुरोग (आंख का मर्ज) दोनों आखें खूब लाल और दर्द के साथ प्रातः काल में सट जाना, आंख से चट-चटाहा की चड़का निकलना, आंख की पुतली का बड़ा मालूम होना, दोनों आंखो के चारो तरफ सायंकाल में मस्तक

प्रन्त्र दर्द फैल जाता है। रोगी को अपनी आंखों को खोलने में और पपुटे को उठाने में तकलीफ होती है इस लिये रोगी सर्वदा आंख बन्द किये रहता है।

डाइलूशन १ X या २ X

सरदी, खांसीयुक्त नांक से लसेदार बलगम का बाहर होना और खांसी में इस दवा का १ X विचूर्ण फलदायक है।

कुकुर खांसी Whooping Caugh सूखी खांसी ऐठन के साथ और खांसने के कारण पेट में दर्द को उत्पन होना, दो एक मिनट के अन्दर अत्यन्त जोर के साथ खांसी कष्टकर और ऐंठन वाला खांसी होता है।

कभी २ कइएक घन्टा तक लगातार खांसी होती है। इसी तरह रात्री में सोनेपर अधिक खांसी होती है खांसी के संग २ गला में सुर सुराहट कभी २ हुप शब्द बाहर होता है।

प्रायः बलगम बाहर नहीं होता यदि कभी समान रूप से बलगम बाहर भी होता है तो बड़ी सख्त और तार बांध कर आता है।

इस में १ X शक्ति का
औषध व्यवहार होता है।

स्त्री जनेन्द्रीय की बिमारी जरायु का संकोचन (सिकुरजाना) उतपादन करके सिकेली क ऐसा क्रिया प्रकाश करता है। किसी कारण से रक्तस्राव क्यों न हो तो इसी दवा के प्रयोग करने से आराम होता हैं।

ब्रोमाइड आफ कैम्फर।

BROMIDE OF CAMPHOR.

कैम्फर और ब्रोमाइड मिल कर यह दवा प्रस्तुत होता है निम्न लिखित रोग में यह औषध व्यवहार किया जाता है १ शिशुओं के दान्त निकलने के समय फिट (मुर्छा, गस) का आजाना इस औषध के प्रयोग के पूर्व अत्यन्त शीघ्र २ मुर्छा यदि आजाये तब इस दवा का १ ग्रेन प्रति मात्रा दो तीन घण्टे के अन्दर इस्तेमाल करने से शिशु का फिट होना बन्द हो जाता है।

कष्टदायक हिस्ट्रिया (मुर्छा) में कभी हंस और कभी रोकर हाथ पैर में ऐंठन हो जाता है मृगी अथवा कोरिया (तान्डव) के ऐसा हाथ पांव में ऐंठन आजाता है।

एक २ घण्टे पर मूल औषध का ४ ग्रेन प्रतिमात्रा में व्यवहार करने से आरोग्य होता है।

स्त्री युवती कन्यायों का सिर पीड़ा में इस दवा का ४ ग्रेन व्यवहार करने से अति लाभ दायक होता है।

शिशुकालेरा मे कैम्फर के बदले मे ब्रोमाइड आफ केम्फर अधिक तर उपकारी है।

चिमाफिला अम्मा लेटा।

CHIMAPHILLA UMELLATA.

यह औषध मुत्रस्थली का प्रदाह और गनोरिया (शुज़ाक) मे इस्तमाल होता है।

मूत्रस्थली का प्रदाह पेशाव मे बहुत परिमान के साथ चटचटाहा मिउकस का निकलना। एवंग पेशाव का कुथ कर निकलना। इन सब लक्षणों मे यह दवा अति उपकारी है।

प्रोस्टेट गलैन्ड (सोखने वाली गिल्टया) का प्रदाह और शुजाक प्रोस्टेट ग्लैन्ड का प्रदाह हो जाने

से पेशाव करने मे कष्ट । मलद्वार के रास्ते मे मालूम होता है कि बौल के एसा कोई चीज ऊठा हुआ है । रोगी को मालूम होता है कि एक बौल के उपर बेठा हुआ है उसी के साथ यदि पेशाव मे वहुत परिमान से लाल लस्सादार मिउकस (Ropy mucus) तार के समान वाहर निकले तो एसे हालत मे यह औषध विशेष कर के उपकारी होता है ।

क्लोरल हाइड्रेट

CHLORAL HYDRATE

क्रिया (Action) इस दवा का खास क्रिया रोगी का " स्थिर शान्त रखता है "

दूसरी क्रिया निस्तेज और उत्तेजक इसी कारण अनेक प्रकार का पागल पना और व्याकुलता, बुद्धी का कम होना इत्यादि रोग मे यह औषध अति उपकारी होता है ।

जिन सर्व पागलों को वहुत उग्र भाव से पागलपना हो जाता है उन सव पागलों को इस दवा का २० से ३० ग्रेन तक प्रति मात्रा मे सेवन कराने से विशेष शान्ति होती है ।

शिशुओं को रात्री काल में भय (डर) (Night Terrors of children) दन्त का निकलना, पेट मे जोंक

और अनेक बार पखाना और कै के बाद शिशु का रात्री मे डर जाने से यह औषध उपकारी है।

शिशु कौलरा आहिस्ते आहिस्ते पखाना और कै कम होकर जब डिलिरियम (सरेसाम) हो जाना अथवा मस्तक मे खून की कमी हो जाने के कारण शिशू बहुत बेचैन हो जाता है मालूम होता है कि शिशु का फिट (गस) आजायगा ऐसे हालत में यह दवा उपकारी है।

इनफुलुएन्जा Influenza इसग्रेन क्लोरल नाक में सुंक लेने से एक ही दिन में इनफ्लुएन्जा आराम होता है।

आंख का पीड़ा आंख की पुतली में दर्द पुतली का बढ़ जाना आंख का पपोटा इतना भारी मालूम होता है कि उसको उठा नहीं सकता (जेलसीमियम, कस्टिकम आंख का पपूटा और आंख के अन्दर के हिस्से में खुजलाहट (Canthii) आंख का पपोटा फुल जाना आँख का लाल होना और आंख से बहुत परिमान से पानी के गिरने से इस दवा का १X डाइलूशन इस्तमाल करके उमीद से भी ज्यादा फल प्राप्त होता है।

प्रसव का दर्द बच्चेदानी के संकोचन के अभाव के कारन दर्द जोर से नहीं होती ऐसे हालत में इस दवा का १५

ग्रेन प्रति मात्रा हर आधे घन्टे के बाद इस्तमाल करने से विशेष उपकार होता है तब याद रखना चाहिये कि जब वच्चे दानी से रक्तस्राव होता हो तब इस दवा के प्रयोग से बड़ा हानी पहुंचती है कोई २ कहता है कि प्रसौती पीड़ा में मुर्छा आने से (Puerperal convulsion) इस औषध का २० ग्रेन प्रति मात्रा देने से आरोग्य होता है।

हृतपिन्ड पीड़ा (Disease of the heart) डा० हेल साहेब फर्माते हैं कि अत्यन्त सासकृछ सांसलेने में तकलीफ और उसके साथ छाती में अत्यन्त पीड़ा होने से इस औषध का ५ ग्रेन प्रति मात्रा सेवन करने से अत्यन्त उपकार होता है।

सोइरी गृह में शिशुका टेटेनस (धनुष टंकार) शिशुको जमुआ या दांत के निकलने के समय फिर आजाने में यह औषध अति उपकारी होता है।

चर्म रोग (Skin Disease) अनेक प्रकार का चर्म-रोग और मुख का वर्ण इत्यादि में इस औषध को इस्तमाल करने से विशेष उपकार मिलता है।

शक्ति १ X विचूर्ण

समाप्त।

PUBLISHING CO PRIVATE ...EMANN CALCUTTA-12

HAHNEMANN PUBLISHING CO. PRIVATE LTD.
CALCUTTA-12

PRINTED AT THE UNIVERSITY PRESS, PATNA